विमल मित्र

इसीका नाम दुनिया





सरस्वती विहार

मूल्य तीस रुपये (30 00)

प्रथम संस्करण 1982

प्रकाशक | सरस्वती विहार
21 दयानन्द मार्ग, दरियागंज
नई दिल्ली 110002

ISIKA NAM DUNIYA (Novel) by VIMAL MITRA

इसीका नाम दुनिया

□□

कहानी का प्रारम्भ यही से होता है। हरतन की यह कहानी इस किशनगज से ही शुरू होती है। एक ओर हरतन और मालिक, मालिक और बड़ी बहूजी, दूसरी ओर दुलाल साहा और नई बहू की कहानी, इसके अलावा बकुबिहारी और अजना भी हैं। सभी यहा अकेले ही आए एक रोज़। अपनी अलग-अलग इकाइयो मे इस कहानी के ये पात्र किशनगज आए और यहा पहुचकर अपने यह मालिक, हरतन, बडी बहूजी, दुलाल साहा और नई बहू सब एक इकाई में बदल गए। यह कहानी उन सभीकी है।

कहने को मालिक ही किशनगज के आदिपुरुष हैं। आदि और निखालिस। सात पुश्त पहले की बातें मालिक को नहीं मालूम। लेकिन उसके बाद के किस्से मालिक पहले लोगो को धर पकडकर सुनाया करते थे।

मालिक शुरू करते, 'अरे, तुम लोग तब पैदा भी नही हुए थे। बात उस ज़माने की है जब हम भी नही थे।"

कहते कहते मालिक अपनी धुन मे बह जाते। पुश्त दर पुश्त तक जा पहुचते। आदिशूर न कब गौड बगला का यह गाव बसाया था। इस वश के आदिपुरुष थे घमदास देवशर्मा। तब क्या इच्छामति ऐसी ही थी! घमदास राजपुरोहित थे! उनका रोबदाब अलग ही था। हाथी

पर चढ़कर राजमहल जाते थे। हर रोज एक सौ आठ कमल के फूल बधते थे उनके लिए। एक सौ आठ कमल के फूलो के पत्ता पर नैवेद्य सजाकर कुलदेवी सिंहवाहिनी की पूजा करते थे। इसके बाद राजमहल पहुंचकर शुरू होती धर्मालोचना। राजा सुनते, उनके इष्ट मित्र और मुसाहिब सुनते। रात को भागवत पाठ होता। तो एक रोज भागवत पाठ होने हाते ही एक अजीब बात हो गई।

'क्या हुआ मालिक ?'

सुनने वालो ने इस घटना को कई बार सुना है। गौडेश्वर के सीने मे अचानक अजीब-सा एक दर्द उठा। और उसके बाद ही राज्य की हालत बिगडने लगी। दंगे-फसाद, भडक महामारी के बीच से किस प्रकार किशनगंज का भट्टाचार्य वंश धन दौलत और वैभव विलास से भर उठा। केदारेश्वर भट्टाचार्य तक का यह किस्सा लोगो ने कितनी ही बार सुना है। तो इन्ही केदारेश्वर भट्टाचार्य के इकलौते वंशधर अपने ये मालिक हैं, कीर्तिश्वर भट्टाचार्य। इस कहानी के प्रधान पात्र।

पहले कीर्तिश्वर भट्टाचार्य के श्रोता थे। शाम के वक्त रोज बैठक-खाने मे मजलिस जमती। पान तबाकू, हुक्का, पीकदानी रहते। खींचने वाला पखा अतरदान और जगमग रोशनी, सभी कुछ। अब सब कुछ नहीं है। कीर्तिश्वर भट्टाचार्य अब और भी बूढे हो गए हैं। सांस चल रही है इसलिए कहा जा सकता है कि जीवित हैं। खड़ाऊ घसीटते घसीटते आज भी आकर बैठते हैं। सो भी दिन ढलने से पहले। झुटपुटा होते ही उठ पड़ते हैं। उठकर अपने कमरे म पलग पर आ पड़े पड़े हांफते रहते हैं। वैसे ठीक दमा नहीं है और दमा हो भी तो क्या किया जा सकता है ! चारा ही क्या है ! किसी तरह आखिरी कुछ दिन कटें तो निस्तार पाए।

अचानक जैसे किसीके पैरो की आहट होती है। बड़ी बहूजी हैं क्या ?

"कौन ?"

गला आज भी उस जमाने जैसा ही रोबीला था। उन दिनों गले की आवाज सुनकर रास्ता चलते लोग सहम जाते थे। इसके अलावा तब 'कौन' की आवाज सुनते ही दौड़ पड़ने वाले लोग भी आसपास ही

हुआ करते थे। हुक्म तामील करनेवाले हुक्मबरदार थे। लोग मानते थे। सुख-दुःख और मुसीबत मे मालिक के पास सलाह लेने आते थे। पहले उनकी आवाज अनसुनी करने पर ड्योढ़ी के दरबान के हाथ चाबुक खानी पड़ती। अब वैसा कुछ नही है। चारो ओर जजाल हो गया है। झाड़ झखाड़ उग आए है। आना जाना बंद हो गया। लोग-बाग भी नही आते हैं। भट्टाचार्य भवन जैसे भूतों का डेरा हो गया है। लोगो का कहना है—होगा नही पुरोहितगीरी करने आए थे बन बैठे राजा। भाग्य इतना सह सकता है? एक लड़का था। कीर्तिश्वर ने अपने नाम से तुक मिलाकर उसका नाम रखा था सिद्धेश्वर। मालिक सिधू कहकर पुकारते थे। सोचते थे, सिधू बड़ा होकर आदमी बनेगा।

'कौन ?'

"मैं!"

'ओह! मैंने सोचा '

मालिक ने क्या सोचा, कौन जाने! मुह से कुछ नही कहा उन्होने। बड़ी बहूजी बिस्तरे के एकदम नज़दीक आकर खड़ी हुईं। फिर बोली, 'तेल लाई थी गर्म करके।"

'लाई हो तो दो, लेकिन अब यह ठीक नही होने का।"

कहकर मालिक सीने पर हाथ फेरने लगे। रोज ढलती रात के वक्त सीने मे कैसी कसक-सी होने लगती है। बड़ी बहूजी हर रोज इसी वक्त आती हैं। सरसो का तेल गर्म कर सीने पर मालिश कर देती हैं। इसके बाद अंधेरा होने पर दीवारगीर की बत्ती उकसा देती हैं। तेल मालिश कराते कराते बहुत बार मालिक सो जाते हैं। नाक बजने लगती है। शायद सपना देखते हैं। वही पुराने दिनो के सपने। अचानक जैसे उनकी नजरो के आगे हजार बत्तियोंवाला झाड़ जल उठा। गौडेश्वर के राजपुरोहित धर्मदास भट्टाचार्य और एक सौ आठ कमल के फूलों के पत्तों पर सजाया हुआ कुलदेवी की पूजा का नैवेद्य, नजरो के आगे झिलमिलाने लगा। अंदर महल में फिर शख बज उठा, 'लड़का हुआ है लड़का हुआ है।' केदारेश्वर भट्टाचार्य का एकमात्र कुलदीपक। किशनगंज के घाट पर फिर एक बार नाव लगी है। काशी से शिरोमणि वाचस्पति पधारे हैं।

पालकी लिए सिपाही दौड़ते गए हैं। बड़े ऊंचे पंडित हैं। काशीराज के राजपुरोहित हैं। पुत्र की जन्म-कुंडली बनवाने के लिए केदारेश्वर ने बुलाया है उन्हें। वाचस्पतिजी ने कुंडली बनाई। इसके बाद हुआ कुंडलीपाठ—जातक के षष्ठ में बृहस्पति है, लग्न में चन्द्र है। एतन्छेदीय सौरचैत्रस्य पंचम्‌दिवस सोमवासरे अमावस्यायां तिथौ शुभयोगे चतुष्पाद करणे पूर्व-भाद्र नक्षत्रान्विते कुम्भराशौ मंगलस्य द्वादशांशे यामार्द्धे अशेषगुणा-लंकृत पवित्रब्राह्मण कुलोद्भवस्य श्रीयुक्त केदारेश्वर भट्टाचार्य महोदयस्य शुभाभिनव प्रथम कुमार जात शुभमस्तु।

केदारेश्वर इसपर भी कुछ समझ नहीं पाए, "कैसा लगता है आपको?'

काशी के राजपंडित शिरोमणि वाचस्पति संस्कृत शास्त्रों का अगाध ज्ञान है। बोले यह संतान आपके कुल की मर्यादा-वृद्धि करेगी। लेकिन चतुर्पष्ठि वर्ष वयक्रम काल में राहु की दशा का योग है। नीच जाति के लोगों के संस्पर्श से समग्र क्षति योग है। जातक को सतर्क रहना पड़ेगा। इसी उम्र में जितना कुछ अनिष्ट होने की आशंका है।"

"अनिष्ट-रोध का क्या उपाय है?

शिरोमणि वाचस्पति ने कहा, 'दोष-काल पड़ा है। समयानुकूल अवस्था के अनुकूल व्यवस्था लेने से सब मंगल होगा।"

केदारेश्वर ने फिर पूछा, 'और आयु? आयु के बारे में तो आपने कुछ बताया ही नहीं?"

शिरोमणि वाचस्पति ने कहा, "जातक दीर्घायु है।' लेकिन यह बात तो चौंसठ साल पहले की है। तब भट्टाचार्य वंश धन-दौलत से भरपूर था। फिर एक दिन ये केदारेश्वर भट्टाचार्य कालग्रस्त हुए। कीर्तिश्वर उन दिनों शिशु थे। परिवार, इष्ट मित्र और आश्रितों से भरा घर धीरे-धीरे निर्जन हो गया। कीर्तिश्वर का विवाह हुआ। संतान-लाभ भी हुआ। पुराने वैभव के पुनराविर्भाव की आशा भी थी। लेकिन हुआ नहीं कुछ। किशनगंज की बाजार कभी आज की तरह लोग-बागों की चहल पहल से भर उठेगा, उन दिनों कोई सोच भी नहीं पाया था लेकिन हुआ यही है। यह इलाका जहां दिनोंदिन सुनसान और वीरान होता जा रहा है वहां बाजार

की ओर का इलाका उतना ही सजीव, कोलाहलपूर्ण, रंगीन और सुंदर होता जा रहा है। उन दिनों बाजार में चार-पांच दुकानें हुआ करती थीं— एक थी बताशों की, एक मिट्टी के बर्तनों की और एक जूट के आढ़त की। यही गिनती की चार-पांच दुकानें टिमटिमाया करती थीं। उधर खेया घाट पर व्यापारियों की नावें आकर भिड़तीं। धान, चावल, बांस, मिट्टी की हंडिया और रबड़ से भरी नावें। कहां और कितनी दूर यह सब आता-जाता, इसका पता ठिकाना कोई नहीं रखता था। कीर्तिश्वर इन सबको लेकर माथापच्ची नहीं करते थे। नायब गुमाश्ते थे। वे ही लोग खबर लाते थे। इसीसे सब कुछ जानकारी में रहता था। आजकल उन्हें कुछ भी पता नहीं रहता। नायब गुमाश्ता कोई नहीं है। एक निवारण सरकार बाकी बचा है। लेकिन निवारण भी अब बूढ़ा हो गया है। आंखों में झिल्ली पड़ गई।

निवारण दिन ढलते एक बार आता है। गद्दी के सामने एक बार खड़ होकर कुछ कहते कहते रुकता है।

"कुछ कहना है?"

निवारण कहता, 'जी, उस आहर (तलैया) के बेचने के बारे में बात करनी थी।"

"कौन-सी आहर?"

"हुजूर पेंपुलबेड के पासवाली आहर।"

"लेगा कौन?"

निवारण ने सहमकर सिर झुका लिया।

फिर बोला, "जी, वह दुलाल साहा"

बारूद में माचिस की तीली पड़ने पर भी शायद इतने ज़ोर का धड़ाका नहीं होता। दुलाल साहा के नाम में शायद बारूद छुपा था। और नहीं रोक पाए अपने को। साथ-साथ बरस पड़े।

"सब कुछ हज़म करके भी इस हरामी का पेट नहीं भरा है? अभी और खाना चाहता है?"

निवारण की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे। मालिक के आगे खड़ा बेचारा थरथर कांपने लगा।

' जाओ, दफा होओ यहा स !"

निवारण की इसके बाद और खडे रहने की हिम्मत नही हुई। जल्दी से घूमते वक्त कान के पीछे खुसी कलम पट स जमीन पर आ गिरी। उसे उठाकर निवारण भागा। इसके बाद बाहर दालान से गुजर कर धीरे धीरे पहली मजिल पर कचहरी म आया।

निताई बसाक तख्त पर बैठा मिनट गिन रहा था। और बीच-बीच मे अपनी कलाई घडी देख लेता। निवारण के कचहरी म घुसते ही उसके चेहरे को देखकर वह समझ गया।

उसने पूछा, क्या हुआ ? मालिक क्या कहते हैं ?"

'राजी नही हो रहे हैं।"

' फिर भी उन्होंने कहा क्या ? गुस्से स आग हो गए होग।'

निवारण की अजीब मुसीबत है। निताई बसाक को भी नाराज नही कर पाता और मालिक को भी नाराज करना नही चाहता। उसे दोनो को सम्हालना पडता है। आज पन्द्रह साल से इसी तरह सम्हाल रहा है। यानी जब स किशनगज के बाजार म दुलाल साहा ने आकर आढत की दुकान खोली है तभी स।

'तो जाकर मैं साहा बाबू से यही कह दू कि साहा बाबू का नाम सुनते ही मालिक गुस्से स आग हो उठे। ठीक है न ?"

निवारण ने जल्दी स उसे रोकते हुए कहा नही नही निताई बाबू, ऐसा न करें। मालिक का स्वास्थ्य ठीक नही, इसीस कहते हैं कि बाद म सोच-कर देखेंगे, आप साहा बाबू से जरा समझाकर कहिएगा कि अभी प्रयत्न न लें।'

निताई बसाक फालतू बात करने वाला आदमी नही है। उसके भी वक्त की कीमत है। पन्द्रह साल पहले जब दुलाल साहा कहने को रास्त का भिखारी था, माने सडक पर काली करधनी की फेरी लगाया करता था, तभी से निताई बसाक दुलाल साहा को जानता था। कितने ही दिन हो गए हैं जब दुलाल साहा के नसीब म खाना तक नही जुटा। दो मुट्ठी चबेना चबाकर चुल्लू भर इच्छामती का पानी पीकर पेट भरा है। सो उस निताई बसाक ने ही दुलाल साहा को सिखलाया पढाया और आज इतना बडा किया है। इस किशनगज के बाजार मे जूट की

आढ़त खुलवाई। जूट से तीसी और तीसी में धान। आखिर में अब चीनी की मिल खोलना चाहता है। मगर मिल। पेंपुलबेड के पास वाली आहर हाथ आ जाए तो दुलाल साहा की मनोकामना पूरी हो। इतना सब पाकर भी जी नहीं भरा है। इतना हजम करके भी पेट नहीं भरा है।

"लेकिन एक बात कहे जाता हूं निवारण, यह जगह हम लेकर ही रहेंगे।"

निवारण स्थिर दृष्टि से ताकता रहा। फिर खुद को सम्हालकर बोला, "नाराज क्यों हो रहे हैं निताई बाबू, बेकार में गुस्सा क्यों हो रहे हैं ?"

"गुस्सा नहीं आएगा ? भले आदमी की तरह प्रस्ताव लेकर आया था, लेकिन तुम्हारे मालिक की समझ में वह बात नहीं आई, मेरी बात मान लेने पर तुम्हारे मालिक का ही भला होता। इन बिगड़े दिनों में चार पैसे दिखलाई देते हाथ में, लेकिन जब उनकी मर्जी नहीं है तो कैसे काम हासिल किया जाता है वह रास्ता भी मालूम है हमें।"

कहकर निताई बसाक उठने लगा।

निवारण ने जैसे आखिरी बार कोशिश करते हुए कहा, 'दया करके ये बातें साहा बाबू से न कह डालिएगा मैं एक बार और कोशिश करके देखूंगा।"

'अब और कोशिश करने की जरूरत तुम्हें नहीं निवारण ! जो करना है, हम ही करेंगे।"

"जी आप लोग करेंगे माने ?

'माने यही कि पेंपुलबेड के पास वाली आहर हम लेंगे ही। तुम्हारे मालिक के बाप की भी ताकत नहीं है हम रोकने की—कहे जाता हूं।"

कहकर निताई बसाक तेजी से सदर पार कर बाहर जंगल के बीच खो गया।

सचमुच दुलाल साहा जैसे किशनगंज के बाजार में धूमकेतु की तरह उदय हुआ था। और उसीके बाद में कीर्तिश्वर के मौन को यह बसक-

शुरू हुई है। शाम होते ही सीने के पास कसा खाली-खाली सा लगता है। इसके बाद जैसे जैसे रात बढती जाती है, कसक भी बढती जाती है। पहल बडी बहूजी समझ नही पाती थी। बडी बहूजी को लगता शायद कीर्तिश्वर सो गए हैं। आहिस्त से मसहरी को पलग के चारो ओर अच्छी तरह दबा देती हैं। फिर किसी वक्त खुद भी उनकी बगल म आ लेटती। लेकिन उस रोज मालिक जरा अयमनस्क थे।

पूछने लगे ' यह महक कैसी आ रही है बडी बहू ?"

'पूडी तलने की।'

'पूडी तलने की !" फिर पूछने लगे "रात के इस वक्त पूडिया खाने का शौक किसे हुआ है ?"

बडी बहू हमेशा से ही कम बोलती हैं। उन्होने कोई जवाब नही दिया।

मालिक फिर बोले, 'कुछ बोली नही ?"

'क्या कहू ?"

"यही कि इस वक्त पूडिया खाने का शौक किसे हुआ ? शौक हुआ है तो इतनी महक की क्या जरूरत है ? लगता है, घी अच्छा है।"

बडी बहूजी ने इसपर भी कोई जवाब नही दिया। लेकिन मालिक और नही रोक पाए अपने को, बिस्तर छोड उठ बैठे।

अब उठ क्या रहे हो इस वक्त ?"

मालिक भन्ना उठे। बोले, "उठू नही तो क्या करू ? देखना नही है कि यह पूडिया खाने का शौक किसे हुआ है। रात मे इस वक्त इतना अच्छा घी फूककर पूडिया खानेवाला शौकीन है कौन ?"

कहते कहते परो मे खडाऊ डालकर दरवाजा खोलकर बरामदे से जीने के पास पहुचकर उन्होने पुकारा, ' निवारण ओ निवारण !"

कचहरी के पास ही निवारण के सोने का कमरा है। फर्श की सीमेंट जगह-जगह से उखडा हुआ है, कमरे म चमगादड और तिलचट्टो ने राज जमा रखा है। पहले इस कमरे म दीवानखाना था। बडी बडी ऑयल पेंटिंग्स आज भी लटकी है लेकिन एक की भी हालत ठीक नही है। महाराज धर्मदास भट्टाचार्य के चेहरे मे दीमको ने छेद कर दिया है। केदारेश्वर

के सुनहले हुक्के की नली पर माता जम गया है। [illegible]
पट पर मकड़ियों ने जाल बुन लिया है। [illegible]
मसहरी लगाकर निवारण मोने का हिसाब [illegible]
निनादें बनाकर कानी बकबक कर गया है। [illegible]
की छिराक में पिठर कुछ दिनों से हुई [illegible]
बैठानी है। दुकान मालिक भी कई महीनों से देख [illegible]
है, "मालिक न बात हुई निवारण ?"

फैसला हो गया। अच्छा ही हुआ। अब दुलाल साहा भी नहीं बुलाएगा। निताई बसाक भी आकर परेशान नहीं करेगा। किशनगंज बाजार की ओर अब वह जाएगा ही नहीं। निवारण मसहरी लगाकर लेटने का ही था। अचानक ऊपर से मालिक की आवाज सुनकर चौंककर उठ बैठा।

' निवारण, ए निवारण !"

खड़ाऊ की आवाज नीचे की ओर ही आ रही थी। निवारण जल्दी से बरामदे में आकर जीना चढ़ने लगा।

' आया मालिक !"

मालिक ऊपर जीने के पास ही खड़े थे, 'यह पूड़िया तलने की महक कहां से आ रही है निवारण ?'

' जी, दुलाल साहा के घर से।"

' मेरा खयाल ठीक ही था। लगता है दुलाल साहा ने आजकल पूरे मुहल्ले में ढिंढोरा पीटकर पूड़िया खाना शुरू किया है। बड़ा बेअदब हो उठा है।"

निवारण ने कहा, "जी मालिक, बात ऐसी नहीं है आपका निमंत्रण देने आए थे दुलाल बाबू। आपकी तबीयत ठीक नहीं है कहकर आपसे मुलाकात नहीं करवाई।

ठीक ही किया। बेअदब लोगों से मैं मुलाकात करना भी नहीं चाहता। लेकिन यह निमंत्रण था किस बात का ?"

' जी, साहा बाबू दीक्षा ले रहे हैं। गुरुजी पधारे हैं, उसीका उत्सव है पांच लोगों को निमंत्रण करके खिला रहे हैं।'

मालिक मुसकराए या भृकुटी चढ़ाई समझना मुश्किल था फिर बोले, बेअदब की और दीक्षा ! मुख में राम बगल में छुरी !"

कहकर वापस लौट रहे थे। लेकिन फिर कुछ सोचकर रुके। बोले, ' लेकिन इस तरह ढोल पीटकर लोगों को खिलाने की क्या जरूरत है ? पैसे की गर्मी दिखलाने के लिए ? गर्मी दिखलाए बगैर नींद नहीं आती ? नीच कहीं का "

' जी नहीं मालिक, साधु महाराज पहुंचे हुए महापुरुष हैं। सुना है, एकदम देवतुल्य हैं। इनके दर्शन करना बड़े भाग्य की बात है।"

मालिक चिढ गए।

"अच्छा-अच्छा बन्द भी करो अपना व्याख्यान। महापुरुष को किशनगज मे और कोई आदमी नही मिला ठहरने के लिए दुलाल साहा का ही घर बचा था? चमार कहीं का! अरे, सब पैसे की गर्मी है, पैसे की गर्मी। किशनगज के लोगो को दिखलाया जा रहा है—देखो, मेरे पास इतनी दौलत है। मैं क्या समझता नही हू? बेवकूफ समझ रखा है मुझे?"

कहते कहते अपने कमरे मे जाकर बिस्तरे पर पड गए। पडते ही हाफने लगे। बडी बहू चुपचाप बैठी थी। उनसे बोले 'जरा जगला तो बन्द करना बडी बहू, कैसी बदबू आ रही है घी की। नाक सडी जा रही है। लगता है, जैसे कही चमडा जल रहा है।

वैसे आज सुबह से ही दुलाल साहा के घर उत्सव शुरू हो गया था। दुलाल साहा के घर इस तरह के उत्सव हुआ ही करते हैं। बडे लडके की शादी के वक्त भी किशनगज के हर आदमी को निमन्त्रित किया गया था। यह दुलाल साहा का नियम है।

दुलाल साहा कहता अरे दो रोटी ही तो खाएगा, उसमे क्या है?"

दुलाल साहा की ताकीद थी कि घर पर आने वाले को बगैर खाना खाए जाने नही दिया जाएगा। अतिथि नारायण होता है। घर आए खाली पेट विदा कर देने से नारायण असन्तुष्ट होते हैं। दिनो दिन भगवान और ब्राह्मणो के प्रति दुलाल साहा की भक्ति बढती जा रही है। साथ ही वह गोलमटोल भी होता जा रहा है। एक दिन था जब किशनगज के व्यापारियो के आसपास मडराता फिरा करता था। चुल्लू भर पानी पीकर पेट भरना पडता था। किशनगज के पुराने लोगो ने वे दिन अपनी आखो से देखे हैं। वट के पेड के नीचे सोया करता था। कितनी ही बार रास्ते के कुत्तो के साथ रात गुजारनी पडी है दुलाल साहा को। भूख क्या होती है, तभी पता चला। घर-बार क्या होता है, यह भी पता चला। लेकिन दुलाल साहा को आज भी वह सब याद है। दुलाल साहा कहा करता है, याद नही रहेगा? जो याद नही रखता, वह महापापी है

नक म भी उसकी जगह नहीं ह—वह नराधम ह !"

दुलाल साहा कचहरी के बाहर बेंच पर बैठा माला जपता और बीत दिनों के किस्से सुनाता। बस अब किस्सा छोड़कर करने को है भी क्या ! कामकाज का भार निताई बसाक न ले रखा है। निताई बसाक भी ठीक वक्त पर आ जुटा। निताई बसाक भी उसीकी तरह एक-एक पैसे का मुहताज दर दर की ठोकरें खाता फिरता था। शर्म हया जैसी कोई चीज नहीं रह गई थी निताई बसाक के लिए। इस तरह स निताई बसाक ने महाजनी के कारबार में दुलाल साहा को लगाया था।

कुछ भी नहीं। सिर्फ तीस रुपये की पूजी थी दुलाल की। किशनगंज म जितने व्यापारियों की नावें आतीं दुलाल साहा हर एक स एक आना लेता। एक महीने बाद वही व्यापारी फिर स माल लेकर किशनगंज आता तो तब फिर एक आना। महीने म एक आना ऐसा क्या है ?

यह सूझ निताई की थी। हर किसीसे कहता, 'हरिसभा के लिए चन्दा है।

हरिसभा का क्या होगा ?

'अरे आप लोग यहां आते हैं। सारे दिन धन्धे के लिए दौड़ धूप करते हैं। रात के वक्त थोड़ी देर भगवान का नाम होगा। परलोक के लिए कुछ हो जाएगा। पाप क्षय होगा।"

कोई कोई कहता भी, 'ऐसा पाप ही क्या करते हैं हम लोग ! अपनी जान म तो कोई पाप करते नहीं।

'अजी कहते क्या हैं ? पाप नहीं करते ! अनजाने म हम लोग कितने मक्खी-मच्छरों को कुचल डालते हैं। कितने निरीह जीव जन्तुओं को खा डालते हैं उसका ठीक है कुछ ? अभी उस रोज खिड़की बन्द करते चपेट में आकर बेचारी छिपकली दबकर मर गई—यह क्या पाप नहीं हुआ ? अरे इस दुनिया मे जिन्दा रहना भी तो पाप ही है।

दुलाल साहा की युक्ति अकाट्य होती थी। तो इस तरह हरिसभा के नाम से उगाही चन्दे की रकम ही बाद म दुलाल साहा और निताई बसाक के धन्धे का मूलधन बनी। सुबह नींद खुलते ही दुलाल साहा चबैना चबाकर पानी पीने के बाद घाट आ पहुंचता। नाव देखते ही झोली

फैलाकर बढ जाता, "चन्दा लाइए।"

सिफ एक आने की तो वात है। व्यापारियो के कितने पैसे ऐसे ही निकल जाते हैं। पुलिस को ही कितना भरना पडता है। माल खराब हो जाता है। चूहे-बिल्ली ही कितना खा डालते हैं। बेकार वक्त खराब किए बगैर व्यापारी एक आना रख देते उसके हाथ पर। कभी कभार पूछ भी लेते, 'तुम्हारी हरिसभा का क्या हुआ ?'

दुलाल साहा कहता, "अब और देरी नही है।'

इटा का क्या होगा ? छप्पर डालकर भी तो काम चल सकता है।'

दुलाल साहा जीभ काटता है, "सो कैसे हो सकता है ? भगवान के नाम पर अश्रद्धा कैसे कर सकते हैं ? जो करना है, हम लोग ठीक से ही करेंगे।'

हरिसभा का काम अच्छे से करना था। इसलिए दर होती रही। जितनी देर हो रही थी, चन्दे की रकम भी उतनी ही बढ रही थी। और चन्दे की रकम के साथ दुलाल साहा और निताई बसाक के स्वास्थ्य म भी उन्नति हो रही थी। हरिसभा का काम और भी तेजी और व्यवस्थित रूप मे करने के लिए मालिक की जमीन पर झोपडा बनवाना पड़ा। मालिक प्रेसिडेंट बनाए गए। दुलाल साहा और निताई बसाक सक्रेटरी हुए। रबर स्टैंप बना। उन दिनो मालिक के घर आना जाना लगा ही रहता था। मालिक के पाव छुए बगैर दुलाल साहा और निताई बसाक पानी तक नही पीते थे।

ये बातें पन्द्रह साल पहले की हैं।

एक बार सामने पाकर मालिक भी जैसे छोडना नही चाहते थे। गौडेश्वर के पुराने ऐश्वय की कहानी, धमदास देवशमन की कहानी एक सौ आठ कमल के फूल की कहानी हाथी पर राजमहल जाने की बात—सब कुछ विस्तार के साथ सुनाते। आखिर मे कहते 'तुम लोगो को जब जिस चीज की जरूरत हो, कहना मैं सारी व्यवस्था कर दूगा।'

एक तरह से आज जहा दुलाल साहा का मकान है, वह जगह भी मालिक की दी हुई है। हरिसभा के लिए ही मालिक ने यह जमीन दी थी।

मालिक कहते ' अरे धर्म लोप हो रहा है। इसीलिए तो आज हम लोगों का यह हाल है।

दुलाल साहा धोती का छोर गले में डाले परम विनीत भाव में हाथ जोड़े बैठा रहता। फौरन हां में हां मिलाते हुए कहता, ' बात आपने सोलह आने सच कही मालिक !"

निताई बसाक कहता, इसीलिए हम दोनों ने धर्म की सेवा करने का व्रत लिया है मालिक !"

मालिक पूछते, ' कितना चन्दा उगाहा ?"

दुलाल साहा कहता, ' हर एक से एक आना करके मिलता है। कितना होगा ? आज तक कुल मिलाकर पचहत्तर रुपये सात आने हो पाए हैं।

इतना कम ?"

"इतना भी क्या कोई देना चाहता है, जोर जबरदस्ती करके किसी तरह इतनी रकम भी जमा हो गई यही कौन कम है ?'

इसके बाद ही निवारण की बुलाहट होती। निवारण से कहते, 'इन लोगों को कुछ रुपये देने हैं। तहवील से दे दो।'

इस तरह मालिक ने कितनी रकम हरिसभा के लिए दे डाली, उसका हिसाब मालिक को भले ही मालूम न हो, लेकिन निवारण के पास पूरा हिसाब है। सिर्फ रुपये पैसे ही नहीं जमीन भी बेची है हरिसभा के लिए। किशनगंज के व्यापारियों के नाम अपने हाथ से सिफारिशी चिट्ठी लिखी सो अलग। किशनगंज के हर एक किसान कुली मजदूर तक ने हर महीने एक-एक आना करके भरा है। आखिर में जाकर हरिसभा बनी भी। पांच बीघे जमीन के एक कोने में एक झोपड़ा। सो भी ऐसा कुछ खास नहीं। कुछ रोज भजन कीर्तन भी हुआ आठों पहर और एक बार चौबीस पहर भी। लेकिन उसी पैसे को चुपचाप सूद में लगाकर दुलाल साहा इस तरह मालदार आदमी हो जाएगा, मालिक कभी सोच भी नहीं पाए थे। दुलाल साहा जिन दिनों किशनगंज की हरिसभा के लिए चन्दा उगाहने में लगा रहता, निताई बसाक चन्दा इकट्ठा करने के बहाने नगद रुपये लेकर कलकत्ता जा पहुंचता। वहां पहुंचकर पता

नही कौन-मा गुताडा बैठाकर उसने जूट की दलाली करके रातारात बडे आदमी बन बैठने का सुयोग ढूढ निकाला, और मालिक को भनक तक न पडी। जब मालूम हुआ, काफी देर हो चुकी थी। और इस तरह एक राज किशनगज के बाजार मे दुलाल साहा की जूट की आढत शुरू हो गई। बाद मे पता नही कहा से दोनो के बाल-बच्चे भी आ गए। पाच बीघे जमीन पर पक्की हवेली खडी हो गई। पक्का दालान बना। किशनगज के लोगो ने एक रोज अचानक देखा दुलाल साहा और निताई बसाक लखपति हो गए हैं।

मालिक ने एक रोज दुलाल साहा को बुला भेजा।

निवारण वापस लौट आया। उसने बतलाया, "साहा बाबू पूजा कर रहे हैं। शाम के वक्त आएगे।'

लेकिन शाम के वक्त भी दुलाल साहा नही आया। निताई बसाक को भी बुलवाया था। लेकिन वह भी नही था। उसी रोज कलकत्ता चला गया था। इस तरह दोनो ही उनका अपमान करते। इसी तरह दिन, महीने और साल गुजरते गए। और मालिक निवारण की जबानी दुलाल साहा की बढोतरी का समाचार सुनते रहते। दूसरी मजिल के जगले से दुलाल साहा का दालान दिखलाई देता था इसलिए उन्होने कील ठोककर उसे बन्द कर दिया था। लेकिन जगले म कील ठोकने से क्या होता, दुलाल साहा के बारे मे कोई बात छुपी नही रहती। दुलाल साहा की आढत मे बही-खाता बदलने पर शहनाई और नौबत बजती। दुलाल साहा के घर बारह महीने मे तेरह उत्सव-त्योहार होते थे। गाव के हर घर मे न्याता जाता। देखते देखते दुलाल साहा और निताई बसाक की गिनती किशनगज के नामी गरामी लोगा मे होने लगी। सब कुछ मालिक के देखते-देखत घटित हुआ। और मालिक! मालिक इन पन्द्रह सालो म धीरे-धीरे नीचे उतरते रहे। उनके घर के चारा ओर झाड झखाड उग आए हैं। इकलौता लडका लापता हो गया है पुत्रवधू भी चल बसी। सिर्फ हरतन बाकी बची थी—मालिक की तीन साल की पोती। वह भी एक रोज चली गई।

आखिर मे एक रोज अचानक दुलाल साहा आया था।

दुलाल साहा अब काफी भारी भरकम हो गया था। नई मोटर मे बैठकर दुलाल साहा और निताई बसाक मालिक के चंडीमंडप म आए। आते ही दोनो मालिक के पांव छूने के लिए बढे लेकिन मालिक ने उसस पहले ही पाव हटा लिए।

मालिक ने कहा था, खबरदार, पर वर छूने की कोई जरूरत नही है। बेअदबी करने के लिए और कोई जगह नही मिली ?'

दुलाल साहा न सिर झुकाकर कहा था 'आप जो कुछ भी कहग मुझे सब मजूर ह आपके आग सिर झुका दिया है।

कहकर दुलाल साहा ने सचमुच सिर झुका दिया।

मालिक न कहा 'अब की बार कौन सी चाल है ? फिर कोई हरि-सभा बनानी है क्या ?'

जी आप बडे है जो भी चाहे कह—आपके और दूसर दस लोगो क चन्द से ही हरिसभा हुई। यह बात मैं आज भी हर किसीके आगे कहता ह। कहता हू कि मालिक की कृपा के बगैर यह धन दौलत घर बार गाडी कुछ भी नही होता।'

मालिक न कहा था तुम बेहया और ढोगी हो, इसीलिए बातें बना रह हो। दूसरा कोई होता तो उसकी जीभ ही गिर गई होती।

निताई बसाक इतनी देर स पास ही चुपचाप खडा था। उसन कहा सब कुछ आप ही की कृपा का फल तो है मालिक, फिर आप नाराज क्या हो रहे है ?''

नाराज नही होऊगा ? कहत हो कि नाराज क्यो हो रहा हू ? बेअदब कही के! सिद्धेश्वर को तुम लोगो ने नही छीन लिया मुझसे ? वह बात तक नही करता था। किसके सिखलाने से बोलो ? मेरी इकलौती पोती मर गई लेकिन मैं उसके लिए रो भी नही पाया। जानते हो, क्या ?''

दुलाल साहा ने कहा य बातें तो अब पुरानी पड गइ मालिक, जो होना था हो गया इतने दिन बाद फिर से उन बातो को क्या उठा रह है ?'

'क्या नही उठाऊगा ? तुम समझते हो सब कुछ भूल गया हू मैं ?

मेरा पूरा घर बिगाडकर ज्ञान बघारने आए हो मेरे पास ! शर्म नही आती तुम्हे ! गांठ मे दो पैसे हो गए हैं तो समझते हो, सारी दुनिया जीत ली है ?'

निताई वसाक ने कहा, 'उन बातो को छोडिए भी मालिक ! आज दुलाल के लडके की शादी है जब तक आप आकर खडे नही होते, कौन सम्हालेगा ? हम लोगो को तो आप ही का भरोसा है।'

' वस-वस, वहुत हुआ।

कहकर मालिक जोर जोर से हाफने लगे। फिर निवारण से बोले "निवारण तुम इन लोगो को बतला दो हम सारस्वत ब्राह्मण हैं और सारस्वत ब्राह्मण नीच जाति के लोगो के घर दावत खाने नही जाया करते। खाने वाले ब्राह्मण दूसरे होते हैं। किराये पर मिल जाएगे बाजार मे।"

कहकर मालिक उस रोज उन दोनो के सामने ही खडाऊ खट-खटाते सीधे दोतल्ले पर अपने कमरे मे चले गए। उस रोज भी हवा के साथ पूडिया तलने जाने की महक आई थी। घी की महक से मालिक को उस रोज भी तकलीफ हुई थी। हरिसभा के नाम पर लोगो को ठगकर जो लोग चदा इकट्ठा करके पैसा बनाते हैं उनके पैसे को धिक्कार है उनके जीवन को धिक्कार है, ऐसे लोगो के साथ मालिक का कोई वास्ता नही है।

उस रोज भी वडी बहूजी चुपचाप बगल मे लेटी थी। मालिक ने चिढकर कहा था जरा जगला तो बद कर दो वडी बहू ! लगता है जैसे चमडा जलने की वदबू सी आ रही है।'

खैर मालिक वास्ता रखें या न रखें दुलाल साहा को इसमे कोई फर्क नही पडता। निताइ बसाक का भी कुछ नफा-नुकसान नही होता। लोग हरिसभा की बात भूल चुके हैं। इच्छामति के किनारे जहा दुलाल साहा झोली फैलाए चदा मागता फिरता था वही अब दुलाल साहा की लम्बी-चौडी जूट की आढत है। वे ही व्यापारी आज दुलाल के आगे हाथ वाधे खडे रहते हैं। पूरे किशनगज के जूट के बाजार को दुलाल साहा ने अपनी

मुट्ठी म कर लिया है। लेकिन चेहरा पहनावा, चाल-चलन या व्यवहार म कुछ भी फर्क नहीं है। आज भी रोज सुबह दुलाल साहा घाट जाता है। साथ मे एक नौकर जाता है गमछा और बाल्टी लेकर। पत्थर सीढ़ी के ऊपर बैठकर पूरे बदन म तेल-मालिश होती है। जाडा हो, गर्मी हो या बरसात जो भी हो सुबह चार बजे दुलाल साहा का नियम स घाट पर देखा जा सकता है। गाँव म लोग अभी साल ही होते तो इतनी सुबह दुलाल साहा वहा बैठकर अच्छी तरह स तेल-मालिश करता। इसके बाद बाल्टी म पानी लेकर अपने हाथ स रगड-रगडकर सीढ़िया को धोता। सब कुछ अच्छी तरह धो पोछकर दुलाल साहा का नहाना होता, पूरे एक घटे। तब तक लोगो का आना शुरू हो जाता। व्यापारी आएगे। किशनगज बाजार म दुकानदार जाएँगे तब तक दुलाल साहा का स्नान-ध्यान हो लेता।

पालागन साहाजी!'

जीते रहो। कौन मुकुन्द?

झुटपुटे म ठीक से दिखलाई नहीं पडता। लेकिन दुलाल साहा आवाज पहचानता है। एक बार पहचान पडते ही पूरी तरह पूछ-ताछ करता है दुलाल साहा।

पूछता तुम्हारे जमाई की क्या खबर है मुकुन्द? चिट्ठी पत्री लिखता है? अरे हा तुम्हारी गाय ब्यायी या नहीं? हरि हरि, अरे हर कोई सुखी रहे इसीम तो सुख है मुकुन्द, हरि छोड किसीका भरोसा नहीं है। सुख दुख के भवसागर से अकेला हरि ही तारणहार है। अच्छा तो चलू—हरि हरि।"

हा तो दुलाल साहा न झूठ नहीं कहा था। भवसागर के तारणहार हरि ही हैं यह बात दुलाल साहा ने अपने जीवन स चरितार्थ कर दिखाई थी। नहीं तो क्या था और क्या है! वह हरिसभा आज भी है लेकिन दुलाल साहा की चौहद्दी मे वहा आज दुलाल साहा की गायें बधती है।

दुलाल साहा कहता 'तुम लोग नहीं समझोगे। तुम लोग सोचते हो, दुनिया मे पैसा ही सब कुछ है अरे पैसा ही सब कुछ होता तो दिन

भर हरि-हरि क्या करता ? इसके वगैर भी तो काम न चलता ।

लोग कहते हैं जी आप ठहरे भगत आदमी । आपके साथ किसकी बराबरी हो सकती है ?'

दुलाल साहा का मिजाज खराब हो जाता । कहता 'फिर वही बात । भगत होना क्या इतना आसान काम है ? भक्ति भक्ति चिल्लाने से ही क्या भक्ति आ जाती है ? भक्ति के लिए कष्ट उठाना पड़ता है । भक्ति क्या पेड़ों में पकती है कि जब जी चाहा तोड़ा और खाया ? भक्ति के लिए मशक्कत नहीं करनी पड़ती ? अगर यही होता तो हरिसभा शुरू होने के बाद कामकाज छोड़कर मैं हरिनाम ही करता होता । हरिसभा बंद क्या कर दी ? हरविलास कहो तो तुम्हीं कहो हरिसभा क्या बंद कर दी मैंने ?

हरविलास ने कहा जी अपनी गायें बांधने के लिए ।''

घत । तेरा हरविलास नाम बेकार है । गायें क्या मैंने दूध पीने के लिए रखी हैं ? गाय का दूध क्या मैं बाजार से नहीं मोल ले सकता ? मेरे पास पैसे नहीं हैं ?

जी सो तो नहीं कहा मैंने ।

बुद्धू कहीं का ।''

पास ही कान्त बैठा था । उसने कई बार सुनी है यह बात । जवान भी उसे मालूम है । उसने कहा अजी वो तो साहाजी ने गो सेवा के लिए रख छोड़ी है ।''

दुलाल साहा मुसकराता हुआ कहता तू भी तो गंवार आदमी है । लेकिन तुझे मालूम है, और इस हरविलास को नहीं मालूम । अरे गो सेवा और हरिनाम सुनने में भी क्या कोई फर्क होता है बेवकूफ ! अच्छा निकाल, कितना लेकर आया है निकाल ।'

एक ओर धर्म चर्चा चलती तो साथ में महाजनी का धंधा भी । सूद के हिसाब में आने पाई लेकर झिकझिक होती । यह तो दुलाल साहा की परोपकार-परायण वृत्ति है । कितने गरीब दुःखीजन बेचारे पैसे के अभाव में अपने थाली-लोटा तक बेचकर दर-दर की ठोकरें खाते फिरते हैं । उन लोगों की भलाई के लिए ही यह महाजनी का धंधा करना पड़ रहा है ।

एक तरह से इस प्रथा कहना ही भूल है। अन्याय है।

दुलाल साहा रोज मुह अधेरे ही उठकर नदी जाकर अपना हाथ घाट धोकर नहाना शुरू करता है। बाल्टी और गाड़ू लिए नौकर ऊपर खड़ा रहता है। नहाने के बाद भीगे कपड़ा म ही रास्ते भर गगास्तोत्र का पाठ करते करते साहाजी घर आते। तब तक नई बहू पूजा का जुगाड़ करके तैयार रहती। घर पहुंचकर दुलाल साहा को कुछ भी कहने की जरूरत नही पडती। नहा धोकर रेशमी धोती पहन भीग वाला नई बहू पहले से ही पूजा का सारा इतजाम कर रखती।

शुरू-शुरू म दुलाल साहा कहता तुमने क्या तकतीफ की फिजूल म ? सिधू तो था।'

नई बहू इस बात का कोई जवाब नहीं देती। ससुर के पूजा पर बैठने और उसके जलपान की व्यवस्था करने के बाद उसकी छुट्टी होती थी। सिर्फ ससुर ही क्या पूरे घर म हर किसीका ख्याल रखने वाली एक नई बहू ही थी।

दुलाल साहा कहता, अब नई बहू की ही बात लो इस नई बहू क बगैर इस घर म पत्ता भी नहीं हिल सकता यह भी तो हरि की कृपा से ही हुआ। हरि की कृपा के बिना क्या यह नई बहू मुझे मिलती ? क्या र कान्त बोल न—मिलती मुझे ऐसी बहू ?'

कान्त कहता 'अरे साहाजी वो कोई मनुष्य थोड़े है वो तो साक्षात् लक्ष्मी हैं लक्ष्मी।

एक तरह स नई बहू के पाव रखने क बाद म ही दुलाल साहा के घर लक्ष्मी का वास शुरू हुआ। मकान पहले स ही था पैसा भी था। लेकिन गृहस्थी म सुख शांति नाम की जो चीज है, वह नई बहू के साथ ही आई। नई बहू क आने के बाद ही स दुलाल साहा की बढोतरी हुई है। तीन मकान बनवा लिए है। धान की मिल लगाई है। रिहाइशी घर क पास लम्बा-चौड़ा पक्का दालान बनवाया है। अब एक शुगर मिल लगाने की इच्छा है। पेंपुलवेड क पास वाली जाहर शुगर मिल के लिए बड मौके की जगह रहेगी। पानी, कोयला स्टेशन सब कुछ पास ही है। किसी बात की असुविधा नहीं होगी। मालिक के पास खुद कितनी बार

ज चुका है। निवारण को भी कितनी बार बुला चुका है।

उससे कहा 'अब तो तुम्हारी भी उम्र हुई निवारण, अब कुछ बाद के लिए भी सोच लो।"

निवारण कहता अरे साहाजी मुझे अब किसके लिए सोचना है!

दुलाल साहा ने कहा 'सोचते हो हमेशा ऐसे ही चलेगा? अरे मुझे ही देख लो न, मैं चाहूं तो क्या रईसी नहीं कर सकता? चाहूं तो मैं भी पैर पर पैर चढाकर आराम से गद्दी के ऊपर पड़ा रह सकता हूं। मुझे क्या पड़ी है कि हाथ में झाड़ू लिए सुबह सुबह घाट पहुंचू? यह सब किसके लिए करता हूं? तुम्हीं कहो किसके लिए करता हूं?

'जी, परलोक के लिए!"

तो फिर? इसीसे समझ लो। मुझे क्या है? मुझे क्या जरूरत है पैसे की? अकेला मैं कितना खाऊंगा? शुगर मिल हो जाने से भी तुम्हीं लोगों का फायदा है। देश के दस जनों का फायदा होगा। इस देश के लोग बड़े गरीब है। एक वक्त मैं भी गरीब था, गरीबों का दुःख मैं नहीं समझूंगा तो कौन समझेगा! तुम्हारे मालिक समझेंगे?

जी, मालिक की बात छोड़ दें।'

तब समझ लो, शुगर मिल से लोगों का ही फायदा है। कितने गरीबों को काम मिलेगा दो जून खाने को मिलेगा पहनने को मिलेगा, गरीबों का दुःख देखकर मेरी आंखें भर आती है निवारण!'

निवारण ने कुछ नहीं कहा। चुप ही रहा।

दुलाल साहा ने कहा, "अरे अपनी ही बात लो पिछले पन्द्रह साल से तुम्हें देख रहा हूं पहले तुम्हारा क्या चेहरा था और अब क्या हो गया है? ऐसा कौन सा लालच है कि मालिक के यहां पड़े हो? खाने को मिलता है भरपेट? और तनख्वाह वगैरह?"

निवारण ने फिर भी कोई जवाब नहीं दिया।

दुलाल साहा कहता रहा, 'खैर जाने दो तुम्हें खाने को मिलता है या नहीं मिलता, तनख्वाह मिलती है या नहीं मुझे क्या पड़ी है इन सब बातों में जाने की। तुम्हारा मामला है तुम समझोगे मैं कौन होता हूं? मैं कुछ भी नहीं हूं। लेकिन बात असल में यह है कि दूसरे का दुःख

मुझसे देखा नही जाता। जी कमजन लगता ह। फिर मुझस चुप नही रहा जाता। नगता हैं आखिर तुम भी ता इमान हा बाल-बच्चे भले भी न रहे फिर भी आदमी का अपना सुख दुख जमा भी ता कुछ हाता ह। इसीस वह रहा था कि पंपुनबेड के पास वाली आहर की बात तय करा दत तो तुम्हार लिए भी कुछ हा जाता लकिन तुम ता "

वावा !

अचानक नई वहू आ पहुची।

दुलाल साहा ने कहा बस उठ ही रहा था बेटा, निवारण स उस पपुनबेड के पास वाली आहर क बार म कह रहा था। अर मेरा क्या ह यहा क लागा का कुछ भला हो जाता अगर मिल हा जान स।

नई बहू की आर देखकर निवारण उठ खडा हुआ, 'मैं चलू साहाजी, आपको नाहक दर हा गई।

दुलाल साहा न कहा, मरी बात ध्यान मे रखना निवारण कहो ना एक वार निताई को फिर भेज दूगा मालिक के पास।

अचानक नई बहू बोल उठी इतन अपमान के बाद भी काका का भेजेंग मालिक क पास ? फिर अपमान हुआ तो ?"

दुलाल साहा न कहा ' धम के मारग म बाधा ता हाती ही ह बटा थाडे से मान अपमान के लिए धम ता नही छोडा जा सकता ह।

लेकिन आछे लोगा स दूर रहना ही क्या ठीक नही है बाबा ?

निवारण को वर्दाश्त नही हुआ। उसने कहा, मेरे सामन बूढे आदमी को बुरा भला ना ही कहती ता अच्छा होता बहूरानी ! उन्हाने ता कोई अपराध किया नही है !

नई बहू ने कहा देखिए अदर स सब कुछ सुना है मैंन, बाबा धम भीरु आदमी है इसीस इतना सब होन के बाद भी आपको बुलाकर भलमनसाहत का व्यवहार करत हैं मैं होती तो दूसरा ही व्यवहार करती।'

निवारण न कहा, तुम्ह सब कुछ मालूम नही ह बहूरानी ! तुम किशनगज म नई आई हो, इसीसे ऐसा कह रही हो। मालिक को मैंने बचपन से देखा है। अगर ऐसा ही होता तो इस हालत मे मैं उनके पास

नही पडा रहता।"

दुलाल साहा ने बात लपक ली। उसने कहा ' मैं भी वही कह रहा हू। बेकार वहा पडे पडे लात घूस क्यो खा रहे हो निवारण ? मैं डबल तनख्वाह देता हू चले आओ। यहा शुगर मिल खुलते ही और मोटी तनख्वाह मिलेगी।'

निवारण ने मुसकराकर कहा, ज्यादा लालच न दिखलाए साहाजी यह जीवन तो गया ही अब परलोक नही बिगाडना चाहता।'

'यही क्या तुम्हारा आखिरी फैसला है ?"

नई बहू बोल उठी ' आप अब उठिए भी बाबा, ऐसे गैरे आदमिया के साथ बात करके आप अपना मिजाज खराब न करें। निताई काका हैं ही। पॅपुलबेड के पास वाली आहर मे लाश कैसे रख पाते हैं देखती हू मैं।

कहकर नई बहू दुलाल साहा का हाथ पकडकर अदर ले गई।

निवारण वापस आ रहा था, तभी अदर कचहरी से कात ने पुकारा 'सरकार बाबू सुनिए जरा !'

निवारण ने अदर जाकर कहा क्या कह रहे थे कात ?"

"यही कि आप जैसा अहमक मैंने कोई नही देखा। अरे, ऐसा मौका कोई जाने देता है हाथ से !'

"कैसा मौका ? जरा ठीक से कहो न ?'

"कहता हू कि मालिक अब कितने दिन हैं, जो कुछ बाकी था वह भी जाने को ही है। यही तो वक्त है अपना हिल्ला बैठाने का।

निवारण ने उसी फीकी हसी के साथ कहा इतने दिन देखकर भी मुझे पहचाने नही कात ! हर आदमी क्या इस तरह इतजाम कर पाता है या करना चाहता है ? या कि हर किसीमे ऐसा करने की प्रवृत्ति ही होती है ?"

कहकर निवारण और नही रुका। धूप चढ आई थी। छाता खोलकर पैर बढा दिए।

जिस रात पूडिया तले जाने की महक से मालिक की नींद खराब

हुई, उससे पहले दिन एक और घटना हो गई थी।

किशनगंज के लोगों ने साधारणतः ऐसी घटना कभी नहीं देखी। कभी सुनी तक नहीं। दुलाल साहा जिस तरह मुंह-अंधेरे नौकर को लेकर इच्छामती जाता था नहाने के लिए, उस रोज भी गया था। हलका-सा अंधेरा था। सुबह नहीं हुई थी ठीक से। अचानक देखा, जैसे पीपल के पेड़ के नीचे कोई निश्चल समाधि लगाए बैठा है। देखते ही जैसे लगा, इतने रोज़ से दुलाल साहा सर्वान्तःकरण से इन्हींको खोज रहा था।

यह बात सुबह चार बजे की है। और दस बजते-बजते पूरे किशनगंज में हल्ला हो गया कि दुलाल साहा के घर साधु महाराज पधारे हैं। साहाजी उनसे दीक्षा लेंगे।

ब्लॉक डेवलपमेंट आफिसर सुकान्त नई रोशनी का लड़का है। कलकत्ते से नया-नया किशनगंज आया है। साइकल पर आफिस जा रहा था। अचानक दुलाल साहा के मकान के आगे भीड़ देखकर रुक गया।

"क्या बात है? भीड़ क्या है इतनी?"

सुकान्त को देखते ही निताई बसाक भागा-भागा आया, "आइए साहब, आइए, बड़े मौके से आए।"

"बात क्या है निताई बाबू, हुआ क्या है?"

"अरे आप लोग ठहरे साहब आदमी, आप इन बातों पर यकीन नहीं करेंगे। बात है भी बड़े आश्चर्य की। एकदम त्रिकालदर्शी हैं, भूत-भविष्य-वर्तमान सब साफ-साफ बतला देते हैं। मैं तो खुद ही ताज्जुब में पड़ गया। जो-जो बोला, एक-एक अक्षर मिल गया।"

बी० डी० ओ० सुकान्त के पल्ले बात नहीं पड़ी। उसने कहा, "कौन? कौन है वह आदमी? कहां से आया है?"

"आदमी नहीं है, एकदम पहुंचे हुए महापुरुष हैं। हिमालय से आए हैं और फिर वापस हिमालय ही चले जाएंगे।"

सुकान्त ने जेब से सिगरेट का पैकेट निकाला। एक सिगरेट सुलगाकर साइकल पर सवार होते-होते उसने कहा, "छोड़िए भी निताई बाबू, यह सब आप लोगों का सुपरस्टिशन है। अब और किसीसे आगे न कह बैठिएगा। लोग मजाक बनाएंगे।"

निताई बसाक ने साइकल का हैंडल पकड लिया, बाला, 'एसी बात नही है', आप सिर्फ एक बार चलकर उनका चेहरा देख लें। लगेगा नत्रा स जैसे ज्योति निकल रही है।"

बस रहने भी दीजिए कही आपकी उस ज्योति की चमक मे हाश-हवास खो बैठा ता मुश्किल हा जाएगी मैं चलूगा।" कहकर बी० डी० ओ० सुकान्त साइकल पर सवार होकर सिगरेट के कश खीचता चला गया। लेकिन इससे भीड पर कोई असर न पडा। जैसे जैसे दिन चढता जा रहा था भीड भी बढ रही थी। हल्ला हो गया था, दुलाल साहा के घर साधु महाराज पधारे हैं साहाजी उनसे दीक्षा लेंगे। दुलाल साहा की आढत म जितने लोग आए थे निताई बसाक ने उन सभीको निमन्त्रित किया था।

"आज रात को आना है हाजरा बाबू! गुरुदेव का प्रसाद है।'

नाव स आनेवाले व्यापारी रात नाव मे बिताकर सुबह-सुबह किशनगज स रवाना हो जात। एक पार्टी आती, एक जाती। इसी तरह दिन-भर चलता। कोई कोई किशनगज के बाजार मे इधर-उधर भी रात बिता लेत। लेकिन उस रोज सिर्फ हाजरा बाबू ही नही पोद्दार बाबू, पाल बाबू और दास बाबू सभीने प्रसाद पाया। खालिस देशी घी की तली गरम-गरम पूडिया, कुम्हडे की तरकारी, दाल दही और खीर सब कुछ। इस तरह खाना कोई नई बात नही थी। व्यापारी लोग इस तरह साहजी के यहा बहुत बार खा चुके हैं। किशनगज के लोग भी खाते। ब्राह्मणा के लिए अलग व्यवस्था हाती, शूद्रो के लिए अलग।

सुकान्त बाबू के बगले पर खुद निताई बसाक गया था निमन्त्रण देने।

सुकान्त ने कहा, "खाने मे हमे किस बात की आपत्ति होगी, लेकिन श्रद्धा भक्ति हम लोगो म नही ह। इन ढकोसलो का कोई असर नही होता हमपर।

"ठीक है, भक्ति न सही। लेकिन आपको आना है, दुलाल न बहुत बहुत करके कहलाया है। हा, और आपकी पत्नी भी आएगी।"

सुकान्त ना-नुकर करता रहा, निताई बसाक ने कहा, ' आपका कोई तकलीफ नही होगी, गाडी भिजवा दूगा आप आइएगा और साधु दशन

वरल चने आइएगा।'

सुकान्त ने हंसकर कहा "कुछ चढाना पड़ेगा आपके साधु महाराज को ?"

"अरे, नही नही। ऐसे-वैसे साधु नही हैं ये। एक पैसा नही छूते। फल-मूल छोड़कर कुछ भी नही खाते। दुलाल क्या ऐसे ही दीक्षा ले रहा है इनसे ?"

जरा रुककर फिर बोला "आपको यकीन नही होगा लेकिन जिसमे जो कह रहे हैं एकदम मिल रहा है। कब अमरूद के पेड़ पर चढ़ते वक्त गिरकर मेरा पांव टूटा सब बतला दिया। दुलाल की तो पूछिए ही मत सुबह से ही उनके पांव पकड़े बैठा है।

"क्या कहते हैं! दुलाल बाबू के बारे में भी कुछ कहा है क्या ?"

"कुछ क्या सब कुछ बतला दिया है। कुछ भी बाकी नही है। दुलाल से कहा है कि गुड टाइम शुरू हो रहा है। अब वह मिट्टी का हाथ लगाएगा और वह सोना हो जाएगी।'

सुकान्त ने कहा "मेरा हाथ देखकर मेरा फ्यूचर बतलाएंगे आपके साधु महाराज ? जन्म पत्री तो है नही मेरी।

"कहते क्या हैं! हाथ दिखलाने की भी जरूरत नही है। आपका चेहरा देखते ही आपका भूत भविष्य सटासट कह डालेंगे। आप जानना क्या चाहते हैं ?"

सुकान्त ने कहा "जरा अपने कन्फर्मेशन के बारे में पूछकर देखता! राइटर्स बिल्डिंग में इतनी अंधेरगर्दी चल रही है कि कुछ न पूछिए, मेरे ऊपर दबा दिए हैं, जबकि मैं सबसे सीनियर हूं।

निताई बसाक ने कहा "अजीब बात है! अच्छा प्रफुल्ल सेन से परिचय नही है आपका ?"

सुकान्त "नही तो। आप जानते हैं क्या ?

"अरे साहब, मेरा परिचय किससे नही है, यह पूछिए। मुझसे कहना था!'

"अच्छा अतुल्य घोष को भी जानते हैं आप ?

"अतुल्यदा ?'

निताई बसाक मुसकराने लगा। फिर बोला, "पहले कहना चाहिए था न मुझसे ! आपने भी गजब कर दिया मुझे एक बार भी नहीं बतलाया। कहा होता तो आपका काम कब का हो गया होता। सारे मिनिस्टर मेरी मुट्ठी में हैं। अब देखिए, शुगर मिल के लिए मशीन नहीं मिल रही थी, कलकत्ते से चिट्ठी लेकर सीधा दिल्ली चला गया, वहां पहुंचते ही आनन-फानन में काम हो गया।"

सुकान्त सेन खुद सरकारी अफसर है, लेकिन वह भी आश्चर्य में पड़ गया। बोला, "दिल्ली में किसे पकड़ा?"

निताई बसाक के चेहरे पर रहस्यमयी मुसकान खिल गई, बोला, "सब कुछ बताऊंगा बाद में, सब कुछ बताऊंगा। मेरे रहते आप किसी प्रकार की चिन्ता न करें। दिल्ली में किसे पकड़ना है, कहिए न! लालबहादुर शास्त्री, जगजीवनराम—कहीं भी काम हो। हर जगह की चाबी मेरे पास है।"

सुकान्त को जरा तसल्ली मिली। उसने कहा, "ठीक है, शाम को पहुंच जाऊंगा मैं।"

निताई बसाक उठ खड़ा हुआ। बोला, "तो मैं गाड़ी भेज दूंगा। आप लोग चले आइएगा। भोजन करने के बाद गाड़ी छोड़ जाएगी।" कहकर निताई बसाक चला गया।

रात काफी हो गई थी तब—पूड़िया तल जाने की महक से हवा भर उठी थी। दुलाल साहा के घर के सामने तालाब के किनारे जूठे केले के पत्तों का ढेर लग गया था। आसपास के गांवों से भी लोग आकर खा गए हैं। साहाजी को इतने रोज बाद गुरु मिला है। दुलाल साहा ने न्योता देने में कंजूसी नहीं की। सब हरि-इच्छा है। भवसागर में हरि को छोड़ किसीका कोई भरोसा नहीं है। लोग आते और गुरु महाराज के दर्शन कर चढ़ावा चढ़ाकर चले जाते। एक बड़े-से चांदी के थाल में रुपये, पैसे, नोट तथा चांदी-सोने के सिक्कों का अंबार लग गया था। गुरु महाराज मखमल की खोल चढ़ी डनलप की गद्दी पर विराजमान थे। रेशमी थान से गुरु महाराज को लपेट दिया है दुलाल साहा ने। गुरु महाराज पूरी तरह

निर्विकार है। दुलाल साहा को नौकर दोपहर जाने से ही गद्दा-गद्दा चमर डुला रहा था। माथे के ऊपर बिजली का पंखा सनसना रहा है लेकिन गर्मी नहीं घटती। धूप और धूनी से पूरा वातावरण धुआसा हो गया है। गुरु महाराज का चेहरा भी धुएं के मारे धुंधला हो गया है। अच्छी तरह से देखने पर पता चलता है दुलाल साहा साधु महाराज के पैरों के पास उलटा पड़ा है उसके दोनों हाथ महाराज के चरण जकड़े हैं।

गाम में यही चल रहा है। जो भी आता वही दुलाल साहा की भक्ति देखकर मुग्ध हो जाता। आखें भर आती हैं। बी० डी० ओ० सुकान्त सेन पत्नी के साथ आया था। पहले इतना विश्वास नहीं हो रहा था। हमेशा से नास्तिक प्रवृत्ति का रहा है साधु-संन्यासी या भगवान-वगवान के प्रति श्रद्धा नहीं रही। वह तो निताई बसाक पीछे पड़ गया इसीसे चला आया लेकिन आने के बाद साधु महाराज को देखकर और उनकी बात सुनकर आश्चर्यचकित रह गया।

आते वक्त न जाने क्या हुआ जेब में पाच रुपये का एक नोट निकालकर चादी के थाल में रख दिया।

बाहर निकलते ही निताई बसाक ने पकड़ा। बोला 'कहिए जो कह रहा था सब मिल गया या नहीं ?'

सुकान्त की पत्नी पास ही खड़ी थी। बोली 'सच बड़ी अद्भुत बात है!'

सुकान्त ने पूछा 'साधु महाराज क्या कल सुबह ही चले जाएंगे ?'

'जी हा सुबह चार बजे नाव में चढ़ा देना है। किसी भी तरह राजी नहीं हुए। एकदम विरागी हैं लोगों के बीच रहना ही नहीं चाहते। दुलाल वाकई बड़ा पुण्यवान है कि उसे ऐसे गुरु मिले। एक फोटो उतरवा ली है उसीको मढ़वाकर पूजा होगी।

दोनों को फिर से गाड़ी में बैठाकर घर पहुंचवा दिया निताई बसाक ने। उधर व्यापारी लोग भी दर्शन करके और भेंट चढ़ाकर प्रसाद पाने के बाद चले गए। हाजरा बाबू पोद्दार बाबू पाल बाबू और दास बाबू सभी बड़े खुश थे। दुलाल साहा भक्त आदमी हैं। भक्ति के बिना इतना अच्छा गुरु किसे मिलता है ? सभी कहने लगे, कलियुग में भक्ति ही एकमात्र

पथ है।

मालिक ने आने से पहले कई बार सोचा था। दुलाल साहा के घर जाने से पहले अच्छी तरह सोचना ठीक था। दुलाल साहा सिर्फ जूट का आढतिया ही नही था, मालिक के जीवन का मूर्तिमान दुष्ट ग्रह भी था वह।

निवारण ने भी कहा था, मालिक, आप वहा न ही जाते तो अच्छा रहता। दुलाल साहा आदमी भला नही है।'

दुलाल साहा अच्छा आदमी नही है, सो क्या मालिक नही जानते ? अच्छी तरह से जानते हैं। यह बात मालिक से ज्यादा अच्छी तरह इस किशनगज मे और कोई नही जानता।

फिर भी उन्होंने कहा, "नही निवारण, मेरे गए बगैर काम नही चलेगा—चल।'

"लेकिन इस वक्त, इतनी रात मे !"

मालिक ने कहा, ' कल तक तो तुम्हारे साधु महाराज रुकेंगे नही।"

बात ठीक ही थी। कल सुबह ही चले जाएगे। आज रात को गए बगैर कैसे होगा ! निवारण सोने की तैयारी करीब-करीब कर ही चुका था। अचानक मालिक को न जाने क्या हुआ खडाऊ खटखटाते ऊपर से चले आए।

बडी बहूजी उस रोज भी सरसो का तेल गर्म करके नाई थी। लेकिन मालिक को अचानक कमरे म न देख चौंक उठी थी। ऐसा तो नही होता। मालिक हमेशा खा पीकर अपने पलग पर आ लेटते हैं लेकिन आज अचानक यह व्यतिक्रम क्यो ? सो बडी बहूजी की समझ मे नही आ रहा था। बगलवाले कमरे मे आवाज सुनकर उन्हे और भी अजीब लगा।

' तुम यहा ?'

मालिक तब खुद ही सदूक खोल रहे थे। काफी पुराना सदूक था। मालिक के प्रपितामह कालिकेश्वर देवशर्मन् के जमाने का। बन्द ही रहता। सदूक का लोहे का पल्ला खोलते ही जैसे युग-युग से जमा करके रखा अतीत दात निकालकर हस पडता। ऊपर कुछ पीतल और कासे के

बतन। उनमें भी अधिकतर निकल चुके हैं। सिद्धेश्वर के विवाह पर बहुत-से बरतन निकले थे। बाद में पता नहीं कहां गायब हो गए। एक-एक कर सारे बरतन गायब हो गए। मालिक की नजरों के आगे आज भी वह सब घूम रहा था। विवाह तो अच्छा-खासा ही हुआ था सिद्धेश्वर का, लेकिन यही दुलाल साहा ! दुलाल साहा ही दिन रात भड़काया करता। न जाने कौन-सा मंत्र फूंक रखा था उसने ! जब देखें तब उन्हीं लोगों में जमा है।

एक रोज मालिक ने डांट दिया था। उस रोज भी काफी रात हो गई थी। सिद्धेश्वर अभी तक घर नहीं लौटा था। शादी हो गई। एक लड़की का बाप हो गया लेकिन आवारागर्दी नहीं गई सिद्धेश्वर की। उस दिन मालिक ने निवारण से कह रखा था कि सिद्धू के आते ही उन्हें खबर करे।

बहू से भी कह रखा था। नलहाटी के गगन चटर्जी की लड़की को बहू बनाकर लाए थे मालिक। मालिक ने कहा था तुम जरा कड़ी नहीं हो सकती बहूरानी ?

मेरा लड़का होकर इस तरह फालतू लड़कों के साथ घूमता फिरता है ! मेरे मुंह पर कालिख पोत दी है इसने। अब इस उम्र में यही देखना बाकी बचा है !

किसी किसी रोज निवारण से भी पूछते, अच्छा इन लोगों के साथ यह आखिर जाता कहां है ?'

निवारण को मालूम सब था लेकिन कहने की हिम्मत नहीं होती थी उसको। निवारण ने कितनी ही बार देखा है चडीतला के घाट पर दुलाल साहा और निताई बसाक के साथ बैठे छोटे बाबू चिलम फूंक रहे हैं। एक तरह से निताई बसाक ही छोटे बाबू का जिगरी दोस्त था। दिन भर कानाफूसी होती और फिर किसी रोज सारे दिन गायब। रात जब आधी बीत गई होती तो दबे पांव घर में घुसता।

'तुम जरा सख्त नहीं हो सकती बहूरानी ? ये सब के सब गुंडे हैं। दुलाल साहा निताई बसाक सब गुंडे हैं, एक-एक।'

बहूरानी ने कभी ससुर की ओर नजर उठाकर देखा तक नहीं पता नहीं ये बातें उसके कानों तक जाती हैं या नहीं। बड़ी बहूजी भी उससे

कुछ नहीं कहती।

मालिक बड़ी बहूजी से भी पूछते, 'अपना सिधू जाता कहां है? तुम्हें मालूम है कुछ? इतनी रात तक करता क्या है?'

बड़ी बहू कहती, 'मुझे तो कुछ भी नहीं मालूम।"

"तुम्हें अगर मालूम नहीं है तो लड़के की मां किसलिए बनी?"

इसके बाद जैसे मालिक पर सनक सवार हो गई। एक रोज दीवान-खाने के आगे ही बैठ गए। बोले, 'आज इस पार या उस पार'

क्रमश रात बढ़ती गई। मालिक बैठे रहे निवारण भी बैठा रहा। आखिर निवारण ने कहा 'आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है। आप जाकर आराम करें।'

मालिक ने कहा, 'तुम चुप रहो निवारण, अगर तुम्हारा लड़का होता तो पता चलता कि लड़के का बाप होने की क्या ज्वाला होती है! जिसके ऐसा लड़का हो उसे नींद आती है? उसे चैन मिल सकता है?'

इसके बाद कुछ भी कहने की हिम्मत नहीं हुई थी निवारण की।

रात के बारह बजे। एक बजा। मालिक वहीं जमे रहे। किसीकी एक न सुनी। बाद में भोर होते होते जैसे मालिक का सिर घूमने लगा। वहीं बैठे बैठे ही चक्कर खाकर गिर पड़े। अगले दिन डॉक्टर आए। पूरे छ महीने चारपाई पकड़े रहे मालिक। जब उठे तब सिर की गंज और भी बढ़ गई थी। छ महीने में जैसे दस साल के बूढ़े हो गए हों।

यह घटना भी पन्द्रह साल पहले की है।

पन्द्रह साल पहले जब दुलाल साहा और निताई बसाक किशनगंज में हरिसभा खोलने का हिसाब बैठा रहे थे, मालिक की सात बीघे जमीन पर दुलाल साहा अपना मकान खड़ा करने का मसूबा बांध रहा था, तभी से सिद्धेश्वर उन लोगों के गुट में जा मिला था।

एक रोज मालिक ने सिद्धेश्वर से सीधे ही पूछ लिया, 'तुम इन लोगों से क्या मिलते हो?'

मालिक के आगे कभी मुंह खोलने की हिम्मत नहीं हुई सिद्धेश्वर की।

बोलते, 'क्यों नहीं? इन लोगों से क्यों मिलते हो? ये लोग क्या

तुम्हारे साथ उठने बैठने के काबिल हैं ?'

सिद्धेश्वर इसपर भी कुछ नही बोला ।

मालिक ने फिर से बडी आवाज मे कहा, ' न जाने कहा के आवारा और गुडे जिनकी जात तक का ठीक नहीं, तुम्हारे यार-दोस्त हैं ! जो लोग तुम्हारे बाप का अपमान कर जाते हैं उनके साथ उठते-बैठते शर्म नहीं आती तुम्हे ? बेवकूफ कही के ! '

जरा रुककर फिर बोले अब फिर कभी उन लोगो से मिले तो घर से बाहर कर दूगा, याद रहे '

अचानक जैसे किसीने बारूद मे आग लगा दी। सिद्धेश्वर ऐसे ही सीधा-सादा और निरीह किस्म का रहा है। बचपन से ही कभी मालिक के आगे सिर उठाकर बात नही की। लेकिन उस रोज पता नहीं क्या हुआ। सिद्धेश्वर ने पहली बार सिर उठाया।

उसने कहा आपके घर मे रहना भी नही चाहता मैं।

क्या ? क्या कहा ? क्या कहा तुमने ?

सयाना जवान लडका लेकिन मालिक शायद उस रोज गुस्से के मारे होश हवास खो बैठे थे। बोले 'क्या कहा तुमने फिर से कहो जरा ?

मालिक जोर जोर से चीखकर ही बोल रहे थे। चीखकर बोलने की आदत है उनकी। चीख पुकार सुनकर अदर से बडी बहूजी चली आइ। बहू के कान तक भी आवाज गई। मालिक की चीख-पुकार से वह खाली मकान जैसे हाहाकार कर उठा। निवारण सामने होते हुए भी कुछ बोलने की हिम्मत नही कर पा रहा था।

आपके घर मे अब और रहना भी नही चाहता मैं।'

और साथ ही चटाक से चाटा पडने की आवाज हुई। मालिक के बूढे हाड का चाटा जवान सिद्धेश्वर की कनपटी सन्ना उठी।

निवारण डर से कापने लगा। बडी बहूजी भी कमरे मे आकर यह सब देख भौचक रह गइ।

मालिक थर थर काप रहे थे। कहने लगे, जितना बडा मुह नही, उतनी बडी बात ! घर मे नही रहना चाहता तो निकल जा। निकल जा मेरे घर मे

बडी बहूजी ने बात और बढने नही दी उस रोज। सिद्धेश्वर का हाथ पकडकर सीधे अदर चली गइ। इसके बाद जितने रोज सिद्धेश्वर घर मे था बाप से साथ बोलचाल बद रही। एक बार किसी तरह घर आता। वह भी काफी रात बीतने पर। कब आता कब सोता और कब खाता— मालिक को कुछ भी पता नही चलता। शुरू शुरू मे तो लडके का नाम तक जबान पर नही लाते थे।

काफी रोज गुजरने के बाद अपने को नही रोक पाए। बडी बहूजी से पूछा, 'सिधू कहा है ?

बडी बहूजी ने कहा घर मे ही है।

मालिक ने पूछा अभी भी उन गुडो से मेल जोल है ?'

मो तो नही मालूम।

इतना ही।

बाद मे लडके के बारे मे कुछ भी नही पूछते थे। लडका घर आता है सोता है खाता है कुछ भी नही। निवारण से मालिक कितने ही विषयो पर सलाह-मशवरा करते लेकिन भूलकर भी कभी सिद्धेश्वर का नाम जबान पर नही लाते थे।

धीरे धीरे दुलाल साहा और निताई बसाक दोनो ने ही मालिक के पास आना-जाना बद कर दिया। अपनी ही आखो सब देखते रहे अपने कान ही सब सुनते रहे। आखिर एक रोज सिद्धेश्वर वापस नही लौटा। रात बीती अगले रोज सुबह हुई। उसके बाद भी एक दिन गुजर गया। लेकिन सिद्धेश्वर वापस नही लौटा।

बडी बहूजी उस रोज आकर बोली सिधू के बारे मे पता नही लगाया तुमने ?'

'क्यो ? सिधू आया नही है ?"

'नही।"

कल किस वक्त गया था ?

'कल भी नही आया। आज तीन रोज से सिधू का पता नही है। रो रोकर बहू का बुरा हाल हो गया है।'

मालिक गुम हो गए। सिद्धेश्वर जो गया तो फिर कुछ भी पता नही

चला। विमीन खून कर दिया या सयासी हो गया, इतने साल बाद भी कोई खबर नही मिली। मालिक ने भी कभी उसके बारे में नही पूछा। कभी खोज करने की कोशिश भी नही की। गया है तो जाए जाने वाले का कौन राव पाया है !

पिछले सालो मे इतना सब हो गया लेकिन मालिक ने कभी हाय-तोबा नही की। चौसठ साल की उम्र में अनिष्ट योग था यह बात काशी के शिरोमणि वाचस्पति बतला गए थे। अब चौसठ के हो गए हैं व। अब और कौन-सी बाधा होगी ? और बाधा होने म भी क्या होना है? इसी किशनगंज मे इतना सब हो गया। यह दुलाल साहा और निताई बसाक ही तो असल म उनके जीवन की दो विकट बाधाए हैं ! ये दोनो ही ऐसा क्या बिगाड सके उनका ? सात बीघे जमीन डकार ली, डकार लें ! उन्हे धोखा देकर रकम ऐंठ ली, ऐंठ लें ! इससे वे कोई खास गरीब तो हो नही गए ! इसके अलावा भी देश में कितनी उलट-पलट हो गई। अंग्रेज चले गए हैं हिन्दू मुसलमानो के बीच मारकाट हुई, देश म अकाल पडा। पद्मा पार से लोगो ने आकर डेरा डाला। उन दिनो भी तो उन्होंने भरपेट खाया। उन दिनो भी उन्हे भीख नही मागनी पडी। आज भी वे अपनी छत के नीचे ही सो रहे हैं। अभी भी सडक पर तो नहीं खडा होना पड रहा है उन्हें !

लेकिन दुलाल साहा के घर साधु महाराज के आने की खबर सुनकर न जाने क्यो मालिक विचलित-से हो गए। निवारण से बार-बार पूछा था, तुमने कुछ सुना है निवारण ?

निवारण को खयाल नही था। उसने पूछा किस बारे म मालिक? '

सुना है जिसे जो बतलाया है सब मिल रहा है ? साधु की बात कर रहा हू। दुलाल साहा के घर जो साधु आया है।

निवारण ने कहा ' जी हा मालिक ! हूबहू मिल रही हैं। मैं बाजार गया था तो पान बाबू मिल गए एकदम ताज्जुब म पड गए। बाद मे सुकान्त बाबू से भी मुलाकात हुई !'

यह कौन है ? '

वो वह नया सरकारी दफ्तर खुला है न उसीके बडे साहब हैं।'

'वडे माहव माने ?"

निवारण ने कहा, जी माटी तनख्वाह हे ब्लॉक डेवलेपमट ऑफिसर है वहू को लिए घूमा करता है।'

'बहू को लिए घूमता है ! किसलिए ?

निवारण ने कहा 'जो कलकत्ते का लडका है न। यहा जगल म आ फसा है। क्या कर इसीसे कभी कभी किशनगज के बाजार चला आता है खरीदारी करने के लिए।'

'उसने क्या कहा ?'

निवारण ने कहा वह भी ताज्जुब कर रहा था। कह रहा था कि अपन मालिक से कहना कि एक बार साधु महाराज के दर्शन कर आए, साधु सब बतला देंगे, साहाजी को बडे अच्छे गुरु मिले हैं।"

'हा मैं तो जाऊगा ही उस चडाल के घर। उस नमकहराम क घर मेरी बला जाएगी।'

इसके बाद उठते वक्त शायद फिर स एक बार पूडिया तले जाने की महक नाक तक पहुची। नाक को हाथ स दबा लिया, फिर पूछा यह साधु जाएगा कब ?

निवारण ने कहा, 'जी, कल भोर होते ही चले जाएगे। पिछले दो रोज से खाना-पीना और उत्सव हो रहा है आज ही अतिम खाना है। आप जाएगे ?

फिर वही बात ! मैंने जिन्दगी म कभी पूडिया नही खाईं।'

कहते-कहते ऊपर अपने कमरे मे चले गए। खाना पहले ही खा चुके थे। बडी बहूजी अभी कमरे म नही आइ थी। बिस्तरे पर लेटते लेटते जैस कुछ सोचने लगे। जगला खुला था। उस ओर कितनी रोशनी हो रही है। काफी बडा उत्सव हुआ है। मालिक ने उस ओर देखा। फिर धीरे-धीरे बगल वाले कमरे मे गए और कमर से चाबी निकालकर लोहे के सदूक के सामने जा खडे हुए। काफी पुराना सदूक था। जितना पुराना सदूक ताला भी उतना ही पुराना। इतिहास की गर्द म जम सब ढक गया है। एक दिन केदारेश्वर भट्टाचार्य न यही सदूक खोलकर चादी के सिक्के निकाले हैं हीरे मोती निकाले हैं। तब यह सदूक अगर

हुआ था। जमीदारी से हुई आमदनी इसी संदूक में जाती थी। प्रथम विश्वयुद्ध के समय धान महगा हुआ, कीमतें बढ़ी सारा नफा इसी संदूक में गया। संदूक के सामने पहुंचकर कीर्तिश्वर थोडी देर खडे रहे। कहां के किस लोहार का बनाया संदूक आज जैसे अचानक बडा सजीव हो उठा। बचपन में मां रोज अपने हाथों इसी संदूक पर सिंदूर लगाती, फिर गले में आंचल लपेटकर प्रणाम करती। यह वही संदूक है। अभी कुछ ही दिन हुए एक और युद्ध हो गया। कहीं जर्मनी या अमरीका में। कीर्तिश्वर को उसके बारे में मालूम भी नहीं है। सिर्फ कभी कभी किशनगंज के ऊपर हवाई जहाज उड़ते देखे हैं। लोग कहते—बर्मा में बम फेंकने जा रहे हैं। युद्ध जहां भी हुआ हो, पहले की तरह एक पैसे की भी आमदनी नहीं हुई। एक पैसा भी नहीं गया संदूक में। जमीन बेचकर आया पैसा पेट भरने में खत्म हो गया। कीर्तिश्वर वहीं खडे एक-एक चाबी ढूंढ ढूंढकर ताले के गढे में लगाने की कोशिश करने लगे। अतीत के स्वप्न जैसे फिर से पंछी बन इस रात में उनके सिर के ऊपर मंडराने लगे।

'तुम यहां ?'

कीर्तिश्वर चौंक उठे। अचानक पीछे मुडकर देखा, बडी बहूजी थी। इसके बाद बिना किसी दुविधा के संदूक के अन्दर हाथ डाल दिया। जैसे ढेर-सी आशाएं एक-साथ वस्तु रूप होकर उनके हाथों से आ टकराईं। आशाएं जैसे उनकी मुट्ठी में बंधना चाह रही थी लेकिन अंधेरे में दिखलाई नहीं दे रही थी। अंधेरे में उन्हें पहचानना मुश्किल है। अंधेरे में उन्हें सिर्फ अनुभव किया जा सकता है। इसलिए हाथों में जितनी आ पाई उन्होंने भर ली। फिर झटपट संदूक का ढक्कन लगाकर कमरे से निकल आए।

बडी बहूजी ने पूछा, 'इन्हें लेकर कहां जा रहे हो इस वक्त ?'

कीर्तिश्वर ने जवाब नहीं दिया।

बडी बहूजी ने पीछे पीछे दरवाजे तक आकर फिर पूछा 'कहां जा रहे हो बतलाया नहीं ?'

कीर्तिश्वर तब तक पहुंच के बाहर निकल गए थे। उनके कान तक बात पहुंच पाई या नहीं, मां भी समझ में नहीं आया। सिर्फ उनकी

पहाऊ की आवाज सीढ़ी से उतरती नीचे बरामदे के पास दीवानखान के भीतर अस्पष्ट हो गई।

तो उस रोज इतनी रात गए निवारण को साथ लिए ही इस घर म आए थे। उत्सव-आयोजन जो भी हो इस वक्त देखकर लग रहा था सब खत्म हो चुका है। अच्छा ही हुआ। कोई देख नहीं पाएगा। मालिक आज अर्से बाद यहां आए। उन्हींकी दी जमीन है। दुलाल साहा को हरि-सभा के नाम पर दान म दे दी थी। लेकिन उस वक्त क्या मालूम था कि यहां इतना बड़ा प्रासाद खड़ा कर लेगा दुलाल साहा और प्रासाद बना-कर खुद डेरा जमा लेगा।

निवारण, पहले तुम ही अंदर जाओ, जाकर कहो कि मालिक आए हैं।'

आप यहां यहां खड़े रहेंगे वह क्या अच्छा दिखलाई देगा ?

मालिक खीझ उठे बोले 'जो कहता हू वही करो ना!'

इसके बाद निवारण के लिए खड़े रहना मुश्किल था। वह अंदर जाने लगा। मालिक बाहर स प्रासाद का ऐश्वर्य देखकर हतवाक् हो रहे थे। इलैक्ट्रिक भी ले ली है दुलाल साहा ने। इलैक्ट्रिक की रोशनी म सफेद पत्थर की सीढ़ियां चमचमा रही थीं। थोड़ी ही दूर पर जूठे केले के पत्ते कुल्हड़-सकोरे पड़े थे। वहां कुत्तों का झुंड जमा था। पूड़िया तलना शायद बंद हो गया है। अब महक उतनी नहीं रह गई है। जूठे केले के पत्तों की गंध ही महक रही थी चारों ओर।

लेकिन निवारण को ज्यादा दूर नहीं जाना पड़ा। सामने स शायद निताई बसाक आ रहा था। हाथों हाथ पकड़ लिया। जरा दूर स मालिक को देखते ही दौड़कर निताई बसाक ने पांव की धूल माथे लगाई।

'अरे बस-बस निताई, बस भी करो।"

लेकिन निताई बसाक मानने वाला नहीं था। बोला, "नहीं मालिक, पांव छुए बिना मैं यहां से उठनेवाला नहीं हू।'

आखिर मालिक ने निताई बसाक को दोनों हाथों से पकड़कर उठाया फिर बोले "सुना है दुलाल के यहां कोई साधु पधारे है ?"

"जी हां मालिक आप नहीं पधारे इसलिए दुलाल बेचारा कब स

दुखी हूं आज हम लोगों के लिए कितने सौभाग्य का दिन है।"

मालिक ने कहा अब पहले सा शरीर तो रहा नहीं निताई, इसी से बाहर निकलना नहीं हो पाता।

'आइए अंदर पधारें।"

निताई बसाक आहिस्ते आहिस्ते बड़े एहतियात के साथ मालिक को अंदर ले जाते-ले जाते कहने लगा, "यह मकान बनने पर आपके पधारने की आशा थी। बाद में दुलाल के लड़के विजय के विवाह पर भी आप नहीं आ पाए यह क्या हम लोगों के लिए कम अपमान की बात है मालिक?'

मालिक चल रहे थे और हर ओर का ठाट-बाट देख हतवाक् हो रहे थे। इतना बड़ा मकान बनवाया है इस कमीने ने! सब क्या नानी के पैसे से ही हुआ है? इतने रोज जो सुना था आज उसपर से यकीन हटने लगा मालिक का। चोरी के पैसे से भला इतना कुछ हो सकता है! केवल ऐश्वर्य ही नहीं, यह सुख, ये सफेद पत्थर, इलक्ट्रिक लाइट, यह उत्सव! इसके माने उन्होंने जो सुना वह झूठ था!

निवारण पीछे पीछे आ रहा था। मालिक ने पीछे मुड़कर कहा निवारण आओ।"

जैसे निवारण के बगैर उनमें जोर नहीं आएगा। साथ में निवारण का होना जरूरी है। फिर बोले, वह है न साथ?"

निवारण ने कहा, जी हां सब हैं

फिर जैसे अपनी कमजोरी को छुपाने के लिए ही निताइ बसाक की ओर देखकर बोले कुछ जन्म पत्रिकाएं ले आया था "

निताई बसाक ने कहा 'लेकिन जन्म पत्रिका लाने की क्या जरूरत थी? बाबा तो चेहरा देखकर भूत भविष्य सब बतला देते हैं।'

मालिक को जैसे आशा बंधी बोले 'सब? ठीक ठीक बतला देते हैं!'

जी हां मालिक! एकदम हतबुद्धि करके छोड़ दिया है हम लोगों को। दुलाल ने तो कल से पल भर के लिए भी बाबा के पांव छोड़े ही नहीं हैं '

अचानक जैसे कोई सामने आ खड़ा हुआ और मालिक को ऊपर से नीचे तक नजरों से परखने लगा।

निताई बसाक ने कहा, 'यही है हमारी नई बहू।

नई बहू!" मालिक पहचान ही नहीं पाए।

जी, विजय की बहू। दुलाल की पुत्रवधू '

विजय? मालिक किसीको भी नहीं पहचानते। कब विजय पैदा हुआ, कब इस घर में उसकी बहू आई ये खबरें उनके कानों तक ही पहुंची थीं। किसी को भी देखा नहीं था।

फिर भी बोले विजय दुलाल का लड़का है न?

निताई बसाक ने कहा, जी हां विजय तो यहां है नहीं इन दिनों आपको देखकर काफी खुश होता!"

'कहां है वह?'

"जी वह तो विलायत गया है डाक्टरी पढ़ने।

मालिक के कान में बात तीर की तरह जा बिंधी। दुलाल साहा ने सिर्फ मकान और गाड़ी ही नहीं खड़ी की है, साथ में लड़के को भी आदमी बना दिया है। यह सभी क्या चोरी के पैसे से हुआ है? सभी क्या झूठ और फरेब से हुआ?

नई बहू, आओ, इन्हें प्रणाम करो!'

मालिक चौंक उठे। बोले "अरे नहीं-नहीं, प्रणाम-प्रणाम की क्या जरूरत है?

नई बहू लेकिन एक कदम भी न बढ़ी। वहीं खड़े खड़े बोली, किसे प्रणाम करने को कह रहे हैं काका? जो आप लोगों का अपमान करता है आप लोगों को देखते ही जो गाली गलौज करने लगता है आप किस बुद्धि से उसीको प्रणाम करने के लिए कह रहे हैं मुझे?"

निताई बसाक भी थोड़ा घबड़ा गया। बोला, "देखा आपने, आजकल की लड़कियों के बात करने का तरीका?"

नई बहू फिर भी नहीं रुकी। जीभ की धार उसी तरह तेज रखते हुए उसने कहा, "काका, आजकल की लड़कियों में भी मान-अपमान समझने की तमीज आपके इन मालिक की तरह ही भरी पूरी है। उन्हें इतनी

आसानी से नहीं बहकाया जा सकता।'

चुप भी रहा नहीं बहू! किसके साथ किस प्रकार बात की जाती है तुम्हें नहीं मालूम। आइए मालिक, उधर वाले कमरे में ही बाबा हैं—आइए' कहकर निताई बसाक मालिक को अंदर ले आया।

सिर के ऊपर बिजली का पंखा फरफरा रहा था। इसके बावजूद एक नौकर हाथ में चमर लिए बाबा के माथे पर डुला रहा था। बाबा के पैरों के सामने वाली गद्दी पर दुलाल साहा उल्टा पड़ा था। बाबा का हाथ दुलाल के सिर पर था। निताई बसाक को ज्यादा नहीं कहना पड़ा। मालिक को एक बारगी बाबा के सामने ले जाकर बिठा दिया उसने। मालिक के पीछे निवारण भी बैठ गया। निताई बसाक ने जन्म-पत्रिकाओं का पुलिंदा सामने डाल दिया। करीब पंद्रह रही होंगी। पीले रंग के कागजों का गोल पुलिंदा।

निताई बसाक ने आते ही पुलिंदा बाबा के आगे रख दिया था। जो बोलना था सो भी बोल दिया।

धूप और धूनी की सुगंध से वातावरण जैसे स्वर्गीय-सा हो गया। केदारेश्वर भट्टाचार्य के पुत्र कीर्तिश्वर भट्टाचार्य आज स्वयं पधारे हैं दुलाल साहा के घर। यह भी जैसे एक घटना हुई है। कितने लोग ही तो आकर खा-पीकर बाबा को प्रणाम कर श्रद्धानुसार भेंट चढ़ाकर चले गए। मालिक नहीं आए, इसके लिए किसी ने अफसोस भी तो नहीं किया! किशनगंज के वर्तमान इतिहास में मालिक की हैसियत है ही कितनी? उनके आने-न-आने से किसीका क्या बनता बिगड़ता है? लेकिन इसके बावजूद आखिर वे क्या आए? यह भी क्या उनकी कमजोरी है? दुलाल साहा लोगों को ठगकर बड़ा आदमी बना है इससे ईर्ष्या हुई है उन्हें? नहीं तो इतनी बार खुशामद करने पर भी जब कभी नहीं आए तो आज क्या करने आए हैं? जन्म पत्रिका दिखाने? उनका भी अच्छा समय है या नहीं मालूम करने? लेकिन वह तो शिरोमणि वाचस्पति ने चौंसठ साल पहले ही बतला दिया था। उनके जन्म के समय। आज ही तो चौसठ साल पूरे हुए हैं उनके! नीच कौम के संस्पर्श से उन्हें विपद है। तब क्या यहां आकर उनके लिए कोई विपद घटनेवाली है?

मालिक ने पास बैठे निवारण की ओर देखा।

एक के बाद एक मुसीबतें उनके सिर से आंधी की तरह गुजरी है। लेकिन तब तो वे इतने दुर्बल नही हुए कभी। आखिर किसलिए आए हैं यहां? अपनी पीठ पर खुद ही चाबुक मारने की इच्छा हो रही थी उनकी जबकि कितने लोगों को उन्होंने ही चाबुक मारी है एक दिन। और तो और सिद्धेश्वर के ही तमाचा जड़ दिया था। लेकिन उस रोज तो इस तरह नहीं टूट थे वे। और बहूरानी? अगर बहूरानी उनकी तरह जरा मस्त हो पाती! बहूरानी भी एक रोज चली गई। मालिक को बड़ा आघात लगा था उस रोज। खुद देख सुनकर पुत्रवधू लाए थे। सोचा था कुलवधू के आविर्भाव से भट्टाचार्य-वंश की कुललक्ष्मी फिर से ऐश्वर्य मंडित हो उठेगी। आज अभी दुलाल साहा की पुत्रवधू को देखकर उन्हें अपनी पुत्रवधू का स्मरण हो आया था।

पास बैठे निवारण की ओर मुड़कर बोले कैसी जली-कटी सुना रही थी?

निवारण समझ नही पाया। उसने पूछा, 'जी, किसकी बात कर रहे हैं?'

'इसी दुलाल साहा के लड़के की बहू की।' मालिक बोले, एक बार तो मन में आया गाल पर एक हाथ जड़ दूं।"

'जी, आप ठीक कह रहे हैं। बातचीत का तरीका ठीक नहीं है। सुषमा भी इसी तरह बोलती है।'

मालिक बोले इन लोगों के घर आए हैं इसीलिए कुछ नहीं कहा।

निवारण ने कहा, आपने उचित ही किया। आखिर पर-स्त्री जो ठहरी।'

मालिक बोले अरे धर रहो अपनी पर-स्त्री। अपनी लड़की होती तो काटकर दो टुकड़े कर देता न।'

निवारण बोला 'जी दुलाल साहा का कहना है, यह नई बहू ही इस घर की लक्ष्मी है।

कैसे?"

मालिक जैसे भूल गए कि कहां बैठे हैं। बोले, 'ऐसा कहता है ?'

'जी हां सो तो कहता ही है। इस बहू के आने के बाद ही दुलाल साहा की हालत पलटी है, लड़का विलायत गया, पहले किसी तरह चलता था। अब भरपूर है। यह नई बहू ही इस घर की सब कुछ है। दुलाल साहा की पत्नी तो है नहीं। पहले ही मर चुकी है।

मालिक को ये सब सुनना अच्छा नहीं लग रहा था। यहां आकर इतनी ही देर में ऊब होने लगी। आस पास दो-चार भक्त अभी भी हाथ जोड़े आंखें बंद किए बैठे थे। चूंकि आवाज भी नहीं हो रही थी। इस तरह चुपचाप बैठकर दुलाल साहा की भक्ति का ढकोसला देखने के लिए ही क्या वे यहां आए हैं ?

मालिक ने फिर कहा निवारण !

'जी ?'

मालिक बोले चलो हम लोग अब चलें मोहर दे दो।

निवारण अपनी फतुही की जेब से मोहर निकालकर मालिक की ओर बढ़ाने लगा। जहांगीर के जमाने की सोने की मोहर थी। एकदम पक्के सोने की मोहर।

मालिक बोले 'नहीं तुम ही दो।

बाबा के सामने चांदी का एक थाल रखा था। उसमें चांदी के सिक्के और नोट वगैरह पड़े थे। निवारण ने मोहर को उसीमें डाल दिया। डालते ही झन से आवाज हुई।

मालिक ने कहा "निताई को बुलाओ उससे कहो कि हम लोग अब जाएंगे।

निताई ने सुन लिया। मालिक के पास झुककर उसने कहा यह कैसे हो सकता है मालिक ! जरा देर और बैठिए। अभी तो जन्म-पत्रिका दिखलाना भी बाकी है।"

मालिक ने कहा 'रात बहुत हो गई है। अब रुकना मुश्किल है। सीने का दर्द भी बढ़ रहा है।'

'अच्छा बस थोड़ी देर और बैठें।

कहकर निताई ने बाबा के पास जाकर हाथ जोड़े झुककर न जाने

क्या कहा। बाबा ध्यान म थ। उन्होंने आखें खाली। फिर बोले, "भाग्य-फल ? किसका ?"

निताई बसाक न मालिक की ओर इशारा किया। बाबा कुछ देर मालिक की ओर एकटक ताकते रहे। इसके बाद जस मन ही मन बोल उठे, 'हतभाग्य ! भाग्य ने आपको परास्त किया है मैं क्या कर सकता हू ? मेरे हाथ म क्या ह ?

मालिक का चेहरा और भी गभीर हो गया। उनके कुछ बोलने म पहले ही निताई बसाक ने बात समाल ली, बाबा, "जी ये जन्म-पत्रिका लाए है, अगर आपकी कृपा हो तो "

बाबा पुलिदा खोलकर एक जन्म पत्री देखने लगे। तभी कौन जाने क्या देखा, बाबा की दृष्टि और भी तीक्ष्ण हो गई।

मालिक तभी बोल उठे ' इसे न देखें इसकी मृत्यु हो चुकी है।

बाबा और भी तीक्ष्ण दृष्टि से देखने लगे। फिर पूछा 'मृत्यु हो चुकी है ?"

' जी हा पन्द्रह साल पहले ही मर चुकी है।'

"यह जन्म-पत्री किसकी है ? आपकी क्या होती है ?"

मालिक ने कहा ' मेरी पौत्री हरतन की "

"आपको ठीक ठीक मालूम है कि वह मर चुकी है ?"

निवारण भी चुपचाप सुन रहा था। अब बोला 'जी हा, बहुत रोज पहले मर गई जीवित होती तो आज काफी उम्र होती उसकी—पन्द्रह साल पहले की बात है।'

"उम्र कितनी थी मरते वक्त ? '

निवारण न ही जवाब दिया, ' तीन साल।'

इसके बाद बाबा और भी मनोयोग से जन्म पत्री देखने लगे। मालिक ने निवारण की ओर देखा। फिर वहीं से निताई बसाक की ओर नज़र घुमाई। क्यो, तुम्हारे साधु महाराज की पोल खुल गई न ! निवारण भी मन ही मन सदेह से भर उठा था। निताई बसाक भी परेशान था। बाबा की हार जैसे निताई बसाक की हार थी। दो दिन से इतने लोग आकर जाच कर गए कोई पकड नही पाया।

मालिक ने ही जैसे पहली बार पकड़ा ह। निताई बसाक को म न हो, ऐसी बात नहीं है। दुनाल साहा को भी मालूम है, किशनगंज हर आदमी जानता है। सिद्धेश्वर की पहली संतान। उसका अन्नप्र कितनी धूमधाम से किया था मालिक ने। पूरे मकान को नये सि सजाया था। कितने लोग आकर खा पी गए थे। तब हालत इतनी नहीं हुई थी कीर्तिश्वर की। तब सिद्धेश्वर भी था।

दुनाल साहा का ध्यान जैसे इतनी देर बाद टूटा।

वह उठ बैठा "बाबा!" कहकर भक्ति भाव से हुंकार भरी। फि चारों ओर देखा। निताई बसाक ने गद्गद भाव से मालिक की ओ देखा। उसके बाद ही फिर से आँखें बन्द करके बाबा के पैरों के सा डनलप पिलो की गद्दी पर पट के बल जा गिरा।

मालिक ने निवारण को इशारा किया। बोले "चलो निवारण, लोग चलें।"

निवारण जन्म पत्रिका को समेटने के लिए हाथ बढ़ा रहा था।

लेकिन हठात् बाबा बोल उठे। उन्होंने कहा "वह मरी नहीं है। नहीं सकती—जातिका की आयु अभी शेष है।"

निताई बसाक भी जैसे विमूढ़-सा हो गया। उसने कहा "लेकि बाबा, हरतन तो कब की मर चुकी है हम सभी को मालूम है।"

बाबा अभी भी जन्म पत्रिका लिए मनोयोग से देख रहे थे। अ निवारण की ओर उसे बढ़ाकर बोले, 'अष्टम में बृहस्पति है य जातिका अल्पायु नहीं है दसवें स्थान में शुक्र है चतुर्थ स्थान में लग्नपति बुध उच्च का है।'

जन्म पत्रिका वापस लौटाकर बाबा निर्विकार हो गए।

लेकिन मालिक उठना चाहकर भी उठ नहीं पाए। बोले "लेकि चड़ीतला श्मशान में उसका अंतिम संस्कार किया गया था।

बाबा सिर हिलाने लगे।

"नहीं आपकी यह पोती अभी जीवित है। वह आपके घर की लक्ष्मी थी। आपने उसे ही घर से दूर कर दिया। गृहलक्ष्मी का कोई त्याग करता है भला!"

मालिक का चेहरा जैसे शिशु सुलभ सरल हो गया। आज यह क्या सुन रहे हैं वे ! उन्होंने एक बार निताई बसाक की ओर देखा। निवारण मालिक की ओर देख रहा था। वह भी जैसे हतवाक हो गया था। पन्द्रह साल के बाद यह क्या सुनाई पड़ रहा है ?

"उसे आप वापस ले आए। अपने घर ले आइए। आपके घर में फिर से खुशहाली आ जाएगी। फिर से आपकी हालत पलटेगी।"

लेकिन वह तो मर चुकी है। मैंने चड़ीतला श्मशान जाकर उसका अंतिम संस्कार किया है।"

बाबा मुसकराए। बोले "आपने खुद उसका संस्कार किया है ? जरा ठीक से सोचकर देखिए आप !"

मालिक का दिमाग काम नहीं कर रहा था। उन्होंने फिर से निवारण की ओर देखा। निवारण भी विमूढदृष्टि से उन्हीं की ओर देख रहा था। पूरे पन्द्रह साल पहले की बात है। इतने दिन बाद याद रखना क्या इतना आसान है ! तब तो सिद्धेश्वर भी था। मालिक की बड़ी लाडली पोती थी हरतन। वह हरतन अभी जिंदा है ! वही हरतन उनकी गृहलक्ष्मी है ! उसके वापस आने पर उनका घर धन धान्य से भर उठेगा !

मालिक जैसे सब कुछ याद करने की कोशिश करने लगे।

बाबा ने फिर पूछा, "आपने स्वयं ही संस्कार किया था उसका ?"

मालिक ने कहा "नहीं।"

"तब ? तब संस्कार के लिए श्मशान कौन गया था ?"

मालिक ने कहा, "मेरा लड़का सिद्धेश्वर गया था। मैं खुद नहीं गया था। हरतन मुझे बहुत ही प्रिय थी इसलिए मैं खुद नहीं जा पाया श्मशान" तभी अचानक निवारण की ओर देखकर बोले, "निवारण, तुम तो गए थे ! तुम्हें याद है कुछ ?"

निताई बसाक ने भी अब निवारण की ओर देखा।

दुलाल साहा अचानक भक्ति से विभोर हो पुकार उठा, "बाबा, तुम ही सत्य हो तुम ही सत्य हो, दुनिया में और सब झूठ है, माया है"

धूप और धुनी के धुएं से कमरा धुंधला हो रहा था। तभी किसी ने जैसे और भी थोड़ी धूनी डाल दी। नौकर ध्यान से सब सुन रहा था।

उसके हाथ की चमर जैसे अचानक रुक गई। जो लोग आखें बन्द किए हाथ जोड़े बाबा का ध्यान कर रहे थे उन्होंने भी आखें खोलीं। वातावरण अस्वस्तिकर हो उठा था। बीसवीं सदी के इस सदी किशनगज म जैसे अचानक रातोरात मध्ययुग आ गया।

दुलाल साहा अब और नहीं रोक पाया अपने को। उसी तरह उल्टे लेटे लेटे ही सुबक सुबककर रोने लगा भरी आवाज मे आर्तनाद करने लगा, 'भक्ति दो बाबा, भक्ति दो '

मालिक के चेहरे की ओर देखकर निताइ बसाक ने भी आवाज लगाई ''जय बाबा जय गुरुदेव '

और मालिक को लगा, जैसे वे पागल हो जाएंगे। निवारण की ओर देखकर डपटते हुए बोले ''क्या हुआ, याद पड़ा या नहीं तुम्हे ?'

निवारण बेचारे की मुश्किल थी। जी-जान से वह याद करने की कोशिश करने लगा। उसकी भी उम्र हो चली है अब। इस उम्र मे क्या पहले जैसी याददाश्त रह सकती है ? वह क्या अब पहले का निवारण रह गया है ? उसके भी सिर म चाद है—बाल भी सफेद हो गए हैं। दात भी हिलने लगे हैं।

' बाबा !''

अचानक दरवाजे की ओर से जनानी आवाज सुन सबने चौककर देखा। नई बहू खड़ी थी वहा।

नई बहू ने कहा, ' रात काफी हो गई है बाबा की तबीयत ठीक नहीं है, सारे दिन जल भी ग्रहण नहीं किया है, काका, अब इन लोगों से उठने को कहिए ''

अधेरा रास्ता। और मालिक की आखें भी अब पहले जैसी नहीं हैं। घर लौटते वक्त अपने को और रोक नहीं पाए। मालिक बोले, ''इसी बीच सब भूल गए निवारण ?''

निवारण भी तो बूढ़ा हो चला है, अब उसकी याददाश्त तो कम हो ही सकती है ! आखों की ज्योति कम हो सकती है। लेकिन मालिक जैसे यह सब नहीं मानना चाहते। तीस-चालीस साल पहले काम करने की

जसी ताक्त उसमे थी, अब वही ताक्त कहा रह सकती है ? गुज़रे साल क्या अपनी कोई छाप नही छोडेंगे चेहरे पर ? निवारण के देखते-देखते ही भट्टाचाय-वश की ऐश्वय की ईटें एक एक कर ढहने लगी। उसकी आखो के सामन ही तो मालिक की हालत दिनो-दिन बिगडती गई। जबकि यही दुलाल साहा और यही निताई बसाक एक दिन इसी निवारण को देखत ही विनय का अवतार हो जाते थे।

मालिक अधेरे म कही ठोकर न खा जाए, इसलिए निवारण ने उनका हाथ पकडना चाहा, लेकिन मालिक ने हाथ खीच लिया। बोले, 'बहुत हुआ, हाथ पकडन की जरूरत नही है।"

"जी यहा एक गढहा है।"

'होने दो मैं कोई तुम्हारी तरह कनौडा नही हू।

फिर जसे मन ही मन बडबडाने लगे, 'भाग्य ही खराब है नही ता इस तरह सवनाश क्यो होता ? ऐसा मालूम होता तो मैं खुद ही श्मशान जाता। तुम लोगो पर काम छोडा इसीलिए यह सवनाश हुआ। अब क्या करू ? मेरा तो सिर पीटकर मरने को जी चाह रहा है।'

निवारण अपने आपको कसूरवार मान रहा था। बोला, 'मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं श्मशान गया था। मैं ही तो छोट बाबू को बुलाकर लाया था।"

लेकिन यही बात वहा साधु बाबा के सामने नही कह पाए ? वहा तो तुम्हार मुह पर ताला लग गया था।"

"जी, मैं तो यही कहने की सोच रहा था, लेकिन मैं शायद सस्कार के समय वहा मौजूद नही था। छोटे बाबू न मुझे घर भेज दिया था। कहा था—सरकार काका आप घर चले जाइए वहा बाबा का सम्हालिए।"

मालिक बडी उत्सुकता से सुन रहे थे। बोले, "तो तुम सस्कार क समय वहा मौजूद नही थे ?"

"जी, रहता कैसे ? छोटे बाबू इस तरह पीछे पड गए, और आपका शरीर भी ठीक न था।"

मेरे शरीर की बात छोडो। एसा क्या हुआ ह मेर शरीर को ?

आज हरतन होती तो मेरे शरीर का क्या हाल होता ! और, क्या दुलाल साहा ही मेरे देखते देखते इस तरह तिल से ताड हुआ होता ?"

निवारण ने कहा ' मुझे क्या मालूम था मालिक कि ऐसा कुछ भी हो सकता है ? मालूम होने पर इस तरह मरने चला आता ?"

मालिक ने रोक दिया। बोले 'बस बस, टेसुए बहाने की जरूरत नहीं है। फिर क्या हुआ सो कहो ?'

"जी फिर और क्या होना था ? मैं चला आया।

'फिर ?'

'आकर देखा आप बेहोश पड़े हैं। मैं जाकर श्रीनाथपुर से डाक्टर बुलाकर लाया।"

मालिक इस बार बुरी तरह बिगड गए बोले ' अपनी बात कौन पूछ रहा है तुमसे ? अरे पूछता हू कि सिधू कब लौटा ? वापस लौटने पर सिधू कुछ बोला था तुमसे ?"

निवारण जी जान से याद करने की कोशिश कर रहा था। इतने दिन पहले की बात कम याद रहती उसे ? पूरे पन्द्रह साल पहले की घटना थी। उन दिनों किशनगज ऐसा नहीं था। दुलाल साहा और निताई बसाक ने अभी हाल ही में हरिसभा के चन्दे की बही लिए इधर उधर चक्कर काटना शुरू किया था। और इन दोनों के साथ ही आ जुटे थे छोटे बाबू। मालिक की पोती किलकारी मारती फिरा करती थी।

हरतन उन दिनों मालिक की मन-प्राण थी। मालिक दीवानखान में बैठे रहते। लोग बाग आते। उनसे बातें करते। नाना प्रकार की समस्याओं पर। सब उनसे सलाह लेते। उन दिनों बगैर मालिक से सलाह लिए किशनगज में कोई काम ही नहीं होता था। अग्रेजी अखबार हो या बगला, सब उनके दीवानखाने में पाए जाते।

अखबार सुनते सुनते मालिक बीच-बीच में कहते ' यहां जरा फिर से तो पढ भानु !"

भानु कलकत्ते में लिख-पढकर गर्मी की छुट्टी होने पर गाव जाता। गाव आते ही अखबार के लालच में मालिक के दीवानखाने में आ बैठता। छाटकर खबरें सुनाता सबको। सब लोग अग्रेजी नहीं समझते

भानु कहता, 'जी, गांधीजी ने कोई गलत तो नहीं कहा है।'

'गलत नहीं कहा, इसके माने?'

सुनने में आगबबूला हो उठते मालिक। गांधीजी की प्रशंसा सुनते ही बिगड उठते। सभी जानते हैं कि गांधीजी का नाम बर्दाश्त नहीं कर पाते मालिक।

मालिक कहते, 'यह चरखा कातने की बात किसने कही?'

सभी कहते, 'जी, गांधीजी ने।'

'और बम्बई में कपडे की मिल किसने खुलवाई? कह सकता है कोई?'

मुश्किल में पड जाते सब लोग। एक दूसरे की ओर देखते आंखें फाडकर।

मालिक कहते, 'बंगालियों से कह दिया कि चरखा कातो और बम्बई जाकर गुजरातियों से बोले कपडे की मिल खोलो! इसपर भी तुम कहोगे कि गांधी सच्चा आदमी है?'

कोई याद नहीं कर पा रहा था कि गांधीजी ने बंगालियों से चरखा

चातने को कहा, और गुजरातिया से ही कद कहा कि कपड़े की मिल खोलो।

मालिक ने सभीके चेहरों की ओर देखा फिर बोले, "क्या हुआ बशीरुद्दीन, बोल नहीं रहे कुछ ?"

बशीरुद्दीन जमाने से मालिक की प्रजा रहा है। बोला, "जी मालिक, जब आप कह रहे हैं तो कोई झूठ थोड़े हो सकती है बात।"

मालिक कहते, "बस तुम्हारा जिन्ना भी आदमी ठीक नहीं है, यह भी कहे देता हूं।"

"सो तो है ही मालिक।"

मालिक कहते "हमारा यह गाधी भी ठीक नहीं है और तुम्हारा वह जिन्ना भी ठीक नहीं है, समझे ?"

इसके बाद जैसे सभीसे कहते, "क्या हुआ तुम लोग चुप कैसे हो ? मैंने ठीक कहा है न ?"

सभी कहते, "जी आप ठीक ही कह रहे हैं मालिक!"

मालिक कहते, "असल में दुनिया से अच्छे लोग उठते जा रहे हैं। देखते नहीं जितने भले लोग थे, सब पटापट मर रहे हैं।"

फिर कहते "अपने सुभाष बोस की बात लो अच्छा आदमी था। कैसे पट से मर गया।" कहकर भानु को देखकर कहते, "पढ़ो पढ़ो, तुम क्यों रुक गए ? और क्या खबर है ?"

भानु पढ़ने लगा, बोला, "पंडित जवाहरलाल नेहरू का स्टेटमेंट है।"

"यह एक और फालतू आदमी है। समझे ! बोलता बहुत है। अरे कामकाजी लोग कभी इतना बोलते हैं ? काम के नाम सिफर खाली लपवा लो। बाप उसका भला आदमी था। पंडित मोतीलाल नेहरू का नाम सुना है द्विजपद ? द्विजपद तो आजकल बात ही नहीं करता, बात क्या है द्विजपद ?"

द्विजपद बोला "जी मालिक मैं सुन रहा हूं।"

"सुन रहे हो कि नहीं सुन रहे मैं कैसे समझूंगा ? बीच-बीच में हूं-हां करनी चाहिए न ?"

लाओ-लाओ मेरी गोद में दो।' कहकर मालिक ने हाथ बढ़ा दिए।
मालिक की गोद में आते ही हरतन एकदम चुप हो गई। अहा, कैसी फूल-सी लड़की थी। मालिक की उम्र तब भी काफी हो गई थी। उस उम्र में भी मालिक ने पोती को गोद में लेकर छाती से चिपका लिया। मालिक उससे बात करने लगे, 'किसने मारा है मेरी बेटी को? किसने डाटा है? बुलाओ उसको।'
कहकर उस भरी मजलिस में ही पोती से लाड़-लड़ाने लगते। हरतन तब तक मालिक के हुक्के की नली को पकड़कर हिलाने लगती। मालिक अचरज से देखते रहते, फिर बोलते, 'देखा भानु, सिंधू की लड़की कितना चालाक हो गई है अभी से।'
भानु ने कहा, 'जी बड़ी होकर खूब बुद्धिमती होगी हरतन।'
दुलाल ने कहा, 'अहा, बड़ा अच्छा नाम रखा है मालिक ने।'
बशीरुद्दीन ने कहा, 'अल्लाहताला की दुआ क्या हर किसीके घर होती है मालिक?'
निताई बसाक बोला, 'इसका विवाह कलकत्ते में कीजिएगा मालिक। कलकत्ते में आजकल बड़े अच्छे-अच्छे लड़के निकल रहे हैं—बी० ए०, एम० ए० पास लड़के को जमाई बनाइएगा।'
मालिक ने हरतन के चेहरे की ओर देखकर कहा, 'क्या सुना कुछ? निताई बसाक क्या कह रहा है?'
फिर निताई बसाक की ओर देखकर बोले, 'जानते हो निताई, अपने बाप के पास नहीं रहती। रात में नींद से उठकर रोने लगती है, रट लगा देती है—दादा के पास। बाद में मेरी गोद में आते ही चुप।'
भानु ने कहा, 'इसीलिए तो कह रहा था मालिक, खूब बुद्धिमती होगी।'
मालिक ने कहा, 'असल में बात यह है कि मेरी मां इस जन्म में हरतन होकर बहू के पेट में आई है। इसका चेहरा देखो और उधर मां की फोटो, चेहरे की छवि हूबहू मिलती है या नहीं?'
सभी देखने लगे। भानु ने देखा, बशीरुद्दीन ने देखा। निताई बसाक ने देखा। दुलाल साहा ने देखा, हर किसीने देखा।

दुलाल साहा ने कहा ' अजीब बात है ।"

मालिक ने कहा ' कहने से यकीन नहीं होगा दुलाल

रानी को दर्द उठा मुझे कुछ भी मालूम नहीं था मैं गहरी था। अचानक लगा जैसे मां आकर मेरे सामने खड़ी हो रही हैं, 'कीर्ति मैं आ गई हूं —और आ गई हूं कहने के नींद टूट गई।

यह घटना भी सबने कई बार सुनी है कितनी ही मालिक यह घटना सुना चुके हैं। उन दिनों वक्ता होते थे कीर्ति श्रोता होते किशनगंज गांव के सारे लोग। वे लोग नियमानुसार बाद में एक बकन हरतन को गोद में लिए मालिक उठ खड़े होते कहते अब उठना हूं मेरे साथ बैठे बगैर हरतन खाएगी।'

सिर्फ एकसाथ खाना ही नहीं एकसाथ सोना बैठना बात —सब कुछ हरतन के साथ। आखिर में ऐसा हुआ कि हरतन बाप पास जाती ही नहीं सारे दिन मालिक के पास ही रहती। बड़ी बहू जब तक हरतन को लाकर बिस्तर पर न सुला देती मालिक भी छटपटाते रहते।

ये बातें पन्द्रह साल पहले की हैं।

इतने दिन बाद अंधेरे रास्ते से चलते चलते दोनों के दिमाग में पन्द्रह साल पहले की सारी घटनाएं घूम रही थीं। पन्द्रह साल पहले वाली हालत होती तो क्या मालिक इस तरह इतनी रात बगैर बुलाए दुलाल साहा के घर पांव रखते? इन पन्द्रह सालों में कितना कुछ बदल गया है। दुलाल साहा ऊपर उठा और मालिक नीचे उतरे। निवारण को लगा, जैसे मालिक का हाथ थर-थर कांप रहा है। निवारण ने और भी जोर से हाथ पकड़ लिया। फिर बोला यहां जरा आहिस्ते चलो '

इस बार मालिक कुछ भी नहीं कह रहे थे। निवारण के हाथ में खुद को सौंप किसी तरह चलते रहे।

अगर आज सिधू होता तो क्या उन्हें इस हालत का सामना करना पड़ता? यह सिधू भी आखिर चला कहां गया।

समय जा कौन रहा है ? तुम्हारी बात भी अजीब होती है ' लका म सोना सस्ता है, इसीलिए "

बात पूरी नही की मालिक न । मन-ही मन जैस कुछ सोचत सीढिया चढते गए।

बडी बहूजी अभी जाग रही थी। मालिक कमर म घुस । बडी बहूजी ने तब कुछ नही कहा । मालिक आहिस्ते-आहिस्त बगलवाले कमरे का दर-वाजा खोलकर अदर गए । सदूक कोने की ओर था । अधेरे म टाह लत वहा तक गए। फिर बडी मुश्किल म लोह का भारी ढक्ना किसी तरह खोलकर जन्म-पत्रिया का पुलिदा उसम डाल दिया। और सदूक का ढक्ना पहले की तरह ब द कर अपने कमरे म बिस्तर पर आ लेट । इतन परि श्रम के बाद मालिक हाफने लग थे सीने के अदर दम अटका जा रहा था।

'मालिश कर दू सीने म ? '

मालिक समझ गए बडी बहूजी अभी सोई नही हैं। मालिक जब तक नही सोते, बडी बहूजी भी नही सो पाती यह बात उन्ह मालूम थी।

मालिक बोले, ' रहने दो, जड काटकर शाखें सीचन की जरूरत नही है।'

बडी बहूजी इन सब बाता के लिए कभी गुस्सा नही करती। आहिस्ते से उठकर ताक पर से तेल की कटोरी ले आइ और मालिक क सीन पर मालिश करने लगी।

दुलाल साहा के घर पिछले दिन काफी रात गए तक उत्सव चला। मालिक और निवारण जब वहा स चले, दुलाल साहा की जापानी घडी म बारह बजे थे। इतनी रात म नाम के लिए कुछ खाकर सभीने थोडा विश्राम किया। चार बजत-बजते फिर उठ पडे। भोर होत ही यात्रा थी।

किशनगज के लोग अभी सो रहे थे। पिछले रोज दस गाव के लाग आकर खा गए हैं। इतनी सुबह-सुबह उठने का बूता नही रह गया था किसीम। माल लाने-ले जाने वाले व्यापारी भी अपनी-अपनी नावो म खर्राट भर रहे थे। दुलाल साहा की नाव कब घाट पर लगी और कब गुरुदेव को उसमे चढाया गया किसीको भनक भी न पडी। किशनगज स

गुरुदेव को लेकर नाव सीधे गंगा के मुहाने तक जाएगी। वहां से गुरुदेव अपनी इच्छानुसार जहां जाना चाहेंगे, चले जाएंगे। उन्हें पहुंचाकर नाव वापस किशनगंज चली आएगी। साथ दुलाल साहा की कचहरी का आदमी गया है। उसे हजार रुपये दिए हैं। जब जैसी जरूरत पड़े खर्च करेगा। दुलाल साहा, निताई बसाक यहां तक कि नई बहू ने भी घाट पर आकर गुरुदेव की पदधूलि माथे पर चढ़ाई। इसके बाद यथासमय नाव रवाना हो गई।

गुरुदेव को विदा कर दुलाल साहा की दिनचर्या शुरू हो गई। गोविंद बाल्टी, तेल और गमछा लिए हाजिर था। दुलाल साहा ने पूरे घाट पर झाड़ू लगाई। तेल मला, स्नान किया। तब तक पूरब में आसमान साफ हो चला था।

"कौन, मुकुन्द है क्या ?"

मुकुन्दपाल अभी ही उठकर लोटा लिए मैदान की ओर जा रहा था। दुलाल साहा को देखते ही पालागन कहा, बोला, 'यह क्या साहाजी, आज भी छुट्टी नहीं ? आज भी इतनी सुबह सुबह उठ गए ?'

दुलाल साहा मुसकराने लगा, फिर बोला "क्या कह रहे हो तुम ! तुम्हें तो समझदार ही जानता था।"

"जी, कल रात तक तो उपवास ही किया आपने इसीसे कह रहा था।"

दुलाल साहा ने उसी तरह मुसकराते हुए कहा, ' अरे खाना तो नहीं भूलता मुकुन्द, मां गंगा को ही भूल जाऊं !"

"सच, आप बड़े पुण्यात्मा हैं ! आपके जैसी भक्ति अगर भगवान देते "

दुलाल साहा ने कहा, ' मिलेगी, मुकुन्द, मिलेगी कोई हाथी-घोड़ा थोड़े ही है। थोड़ा प्रयास करते ही मिल सकेगी।"

"प्रयास तो करता हूं साहाजी, लेकिन हम लोग ठहरे पापी, हम लोगों को और कितनी मिलेगी ?"

दुलाल साहा ने कहा, "मिलेगी क्यों नहीं मुकुन्द ! इस दुनिया में असंभव कुछ भी नहीं है ! जरा लोभ कम करो ! यह लोभ ही सारे पापों

का मूल है ''

मुकुन्द ने कहा, "जी लोभ तो नही करता मैं ।'

'लोभ नही है तो मकान बनवाने के लिए क्या पागल हो रहे हो ? मकान का लाभ क्या है तुम्हे ? टीन के घर से काम नही चल रहा है न! मुझे देख लो, मुझे कोई लोभ नही है। जो कुछ भी है, सब छोडकर साधु हो जाने या जी करता है। इतना बडा मकान बनवाया लेकिन उससे क्या शांति मिली ? पैसा भी कम नही कमाया। लेकिन उसीसे क्या शांति मिली ? मिली होती तो हाथ म झाडू लिए यह घाट क्या धोता ?'

बात क्या हो रही थी और क्या होने लगी। मुकुन्द को खिसकने का रास्ता नजर नही आ रहा था। झटपट जाते जाते बोला, "तो अब चलू साहाजी '

कहकर मैदान की ओर भागा।

घर पहुचते ही देखा कि निवारण बेंच पर बैठा है।

'अरे निवारण इतनी सुबह ? क्या खबर है ?'

इतनी सुबह निवारण को देख दुलाल साहा के चेहरे पर मुसकान खेल गई।

निवारण बोला, "जी, मालिक ने सुबह सुबह ही भेज दिया। गुरुदेव क्या चले गए ?"

अभी भी रात के उत्सव के छिटपुट चिह्न इधर उधर बिखरे थे। दुलाल साहा की पालतू बकरी फूलो की पपडी चबा रही थी। नौकर आगन म झाडू लगा रहा था। कचहरी मे अभी तक बिछौना बेतरतीब पडा था। उठाया नही गया था।

निवारण ने कहा, कल सारी रात मालिक सो नही पाए।'

दुलालसाहा ने कहा, "अहा, बुढापे म कैसा दुर्भोग है ! इसीसे तो कहता हू, अपने मालिक से कहो कि जरा लोभ का त्याग करें—देखोगे, सब ठीक हो जाएगा।'

'जी, लोभ तो ऐसा कोई नही है।

दुलाल साहा ने कहा 'लाभ नही है तो पेंपुलबेड के पास वाली आहर मुझे देने म छाती क्या फटी जा रही है तुम्हारे मालिक की ?"

निवारण की समझ मे नही आ रहा था कि क्या जवाब दे।

"इतना लोभ अच्छा नही होता निवारण ! तुम्हारे मालिक की उम्र तो काफी हो गई है। अब उन्हें जरा धरम करम म मन लगाने की सलाह दो। मुझे ही देखो न। मुझे कभी लाभ करते देखा है तुमने ? लोभ किस चिडिया का नाम है मुझे नही मालूम। इसलिए देख लो, कितनी शाति से हू। तुम्हारे मालिक की हाडी मे कौन सी दाल पक रही है, यह जानने के लिए कभी मेरे सिर मे दर्द नही हुआ—और अब तो दीक्षा लेकर साधु ही हो गया हू।

जरा रुककर फिर बोला, ' खैर जाने दो इन बातो को, गुरुदेव से क्या काम था मालिक को ?"

निवारण शायद जवाब देने ही जा रहा था कि तभी अचानक नई बहू के अदर से आ पहुचने से दोनो उसकी ओर देखकर चुप हो गए।

नई बहू ने साहाजी की ओर देखकर कहा बाबा पूजा की तैयारी हो गई, चलिए—बात फिर हो जाएगी। चलिए "

इसके बाद निवारण की ओर देखकर नई बहू न कहा, 'आप भी कैसे आदमी हैं सरकार बाबू, सभीको क्या अपने मालिक जैसा समझते हैं ! देख रहे हैं कि सुबह का वक्त है, बाबा स्नान करके थके हुए आए हैं अभी पूजा करने बैठेंगे, यही वक्त सूझा आपको बात करने का ?"

निवारण घबडाया तो था ही। नई बहू की बात सुनकर उठ खडा हुआ। उसने कहा, "मैंने तो साहाजी को नही रोका।"

"लेकिन इस तरह चिडिया बोलते-बोलते घर मे आकर बैठ जाने पर भला कोई चले जाने को कह सकता है ? '

"अब और कुछ कहने की जरूरत नही है बहूजी, मैं खुद ही जा रहा हू।" कहकर निवारण चला ही जा रहा था लेकिन साहाजी न उसे रोका।

"नाराज हो गए निवारण ?'

"जी, नही तो। '

"नाराज न होना हमारी बहूजी तुम्हारी लडकी की तरह है, इसकी बात का मैं भी बुरा नही मानता "

निवारण ने कहा, 'बुरा मानने से तो मेरा काम नहीं चलेगा साहाजी! मैं हूं ही क्या? मैं हुक्म के गुलाम के सिवाय कुछ भी नहीं हूं। आपके पास आने का हुक्म हुआ सो चला आया आप चले जाने को कह रहे हैं, चला जाता हूं।'

साहाजी ने कहा, 'कौन किसके चले जाने को कहता है निवारण? अब देखो इस विजय की मां की बात ही लो मैंने कहा था उससे कि चली जाए, लेकिन फिर भी वह चली क्यों गई? किसके हुक्म से चली गई? कौन है वह? कहां रहता है? कहो न, कहां मिलेगा वह?'

कहकर सवाल निवारण की ओर उछाल दिया।

लेकिन निवारण को कोई जवाब न सूझा। दुलाल साहा को भी नहीं सूझा। दुलाल साहा के चेहरे पर अर्थपूर्ण मुसकान खेल गई। उसने कहा, 'जवाब नहीं दे पाए न! कोई दे भी नहीं सकता इसीलिए तो दीक्षा ले ली है निवारण! नहीं तो मुझे क्या और कोई काम नहीं था कि बैठे ठाले इस तरह दीक्षा लेने के लिए पागल होता?"

नई बहू और धीरज न रख पाई। बीच में ही बोल उठी, "बाबा, आपको देर हो रही है।' कहकर जबरदस्ती ससुर को अन्दर ले गई।

पहले चडीतला की ओर ही श्मशान था। श्मशान अभी भी है। सिर्फ जरा दूर हट गया है। इमली के पेड़ों से जगह घिरी है। उन दिनों लोग इस ओर कम ही आते जाते थे। जो लोग मुर्दा लेकर जाते दिन रहते ही काम पूरा करके चले आते। अंधेरा होने पर कोई इस ओर नहीं आना चाहता था।

लेकिन अब हवा बदल गई है। तब किशनगंज से चडीतला जाने के लिए सड़क जैसी कोई चीज नहीं थी। अब पक्की सड़क है। क्वार-कातिक के महीने में किसान यहां धान डाल देते हैं सूखने के लिए। साइकल-बाइ-कल सब इस धान के ऊपर से ही जाती थीं। कोई आपत्ति भी नहीं करता। हां सड़क के पास वाले ग्वाले लाठी लिए पहरा देते हैं जिससे गाय-बकरियां धान न खाएं। गाय बकरी देखते ही खदेड़न—हट हट

गाय-बकरियों का उपद्रव ही ज्यादा है।

चडीतला म जहा सडक खत्म होती है, वही ब्लाक डेवलेपमट ऑफिस है। कतार-की-कतार नये नये मकान बन गए है। इस इलाके म ऐसे मकान पहली ही बार बन है। सीमेंट-ककरीट के मजबूत दालान। सामने की ओर निकली ककरीट की छतें। उन मकानो के आग छोटे लॉन। रानाघाट और कलकत्ते के लडके यहा आकर नौकरी करते है। मछुए मल्लाह और किसाना के बच्चा के लिए स्कूल खुला है। स्लेट-पेंसिल और किताबें लिए बच्चे पढने आत है। पहले जो बच्चे सडक, घाट या जगल म खेलते फिरते, मछली पकडते या पक्षियो के पीछे घूमा करते अब वही स्कूल मे मन लगाकर पढते हैं। अच्छे कपडे पहनन लग हैं और मा-बाप का कहना भी सुनते है।

यहा जैसे एक नया शहर ही बस गया है।

ब्लॉक डेवलेपमट ऑफीसर ने अपने घर के आगे अच्छा खासा बाग लगा लिया है। प्लान म तीन कमरे थे। कण्ट्रैक्टर से कह-सुनकर चार करा लिए हैं। सुकात राय की उम्र ज्यादा नही है।

निताई बसाक ने पूछा था, "यह जो नौकरी मिली, किसीस जान-पहचान थी क्या आपकी ?"

सुकात राय ने जवाब दिया था "नही साहब, सिफ लक' कह सकते है।'

'आश्चय की बात है !" निताई बसाक सचमुच ताज्जुब मे पड गया था।

किसीका भी नही जानत थे ? प्रफुल्ल घोष, विधान राय, अतुल्य घोष किसीको भी ?'

जी नही।'

"तो फिर काम बना कस ? दरख्वास्त लगान भर से नौकरी मिल गई ?'

'नही' सुकान्त राय ने कहा, 'सो भी नही।'

निताई बसाक को और भी अजीब लग रहा था। सुकान्त राय न कहा, 'अजी, एम०ए० पास करने के बाद घनचक्कर की तरह चक्कर मार रहा था कि तभी एक घटना हो गई।"

'कौन-सी घटना ?"

सुकांत राय ने कहा, 'किरणशंकर राय का नाम सुना है आपने ?"

निताई बसाक ने कहा वाह किरणशंकर राय का नाम नहीं सुना मन ? इतने बड़े कांग्रेस लीडर ! एटो सुभाष वाम "

सुकांत राय ने कहा उनके मरने की खबर मिलते ही उनके घर जा पहुंचा, उस वक्त उनकी डेड बॉडी बाहर लाई जा रही थी। मैं उनकी खटिया का एक किनारा कंधे पर लिए श्मशान तक गया था।'

फिर ? फिर क्या हुआ ?

'अखबारों में उस शवयात्रा की फोटो छपी थी। मेरी फोटो बिलकुल साफ आई थी। मैंने बुद्धिमानी से काम लिया और आनन्द बाजार पत्रिका आफिस से वह फोटो खरीदकर रख ली थी। नौकरी का विज्ञापन जब अखबार में निकला तो वही फोटो लेकर राइटर्स बिल्डिंग में सीधे मुख्यमंत्री के पास जा पहुंचा '

फिर ?

सुकांत राय ने कहा 'फिर क्या एक नामीनल दरख्वास्त करनी पड़ी और साथ ही यह नौकरी मिल गई।"

यही था सुकान्त राय की सरकारी नौकरी का संक्षिप्त इतिहास। लेकिन सिर्फ यही तक। नौकरी ही नहीं, विवाह हुआ सो भी नौकरी की बदौलत। सुंदर बीवी मिली, लेकिन दूर-दराज इस गांव में उसे अच्छा नहीं लगता। निताई बसाक कलकत्ते जाता रहता है। सेक्रेटेरीएट में साठ-गांठ है। सुकांत राय उसके साथ दिल की बातें करता है। सुकांत राय के सजे बैठकखाने में बैठ निताई बसाक चाय पीता है। सुकांत राय की पत्नी भी साथ बैठती है। किसी चीज की जरूरत होने पर निताई बसाक कहता, "मुझसे क्या नहीं कहा मैं इंतजाम कर देता।'

निताई बसाक सुकांत राय का दाहिना हाथ बन गया था। निताई बसाक गाड़ी भेज देता। कहता, जहां जी चाहे घूम आए गाड़ी तो बेकार ही खड़ी रहती है, इसके अलावा महीने के आधे रोज तो मैं कलकत्ते ही रहता हूं।

गाड़ी थी निताई बसाक था, दुलाल साहा था। इसीसे ब्लॉक

डेवलेपमेंट ऑफीसर सुकान्त राय को कोई फिक्र नहीं थी। नई कच्ची उम्र, नई बीवी, सस्ती जगह, कुछ मिलता नहीं था, इसलिए खर्च भी कुछ नहीं था। लेकिन बीवी खुश नहीं थी।

बीवी कहती, 'देहात में मन नहीं लगता।'

असल में मुश्किल यही थी। इसी मुश्किल की वजह से सुकान्त राय को भी अच्छा नहीं लगता था। निताई बसाक के कलकत्ते से वापस लौटते ही पूछता, "क्या हुआ निताई बाबू, मर्जेटरीएट की कोई खबर है?"

निताई बसाक आकर कुर्सी पर बैठता, 'इस बार जाकर कोई भी काम नहीं हुआ सर, खाली पैसे की बरबादी—गया था आपके लिए कुछ जोड़-तोड़ बैठाने लेकिन सब गुड़ गोबर हो गया।"

"कैसे?"

'कैसे क्या! जिस रोज पहुंचा, उसी रोज मिनिस्टर हेम भास्कर मर गए। फिर क्या कोई कामकाज हो सकता है?"

"लेकिन आप तो सात रोज तक वहां थे। सात रोज रहकर भी कुछ नहीं हुआ?"

निताई बसाक ने कहा, "नहीं मिनिस्टर के मरने पर कहीं काम-काज होता है! कम-से कम पंद्रह दिन तो लग ही जाएंगे सोचकर मैं इसीसे चला आया।"

इसी तरह दिन बीत रहे थे। निताई बसाक आशा दिलाए जा रहा था, सुकान्त राय भी नौकरी किए जा रहा था। एक साल गुजर गया। टेम्परेरी डिपार्टमेंट ठहरा। कब है कब नहीं। निताई बसाक के सहारे किसी दूसरे डिपार्टमेंट में जाने की कोशिश में लगा था सुकान्त राय, या नहीं तो कलकत्ते हेड आफिस में ही ट्रांसफर हो जाता। लेकिन राइटर्स बिल्डिंग में वह किसीको भी नहीं जानता। उस फोटो का ही एकमात्र आसरा है, जिसमें वह किरणशंकर राय की लाश को कंधा दिए है। फोटो मढ़वाकर उसने कमरे में टांग दी थी। अखबार की उस पुरानी कटिंग को भी मढ़वाकर लटका दिया था। जिंदगी का यही मूलधन था उसके पास। इस मूलधन से भविष्य के लिए और भी कुछ किया जा सकता है।

मौका मिलते ही सुकान्त राय लोगों को दिखलाता, "वह देखिए, 'आनद बाजार पत्रिका' म फोटो छपा था मेरा।"

गाव के लोग मुग्ध हो जाते। वे लोग जैसे वी०डी०ओ० को न देख किसी देवता को देख रहे होते।

बाबी भी महिलाओ स कहती, 'किरणशकर राय इन्‍ह बहुत चाहते थ न।'

ठीक इसी बीच दुलाल साहा के घर साधु महाराज आ पहुचे। निताई बसाक आकर आमत्रित कर गया। और अगले दिन ही मिजाज पलट गया। निताई बसाक उनके दूसरे ही रोज आकर बोला "कहिए सर गुरुदेव कैसे लगे ?"

सुकान्त था, उसकी पत्नी थी। सुकान्त न कहा, मिराक्युलस "

' किस प्रकार ?"

सुकान्त न कहा, ' मेरे पिताजी की मत्यु की तारीख तक बतला दी गुरदेव ने।"

"और नौकरी ? नौकरी के बारे मे कुछ नही कहा ?"

सुकान्त बोला, "तीन साल की देर है।"

' देर किस बात की है ?

सुकान्त बोला, "उन्नति की। तीन साल बाद ऐसी उन्नति होगी कि मैं साच भी नही सकूगा।"

निताई बसाक न कहा, "हमे तब भूल न जाइएगा सर अगर मिनिस्टर हा जाए तो एक-आध परमिट-वरमिट दिलवा दीजिएगा।

"मुझे तो साहब, यकीन ही नही हो रहा था।'

सुकात की पत्नी ने कहा, "बहुत बार भविष्यवाणी फल भी जाती है।"

निताई बसाक बोला ' गुरुदेव की ऐसी ऐसी अलौकिक बातें हैं कि सुनकर आप लाग चौंक उठेंगे।

सुकात बोला, "इसलिए तो आते वक्त मैं पाच रुपये भेंट चढा आया गुरदेव को अच्छा, निताई बाबू गुरुदेव क्या चले गए ?'

' हा सर, भार मे चार बजे नाव पर चढा दिया। भेंट म जितना

मिला देना चाहा। लेकिन एक पैसा भी नही छुआ, तब मैंने दुलाल से कहा यह पैसा हरिसभा के फड मे जमा कर दो ’

सुकान्त बोला ‘ यह हरिसभा है क्या अभी तक ?”

निताई बसाक बोला, कहते क्या है सर ! हरिसभा नही है ? एक दिन जाकर देखिए न, रोज झाड-पोछ होती है। आजकल कोई आता नही इसलिए एक ओर दुलाल की गायें बधती है।”

तभी बाहर सडक की ओर नजर जाते ही बोला, “ अरे, निवारण जा रहा है !

वह देखिए इसे जानते है ? ’

सुकान्त बोला, हा हा, क्या नही, कीर्तिश्वर भट्टाचार्यजी का सरकार है न ?’

निताई बसाक ने वही बैठे बैठे आवाज लगाई ‘ अरे निवारण, ए सरकार बाबू ! ’

सरकार बाबू पुकार सुन रुके। फिर इस ओर ताका।

‘आओ-आओ अन्दर आओ।’

निवारण आहिस्ते आहिस्ते जूते खोलकर अदर आया।

‘ इतनी सुबह सुबह किधर चले ?”

निवारण बोला, जी बसाक बाबू जरा चडीतला की ओर जा रहा था। मालिक का हुक्म है।’

‘क्या, चडीतला क्या करने जा रहे हो ? किस मुहल्ले म ?’

जी, मछुआपाडे।

मछुआपाडे म क्या होगा इस वक्त ? मछली चाहिए ?”

निवारण बोला ‘ जी नही, सुबह साहाजी के घर गया था, साहाजी पूजा करने चले गए इसलिए बात नही हो पाई, अब जा रहा हूं किशना मछुए के पास दो-एक बातें पूछनी थी। सुना है किशना अभी जिंदा है।”

निताई बसाक न कहा ‘ जिंदा तो है ही। खासा मस्त हो रहा है। तुम्हारे मालिक की तरह पगु होकर नही पडा है।’

निवारण बोला, “जी, मालिक को तरह तरह का इतना दुःख झेलने पडे हैं आप ही कहिए लडका गया, लडके की बहू गई, पत्नी गई—सब

अपना स्वास्थ्य भी   "

'लेकिन गुरुदेव ने तो कहा कि पाती मरी नही है, जिंदा है !"

निवारण बाला, ' यही सुनने के बाद तो मालिक जाने कैसे हो गए हैं

कैसे हो गए है ?"

जी, कल सारी रात सीने के दद से छटपटाते रहे। मालकिन भी जागती रही, मैं भी जागता रहा। तीनो ने ही जागकर रात काटी। सुबह-सुबह मुझे साहाजी के घर भेजा, लेकिन वहा पता चला कि गुरुदेव तो चले गए, अब किशना माझी के पास जा रहा हू अगर उससे कुछ पता चल पाए '

जिस पेंपुलबेड के पास वाली आहर को लेकर इतनी दर दस्तूर हो रही थी, उसी पेंपुलबेड के पासवाली आहर के उस पार देखा गया कुदाल-फावडे लिए कुली-मजदूरो ने काम शुरू कर दिया है। सुबह किसीकी नजर नही गई उस ओर, सुबह-सुबह किस पडी थी उधर जाने की।

किशनगज से करीब ढाई मील की दूरी होगी। यहा से केदारेश्वर भट्टाचाय के जमाने म खासी आमदनी थी। यानी कि चुगी स भी सालाना आमदनी का बदोबस्त था। मालिक ने भी इस आमदनी का भोग किया है। चडीतला के मछुए यहा मछली का कारोबार करते थे। सालाना नीलामी होती। एक-एक सरदार पूरी बस्ती की ओर स ठेका लेते। यह बात बीस पच्चीस साल पहले की है। उन दिनो इच्छामती मे पानी था। बारिश के दिनो म जब ढाल का पानी नदी म आता तो दोनो ओर की मेड ढह जा पडती। जगह जगह मेड की मिट्टी धस जाती। पानी मेड लाघकर उठान की जमीन पर आ पहुचता। धान के खेतो को पार कर ढाल से होकर पेंपुलबेड की पास वाली आहर के गडहा मे जाकर पडता। लगातार तीन दिन बारिश होने पर तो कहना ही क्या। इच्छामती और आहर एकाकार हो जाती और तब माझी मछली पकडने वाले जाल लेकर निकल पडते। किशनगज के दूसरे लोग भी टोकरी गमछे लिए धान के खेतो मे आ उतरते। किसका खेत और किसकी जमीन, इस बात का

कोई हिसाब नही रहता था। मछुआ टोली के लाग सारी सारी रात चारो ओर से पानी बाधने की कोशिश करते। बडे-बडे पेडा की शाखाए तने और मिट्टी डालकर मछलिया अटकाने की कोशिश करते। उन कुछ दिना म किशनगज मछलिया की गध से सराबोर हो उठता।

लेकिन उसके बाद जाने क्या हुआ इच्छामती का वह तन भी धीरे-धीर कम हा चला। उधर किशनगज के दक्षिण मे चागडीपाता की ओर रेल का नया पुल बन गया, और पानी का जार भी कम हो गया। अब लगातार दस दिन बारिश होने पर भी पानी मडलाधकर उठान तक नही पहुचता। आहर सूखत सूखते फटने लगी। चैत बैसाख के महीनो म ग्वाले अपनी गाय, भैंस और बकरिया चरान के लिए आहर की इस जमीन पर ले आत। आदमकद ऊची ऊची घास यहा उग आती। गाय-बकरिया भर पेट खाती।

लेकिन तभी से मालिक के खराब दिन शुरू हुए। आहर जल-कर की भी अदायगी नही होती। अब कोई ठेकेदार नही लेता। एक जमाने की पानी से परिपूर्ण यह आहर अब खुले आसमान के नीचे धूल उडाती है। उस ओर देख देखकर मालिक का हृदय व्यथा स भर उठता है। यह आहर' ही जैस मालिक का हृदय था और वही हृदय अब सूख गया था। उसके साथ ही हरतन भी चली गई, सिद्धेश्वर भी लापता हो गया। अकेली बहूरानी बची थी। वह भी एक रोज सारी माया त्याग चल बसी। बचन के नाम पर व अकेले ही थे।

निवारण राज की तरह सुबह बाजार गया। खबर सबसे पहले बाजार मे ही सुनी। पश्चिमी मुहल्ले का हलधर भी बाजार आया था। उसीने पूछा, मालिक ने क्या आहर बेच दी सरकार बाबू ?"

निवारण हक्का बक्का रह गया। वह बाला "क्यो ? आहर क्या बेचने लग ?"

'लेकिन साहाजी के आदमी तो रास्ता बन्द कर रहे हैं। आते वक्त देख आया हू।"

रास्ता बन्द कर रहे है ? बात कसी अटपटी-सी लगी। एक मिनट भी रुकना मुश्किल था उसके लिए। हाफने-हाफने ढाई मील का रास्ता तय

करके जब निवारण वहा पहुचा तब तक सब कुछ खत्म हो चुका था। आहर के एक ओर घेरना पूरा हो गया था। निताई कमार का मैनेजर सदानद देख रेख कर रहा था और करीब तीन सौ मजदूर पूरे दम काम म लगे थे।

निवारण ने वही खडे होकर कुछ दर दम लिया।

छाता लिए खडे सदानद ने दूर स ही निवारण को दखा। पास आते ही बोला, 'आइए सरकार बाबू आइए, छाते के नीचे चले आइए—पसीने स तरबतर हो गए हैं '

निवारण छाते के नीचे नही गया। उसकी जैसे बोलती ही बद हो गई थी।

सदानद ने फिर कहा 'आहा मिट्टी देखत है जैस सोना '' यह-कर उसने झुककर मुटठी भर मिट्टी उठा ली।

निवारण न उस ओर नही दखा। बोला 'किसके हुक्म स य मजदूर लगाए हैं तुमने ? यहा आन का हुक्म किसन दिया तुम लोगो को ?''

सदानद बोला 'इसका मतलब ?'

' मतलब तुम अच्छी तरह जानते हो सदानद ! इस जमीन का मालिक तुम्हारा मालिक नही है मालिक अभी भी जिंदा है अभी तक मर नही गए हैं—यह तो जानत हो ?

सदानद बोला 'जी सरकार बाबू मा ता मुझे मालूम ही नही था '

'तुम्हे यह नही मालूम कि मालिक अभी जिंदा हैं ?

सदानद बोला सो नही कहता, मेरे कहने का मतलब ह कि मालि-काना तो पलट गया है आहर का।'

''मालिकाना पलट गया ! कैसे ?'

'जी यह आहर तो साहाजी ने खरीद ली है न।

यह बात सदानद ने बडे निर्विकार भाव स कही। लकिन निवारण जैसे आसमान से गिरा। उसन कहा 'देखो सदानद देश म अराजकता जरूर है लेकिन आसमान मे सूरज चद्रमा सब मौजूद हैं—जानते हो न ? अदालत जाने पर साहाजी की क्या हालत होगी, शायद तुम्ह यह बात समझाने की

जरूरत नही है। अभी भी कहता हू, अपने आदमिया से रकने का कहा, नही तो बाद मे बवाल हा जाएगा—कहे देता हू।"

सदानद भी थोडा उत्तेजित हा उठा। उसने कहा सरकार बाबू अदालत ही दिखलानी है तो इतनी तकलीफ उठाकर इस धूप मे क्यो खडे हैं, जाइए न, अदालत म ही पधारिए।

निवारण भी साधारणत कभी इतना उत्तेजित नही हाता। बोला 'मैंने उचित बात कही और तुम मुझे अदालत दिखला रहे हा सदानन्द ? सोचते हो, अदालत जा नही सकता। मालिक की हालत खराब है इसी-लिए क्या अदालत म भी जाने की औकात नही रही समझत हो ?

सदानद और नही राक पाया अपने-आपको। बाला जाइए न जो करना हो सा कर लीजिए फालतू बकझक न करें।"

क्या कहा ?

उधर के लोगा को शायद सिखला रखा था। अचानक निवारण अपने चारा ओर देख अचकचा गया। उसन देखा चारो ओर स जम बहुत-स लोगो न उसे घेर लिया है। चारा आर अच्छी तरह दखन के बाद जैस उसका सिर चकरान लगा। चिलचिलाती धूप सिर जैस फटा जा रहा था। जब तक उसे होश रहा तब तक याद है। सब जम उसके ऊपर टूट पडे। कुछ दीख नही रहा था, कुछ सुन नही रहा था समझ भी नही आ रहा था। सब कुछ गडडमडड हा गया था।

मालिक क पास जा भी खबर आती साधारणत निवारण क माफत ही पहुचती। जब तक आखें ठीक थी, अखबार खरीदते थे बाद म लागा स पढवाकर सुनत। किशनगज के लाग भी आकर इधर उधर की बहुत-सी खबरें दे जाते। अब वह सब बद हा गया है। वे ही लोग अब जाते है दुलाल साहा क घर।

निवारण सुबह का बाजार गया था। दापहर हा चली अभी तक उसका पता नही है।

बडी बहूजी ने यथा रीति चूल्हा सुलगा दिया था। तीन आदमिया के लिए खाना बनान म वक्त लगता ही कितना है। दखत-देखत पटाक

से खाना बन जाता है। इसके बाद फिर कोई काम नही रहता घर म। घर मे वात करने वाला भी काईनही है। वडी वहूजी की भी उमरहो गई है। लडका, वहू, पाती मव जा चुके है। एक आरत आकर ऊपर का काम कर जाती है। झाडू लगा जाती है ममाला पीम देती है, या हुए तो कपडे धा देती है। फिर थाली भर भात लेकर चली जाती है।

रात को सरसा का तेल गम करके मालिक के पाम आन पर भी खास बात नही हाती। बडे चुपचाप आदमी है। उस रोज किशना माझी की खाज म जाने के वाद स मालिक जस कुछ चचल हा गए थे। निवारण से पूरी वात सुनकर भी उनका मन जस छटपट कर रहा था।

निवारण ने कहा था उसने कहा है, वह खुद एक वार आपके पाम आएगा। आपक जाने की जरूरत नही है।'

मालिक ने कहा था लकिन तुम उम माथ ही क्या नही लिवा लाए ?

जी वह अपने नाती के घर जा रहा था इमीस नही आया था। नाती माहनपुर म है। मोहनपुर स नौटते ही यहा आन का बोला है।

लेकिन इतन दिन हो गए अभी तक आया क्या नही ?''

जी मोहनपुर कोई यहा थोडे ही है। वहा जाएगा। नई जगह पहुचकर क्या एक दिन मे वापस आ मकना है ? उसने कहा है कि हर-तन क सस्कार के वक्त वह मौजूद था। छोटे बाबू ने श्मशान पहुचकर किशना माझी का खबर कराई थी। उमीम लागो को बुलाकर लकडियो का इन्तजाम किया था।

फिर ? सस्कार हुआ था ?

निवारण न कहा था, 'किशना लकडिया का इतजाम कराकर अपन घर चला गया था। इमके बाद आधी पानी देखकर फिर नही आया था।'

इमक मान मस्कार नही हुआ ?''

निवारण न कहा था, 'किशना इसस ज्यादा कुछ नही कह पाया। और कौन कौन श्मशान म था उस याद नही है बूढा भी ता हा गया है। सब कुछ याद रखना भी मुश्किल।''

"लेकिन तुमने कहा क्यों नहीं कि और लोगों से पूछताछ कर पता लगाए? मछुआटोली के और भी लोग तो थे उस रोज।

"यह भी कहा था उससे लेकिन वह जाने के लिए तैयार था। और कुछ नहीं बोला।

"लेकिन तुमने खुद ही किसीसे पूछ लिया होता? मछुआटोली तो गए ही थे।"

निवारण ने कहा था, "किशना ने खुद ही कहा कि वह मोहनपुर से लौटने पर पता लगाएगा इसीलिए मैंने कुछ नहीं कहा, वापस चला आया।

मालिक को तसल्ली नहीं हुई। अक्ल नाम की चीज नहीं है। एक काम भी अगर कोई कर पाता। फिर भी दो रोज तक राह देखी। सोच रहे थे, किशना अब आए, तब आए। हर रोज सुबह उठते ही बाहर की ओर देखते। आंखों में उतनी रोशनी नहीं रही है। सड़क पर आते-जाते लोगों की भी पहचान नहीं पाते। फिर भी कोशिश करते नीचे आकर पूछते "किशना मांझी आया?"

"जी नहीं अभी तक तो नहीं आया।"

"आए तो मुझे बुला लेना।"

"जी, आपको फौरन खबर करूंगा। आपके पास ही तो आएगा वह।"

"आएगा-आएगा तो कब से सुन रहा हूं, लेकिन आता कहां है।"

निवारण ने कहा, "जी, वह मोहनपुर गया है वापस लौटते ही आएगा। जब बोला है तो आएगा जरूर। किशना मांझी बुरा नहीं है।"

मालिक भन्ना जाते, कहते, "कैसा आदमी है, यह बात मुझे सिखलाने की जरूरत नहीं है लेकिन आ क्यों नहीं रहा है वह?"

ज्यादा देर बात करने से कहीं सिर भारी न हो जाए इसलिए मालिक और कुछ नहीं बोलते। सीधे ऊपर चले जाते। दिन भर में तीन-चार बार ऊपर-नीचे करने से ही सीना धड़कने लगता था। उसके बाद सारा गुस्सा उतरता बड़ी बहूजी पर। जैसे सारा कसूर उन्हीं का हो। कहते, "नहीं-नहीं, तेल-मालिश करने की कोई जरूरत नहीं है।"

इसपर भी बडी बहूजी हाथ बढा देती। सारी ज़िंदगी ही तो मालिक का गुस्सा सहती आई है। उनका मिज़ाज जानती है। कहती, जरा मालिश कर दू, देखना, नीद आएगी।"

"नीद आ जाने से ही क्या फायदा है! अब तो हमेशा के लिए नीद आने से ही चैन मिलेगा।'

इसके साथ ही जरा ठडे हो जाते। कहते 'अब यही देखो न, कोई किसी काम का नही है। निवारण को विशना माझी के पास भेजा था। लेकिन इस निवारण के द्वारा कुछ हो सकता है? भला आदमी कह गया कि ज़िंदा है तो जरा पता लगा लेने मे नुकसान ही क्या है! जिससे जो कुछ कहा, मिल गया। यही नही मिलेगा! अगर अभी ज़िंदा है तो मालूम है, अठारह साल की उम्र हो गई होगी। तुम्हे भी कोई चिंता फिकर नही है! सारी चिंता मेरे ही सिर है! तुम्हे क्या लडकी के लिए माया-मोह कुछ भी नही होता?

अधेरे मे बडी बहूजी का चेहरा दिखलाई नही दे रहा था। बोली 'मेरी बात जाने दो।

मा तो है ही मेरा और है ही कौन! मेरी बात तो कोई नही सोचता। देखते देखते हरिसभा के नाम पर दुलाल साहा ने जमीन और पैसा मुझसे ठग लिया किसीने सोचा है इस बारे मे? मैंने कहा है कभी तुमसे इस बारे मे? या तुम्हीने कभी कुछ जानना चाहा है?"

बडी बहूजी ने इस बात का भी कोई जवाब नही दिया।

जो हुआ, ठीक ही हुआ। जहन्नुम मे जाए सब। मुझे ही क्या पडी है! देखते देखते चला जाऊगा। तब पता चलेगा तुम लोगो को! यह जमीन-जायदाद मुझे तो ले जानी नही अपने साथ। मेरे पीछे तुम्हे खाने-पहनने की तकलीफ न हो, इसीलिए सोचता हू यह सब। नही तो मुझे क्या पडी है!"

इसी तरह क्या-सब कहते रहते।

लेकिन उस दिन सुबह उठते ही धम धम करते नीचे पहुचे। निवारण मुह हाथ धोकर कुर्ता गले मे डालने ही जा रहा था। मालिक ने पूछा, 'सज धजकर किधर चल दिए? ऐसा कौन-सा जरूरी काम आ

पडा ?"

'कही जान को कह रहे हैं मुझस ?'

'तुम्हे और कहा जाने को कहूगा ! तुम्हारे लिए कौन सा काम हो सकता है ?"

'जो आप कहिए तो सही कि कहा जाना है !"

मैं कहूगा और तब जाओगे तुम ! खुद ही अक्ल नही है तुम्हार ! किशना माझी के यहा गए कितन दिन हो गए तुम्ह, लेकिन आज तक उसका पता नही है । तुम क्या एक बार जा नही सकते थे ? एक बार जाकर पता नही लगा सकते थे कि वह मोहनपुर से वापस लौटा या नही ?"

इसक बाद निवारण नही रुका। बाजार की थैली लेकर निकल गया। झटपट सौदा लेकर लौटते वक्त मछुआटोली का चक्कर लगा आएगा। बडी बहूजी भी चूल्हा सुलगाकर बैठी थी। नौकरानी ने मसाला पीसा। दो बाल्टी पानी भी लाकर रख दिया रसोईघर म। लेकिन सरकार बाबू का पता नही था अभी तक।

नौकरानी मुहल्ले की ही थी। काम करते साला हो गए। पहले मा काम करती थी अब लडकी काम करती ह। बगैर एक जने के काम चल भी कस सकता है।

बडी बहूजी ने कहा तू घर जा गौरी तेरी मा फिक्र करती होगी।

गौरी बोली रसोइ नही चढाओगी मा ?'

सरकार बाबू बाजार म ही नही लौट रसोई कैस चढाऊ ?'

गौरी और कब तक रुकती ! वह भी चली गई। बडी बहूजी भात चढाकर बठी थी। भात हो गया। बडी बहूजी ने भात का माड निकाला। फिर दाल चढाई। दाल भी हो गई। इसके बाद करने को कुछ नही था। रसोईघर मे चुपचाप बैठी रही। बाहर आगन मे धूप खिसकते खिसकते पूरब की ओर दालान म जाकर हल्की हो गई। उधर छाया भी हो गई। सरकार बाबू का अभी भी पता नही है। पूरा घर जैस आधी रात की तरह साय-साय कर रहा था।

अचानक घर के सदर दरवाजे पर कुछ लोगों की आवाज आई। कुछ लोग जोर-जोर से बातें करते वहां आए थे।

मालिक चौंक उठे। पहले साफ-साफ नहीं देख पाए। सामने वाले जंगल की पगडंडी पार कर बहुत से लोग सदर दरवाजे पर आए थे। पास आने पर भी उन्हें पहचान नहीं पाए मालिक।

"कौन ? कौन हो तुम लोग ?"

पहले की तरह लोगों का आना जाना तो रहा नहीं है। इसीसे जरा अजीब लग रहा था।

"मैं हलधर हूं मालिक !"

हलधर को जानते थे मालिक। उनकी रयत का खास आदमी था। पर तभी मालिक ने अचानक जैसे भूत देखा। निवारण के सारे बदन पर खून की धार बह रही थी। मालिक ने जरा और झुककर देखा।

"निवारण है न ? क्या हुआ इसे ?"

घर के अंदर और भी बहुत से लोग जमा हो गए थे। सरकार बाबू का उन लोगों ने तख्त पर लिटा दिया। निवारण के मुंह से कोई बात नहीं निकल पा रही थी। चोट सिर में ही गहरी थी। निवारण कुछ बोलने जा रहा था उससे पहले ही हलधर बोल उठा, "सरकार बाबू से किशनगंज के बाजार में मुलाकात हुई थी। मैंने पूछा कि मालिक ने पेंपुलबेड के पास वाली आहर बेच दी है ?"

मालिक जैसे आसमान से गिरे। बोले "कहते क्या हो हलधर ? पेंपुलबेड के पास वाली आहर मैंने बेच दी है ! क्यों बेचने लगा ? किसे बेचूंगा ?"

"जी, साहाजी को। यही तो सुना है मैंने !"

"दुलाल साहा को बेच दी है ? मेरा क्या दिमाग खराब हो गया है ?"

पूरी बात सुनकर मालिक आगबबूला हो उठे। दुलाल साहा इतना पाखंडी है ! वह जमीन हथियाने के लिए काफी रोज से मसूबे बांध रहा था। शुगर मिल खोलेगा। मालिक वहीं खड़े खड़े थरथर कांपने लगे। अचानक उन्हें लगा, जैसे उनके घर की जमीन भी उनके पांव-तले से

खिमकी जा रही है। उनके देखते-देखते केदारश्वर भट्टाचाय-वश का सारा ऐश्वय धूल मे मिल गया था। एक तरह से यही भर बाकी रहा था। और जमीन-जायदाद तो सब एक के बाद एक जा ही चुकी थी। इस शहर का ही भरोसा था उन्ह। यह भी चली गई तो उनके पास बाकी क्या रहेगा ? उनका रिहाइशी मकान ? उस आज भी कितना वक्त लगता है ?

जो लोग निवारण को लेकर आए थे, व अभी भी खडे थे। दोनो पक्षो से उनका कोई मतलब नहीं ह। किसी एक पक्ष के भी नहीं हैं। हालाकि दोनों पक्षो के ही साथ हैं। दोनो पक्ष के उत्थान-पतन के साथ ये लोग भी चढ़त उतरते हैं।

'डाक्टर बाबू को खबर कर आऊ मालिक ?"

कहकर एक जना चला गया। मालिक निवारण के चेहरे पर झुक देख रहे थे। किसीने निवारण की धोती से कपडा फाडकर उसके माथे पर पट्टी बाध दी थी। उसके ऊपर खून जमकर पपडी हो गया था।

मालिक न पूछा ये लोग तुम्ह मारने क्यो लगे निवारण ? क्या किया था तुमने ?"

निवारण की आखो स टपटप आसू गिरन लगे।

'जमीन बेचन की बात किसने कही तुमस ?"

निवारण न बहुत ही आहिस्ता से कहा 'मालिक, इसका बदला एक रोज भगवान जरूर लेंगे।'

भगवान की बात जाने दो निवारण, इतनी उमर हो गई तुम्हारी इतना सब देख चुके हो फिर भी भगवान के नाम नालिश कर रहे हो।"

'जी, ठीक ह मालिक लेकिन चाद और सूरज तो उग रहे हैं अभी तक।'

उगने दो ! वे लोग तुम्हे मारने क्या लगे ? तुमने हाथ उठाया था उन लोगो पर ?"

निवारण ने कहा, 'जी, सदानद देख-रेख कर रहा था उसने कहा कि साहाजी ने जमीन खरीद ली है। इसपर मैंने कहा—मालिक जमीन

बेचेंगे और मुझे पता नहीं चलेगा ? उसके बाद क्या हुआ, मुझे नहीं मालूम।'

मालिक गुस्से के मारे लाल-पीले हो गए।

उन्होंने कहा, ' हरामजादे, सुअर के बच्चे ने समझा क्या है ? गरीब हो गया हूं तो क्या समझता है कि मर गया हूं ? थाना पुलिस और गवनमेंट कुछ भी नहीं है ? '

हलधर बोला, "मालिक, थाने में रपट लिखाइए, हम गवाही देंगे।"

निवारण हाथ हिलाने लगा। फिर कमजोर आवाज में बोला, ' नहीं-नहीं "

मालिक बोल उठे 'तुम्हें डर किस बात का है दो पैसे गांठ में हो गए हैं इसलिए गैरकानूनी काम करते रहेंगे और हम चुपचाप सहते रहें ?'

अचानक बाहर गाड़ी रुकने की आवाज हुई। सभी देखने लगे, बात भी अजीब थी। जंगल जहां खत्म होता है वहीं उस सकरी पगडंडी के पास आकर मोटरगाड़ी रुकी, कीर्तिश्वर भट्टाचार्य आंखों से देख नहीं पाते लेकिन दुलाल साहा की मोटर की आवाज पहचानते हैं। उस ओर देखकर उन्होंने अपनी नजर और भी तेज की। लेकिन तिसपर भी कुछ अंदाज नहीं कर पाए।

हलधर बोला, "साहाजी की गाड़ी है।"

मालिक ने मन ही मन अपने-आपको तैयार किया।

आज किसी तरह कोई रहम नहीं करेंगे। इस दुलाल ने जिंदगी-भर जलाया है। विनय का बाना पहन उनके मुंह का कौर छीना है। उनके देखते-देखते किशनगंज में सिर उठाकर खड़ा हुआ है। उससे भी पेट नहीं भरा। अब जोर जबरदस्ती के रास्ते कीर्तिश्वर को खत्म करना चाहता है। इतनी हिम्मत हो गई है इसकी !

तभी हलधर फिर बोल उठा, ' क्या मालूम, साहाजी नहीं हैं। यह तो नई बहू है।"

नई बहू ! दुलाल साहा की पुत्र वधू !

नई बहू गाड़ी से उतरकर सीधे आने लगी। मालिक कुछ भी देख

नहीं पा रहे थे। जैसे एक छाया-मूर्ति आकर उनके पास खड़ी हो गई। आते ही उनके पांव छूकर हाथ माथे से लगाया।

"मैं नई बहू हूं ताऊजी !"

मालिक नई बहू की ओर एकटक देखते रहे। ठीक नहीं कर पा रहे थे कि क्या करें।

काफी देर तक उनके मुंह से कोई आवाज़ नहीं निकली। मालिक जैसे यकीन ही नहीं कर पा रहे थे। उनका व्यक्तित्व, उनकी मर्यादा सब जैसे दुलाल साहा की इस पुत्र वधू के आगे पलभर में धूलिसात हो गए।

लेकिन नई बहू को तब उस ओर देखने की फुर्सत नहीं थी। सीधे निवारण के तख्त के पास झुककर बैठ गई। बोली, "सरकार बाबू हुआ क्या था, मुझे साफ साफ बतलाइए तो ?"

निवारण के माथे पर पट्टी बंधी थी। दर्द के मारे आंखों के आगे अंधेरा छाया हुआ था। अचानक इस अनहोनी घटना से जैसे उसका दर्द भी कम हो गया, लेकिन मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला। वह भी जैसे हतवाक् हो गया था। हलधर के साथ खड़े जो लोग इतनी देर से बात-चीत कर रहे थे, वे सब भी पलक मारते जैसे गूंगे हो गए थे।

'आप मुझे सब कुछ बतला दें कि क्या हुआ था। किसने आपके ऊपर हाथ उठाया ? आप बेहिचक मुझे बतलाएं। डरने की कोई बात नहीं है, मैं असली घटना जानना चाहती हूं।"

तब जैसे मालिक के मुंह से बात फूटी।

उन्होंने कहा, "इससे पहले यह बतलाओ कि तुम्हें यहां किसने भेजा है ? दुलाल साहा ने ? या कि निताई बसाक ने ? मेरे पास आकर वकालत करने के लिए किसने भेजा है तुम्हें, पहले वही कहो।'

नई बहू ने मुंह घुमाया, मालिक की ओर देखकर बोली "आप मेरा जो भी अपमान करेंगे ताऊजी, मैं चुपचाप सह लूंगी, लेकिन निरीह भले आदमी पर अन्याय, अत्याचार नहीं चलने दूंगी।"

मालिक बोले, "अत्याचार दुलाल साहा के कहने पर ही हुआ है यह भी मालूम होगा ?"

' आप यकीन करें, मुझे कुछ भी मालूम नही है, और जो कुछ सुना है, उसपर यकीन नही था। इसीलिए सरकार बाबू से पूरी बात सुनने क लिए यहा चली आई हू।"

मालिक बोले "यहा आई हो, यह अच्छा ही किया लेकिन अन्याय अगर किसीने किया ही हो तो उसका प्रतिकार करने की क्षमता क्या तुममे है ?'

नई बहू ने कहा, प्रतिकार अगर खुद न भी कर सकू तो देश म पुलिस है, थाना है, वे लोग प्रतिकार कर सकते हैं कोर्ट-अदालत-हाई-कोर्ट भी तो हैं।"

मालिक मुसकराए। कर्कश व्यग्य की मुसकान ने उनके चेहरे को और भी तीखा कर दिया फिर बोले "थाना, पुलिस और अदालत का हाल तुम्हें मालूम नही है इसीसे कह रही हो। आज बगैर पैसे के वहा भी पूछ नही होती। और दुलाल साहा को अच्छी तरह मालूम है कि मेरे पास वह नहीं है इसीलिए इतनी हिम्मत हो गई है।"

नई बहू बोली, 'बाबा भोजन करने के बाद अभी-अभी विश्राम करने लेटे थे इसीलिए उनके कान मे बात नही डाली नही तो उन्ह भी साथ ले आती।"

मालिक बोले 'तुम्हारे न कहने पर भी दुलाल साहा होशियार आदमी है उसे सब मालूम है। अदर ही-अदर उसीकी सूझ बूझ से यह सब हुआ है।'

नई बहू न कहा, ' बाबा के नाम नाहक दोष न दें ताऊजी बाबा इस पचडे मे नही हैं।'

"तब क्या पेंपुलबेड के पासवाली आहर भूतो न खरीद ली ?

मालिक गुस्से मे थे। जरा ऊची आवाज मे ही बोल रहे थे। रुक-कर फिर बोले, 'आज दो साल से दुलाल साहा और निताइ बसाक इस जमीन को हथियाने पर तुले हैं। निवारण को भी फोडने की कोशिश करते आए हैं। इस बीच मेरी हालत ऐसी क्या खराब हो गई कि यह जमीन बेचने जा पहुचूगा दुलाल साहा के पास ? मैं ही जमीन बेच रहा हू और मुझे ही कुछ पता नही ? यह भी यकीन करने को कहोगी

मुझसे ? इस जमीन के आसरे ही हमारी सात पुश्त बनी रही, हमारा वश, हमारी प्रतिष्ठा एक दिन इसीपर निभर थी। आज न हुआ वह जमीन सूख गई हे लेकिन इसीलिए क्या मैं उसे बेच डालूगा ? इसके अलावा बेचने के लिए मुझे और कोई नही मिला उस चोर बदमाश और पाखडी को बेचूगा ? सोचती हो, तुम दुलाल साहा के लडके की बहू हो इसलिए जो कहोगी मैं वही मान लूगा ? इतना मूख और बेवकूफ समझ रखा है ? सोचती हो, मैं तुम लोगो का मतलब नही समझता ? '

इसके बाद आवाज जरा धीमी करके बोले, "खैर अब जाओ, काफी देर हो गई है तुम अब घर जाओ बिटिया, फैसला जो करना होगा मैं अकेला ही कर लूगा, तुम जाओ। '

नई बहू जैसे अब तक सपना देख रही थी। मालिक की बात पूरी होते ही बोली "लेकिन आपने वह आहर बेची नहीं है ?

मालिक ने और भी जोर देकर कहा, "नही-नहीं, नही बेची ! मेरा दिमाग इतना खराब नही हुआ कि पेट के लिए वह जमीन बेच दू।"

लेकिन मैंने दलील देखी है।"

'अगर देखी है तो गलत देखी है, और नही तो जाली दलील देखी है। '

लेकिन उसमे आपके दस्तखत हैं, किशनगज के रजिस्ट्रार के दस्तखत है, स्टाम्प है सब कुछ मैंने अपनी आखो से देखा है।"

मालिक ने कहा, "तब तुम अपने ससुर को अभी तक पहचान नही पाई। दुलाल साहा दिन को रात कर सकता है। रात को दिन कर सकता है। ऐसा कोई पाप नही, जो दुलाल साहा और निताई बसाक नही कर सकते। तुम अभी बच्ची हो, तुम्हारी समझ मे ये बातें नहीं आएगी।"

'लेकिन उस आहर के लिए आपको पच्चीस हजार रुपये नही मिले ?"

'अरे नही नही ! दुलाल साहा और पच्चीस हजार देगा ! अच्छा, अब तुम जाओ, अभी खाना भी नहीं खाया होगा तुमने, मैंने भी अभी नहीं खाया पिया है। सिर भन्ना उठा है। बहुत काम पडा है, थाने में

उमड पडा। मन ही-मन वोल उठा "हरि-हरि, हरि तेरा ही आसरा है "

मुकुद ने कहा ' सो तो है ही, हरि ही इसान का एकमात्र आसरा है। लेकिन थाना पुलिस भी ता है साहाजी ! काग्रेसी राज म हाथ की पहुच थाना पुलिस तक रहते प्रतिकार के लिए वही तो जाना चाहिए, हरि के पास तो जाया नही जा सकता '

दुलाल साहा का यह बात अच्छी नही लगी। हरि निंदा साहाजी को कभी अच्छी नही लगी । हाथ उठाकर विरक्ति के साथ उसने कहा, ' तुम चुप भी रहो मुकुद !'

मुकुद फिर भी नही रुका। बोला, उन लोगो का तो यही खयाल है कि आपने ही लठैत लगाकर सरकार बाबू को पिटवाया है। ग्वालो के मुहल्ले तो हर कोई यही कह रहा है साहाजी !"

' कहने दो सिर पर हरि तो है—वह सब देख रहा है ! '

लेकिन हरि क्या उन लोगो का मुह बद कर देंगे ?

दुलाल उसकी मूखता पर मुसकराया। उसने कहा ' अरे मूख ! हरि के नाम को क्यो बदनाम करता है जीभ गिर जाएगी तेरी ! अच्छा, मेरी एक बात का जवाब दे यह लोक ही सब कुछ है या परलोक भी कुछ है ?'

जी परलोक ही सब कुछ है।

दुलाल साहा बोला तब तू किस बुद्धि स थान-पुलिस की बात कर रहा है ? थाना पुलिस करना भी हुआ तो हरि ही करेंगे ! मामला मुकदमा हुआ तो वह भी हरि सम्हालेंगे। मैं कौन हू ? इस भवसागर मे मैं क्या हू ? मेरी औकात ही क्या है ? तुम्ही लोग कहो ?"

बात युक्तिसगत थी। इसके ऊपर और कोई युक्ति नही हो सकती।

अरे गाठ के पैसे खच कर जमीन खरीदकर मैं ही चोर हुआ। और तुम्हारे ये मालिक दगा करके महापुरुष हो गए, इसीका नाम है कलियुग ! अरे दीक्षा क्या यो ही ले ली मुकुद ! बहुत दुखी होने के बाद ही ली है यह दीक्षा। बडे मजे म हू। सारे दिन हरि का नाम लेता हू और शाति म पडा रहता हू। किसीके प्रति न राग है, न विराग

निवारण अपनी कमजोर आवाज में कहता, 'जी, मुझे इस पचड़े में न फसाएं। जो हो गया सो हो गया। बेकार पैसे बरबाद करके क्या होगा?'

मानिक कहते, 'हो पैसे की बरबादी, मैं इस बार फैसला करके रहूंगा, जरूरत हुई तो यह मकान भी बेचूंगा, इसी दुलाल साहा को बेचूंगा।'

मानिक को जैसे जिद पड़ गई थी। जैसे इस एक प्रसंग के सहारे दुलाल साहा को हमेशा-हमेशा के लिए निश्चिन्ह कर देने का मौका मिला है उन्हें। सिर्फ निश्चिन्ह ही नहीं, दुलाल साहा का वंश मूलसहित नष्ट करने पर जैसे उनके मन को थोड़ी सी शांति मिलेगी।

सुवह से एक बार अन्दर और एक बार बाहर कर रहे हैं। पिछले कुछ रोज से यही चल रहा है। जिस रोज निवारण सरकार माथे पर पट्टी बाधे आया, सीने का दद भी उस राज स बढ गया है। दुलाल साहा की पुत्र-वधू उस रोज आई थी तभी से।

वडी वहूजी वैसे बोलती नही हैं, लेकिन उस दिन चुप न रह पाइ। वाली उन लोगो की बहू आई थी न तुम्हारे पास।"

मालिक बोले, 'हा, देख रहा हू तुम्हारे कान तक सभी बातें जा पहुचती हैं। तुम्हे खबर किसने दी जरा मैं भी तो सुनू ?'

गौरी ने।'

अडोस पडोसवाले ने खूब मजा लिया होगा ?"

वडी बहूजी ने इस बात का कोई जवाब नही दिया।

'लें मजा लूटें इस बार सारा मजा निकाल दूगा। और भी बहुत कुछ सुनोगी अब। दुलाल साहा ही रहेगा या मैं ही रहूगा। कहता है, मैंने जमीन बेच दी है। पच्चीस हजार म मैंन वेंपुलबेड के पास वाली आहर बेची है दुलाल साहा को! और कोई काम नही है जो दुलाल साहा को जमीन वेचूगा। जमीन दान कर दूगा ऐसा ही हुआ तो लुटा दूगा दुलाल साहा को क्या देने लेगा सुनू जरा ? वह क्या साला है मेरे बाप का ?'

इसी तरह जाने क्या क्या बडबडाते रहते आप-ही आप।

उसी दिन सुवह उठने के बाद यथारीति नीचे आए थे मालिक। आकर देखते हैं निवारण तख्त पर उठकर बैठ गया है। साथ ही-साथ मालिक का पारा चढ गया। चढा ता था ही, और चढ गया।

बोले, 'यह क्या, तुम उठकर बैठ क्यो गए ?

निवारण ने धीमी आवाज म कहा आज थोडा अच्छा लग रहा है।

"अच्छा लग रहा है मान ? तुम्हें अच्छा लगने स ही हो गया ? अभी से अच्छा लगना तो ठीक नही है। मालूम है दुलाल साहा और निताई वसाक के नाम थाने म डायरी कर दी है ?

"जी, क्या बेकार यह सब झंझट करना ? इससे कोई फायदा नहीं होगा।"

'फायदा नहीं होगा माने ?"

'जो जिसके पास पैसा है वही जीतता। बड़े आदमियों के साथ मामले मुकदमे में न उतरना ही समझदारी है।

'लेकिन मेरे पास क्या पैसा नहीं है ? मकान नहीं है ? यह मकान बेचकर मुकदमा लड़ूंगा। दुलाल साहा को धूल में न मिलाया तो मेरा नाम नहीं। तुम चुपचाप लेट रहो। उधर दुलाल साहा ने सदानंद को भी अस्पताल में भर्ती कराया है। वह भी माथे पर पट्टी बांधे वहां पड़ा है मालूम है तुम्हें ?'

निवारण बोला लेकिन मैंने तो सदानंद को हाथ भी नहीं लगाया।'

'तुम क्या लगाने लगे हाथ ? मुझे फंसाने के लिए खुद ही अपना सिर फाड़ लिया है। दुलाल साहा मुझे जमींदारी चाल सिखला रहा है ! सोचता है मैं कुछ भी नहीं समझता ! जैसे मैं एकदम मूर्ख हूं ! तुम लेट रहो, कुछ रोज और लेट रहो, जब तक पुलिस की जांच पूरी नहीं हो जाती तब तक तुम्हें पड़े रहना है। देखता हूं दुलाल साहा कैसे पार पाता है "

निवारण कोई चारा न देख फिर से लेट गया तख्त पर।

किशनगंज के सदर अस्पताल में सदानंद पलंग पर पड़ा था। दुलाल साहा ने कोई कमी नहीं रहने दी है। साहाजी के घर से दोनों वक्त महीन चावल का भात आता है। अस्पताल के डाक्टर और नर्स उसकी पूरी हिफाजत करते हैं। दुलाल साहा भी देख जाता है।

दुलाल साहा पूछता है "सदानंद, अब जी कैसा है ?"

' जी, दर्द से सिर फटा जा रहा है "

"हरि का स्मरण करो सदानंद ! हरि का नाम लो। इस भव-सागर में हरि छोड़ और किसीका भरोसा नहीं है। मुझे देखते हो न। हरि को छोड़ और किसीकी चिंता नहीं करता नहीं तो इस उमर में मुझे दीक्षा लेने की क्या पड़ी थी ? ऐसी कौन सी आफत थी कि मैं दीक्षा

नई बहू बोली, ' बाबा, निताई काका आ रहे है "

"निताई आ गया तो यहा क्या नही चला आया ?"

नई बहू बोली, "कलकत्ते स खबर भेजी है मिनिस्टर को लेकर शाम तक आ पहुचेगे।"

"मिनिस्टर ! मिनिस्टर किसलिए ? कौन-सा मिनिस्टर ?"

"कालीपद मुखर्जी, आदमी अभी-अभी आकर खबर दे गया है। घर पर ही रुकेंगे सब लोग। किशनगज के बाजार म सभा होगी। हा, तो इन सभीके खाने पीने का इ तजाम करना पडेगा ! इसलिए मैं खुद ही चली आई।'

दुलाल साहा बोला, "आकर अच्छा ही किया।

"लेकिन कितने रोज रुकेंगे, इस बारे मे तो कुछ भी नही कहलाया।"

'दो एक रोज तो जरूर ही रुकेंगे। मत्री खुद आ रहे हैं तो कम-से-कम दो सौ लोगो का इ तजाम तो करना ही पडेगा। चलो, घर चलें।"

खान म क्या क्या रखना होगा ?"

"सभी कुछ रखना पडेगा—मास-मछली, पुलाव कलिया चॉप कट लेट और पूरी-भात "

"टेबल चेयर लगाकर या जमीन पर पत्तो पर ? '

दुलाल साहा ने कहा, "इ तजाम दोना तरह का ही रखना पडेगा। उस बार क्या हुआ था याद है ? हम लोगो ने पत्तलो का इ तजाम किया था। बाद मे काटे-चम्मच और चेयर टेबल का इ तजाम करना पडा था ! रिस्क लेने की कोई जरूरत नही है। अपने यहा दोना तरह का इ तजाम तो है ही। और जब पुलिस मत्री है तो हा सकता है, गोरे साहब हा। इसलिए दोनो तरह का इ तजाम ही करना पडेगा। खर्चे की फिकर न करना। हरि के ऊपर छोड दो—हरि ही सम्हाल लेंगे।"

मालिक पहले तो पहचान ही न पाए। बात भी तो कितनी पुरानी हो गई। पूरे पद्रह सोलह साल पहले देखे किशना माझी को न पहचान पाना स्वाभाविक है। सिर के बाल सन के समान सफेद हो गए है। बैठके

लेने जाता ?

सदानद ने कहा 'थाने से दरोगा बाबू आए थे।'

अच्छा तो तुमने क्या कहा ?'

जी जो मालूम है सो ही कह दिया मैंने। कह दिया कि मैं मजदूरो को जमीन पर मड लगवा रहा था कि अचानक कीर्तिश्वर भट्टाचारजी के मनेजर निवारण सरकार ने पीछे से आकर मेरे सिर पर लाठी से वार किया।

दुलाल साहा ने कहा, 'देखो सच बोलना सदानद भूलकर भी झूठ न बोल बैठना नही तो तुम्हारी जीभ गिर जाएगी।'

पुलिस और और लोगो की भी गवाही लेगी ?'

तुम्ह इस सबके बारे म सोचने की जरूरत नही है। निताई है। तुमने जिस तरह गवाही दी है ये लोग भी उसी तरह गवाही देंगे सच छोडकर झूठ कोई भी नही बोलेगा। अरे झूठ बोलने से नरक म नही सडना पडेगा ? नरक का डर नही है क्या किसीको ? तुम चुपचाप हरि का नाम लो पडे पडे मेरी तरह सब कुछ हरि के भरोसे छोडकर आराम करो देखाग

बात पूरी नही हो पाई। नई बहू पास आकर खडी हो गई।

दुलाल साहा ने हसकर कहा यह देखो नई बहू भी आ गई। जानते हो सदानद पहले अपनी यह नई बहू भी गलत समझ बैठी थी। इसका खयाल था मैं ही जस मालिक से झगडा करने गया। अरे मुझे अगर यही सब करना है तो यह दीक्षा क्या ली ? मुझे किस चीज का मोह है ? बाकी जितने दिन हैं इस दुनिया म शाति से कट जाए बस और कुछ भी नही चाहिए बाबा। धन दौलत, रुपया मकान गाडी अब किसी चीज म आकर्षण नही रहा बेटी।'

नई बहू नहाने के बाद रुखे बाल किए आ गई थी। लाल चौडी किनारी की रेशमी साडी पहन थी। उसी ओर देखकर दुलाल साहा मुसकराने लगा। फिर बोला नही बेटी तुम्हारा कोई दोष नही है दुनिया ऐसी ही जगह है यहा असली सोना देने पर भी लोग उसे पीतल समझते हैं। सुनार से जाच कराते हैं।'

नई बहू बोली बाबा निताई बाबा आ रहे हैं ,

"निताई आ गया तो यहां क्या नहीं चला आया ?"

नई बहू बोली कलकत्ते में खबर भेजी है मिनिस्टर को लेकर शाम तक आ पहुंचेंगे।'

"मिनिस्टर ! मिनिस्टर किसलिए ? कौन-सा मिनिस्टर ?

'कालीपद मुखर्जी आदमी अभी-अभी आकर खबर दे गया है। घर पर ही रुकेंगे सब लोग। किशनगंज के बाजार में सभा होगी। हां, तो इन सभी खाने-पीने का इन्तजाम करना पड़ेगा। इसलिए मैं खुद ही चली आई।

दुलाल साहा बोला आकर अच्छा ही किया।

'लेकिन कितने रोज रुकेंगे, इस बार में तो कुछ भी नहीं कहलाया।

'दो-एक रोज तो जरूर ही रुकेंगे। मंत्री खुद आ रहे हैं तो कम-से-कम दो सौ लोगों का इन्तजाम तो करना ही पड़ेगा। चलो, घर चलें।"

'खाने में क्या-क्या रखना होगा ?

सभी कुछ रखना पड़ेगा—मांस-मछली, पुलाव कलिया चाप-कट लेट और पूरी भात

"टेबल चेयर लगाकर या जमीन पर पत्ता पर ?

दुलाल साहा ने कहा इंतजाम दोनों तरह का ही रखना पड़ेगा। उस बार क्या हुआ था, याद है ? हम लोगों ने पत्तलों का इंतजाम किया था। बाद में कांटे-चम्मच और चेयर-टेबल का इंतजाम करना पड़ा था। रिस्क लेने की कोई जरूरत नहीं है। अपने यहां दोनों तरह का इन्तजाम तो है ही। और जब पुलिस मंत्री हैं तो हो सकता है गोरे साहब हों। इसलिए दोनों तरह का इंतजाम ही करना पड़ेगा। खर्चे की फिकर न करना। हरि के ऊपर छोड़ दो—हरि ही सम्हाल लेंगे।'

मालिक पहले तो पहचान ही न पाए। बात भी तो कितनी पुरानी हो गई। पूरे पन्द्रह-सोलह साल पहले देखे किशना मांझी को न पहचान पाना स्वाभाविक है। सिर के बाल सन के समान सफेद हो गए हैं। बठवे

म आकर इधर उधर देख रहा था। माझी ने ग र" ठी स अदाजा नही कर पा रहा था।

कौन ?'

मालिक की नजर भी उतनी अच्छी नहीं है।

मैं किशना माझी मालिक—पा लागन "

किशना माझी न आगे बढकर मालिक के सामन जमीन पर सिर रखा।

साथ मे यह कौन है ?'

किशना माझी बोला मेरा नाती है जमाई के घर गया था साथ म इसे भी ले आया। मालिक को परणाम कर।"

किशना माझी के नाती न भी नाना की तरह जमीन पर माथा छुआ कर प्रणाम किया।

मालिक बोले, हा तो किशना, मैंने अपनी पोती के बार म जानने के लिए तुम्हे बुलाया था। पोती का खयाल है तुम्हे ? हरतन ! तीन साल की मेरी पोती ! सिद्धेश्वर की लडकी ! वह तो मर गई थी बाद मे सिद्धेश्वर भी लापता हो गया बहूरानी भी चल बसी—ये बातें मैं ता भूल ही गया था लेकिन अभी कुछ दिन पहले दुखान साहा के यहा एक साधु महाराज आए थे, तो उनकी जन्म पत्री देखकर उन साधु महाराज ने ही कहा कि वह अभी जीवित है।'

किशना माझी बोला 'जी सरकार बाबू से सब सुना ह मैंने।

' ओह, तुम सुन ही चुके हो तो फिर से कहने की क्या जरूरत है। तो यह बात सुनने के बाद से मेरा जी छटपट कर रहा है, समझे ? चाद-सी बिटिया को इस तरह फेंक दिया। अब तुमसे क्या कहू कि मुझे कितना अफसोस हो रहा है। अच्छा, अच्छी तरह सोचकर देखो कि हरतन बिटिया का सस्कार हुआ या नही ? कुछ याद है तुम्हें ?"

किशना जमीन पर ही बैठ गया।

बोला, याद तो किया है मालिक मुझे जितना ध्यान है बिटिया का सस्कार होते नही देखा मैंने—बडे आधी पानी की रात थी। लकडी का इन्तजाम करके मैं घर चला गया था। सत्य था, सत्य से कह गया कि

तू देखना, मैं चलूगा—दमे का रोगी हू न।"

"सत्य कौन है ?"

"जी, बसत माझी का लडका।"

"तो वह क्या कहता है ? उसे खबर नही कर सकते ? अगर कुछ याद हो उसे ?"

"जी, तब तो झझट ही खत्म हो जाता ! वह तो यहा नही है, लडके के पास रहता है।"

"लडका कहा रहता है ?"

"नौकरी करता है हावडा की जूट मिल मे। कलकत्ता।"

मालिक जैसे उत्तेजित हो उठे। बोले, "उसके लडके का ठिकाना दे सकते हो ? न हो अपने इस नाती के हाथ ही भेज देना, तुम्हें खुद आने की जरूरत नही है, पर्ची पर उसका ठिकाना किसीसे लिखवाकर भेज देना। मैं खुद ही कलकत्ते जाकर सत्य से मिल आऊगा।"

किशना बोला "सो तो ठीक है, पर आप इस उमर मे अकेले कलकत्ता कैसे जाएगे ?"

मालिक ने कहा, "क्या किया जाए ? जाना ही होगा।"

जरा रुककर फिर बोले, "इसके अलावा मेरा और है ही कौन जो जाएगा ? लडका लडकी, नाती पोते कोई भी तो नही है मेरे, जिसके भरोसे निश्चिन्त चैन की नीद सो सकू, ऐसा कोई नही है मेरे किशना कोई नही।"

किशना बोला, "जी, सो तो भगवान की मर्जी, आप उसमे क्या कर सकते हैं।"

मालिक ने कहा, "नहीं किशना भगवान को दोष न दो, भगवान ने कुछ किया होता तो भी बात समझ मे आती लेकिन मेरा सर्वनाश करने वाला तो इसान है। दुनिया मे इसान का इसान जैसा शत्रु दूसरा नही है, फूल-सी लडकी इस तरह चली जाती ? बेचारी बहूरानी बची थी—वह भी चल बसी ! यह किसकी शत्रुता है ? किसकी ?"

किशना माझी की समझ मे कुछ नही आया। वह आखें फाडे मालिक की ओर देखता रहा।

"और किसकी ! इस दुलाल साहा की ! इस दुलाल साहा ने ही तो मेरा सर्वनाश किया है। नहीं तो इस हरिसभा के झंझट में पड़ने की क्या जरूरत थी मुझे ? और, तो और यह दुलाल साहा ही इतनी जगह रहते यहां किशनगंज ही क्यों आया मरने ? और कोई जगह नहीं मिली ? यहीं देख लो, एक निवारण था, उसका भी सिर फोड़ डाला।"

जरा रुककर फिर बोले "खैर जाने दो, ये बातें कहकर तुम्हारा दिमाग खराब नहीं करना चाहता। सो वही ठीक है। ठिकाना भेज देना, मैं कलकत्ते जाकर आखिरी कोशिश कर आऊंगा। जब डूबना ही है तो एक बार नीचे तले तक देख लिया जाए ! अच्छा, तुम्हें कैसा लगता है किशना, हरतन जीवित है ?"

किशना ने जैसे दिलासा देते हुए कहा 'जी, साधु-संन्यासियों की कही बातें कभी झूठ हो सकती हैं—अपने दिव्यचक्षुओं से सब कुछ देख सकते हैं।"

मेरा भी यही खयाल है। साधु महाराज ने क्या कहा, मालूम है ? कहा है कि हरतन अगर वापस आ जाए तो भट्टाचार्य-भवन फिर से जगमगा उठेगा, पहले की तरह फिर से नागों का आना जाना शुरू होगा नौकर-चाकर और आत्मीय लोगों से घर भर उठेगा। आज दुलाल साहा को देख रहे हो न और पहले भट्टाचार्य भवन को भी देखा है तुम लोगों ने ! उसके सामने यह, तुम्ही कहो न ? उसके साथ इसका कोई मुकाबला हो सकता है ? ओछा कहीं

किशना माझी चुपचाप सुन रहा था।

मालिक कहते रहे "लेकिन मैं भी आज कहे देता हूं तुमसे कि इस दुलाल साहा की ठसक निकालकर ही दम लूंगा। मैं भी देखता हूं। यह दुलाल साहा कितना बड़ा हरामी है। सोचता है, मैं मर गया हूं। मैं मरा नहीं हूं, जैसे सिर पर भगवान जैसी कोई चीज ही नहीं है ! अगर भगवान नहीं है तो ये चांद और सूरज घूम कैसे रहे हैं दुनिया कैसे घूम रही है ? यह जो इतना बड़ा युद्ध हो गया, हिटलर भी मर गया, इससे क्या दुनिया का कोई नुकसान हुआ है ? कहो, तुम्ही कहो ? मैंने कुछ गलत कहा है ? दुनिया का रत्तीभर भी नुकसान हुआ है ?'

किशना माझी बोला, "जी, सो तो है ही मालिक '

"तब ! इतना गरूर किस बात का ? लडका विलायत गया है इस-लिए ज़मीन पर पाव ही नही पडता जूट की आढत क्या हुई जैसे सिर ही चढ गया है ! एक बार अगर हरतन आ जाए तो फिर कहा जाओगे बच्चू ! तब अगर मेरा पाव ज़मीन पर न पडे, मैं भी अगर सिर चढ बैठू ?"

कहते कहते मालिक का शायद खयाल ही न रहा कि इतनी बातें वे किसे सुना रहे हैं। खयाल होते ही रुक गए।

बोले, "खैर, जाने दो भगवान की कृपा से फिर कभी दिन फिरे तो तुम लोग खुद ही देख लोगे अभी से कहकर क्या फायदा—तो वही बात पक्की रही किशना, याद रहेगी न मेरी बात ?"

किशना माझी अपने नाती का हाथ थामे उठ खडा हुआ। बोला "जी अच्छी तरह याद रहेगी।

मालिक बोले, ' खुद ही कलकत्ते जाऊगा किशन ! दूसरो के किए काम नही होता, दूसरो के भरोसे रहने पर काम चौपट होता है। जैसे भी हो, खुद ही जाऊगा।'

किशना माझी नाती का हाथ पकडे सदर दरवाज़े से निकलकर झाडियो के बीच खो गया। मालिक उन लोगो को नही देख पा रहे थे, लेकिन उनकी आखो के आगे एक दूसरा ही दृश्य उभर आया। उन्हे लगा जैसे देखते-देखते सामने एक बाग लहलहा उठा। फूलो का बाग। कोने की ओर।

फूल की झाडी फिर से खिल उठी। सफेद फूलो के गुच्छे खिल रहे हैं। लाल चौडे रास्ते पर लाल और सफेद घोडे-जुती गाडी खडी है। सईस कोचवान गाडी के सिरे पर बैठे है। उधर तालाब मे फिर से पानी तरगें मार रहा है। पहले की तरह ही कमल के फूल खिले है। मालिक के सीने की धडकन जैसे बढ गई। आनन्द और भय से मालिक जैसे मन-ही-मन सिहर उठे। एक एक कर कमल के फूलो को गिनने लगे। आश्चर्य ! पूरे एक सौ आठ कमल के फूल ! एक सौ आठ कमल के फूल एकसाथ खिल रहे हैं।

किशनगंज में दुलाल साहा के घर के सामने वाले खुले मैदान में पूरे दम मीटिंग चल रही थी। निताई बसाक को एक मिनट बैठने की फुर्सत नहीं थी। असली नेता वही है। खद्दर की तहाई चादर कंधे पर डाल रखी है। बीच बीच में दुलाल साहा के पास पहुंचकर कान में कुछ फुसफुसाता फिर मुंह पर उंगली रखकर भीड़ की ओर देख कहता—आहिस्ते, आहिस्ते

जो लोग भाषण सुनने के लिए आए हैं सब सीधे-सादे और सरल आदमी हैं। गड़बड़ करने की हिम्मत उनमें नहीं है। ब्लॉक डेवलेपमेंट ऑफिस के पूरे स्टाफ को आज छुट्टी मिली है। वे लोग सब पहली लाइन में बैठे हैं उनके पीछे जूट के व्यापारी हैं। फिर हैं मछुआटोली के अनपढ़ किसान और खेत मजदूरों का समूह। भय और श्रद्धा के मारे सब गद्गद हैं। गदगद हुए बगैर चारा भी नहीं है। थाने से पुलिस ने आकर चारों ओर से घेरा डाल रखा है। बीच में तख्त लगाकर स्टेज बनी है और उसपर कुर्सियां हैं। डिप्टी मजिस्ट्रेट थानेदार और दुलाल साहा वहीं बैठे हैं। फूलों की माला गले में डाले मंत्री कालीपद मुखर्जी भाषण दे रहे हैं।

दुलाल साहा ऊपर नहीं बैठ रहा था।

उसने कहा था, 'मेरी क्या जरूरत है ? मैं कौन हूं ? मैं यहां एक ओर बैठकर ही भाषण सुनूंगा।

निताई बसाक ने कहा था यह भी कोई बात हुई ? यही तो मुश्किल है तुम्हारे साथ। मंत्री कोई रोज रोज तो आएंगे नहीं इसी मौके पर छुपे रहोगे तो अकेला मैं क्या-क्या सम्हालूंगा ?'

आखिर बहुत कहने सुनने के बाद दुलाल साहा राजी हुआ। हाथ में हरिनाम की माला झोली थी। हरिनाम जपते-जपते ही भाषण सुन रहा था।

मंत्री महोदय का गला अच्छा था। वे कह रहे थे ' इस संकट के समय सिर्फ सरकार के हाथ देश-सेवा की जिम्मेवारी छोड़कर निश्चित बैठने से काम नहीं चलेगा। आप लोग भी आइए, आप लोगों को भी हमारे साथ देश-सेवा में हाथ मिलाकर चलना है। यह देश आपका अपना देश है।

अनक कष्ट सेकर अनक जवानो की बलि चढाकर आपको यह स्वाधीनता प्राप्त हुई ह। जिस तरह आपने यह स्वाधीनता अजन करने का दायित्व एक दिन अपने कधो पर लिया था, अब वही स्वाधीनता भोगने का गुरुदायित्व भी आपको लेना पडेगा। आप ही देश के मालिक हैं आप यानी कि जनसाधारण ही इस देश के कर्णधार हैं हम मन्त्री होते हुए भी कुछ नही हैं। आपकी ओर से हम देश की उन्नति के लिए चेष्टा कर रहे हैं। गाधीजी ने क्या चाहा था ? बोलिए, आप लोग गाधीजी के बारे म तो जानते ही हैं, आप ही कहिए गाधीजी ने क्या चाहा था, कहिए ?

हलधर सामने ही बैठा था। मन्त्री महोदय न उसीकी ओर देखकर प्रश्न किया था। वह और भी घबडा गया।

कात पास ही बैठा था। उसकी हिम्मत को दाद देनी चाहिए। चट स वाला 'जी वे चाहते थे कि हम लोगो का भला हो।

मन्त्री महोदय ने बात लपक ली। बोले 'बिलकुल ठीक। गाधीजी रामराज्य प्रतिष्ठित करना चाहते थे। रामराज्य माने क्या होता है ? आपन रामायण पढी है, रामराज्य के बारे मे आप लोगो को ज्यादा कुछ बतलाने की आवश्यकता नही है। यानी रामराज्य माने ऐसा राज्य जहा जहा "

दुलाल साहा न निताई बसाक की ओर देखकर इशारे से पास बुलाया। निताई बसाक के पास आकर नीचे झुकते ही दुलाल साहा ने फुसफुसाते हुए पूछा ' मालिक मीटिंग मे आए हैं क्या ?"

निताई न कहा, नही।"

' हिम्मत तो कम नहीं है। तुमने खबर कराई थी ? '

निताई न कहा, ' सुना है बुड्ढा कलकत्ते गए हैं। '

कलकत्ते ! कलकत्ता क्या करने गए हैं ? पहचान का है क्या कोई ? खबर ली है ? '

निताई ने कहा ' अरे जाने दो न, मैं किसलिए हू ?'

नहीं, वो बात नही है जरा होशियार रहना चाहिए। सदानद का अस्पताल म चुपचाप रहने को कहो और डॉक्टर को दो सौ रुपये देन का

कहा था, सो दिए हैं न ? डाक्टर के हाथ मे ही तो सब कुछ है न !"

उस बारे म फिकर मत करो, वह लिख देगा कि लाठी की चोट लगने से स्कल' फट गया है।'

'स्कल माने ?'

निताई ने कहा, 'इस वक्त ये बातें छोडो। बुढऊ को ऐसा मजा चखाऊगा कि याद करेंगे। तुम देखे जाओ।"

"और निवारण ? उसका क्या हाल है ? जिंदा है न ?

मत्री महादय कह रहे थे, 'हम लोग चाहते हैं कि भारत के साढे सात लाख गावो के लोग अपनी समस्याओ का समाधान खुद ही करने के काबिल बनें। सरकार पक्की सडकें बनवाएगी, आप लोग मिलकर दोनो ओर फलो के पेड लगाए देश की खाद्य-समस्या मिटाने का भार आपपर है। बगाल सुजला सुफला शस्य श्यामला देश है। आप लोग कोशिश करें तो यहा सोना फल सकता है। पोखरो मे मछली पालिए, खेतो मे धान रोपिए आप जरा-सी कोशिश कर अन्न और वस्त्र-समस्या का समाधान कर सकते हैं। छोटी छोटी बातो के लिए सरकार को परेशान न करें, सरकार बडे-बडे कामो मे व्यस्त है। सरकार अगर आपकी इन छोटी छोटी समस्याओ म ही लगी रहेगी तो बडी-बडी समस्याओ के बारे मे कब सोचेगी ? इन कुछ ही सालो मे सरकार ने क्या क्या किया है, आप लोगो को मालूम ही होगा। डी० वी० सी० बाध बना है मयूराक्षी बाध बना है अब फरक्का बाध बनेगा। और भी बहुत से काम बाकी हैं अब अगर सरकार का देखना पडे कि किसने किसकी जमीन गरकानूनी तरीके से हडप ली है किसकी बकरी ने किसके खेत का धान खा डाला तो सरकार कोई भी काम नही कर पाएगी। आप भी आगे आए, हमार साथ हाथ मिलाए, तभी तो राष्ट्र मे नवजागरण होगा। तभी तो हम दुनिया की और पाच शक्तियो की तरह सिर ऊचा करके खडे हो सकेंगे। सरकार जितना कुछ कर सकती है कर रही है। हाल ही मे रूस स ख्रुश्चेव आकर हमारे कामो की प्रशसा कर गए हैं चीन से आकर चाऊ-एन लाई भी पडित नेहरू के जन्मदिन पर बहुत से उपहार दे गए हैं। अपन पडोसियो की ओर हमने दोस्ती का हाथ बढाया है अखबारो मे आपने पढा होगा।

है [illegible] की उम्र [illegible] से बढ़ रहे हैं ऐसे वक्त अगर कोई पैसे न रहे। [illegible] दुनिया में हमारी ऐसी ही बनती है इनके लिए [illegible] का [illegible] बन दिन है इन्ने हमारे लिए।"

[illegible] कहा ने कि मैं [illegible] निताई बसाक को।

निताई के मन [illegible] उसने गुनगुनाकर कहा, "मन्त्री महोदय को अभिनन्दन में बुलाना होगा। उनको बताना होगा कि यहाँ का अस्पताल कितना उपेक्षित है वहाँ सब... उनके अभिनन्दन के लिए मैंने किराए पर लिया है यहाँ बड़ा सा कमरा..."

निताई बोला, "तुम फिकर मत करो।"

"एक बात और मन्त्री मेरे साथ बात कर रहे हैं ऐसी एक फोटो मिलने? बड़े साइज में मढ़वाकर टाँगने के लिए नई बहू से कहा है खाने-पीने का इन्तजाम जरा ठीक से करने के लिए।"

निताई बोला, "तुम बेकार नवस क्यों हो रहे हो? मैं तो हूँ।"

"नहीं ऐसी बात नहीं है। पता नहीं मन्त्री फिर दुबारा कब आएँ। अरे हाँ, वह बात याद है न?"

निताई बसाक समझ नहीं पाया। उसने पूछा, 'कौन-सी बात?'

"कब कौन-सा काम मन में रह जाए, कहा नहीं जा सकता न। मैंने नई बहू से कह रखा था कि वह मन्त्री को प्रणाम करके पाँच सौ चाँदी के रुपयों की थैली उन्हें भेंट करे। शरणार्थी फंड के नाम पर, याने..."

निताई बसाक कुछ कहने ही जा रहा था कि अचानक हुई तालियों की गड़गड़ाहट से सजग हो गया। दुलाल साहा भी सीधे होकर बैठा। कालीपद बाबू का भाषण पूरा हो गया था। निताई बसाक ने पीछे आकर झुककर कहा, "वण्डरफुल भाषण हुआ, क्या बात है! बात को आपने इतना सहज करके समझा दिया कि पानी की तरह गले उतरे।"

मीटिंग पूरी होने के बाद काफी देर तक लोग आ-आकर कहते रहे—वाह, क्या भाषण दिया है!

सुकान्त राय ने सीधे आकर पदधूलि ली। माथे से लगाई। पत्नी भी थी। उसने भी पदधूलि लेकर माथे से लगाई। सुकान्त बोला, "वण्डरफुल सर, वण्डरफुल। किरणशंकर राय का भाषण सुना था, आपका

उसस भी ओजपूण, उससे भी ज़ोरदार था।"

दुलाल साहा ने कुछ भी नही कहा। वह तो जैसे निमित्तमात्र था। जसे कुछ भी नही है। सारे कामकाज वतमान भविष्य सब कुछ जैसे हरि के भरोसे छाड निश्चित है। उसे न कोई उद्वेग है और न ही कोइ दुश्चिता।

सुकान्त ने पूछा आपको भाषण कैसा लगा साहाजी?

दुलाल साहा न कहा, 'सब हरि की इच्छा है भाई, उसकी इच्छा हो तो हर काम सही उतरता है। इसीलिए तो कहता हू कि इस भवसागर म एकमात्र हरि का भरासा है।'

तब तक पुलिस वाले सजग हो उठे। कोई आगे न बढ आए भीड ठेलकर कोई मत्री महादय के सिर पर न आ पाए। खास खास कुछ लोगा का छोडकर सबको पीछे हटा दिया—पीछे हटिए, पीछे हटिए।

सुकात राय निताई बसाक को ढूढ रहा था। एक बार सिफ मामूली-सा परिचय हा पाया था। निताई बसाक ने ही परिचय करा दिया था।

निताई बसाक ने कहा था आप यहा के बी० डी० ओ० हैं, किरण शकर राय के प्रधान शिष्य।'

सुकात ने कहा था आपने शायद मेरी फाटा देखी हो। आनद बाजार पत्रिका म छपी थी।

कैसी फाटो?'

सुकात न कहा 'जी मैंने किरणशकर राय की डेड बॉडी का कधा दिया था—केवडातल्ला श्मशान तक, पूरे सात मिल का रास्ता था लेकिन यहा जगल म पडा हू बच्चो के एजूकेशन के लिए अगर कही कलकत्ते के आसपास बदली हो जाती "

भीड के मारे बुरा हाल था। अकेले मे कोई बात कह सके, अपनी समस्या का ब्यारा सविस्तार समझाकर कह सके इसका कोई भरोसा नही था। पुलिस के दरोगा डिप्टी मजिस्ट्रेट, सब जैसे ठीक उसी वक्त आ धमके। मिनिस्टर का देखते ही हर कोई स्वार्थसिद्धि म लग जाता है। सुकान्त की बात पूरी होने से पहले ही और दस आदमी टूट पडे। ठीक से बात कहने का मौका ही नही दिया किसीने।

निताई बसाक ने कहा था ' चलो ठीक है। परिचय तो हो गया। मिनिस्टर भी रहेंगे मैं भी रहूंगा आपको फिक्र किस बात की है ?

सुकांत ने कहा लेकिन देखा न आपने हर किसीको ठीक इसी वक्त काम पड गया। मौका था किरणशंकर राय की बात कहकर ट्राम-फेर की बात उठाऊंगा।

' लेकिन आप तो बच्चों की एजूकेशन की बात कर रहे थे, आपके बच्चे कहां हैं ?

''बच्चों की एजूकेशन के अलावा और क्या कारण बतलाता ? और कोई कारण दिमाग में ही नहीं आया।

ठीक ही किया आपने बाद में फिर काम जुटा दूंगा आपके लिए। चीफ मिनिस्टर तक को इस किशनगंज में ला सकता हूं मालूम है ? आप ही कहा ! एक बार जरा गुजर मिन हो जान दीजिए।'

हां, तो इस सबके बाद भी सुकांत ने आशा नहीं छोडी। मीटिंग के बाद ही चट से मिनिस्टर की पदधूलि माथे से लगाई। सोचा था, मौका मिलते ही अपनी बात कहेगा लेकिन पुलिस वालों ने फिर सब गडबड कर दिया।

क्या करें ठीक न कर पाकर सुकांत और सुकांत की पत्नी वहीं खडे रहे। अगर निताई बाबू दिखलाई दे जाए तो उनसे कहकर मिनिस्टर से अपनी बात कहने की आखिरी कोशिश करें। किशनगंज से एक बार चले जाने के बाद फिर क्या उसे मौका मिल जाएगा मिनिस्टर से बात करने का ? अचानक थोडी दूर पर निताई बसाक दिखलाई दिया।

''निताई बाबू निताई बाबू !

लेकिन निताई बसाक जैसे आज 'ईद का चांद' हो गया था। दूर भीड में एक बार जरा दिखलाई देकर फौरन ही भीड में फिर खो गया। पुलिस के पहरे में मिनिस्टर तब तक दुलाल साहा के घर बाहर के दालान में पहुंच गए थे। साथ में डिप्टी मजिस्ट्रेट दुलाल साहा और बहुत से गण्य-मान्य लोग।

घर के अंदर टेबल सजाकर खान सीने का इंतजाम हुआ था। वहां पहुंचते ही जैसे चौंक उठा—वह कौन है ! कौन है वह !

नई बहू भी वहा खडी थी। खडी खडी बात कर रही थी। ससुर को देखते ही पास चली आई।

नई बहू वह कौन है ?"

नई बहू ने धीमे से कहा उस घर की बडी बहूजी आई हैं।'

दुलाल साहा की समझ मे तब भी नही आया, निताई बसाक ने पास आकर पूछा बुढऊ तो सुना है सलाह-मशवरा करने कलकत्ता गए हैं यह क्या करने आई हैं ?

नई बहू बोली बडी मुश्किल मे पड गई हैं। घर मे कोई नही है सरकार बाबू की हालत अब जाए तब-जाए है क्या करें, कुछ समझ मे न आने पर नौकरानी का साथ लिए यहा चली आई हैं '

निताई बसाक भभक उठा, सरकार बाबू बीमार हैं तो हम क्या करें ? हमे क्या मतलब उससे ?'

दुलाल साहा दूरदर्शी आदमी ठहरा। उसने कहा कैसी बात कर रहे हो निताई ? विपत्ति मे शत्रु मित्र नही देखा जाता मैं जा रहा हू।'

निताइ बसाक बोला इस वक्त तुम्हारे जाने से कैसे होगा ? यहा कौन सम्हालेगा ?"

यहा देखने के लिए बहुत लोग हैं। आदमी का जीवन बडा है न कि मिनिस्टर की आव भगत। हरि हरि अब तो मैं बेकार ही हरि-हरि करता हू।'

बडी बहूजी सिर ढक एक ओर खडी थी। ऐसी मुश्किल मे पहले कभी नही पडी थी। घर मे और कोई था नही सो नौकरानी का साथ लेकर यहा चली आइ। घर के दीवानखाने मे पडे सरकार बाबू की हालत हाथ से बाहर हो चली है। आसपास कोई नही जिससे मदद मिल सके। मालिक अपनी धुन मे कलकत्ते जा बैठे हैं। उनकी चिंता अलग लगी थी। खबर देनेवाला भी कोई नही था आसपास। गौरी आई काम करने उसीको लेकर चली आइ। यहा इतनी भीड होगी, उन्हें यह भी मालूम नही था। पुलिस का पहरा देखकर जरा अजीब ही लगा था। लेकिन औरत को देख किसीने रोक-टोक नही की। सीधे अदर चली आइ।

दुलाल साहा ने आगे बढकर कहा, 'आप फिकर न करें मालकिन ! मैं सारी व्यवस्था किए देता हू ।"

कहकर किसीको पुकारा, ए कात इधर आ ।'

इसके बाद ही सारी व्यवस्था हो गई। अपनी गाडी मे बैठाकर बडी बहूजी को घर पहुचा दिया। डाक्टर बुलवा भेजा। निताई बसाक से कहा, "दिमाग जरा ठडा रखकर काम करना चाहिए।"

निताई बोला "कहा का कौन मरा या बचा उससे हमे क्या मतलब ?"

'तुम्हारा सिर !'

दुलाल साहा जोर-जोर से माला फेरने लगा।

निवारण का अभी अगर कुछ हो जाए तो क्या होगा, सोचकर देखा है ? अरे दिमाग का जरा ठडा रखना चाहिए, हरि हरि, अरे, यह हरि हरि क्या ऐसे ही किया करता हू ? जाओ फोटो खिचवाने का इतजाम करो। फोटो होने के बाद एक बार निवारण को देखने जाना है मुझे !

उधर सभी मत्रीजी को लेकर व्यस्त थे। मत्रीजी के पासवाली कुर्सी दुलाल साहा के लिए खाली रखी गई थी। दुलाल साहा जाकर उसपर बैठा। कैमरामैन तय कर ही रखा था। वह भी तैयार था। दुलाल साहा के बैठते ही कैमरे म आख बैठा दी उसने।

उधर दरवाजे के सामने बडी बहूजी दुलाल साहा की गाडी मे बैठी।

नई बहू ने आहिस्ते-से दरवाजा बन्द करते हुए कहा "आप जरा भी फिकर न करें ताऊजी नही हैं तो क्या हुआ हम लोग तो हैं। इधर का काम जरा सिमटते ही मैं बाबा के साथ आऊगी आप बेफिकर रहे।

दुलाल साहा की गाडी स्टार्ट लेकर बडी सडक पर जा पहुची।

हावडा जूट मिल म उस रोज यात्रा ठीक जम नही रही थी।

'रानी रूपकुमारी !

अराकान के राज्य की महारानी हैं। अराकान के राजा राजपाट खोकर जगल और वनो मे घूम रहे थे, राज्य मे विद्रोह हो रहा था।

मरता म तन वा भाव उसी अनुपात म ऊपर उटता गया। पाकिस्तान वा बाजार गया, आसाम का बाजार भी जाए जाए कर रहा था ऊपर से अपना का शरीर टूटने लगा सा अलग। दल को लेकर नाकुटा गए थे, पहना अब पूरा कम्पे मेव अप म्म म आवर बोनी मर तवायत कुछ गिरी गिरी हो रही है।

शुरू-शुरू म गोलियों स काम चलाया। एस्पीरिन की गोलिया। जहा भी जात गोशी भरकर एस्पीरिन की गोलिया साथ ले जात चडी बाबू। कहत ' घबडाने की कोई बात नही है गाली खायकर ऊपर गिनाम पानी पा ना।'

बाद ■ उन गोलियो म काम नही चलता था। तब शुरू हुआ मिक्स्चर। डाक्टर के मिक्स्चर से कुछ रोज काम चला। लेकिन बाद म वह भी बेकार। बात वही की वही। सिर दद ठीक होता तो बुखार लग जाता, और बुखार उतरता तो फिर वही सिर दद। डॉक्टर न कहा यह राजरोग है।"

बस। अजना को जब से राजरोग हुआ तभी स 'श्रीमानी आपेरा' भी जस लगडा हो गया। किसी तरह नाम पर चल रहा था। एक लडकी नही थी जो दल को इस गिरती हालत म स खीच निकालती। फिर भी एक जमाने म मशहूर होने की वजह से 'श्रीमानी ऑपेरा' का अभी भी कॉल मिलते थे। लोग कहते—अरे, रानी के वेश मे यह तो पुरुष पात्र है।

दाढी मूछ अच्छी तरह साफ कर, साटन का अच्छा ब्लाउज और जार्जेट की साडी पहनकर भी बकू पकडा जाता। इसके अलावा बीडी पी पीकर बकू न होठो को इस कदर काला कर लिया था कि रसिक लोगो की नजरो से बच पाना मुश्किल था। वैसे चडी बाबू काफी दिनो से बकू का बदलन की फिराक मे थे। लेकिन वैसा कोई मिले कहा? कलकत्ते के थियेटर छोड मुफस्सल मे धूल फाकने कौन जाता। बकू जब गले को भरसक मुलायम बनाकर हाथ नचाकर गाता

कहा जाऊ, कहा जाऊ, मैं अबला नारी,
कौन यहा अपना,
कहा पाऊ शरण, हे अतर्यामी

तो दर्शकों में से लोग सीटी बजाना शुरू कर देते। इतने अच्छे पाट की एक्टिंग भी नहीं आती। नाटक धीमा पड जाता।

हावडा जूट मिल मे भी उस रात वही हो रहा था। चडी बाबू व मेकअप-रूम मे बैठकर हुक्का गुडगुडाने से क्या होगा, मन और कान तो नाटक में पडे रहते। जूट मिल के बाबुओं ने मोटी रकम दी है एड-वास म। अब अगर गडबड हो गई तो आफ्त हो जाएगी। 'श्रीमानी ऑपेरा' के बारह बज जाएगे। हुक्का पीते पीते उसने आवाज दी "फकीरे, हल्ला कुछ कम हुआ ?

फकीर ने कहा ' अभी तो दुलभराम का एक्ट चल रहा है। अभी कोई नहीं चिल्लाएगा। हल्ला होगा इसके बाद

मालिक कुर्सी पर चुपचाप बैठे थे। ऐसी जगह जीवन म कभी नही आए थे। बचपन मे उन्होंने कितनी बार नौटकी देखी है। 'नल दमयती' का नाटक कितनी बार उनके घर पर ही हो चुका है। 'हरिश्चन्द्र' भी हुआ है 'विजयवसत' नाटक हुआ है। किशनगज के लोग उनके घर के सामने वाले मैदान म जमा होते। उन बातो को कहने की जगह यह नही है।

चडी बाबू ने कहा था फरीदपुर के किशनगज मे उस बार बडी खातिरदारी हुई थी हमारी। खा खा करके दल के लोगो के पेट ही चल निकले। अहा क्या बात है, वैसा गुड हम कलकत्ते वालो ने कभी देखा भी नहीं है—आपके यहा का गुड कैसा है ?'

फकीरा बोला नही बाबू, पेट गुड खाने से खराब नही हुआ था। पेट तो खराब हुआ था चने की दाल खाकर '

तू चुप रह फकीरे पेटू कहीका लोभी की तरह जा मिलेगा, खाएगा। हुक्के म ठीकरा लगाया है ?"

लगाया क्यो नहीं है, बगैर लगाए तम्बाकू भजता है ? '

तो धुआ क्या नही निकल रहा है ? दम मारते-मारते मेरे गाल दुखने लगे।'

मालिक म और नही रहा गया। बोले देखिए, मुझे बैठे बैठे काफी देर हो गई। लगता है सत्य मांझी यहा नही है।'

यह कैसे हो सकता है ?" चड़ी बाबू के सम्मान को आघात पहुंचा। उन्होंने पूछा, "आपको ठीक मालूम है कि इसी मिल में काम करता है ?"

मानिक ने कहा ' सुना तो यही है। मैं वसंत माझी को जानता हूं। हमारी रैयत में से ही था। उसीका लड़का है सत्य माझी। सुना है सत्य माझी का लड़का यहां काम करता है। जरूरी काम न होता तो इस उमर में यहां मरने आता ? काम क्या, जीवन-मरण का प्रश्न है। इसीलिए न झक मारनी पड़ रही है "

कहते-कहते मालिक दम लेने के लिए रुके फिर कहने लगे, "ठीक सुबह का बैठा हूं ट्रेन में, सियालदह पहुंचते पहुंचते शाम हो गई। पहले कभी ऐसी जगह नहीं आया आने का प्रयोजन भी नहीं पड़ा। आप नौटंकी की बात कह रहे थे न, वह नौटंकी मैंने अपने घर के सामने मैदान में खुद कराई है। हजारों लोग मेरी ड्योढ़ी पर नाटक सुनते। खैर जाने दीजिए इन बीती बातों में क्या रखा है अब चलूंगा मैं। रात की ट्रेन से वापस लौटना है।"

चड़ी बाबू बोले, "लेकिन इतनी रात में कैसे जाएंगे ?

' नहीं लौट पाया तो स्टेशन पर रात काटनी पड़ेगी। रुकने की और कोई जगह तो है नहीं।"

'उसके बाद ?"

उसके बाद भगवान है सिर पर।'

चड़ी बाबू को जैसे इतनी देर बाद होश आया, बुजुर्ग आदमी हैं। देखकर लगता है बड़े वंश के हैं। उन्होंने कहा, साथ में किसीको लेकर आना था। यह कलकत्ता शहर है। आप वृद्ध आदमी हैं। मुझी को देखिए न बावन साल की उमर हो गई अब पहले-सा तेज नहीं रहा, किसी रोज मैं ही "

कहते कहते अचानक जैसे कुछ याद आया।

'ऐ निकुंज के बच्चे, सो रहा है क्या, घंटी कौन बजाएगा ? एक्ट पूरा हो गया, होश है या नहीं ? खाल खींचकर रख दूंगा !"

निकुंज थोड़ा नशा करता है चड़ी बाबू को मालूम था। डांट खाकर

पटार म उठा और घटी वजा दी। इस घटी को सुनकर ही साजिद अपनी कसरत शुरू करेंगे। बाजे की आवाज सुनते ही दुलमराम और बद नत्र आए। पसीने म नहा गए थे दोनों। वह साडी ऊपर उठाकर अपनी टाँगें खुजलाने लगा।

आप रे बाप कितने मच्छर हैं, पैर को गुब्बारा बना डाला गया आकर।'

मालिक अपनी पोटली लिए उठ खड़े हुए। उस छोटी-सी जगह म खड़े रहना भी मुश्किल हो रहा था। मखिया का पाट करने वाले छोकरे राजा रानी और दूसरे सब वहीं आ घुसे थे। घड़ी बाबू उन्हीं लोगों म बकबक कर रहे थे।

फिर भी उसीके बीच मालिक ने मौज मता निराश हुए कहा, अच्छा, तो मैं चलता हू अब।'

यह कहकर दरवाजे से निकल ही रहे थे कि तभी अचानक किसीने आकर कहा आप ही आप ही मिलना चाह रहे थे ?''

मालिक ने आदमी की ओर देखा। पहचानने की बात ही नहीं थी और पहचाना भी नहीं। सिर्फ इतना ही पूछा तुम्हारा नाम तुम क्या मन्मथ माथी के लड़के हो ?'

लड़का भी कुछ समझ नहीं पाया। खाकी पैंट शर्ट पहने था कालर उलटकर खड़े हुए था। उसने पूछा आप कौन हैं ?'

मेरा नाम कीर्तिश्वर भट्टाचार्य है, किशनगंज से आया हू।

जैसे कोई जादू हो गया। लड़के ने झुककर पदधूलि ली। फिर बोला बाबा बाहर नाटक देख रहे हैं, अभी बुलाकर लाता हू।'

इसके बाद ही उस अनजान जगह भीड दिन भर की थकान और अनाहार सब मिलाकर मालिक को लगा कि वे वहीं गिर जाएंगे। सम तल जमीन पर जैसे दोनों पाव टेककर खड़े रहने की ताकत भी उनमें नहीं रह गई थी। थरथर कांपने लगे। इसके बाद और कुछ याद नहीं है। सब कुछ जैसे अस्पष्ट हो गया था। सिर्फ याद है उन्हें, बड़े जोर से प्यास लगी थी। पानी, एक घूट पानी

मालिक नहीं हैं इसीलिए क्या दुलाल साहा भी मर गया है ! सूद देने आए लोगों से कहता, 'जल्दी करो, इन दो पैसा के लिए बैठे रहने की फुर्सत मुझे नहीं है। निवारण को देखने जाना है।

निताई बसाक जिस तरह मिल के काम में लगा था, इंजीनियर स्पेशियलिस्ट एक्सपोर्ट और परमिट लेकर सिर खपा रहा था, दुलाल साहा उसी तरह निवारण को लेकर व्यस्त था।

दुलाल साहा कहता 'शुगर मिल हो न हो, निवारण अच्छा हो जाए तो शान्ति मिले—बेचारा!'

सुबह पूजापाठ करके दुलाल साहा तैयार हो लेता। नई बहू तैयार हो होती। गाड़ी में बैठ दोनों सीधे भट्टाचार्य भवन जाते। ड्योढ़ी पर गाड़ी से उतरकर नई बहू को लिए दुलाल साहा जाकर सीधे दीवानखाने में निवारण के तख्त पर बैठता। पूछता 'कैसी तबियत है निवारण?'

रोज इसी तरह। सुबह शाम दोनों वक्त।

अन्दर जाकर नई बहू पुकारती "ताईजी

बड़ी बहूजी अलग परेशान है। कलकत्ते जाने को कहकर मालिक जा गए हैं अभी तक उनकी कोई खबर नहीं मिल पाई है। नई बहू दोनों वक्त आकर खाना खिला जाती। ढाढ़स बंधाती। कहती, "आप नहीं खाएंगी तो आज मैं भी कुछ नहीं खाऊंगी। मैं भी यहां से नहीं उठती, कहे देती हूं।"

छुआछूत की बात न होती तो नई बहू खाना बनाकर ही ले आती। कभी दवाएं लिए आती तो कभी खेत की ताजी तरकारी। दुलाल साहा ने ही यह रखा था बड़ा ऊंचा खानदान है। जब मेरे पास कुछ भी नहीं था दो वक्त खाना भी नसीब नहीं होता था तब इन मालिक की कृपा से ही दिन कटते थे। उन सब बातों का ही खयाल कर नई बहू जैसे इस घर की ही सदस्य हो गई थी।

उधर निवारण के पास बैठा दुलाल साहा कहता, पेपुलबेड़ की उस तुच्छ आहर के लिए तुमने अपनी जान की बाजी लगा दी निवारण? अरे संपत्ति बड़ी है या जान? जान चली गई तो संपत्ति कौन खाएगा, कहो? तुम खाओगे या तुम्हारे मालिक? या कि तुम्हारे मालिक का

लड़का ? लेकिन वह भी तो लापता है फिर किसलिए है यह हाय हाय? '

प्रश्न करने के बाद खुद ही उत्तर देने लगता ' कोई किसीका नही है, समझे निवारण ! अगर वैसा ही होता तो मैं भी तुम्हारे मालिक की तरह सपत्ति-सपत्ति कहता रहता ! भाड मे जाए ऐसी सपत्ति ! सपत्ति बटोरकर अगर स्वर्गलाभ हो जाता तो दिन-रात हरिनाम क्या करता रहता ?"

शुरू शुरू म कहता, ' जरूर किसी मतलब से गए है ! नही तो फालतू म ऐसे ही इतने रोज क्यो पड़े रहगे कलकत्ते म ?"

निवारण कहता 'लेकिन एक चिट्ठी तक नही लिखी । पहुचने की खबर तक नहीं दी ।"

दुलाल साहा कहता कामकाज मे व्यस्त होंगे ।"

निवारण कहता 'ऐसा कौन-सा काम हो सकता है मेरी तो समझ म नही आता ।'

इसी तरह चल रहा था कि एक दिन अनहोनी हो गई । और वह भी दुलाल साहा और नई बहू की आखो के आगे ।

उस दिन डाकिया आकर एक सरकार बाबू की चिट्ठी दे गया । साहाजी को देख नमस्कार किया ।

"क्या बात है गोपाल ? अच्छे तो हो ? घर मे सब ठीक है ? '

'जी सरकार बाबू की चिट्ठी है ।"

सरकार बाबू लेट थे । चौंककर उठ बैठे । उस चिट्ठी कौन लिखेगा ! दुलाल साहा को भी आश्चर्य हुआ । नई बहू भी नही समझ पाई । दरवाजे की आड मे बडी बहूजी भी खडी थी ।

निवारण ने चिट्ठी हाथ म लेकर कहा मालिक की चिट्ठी है, कलकत्ते से लिखी है । '

निवारण सुना सुनाकर पढने लगा । मालिक न लिखा है

'सदा सुखाभिलाप प्रसाद प्रणत भवेव आर्शीर्वाद के श्री कीर्तिश्वर देवशमण परम शुभाशीषम् राशसन्तु परम तोमार सुख स्वच्छन्द सानन्द विशेष अत्र पत्रे विशेष सुसवाद ज्ञात करा रहा हू । श्री श्री भगवान के परम अनुग्रह से कल्याणीया हरतन का पता लग गया है

इसके बाद और नहीं पढ़ पाया निवारण। गला जैसे रुंधने लगा। हरतन मिल गई! दोनों आँखें जैसे धुंधली हो गइ। जैसे यकीन नहीं हो रहा था। मन ही मन निवारण ने उन लाइनों को बार-बार पढ़ा।

दुलाल साहा बोल उठा, 'हरि हरि! हरि, तेरा ही सहारा है'

नई बहू की भी बोलती बंद थी।

निवारण अचानक बोल उठा मालकिन हरतन का साथ लेकर मालिक आ रहे हैं'

मिनट-भर में जैसे निवारण की बीमारी ठीक हो गई। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। वहीं तख्त पर बैठे बैठे ही उसने पुकारा, मालकिन मालकिन

बड़ी बहूजी दरवाजे की आड़ में ही खड़ी थीं। एकदम निस्पंद की तरह। उन्हें लग रहा था जैसे पैरों के नीचे से ज़मीन खिसकी जा रही है। बड़ी बहूजी बस भी चुप ही रहती हैं। लेकिन आज तो जैसे पूरी तरह मूक ही हो गई। दोनों हाथ उठाकर अन्तर्यामी को प्रणाम करने तक की क्षमता जैसे उनमें नहीं रह गई थी।

एक मामूली चिट्ठी ही तो थी। लेकिन उस मामूली चिट्ठी ने जैसे किशनगंज की हवा का रुख ही बदल दिया। हालाँकि उस चिट्ठी के साराश को किसी ने अखबार की हेडलाइन में नहीं छपाया था! किसीने पंडाल बनाकर सभा में घोषणा भी नहीं की। पाँच पैसे के एक पोस्ट कार्ड पर लिखी उन कुछ लाइनों ने जैसे पूरे किशनगंज में उथल पुथल मचा दी।

दुलाल साहा सुबह जब स्नान के लिए घाट जाता तो साधारणत वहाँ कोई नहीं होता था। लेकिन अगर कोई आ पहुंचता तो दुलाल साहा को उसकी भी जवाबदेही करनी पड़ती।

दुलाल साहा कहता, अहमक कहीं का भक्ति क्या इतनी सरल है! भक्ति अगर एक बार हो गई, तो फिर तुझे कौन पा सकता है? तूने भव सागर पार कर लिया। फिर तुझे किसीसे भय करने की जरूरत नहीं है।'

घाट पर ज्यादातर मुकुंद से ही मुलाकात होती दुलाल साहा की।

मुकुद दुनियादार आदमी है। दुनियाभी चिन्ता फिकर और सदेह से ही परेशान रहता ह। वह बोला, "लेकिन साहाजी मुझे तो यकीन नही होता।"

'क्या, तुझे यकीन क्यो नही हो रहा ?

'जी, यह कोई सतयुग तो है नही। सतयुग होता तो बात समझ म आती। खोई लडकी क्या इतने दिन बाद इस तरह मिल सकती है ? न पता न ठिकाना कलकत्ते गए और मिल गई। इस युग मे ऐसी अनहोनी हो सकती है। आप ही कहिए ?'

दुलाल साहा समझदार की तरह मद-मद मुसकराता। मुकुद जैसे मूढ आदमी की बात पर हसे नही तो और करे भी क्या ?

तो तेरा कहना है कि अनहोनी नही हो सकती ?"

"जी वह सब होना था, जब महापुरुष अवतार किया करते थ। वे लोग त्रिकालदर्शी हुआ करते थे।"

"क्या रे, मुझे देखकर भी तुझे यकीन नही होता ? यह जो मैं तेरे सामने जीता-जागता खडा हू। मुझे आखो के आगे देखकर भी तुझ यकीन नही होता ?"

सिर्फ मुकुद ही नही, सभीस यही एक बात कहता था दुलाल साहा। तिजारती धधे के सिलसिले मे जो लोग उसके पास आते थे, सब अपढ और गवार ही होते थे ज्यादातर। गरज के मारे आते थे। उनसे भी कहता "अब हरि है या नही, विश्वास हुआ या नही ? मैं जब हरि-हरि करता था तो तुम लोग मेरी मखौल उडाया करते थे। कहते थे, साहाजी ढोग करते हैं।'

माला जपते जपते फिर कहने लगता "मालिक की ही बात ले लो, मालिक से मैंने खुद जाकर कहा, हरिसभा हो रही है, आपको प्रसीडेंट बनना ह। मालिक किसी भी तरह राजी नही हो रहे थे। कहने लगे, 'मैं केदारेश्वर भट्टाचार्य के वश का हू। हमारे पुरखे गौडेश्वर के राजपुरोहित थे। हाथी पर चढकर राजमहल जाते थे, एक सौ आठ कमल के फूलो से रोज कुलदेवता की पूजा होती थी। मुझे हरिभक्ति सिखलाने आए हो दुलाल ?'

इसके बाद और नहीं पढ़ पाया निवारण। गला जैसे रुधने लगा। हरतन मिल गई! दोनों आँखें जैसे धुंधली हो गई। जैसे यकीन नहीं हो रहा था। मन ही मन निवारण ने उन लाइनों को बार-बार पढ़ा।

दुलाल साहा बोल उठा—"हरि-हरि! हरि, तेरा ही सहारा है!"

नई बहू की भी बोलती बंद थी।

निवारण अचानक बोल उठा—"मालकिन, हरतन को साथ लेकर मालिक आ रहे हैं!"

मिनट-भर में जैसे निवारण की बीमारी ठीक हो गई। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। वहीं तख्त पर बैठे-बैठे ही उसने पुकारा, "मालकिन, मालकिन!"

बड़ी बहूजी दरवाजे की आड़ में ही खड़ी थीं। एकदम निस्पंद की तरह। उन्हें लग रहा था जैसे पैरों के नीचे से जमीन खिसकी जा रही है। बड़ी बहूजी वैसे भी चुप ही रहती हैं। लेकिन आज तो जैसे पूरी तरह मूक ही हो गई। दोनों हाथ उठाकर अन्तर्यामी को प्रणाम करने तक की क्षमता जैसे उनमें नहीं रह गई थी।

एक मामूली चिट्ठी ही तो थी। लेकिन उस मामूली चिट्ठी ने जैसे किशनगंज की हवा का रुख ही बदल दिया। हालांकि उस चिट्ठी के सारांश को किसीने अखबार की हेडलाइन में नहीं छपाया था। किसीने पंडाल बनाकर सभा में घोषणा भी नहीं की। पाँच पैसे के एक पोस्ट कार्ड पर लिखी उन कुछ लाइनों ने जैसे पूरे किशनगंज में उथल-पुथल मचा दी।

दुलाल साहा सुबह जब स्नान के लिए घाट जाता तो साधारणतः वहाँ कोई नहीं होता था। लेकिन अगर कोई आ पहुँचता तो दुलाल साहा को उसकी भी जवाबदेही करनी पड़ती।

दुलाल साहा कहता, "अहमक कहीं का! भक्ति क्या इतनी सरल है! भक्ति अगर एक बार हो गई, तो फिर तुझे कौन पा सकता है? तूने भव सागर पार कर लिया। फिर तुझे किसीसे भय करने की जरूरत नहीं है।"

घाट पर ज्यादातर मुकुंद से ही मुलाकात होती दुलाल साहा की।

मुकुन्द दुनियादार आदमी है। दुनियावी चिन्ता-फिकर और सदेह से ही परेशान रहता है। यह बोला, "लेकिन साहाजी मुझे तो यकीन नहीं होता।"

'क्या, तुझे यकीन क्या नही हो रहा ?'

"जी, यह कोई सतयुग तो है नही। सतयुग होता तो बात समझ में आती। कोई लडकी क्या इतने दिन बाद इस तरह मिल सकती है ? न पता न ठिकाना, कलकत्ते गए और मिल गई। इस युग मे ऐसी अनहोनी हो सकती है। आप ही कहिए ?'

दुलाल साहा समझदार की तरह मद-मद मुसकराता। मुकुन्द जैसे मूढ आदमी की बात पर हम नही तो और करे भी क्या ?

'तो तेरा कहना है कि अनहोनी नही हो सकती ?"

'जी, वह सब होता था, जब महापुरुष अवतार लिया करते थे। वे लोग त्रिकालदर्शी हुआ करते थे।"

"क्या रे मुझे देखकर भी तुझे यकीन नही होता ? यह जो मैं तेरे सामने जीता जागता खडा हू। मुझे आखो के आगे देखकर भी तुझे यकीन नही होता ?'

सिर्फ मुकुन्द ही नही, सभीसे यही एक बात कहता था दुलाल साहा। तिजारती धधे के सिलसिले मे जो लोग उसके पास आते थे, सब अपढ और गवार ही होते थे ज्यादातर। गरज के मारे आते थ। उनसे भी कहता, अब हरि है या नही, विश्वास हुआ या नही ? मैं जब हरि-हरि करता था तो तुम लोग मेरी मखौल उडाया करते थे। कहते थे, साहाजी ढाग करते हैं।

माला जपते-जपते फिर कहने लगता "मालिक की ही बात ले लो, मालिक से मैंने खुद जाकर कहा, हरिसभा हो रही है आपको प्रेसीडेंट बनना है। मालिक किसी भी तरह राजी नही हो रहे थे। कहने लगे, 'मैं केदारेश्वर भट्टाचार्य के वश का हू। हमारे पुरखे गौडेश्वर के राजपुरोहित थ। हाथी पर चढकर राजमहल जाते थे, एक सौ आठ कमल के फूलो से राज कुलदेवता की पूजा होती थी। मुझे हरिभक्ति सिखलाने आए हो दुलाल ?' '

धोता रहते फिर ?'

दुलाल साहा कहता 'मैं भी ठहरा हरि का भक्त। बस, हरि का नाम लेकर मालिक के पैर पकड़ लिए। और कहा, हरि भक्ति के लिए मैं सब कुछ कर सकता हूं मालिक, आप अगर प्रेसीडेंट नहीं हुए तो समझूंगा, मेरी हरिभक्ति झूठ है। समझूंगा हरिभक्ति के नाम पर मैं पैसा लूट रहा हूं।'

फिर क्या हुआ मालिक राजी हुए ?"

'अरे तो और कह क्या रहा हूं ? हरिभक्ति क्या इतनी सरल चीज है समझा। मुंह में हरिनाम और बगल में छुरी ! मैं कोई वैसा भक्त थोड़े ही हूं। मैंने कहा मेरी भक्ति अगर वैसी हुई तो मैं छत्तीस जन्म तक रौरव नरक में सड़ूंगा। सात या चौदह नहीं पूरे छत्तीस ! अरे यह क्या ? तीन पैसे और निकाल। तीन पैसे कम क्यों दे रहा है रे निताई ?'

निताई बोला 'जो लाया था दे दिया, और एक अधेला भी नहीं है मेरे पास।

'लेकिन देख, तू किसे कम दे रहा है ? मुझे या हरि को ? हरि जैसे मुझमें हैं वैसे ही तुझमें भी तो है अरे निवारण, आओ आओ इस हालत में तुम यहां "

सब देखने लगे, मालिक के सरकार बाबू आए हैं। कमजोर शरीर हांफ रहा है। इसी आदमी को लेकर इतने रोज कितना कुछ नहीं हुआ। दो दिन पहले अब जाए-तब जाए हालत थी। उसीको अचानक सशरीर आते देख सब जैसे अचम्भे में पड़ गए। सबने इधर उधर खिसक उसके लिए जगह दी।

"जी मालिक की एक और चिट्ठी आई है।'

"तो मुझे कहला भेजा होता। मैं खुद ही चला आता। यह भी कोई बात हुई ! इतनी दवा दारू हो रही है और तुम इस तरह अपने ऊपर अत्याचार कर रहे हो ! डाक्टर बाबू से पूछकर आए हो ?'

"बड़ा जरूरी काम था, इससे आना पड़ा। और कोई तो है नहीं ?'

फिर चारा ओर सभीके चेहरो पर नजर घुमाकर बोला, ''बडी मुसीबत मे पडकर आपके पास आना पडा है साहाजी, मालिक ने आप ही के पास आने को लिखा है। कुछ रुपयो की जरूरत थी। करीब सौ एक से काम चल जाएगा। मालिक काफी परशानी मे पड गए हैं।''

''क्या हुआ ? हरि-हरि '

' जी, हरतन बहुत बीमार है। बीमारी की हालत म ही उसे ला रहे हैं। साथ मे एक डॉक्टर भी नाना पड रहा है। इसके अलावा रोगी को लेकर यह बनास मे तो आना मुश्किल है। काफी खरच ह। हाथ मे जो कुछ था इतने दिन कलकत्ते रहे, सो सब खच हो गया—इसीसे थोडा कज लेन को लिखा है आपसे—सूद जो होगा देंगे।''

दुलाल साहा गुस्से से आग हा उठा।

मुझे क्या इतना बेहया समझ रखा है ? तब क्या बेकार यह हरि सेवा कर रहा हू ? तुम सोचते क्या हो, निवारण ? मुसीबत मे लोगो को उधार रुपया देता हू इसासे क्या सूदखोरी मेरा धधा हो गया ? मैं सूदखोर हू ?'

निवारण एक तो वैसे ही बीमार था, उसपर अचानक दुलाल साहा के इस व्यवहार से थरथर कापने लगा।

दुलाल साहा ने पुकारा, ''कात '

कात न कहा, 'जी '

'निवारण को दो सौ रुपये दो '

कात कैश-बाक्स से नोट निकालकर गिनने लगा।

दुलाल साहा बोला, ' तब तुम्हारी बीमारी मे मैंने जो कुछ खरच किया है उसका हिसाब करके अभी मेरे सामने फेंक दो ! लाओ ! सूद की बात तुम किस मुह से कह पाए निवारण ? तुम तो समझदार हो ! तुम्हारे मुह पर यह बात कैसे आई ? और कोई होता तो यही काट-कर फेंक देता। जाओ रुपये लेकर सीधे चले जाओ, लिखा-पढी कुछ भी करने की जरूरत नही है। और अपने मालिक को लिख देना कि दुलाल साहा अगर ऐसा ही अयविशाच होता तो गुरु महाराज से दीक्षा नही लेता। हरिसभा भी नही बनाता। रोज सुबह झाडू लेकर घाट की सीढी न

धाता। लिखना कि दुलाल साहा मुसीबत में लोगों को उधार जरूर देता है लेकिन सूद का धधा नहीं करता। अब जाओ, खड़े क्यों हो जाओ '

दुलाल साहा का रौद्र रूप देख निवारण की और रुकने की हिम्मत नहीं हुई। ऐसा कुछ होगा, उसने नहीं सोचा था। दुलाल साहा को ऐसी दया दिखलाते भी कभी नहीं देखा था, साथ ही यह रौद्ररूप भी पहले कभी देखने को नहीं मिला था। दुलाल साहा बगैर सूद के या बगैर गिरवी रखे रुपये देने वाला नहीं है। बुरी तरह सकपका गया निवारण। फिर दो सौ रुपए लेकर उठ खड़ा हुआ और धीरे धीरे दरवाजे से निकलकर बाहर सड़क पर आ गया।

माला जपते जपते दुलाल साहा ने निगाह ऊपर करके देखा। फिर कहा देखा तुम लोगों ने ? मुझे सूदखोर कह गया '

तभी निताई की ओर नजर फिरते ही कह उठा ' क्या हुआ तीन पैसे और निकाल तीन पैसे मारकर तू क्या हरि के सामने पातकी बनना चाहता है ? नहीं-नहीं सो होने नहीं दूगा मैं—चल निकाल पैसे परलोक में भला होगा '

परलोक हो या न हो परलोक की बात करने का सुभीता है। उससे लोगों में ब्राह्मण और देवता के प्रति भक्ति बढ़ जाती है। किशनगंज के लोग जिन्होंने दुलाल साहा को देखा है, जिन्होंने दुलाल साहा को धीरे-धीरे पनपते देखा है, और मानिक की पड़ती को देखा है वे परलोक में विश्वास करते हैं। और परलोक में विश्वास करते हैं इसीलिए दुलाल साहा के पास आते हैं दुलाल साहा की बातें सुनते हैं कर्ज लेते हैं और फिर उसका सूद देते हैं। इस लोक में जिन्हें कुछ नहीं मिला उनकी सारी आशा दूसरे लोक पर ही है। दुलाल साहा का यह ऐश्वर्य मकान, सुख सुविधा, यह जूट का धधा, यह शुगर मिल सब जैसे पिछले जन्म का फल है। पिछले जन्म में दुलाल हासा ने पुण्य किए थे, उसी का फल इस जन्म में भोग रहा है। इस जन्म के पुण्यों का हिसाब भी चित्रगुप्त के खाते में साफ-साफ दर्ज है। उसका फल अगले जन्म में भोगेगा।

एकदम हाथोंहाथ प्रमाण मिल गया।

और मानिक ?

मालिक ने इस जन्म मे कुछ भी नही किया। अचानक लापता पोती की खबर विशनगंज मे फैलते ही जैसे सारा हिसाब उलट पलट हो गया है। तब ? तब क्या वाकई भट्टाचार्य भवन की लक्ष्मी वापस लौट आएगी ? भट्टाचार्य फिर से धन-दौलत से भर उठेगा ? यह बात लोगो को जटिल गुत्थी की तरह लग रही थी तब क्या होगा ?

दुलाल साहा कहता 'अरे गुरु महाराज की बात कोई झूठ थोडे ही हो सकती है—यह तो होना ही था

सुकांत ने भी खबर सुनी। तब तो साधु ने उससे जो कुछ कहा वह भी सच होना चाहिए। जीप लेकर कई चक्कर लगा गया। लेकिन निताई बसाक नही है। असल मे उसका सरक्षक निताई बसाक है—दुलाल साहा नही। रोज शाम गाडी लेकर निकलता है। इधर उधर घूमकर यहा आता है। रोज ही वही जवाब निताई बसाक अभी वापस नही लौटा—नई रोशनी का है। साधु सन्यासियो की बातो पर आसानी से विश्वास नही करता। वैसे किसी चीज पर ही विश्वास नही है, दुनिया ही उसके लिए एकमात्र सत्य है। और सब झूठ है ढकोसला है। हालाकि साधु ने उससे कहा था—शीघ्र ही उसकी उन्नति होगी। यही कोई तीन साल के अन्दर। सुनकर उसे अच्छा लगा था लेकिन यकीन नही हुआ। लेकिन लोगो से मालिक की खबर सुनकर आशा बधने लगी। रास्ते मे जो मिलता उसीसे पूछता ' जो खबर सुनी है, क्या सच है ?

लोग कहते, सुनते तो यही हैं कि सच है।

जिससे भी पूछता वह यही बात कहता। उस दिन ड्राइवर से उसने मालिक के घर की ओर ही जीप घुमा लेने को कहा। उसी भुतहा घर की ओर। इस ओर लोग कम ही आते हैं। कैसा खाली खाली सा लगता है ! शाम के बाद लोग इस ओर नही आना चाहते फिर भी उस रोज सुकांत आया। सच बात एक निवारण को छोड और किसीसे पता लगाना मुश्किल है।

गाडी रखकर जगल के बीच से होकर सदर दरवाजे के सामने जाकर खडा हो गया। अन्दर कोई है या नही, यह भी मालूम नही। दरवाजे से ही धीमी आवाज मे पुकारा सरकार बाबू '

निवारण ने सुजात को ज्यादा से ज्यादा दो एक बार ही देखा होगा। लेकिन पेंपुनबंद के पास वाली आटर को लेकर जो झमेला हुआ, उसके बाद निवारण का नाम कई बार कान में पड़ा है। किसी ने कहा कि निवारण नटखन लेकर झगड़ा करने आया था तो कोई कहता सदानंद ने जबात निवारण को पीटा है। लेकिन एक रोज इस बात पर भी फैसला हो गया। मिनिस्टर के आने के बाद में सभी को पता चल गया कि शायद निवारण का ही था।

सरकार बाबू हैं?

अन्दर से कोई जवाब नहीं आया।

सुजात इसपर खटखट दरवाजे की कुंडी खटखटाने लगा।

कौन?

अन्दर से जनानी आवाज सुनकर सुजात जरा पीछे हट आया। उसके साथ ही अन्दर से दरवाजा खुला।

आप कौन हैं?

हाथ में लालटेन लिए कोई खड़ा था। सीधे रोशनी लगने से आँखें चौंधिया गई। फिर पहचान लिया।

किसका काम है?

सुजात ने ऐसा कुछ नहीं सोचा था, नहीं तो इस सवाल पर यहाँ नहीं आता। उसे क्या मालूम कि नई बहू इस वक्त यहाँ होगी?

किधर गए हैं?

सुजात बोला — निवारण बाबू से काम था।

लेकिन आप हैं कौन?

सुजात बोला, मेरा नाम सुजात राय है। यहाँ बी० डी० ओ० हूँ। अपने घर पर देखा होगा मुझे

नई बहू ने कहा — बहू क्या / किस वक्त मेरा काम है?

नई बहू की इस जिरह / सकपका गया।

निवारण बाबू से उसे काम

कैसा काम है?

[illegible] जवाब [illegible] । सुजात ।

थी। बस, यों ही चला आया।"

'पता लगाने आए है कि जो कुछ सुना है वह सही है या नही ? यही न ?"

सुकात की समझ म नही आ रहा था कि इस बात का क्या जवाब दे।

नई बहू सुकात के जवाब की राह देखे बगैर ही कहने लगी आखिर आप लोगो का इतनी उत्सुकता किस बात की है ? आप लोग क्या एक परिवार की बरबादी स फायदा उठाकर तमाशा देखना चाहते हैं ? आप लोगो को और कोई काम नही है ? दूसरे की गरीबी क्या आपके लिए मजाक की खुराक है ? आप लोगो ने समय क्या रखा है ?'

सुकात चुपचाप खडा रहा। जरा सी उत्सुकता को न दबा पाने का यह नतीजा होगा, वह सोच भी नही पाया था।

' एक के बाद एक आता है और बार-बार यही बात पूछता है। एक दिन आप ही लोग मेरी ससुराल मे जाकर जमा हुआ करते थे और अब आप लोग यहा मौजूद हैं। आप लोगो को क्या और कोई काम है ही नही ? जब जिधर हवा देखी उधर ही लग तालिया बजाने छि

नई बहू का यह 'छि ' शब्द जैसे पूरे किशनगज के लिए ही था। लेकिन सुकात को लगा, जैसे नई बहू अकेले उसीको धिक्कार रही है।

सुकात जैसे अपनी गलती के लिए सफाई देते हुए विनीत स्वर म बोला ' देखिए मैं ठीक इसीलिए "

लेकिन उसकी बात पूरी होने से पहले ही नई बहू न उसे टोकते हुए कहा, 'अनपढ किसान मजदूर आते हैं, उनकी बात समझ म आती है, लेकिन आप लोग तो शिक्षित होने की डीग हाकते हैं ? आप लोग तो कोट पैंट पहनकर गाडी म घूमते हैं।'

सुकात और कोई उपाय न देख बोला "मुझे माफ करें।'

"माफ करने की बात नही ! बार-बार लोगो की एक बात का जवाब देते देते मैं भी ऊब उठी हू। लेकिन मैं सोचती हू, इन दिनो क्या गाव में लोगो के पास करने को और कुछ भी नही है ? खडे-खडे देख क्या रहे हैं जाइए।

मदालत नही है मुजरिम तो निवारण सरकार है।"

दुलाल साहा ने कहा इसीमे समय लो, मुजरिम मजे से घूम रहा है और फरियादी डर से भागता फिर रहा है। ऐसी अजीव बात सुनी है तुम लोगो ने ?

सुकांत बोला जाने भी दीजिए आप जो कुछ कर सकते थे, आपने किया। उसके लिए बेकार परेशान न हो '

दुलाल साहा ने कहा अब देख लो इतने दिन हरि को छोड और किसी ओर नही देखा। सब छोडकर मनप्राण से हरि को ही पुकारता रहा, अब लगता है मैंने भूल की। इस दुनिया के लोगो के मन मे इतना पाप भरा पडा है सोच भी नही पाया कभी। अब देखो न सब खबर सुनने के बाद से चित्त बडा चचल हो उठा, सोचता हू सब मिथ्या है। मैं किसके लिए यह सब कर रहा हू ? दुनिया मे कौन किसका है ? आख मुदते ही तो सब कुछ अधेरा हो जाता है। तब इतनी चिन्ता किस बात की ? तभी बडी बहूजी का खयाल हो आया बेचारी बीमार हैं घर म, कोई नही है। निवारण भी कलकत्ते गया है मालिक के पास। हालाकि नई बहू बडी बहूजी की देखभाल करने आई है लेकिन मेरा भी तो आखिर कोई फर्ज है। माथे मे यह बात आते ही नही रुक पाया—चला आया। हा तो नई बहू अब कसी हैं बडी बहूजी ?'

नई बहू ने कहा ठीक हैं, लेकिन आपने क्यो बेकार तकलीफ की ?

मैं नही आऊगा तो और कौन आएगा ? मालिक का और है ही कौन ? मालिक मुझे नही देख पाते सो जानता हू, बुढापे म मान-सम्मान की ऐसी पीडा होती ही है। लेकिन यही सोचकर मैं भी अगर विपत्ति के समय न आऊ तो हरि के सामने क्या मुह दिखाऊगा ? मालिक का तो खयाल है कि पॅपुलबेड के पास वाली आहर मैंने ही जोर लगाकर दखल कर ली है मैंने ही निवारण को लाठियो से पिटवाया है। खैर इन बातो का जवाब मैं हरि के सामने ही दूगा, लेकिन किसीकी मुसीबत म देख मुझसे बैठा नही जाता। यह मेरी आदत हो गई है। अब इस उम्र मे क्या यह आदत बदल सकती है ? '

इतनी देर बाद जैसे सुकांत को मौका मिला।

उसने कहा, ' इसके माने हुए कि जो बात सुनने में आ रही है वह सच है साहाजी ?"

"कौन-सी बात ?"

यही कि मालिक की खोयी पोती मिल गई है—पन्द्रह साल बाद !"

दुलाल साहा ने कहा, ' मिली है या नही सो तो दो दिन बाद सभी-को मालूम हो जाएगा। मालिक पोती लेकर किशनगंज आ रहे हैं, निवारण तो इसीलिए बीमारी की हालत में गया है। उसे इसके लिए मैंने ही दो सौ रुपये दिए। मैंने उससे कह दिया कि लिखा पढ़ी की कोई जरूरत नही है, मैं कोई सूदखोर तो हू नही।

' यानी कलियुग में भी ऐसी घटना घट सकती है ?

दुलाल साहा ने कहा, ' कलियुग तो तुम्ही लोग कहते हो मैं तो दूसरी ही बात कहता हू।"

आपका कहना क्या है ?"

'मेरा कहना है कि कलियुग-सतयुग सब फालतू बात है। जो सत्य-वादी हैं, उसके लिए हर युग सतयुग है। नही तो सतयुग में भी चोर, डाकू थे, अब भी हैं। अब मुझीको लो, मैं जो हमेशा सच बोलता हू, कभी किसीका बुरा नही सोचता, उससे क्या मेरा कोई नुकसान हुआ है ? कुछ बिगडा है मेरा ?"

नई बहू ने तभी कहा "मैं अन्दर जाऊगी, ताईजी अकेली है।

'अरे हा हा, तुम जाओ न मैं तो बस ऐसे ही जरा खबर लेने चला आया, अभी चला जाऊगा।'

सुकांत अपना प्रसंग ले आया बोला "इसके माने गुरुदेव ने मेरे बारे मे जो जो कहा, वह सब भी मिल जाएगा ?"

दुलाल साहा बोला ' यह भक्ति के ऊपर निर्भर है। तुममे अगर भक्ति है तो जरूर मिलेगी। मुझमे भक्ति है इसीलिए मिली। मालिक के अन्दर-ही अन्दर भक्ति थी इसीलिए बात मिल गई। मिलकर रहेगी। दो और दो जैसे चार होते है, इसका भी वही है।'

एक बार फिर गुरुदेव के दर्शन नही हो सकते साहाजी ?'

दुखान माहा ने कहा मुझे दर्शन होते हैं, रोज ही।

सुकांत उछल पड़ा मुझे एक बार दर्शन करा दीजिए न माहाजी, न हुआ मैं भी उनका शिष्य हो जाऊंगा भाग्य में जो लिखा है सो होगा, नौकरी में उन्नति होगी न ?'

लेकिन तुम्हें दर्शन होते भाई ?

सुकान्त ने कहा 'क्या आपको कैसे रोज दर्शन होते हैं ?

मुझे तो ध्यान में दर्शन होते हैं।'

बात पूरी होने से पहले ही खटखट जूतों की आवाज करता निताई बसाक आ पहुंचा। अंदर आते ही बोला तो तुम यहां हो दुलाल ?

निताई बसाक के लिए ही इतने दिन से सुकांत चक्कर लगा रहा था।

उसने कहा अरे आप कहां गायब हो गए थे निताई बाबू ? आपको ढूंढते-ढूंढते

निताई बसाक बोला आप ही के काम से कलकत्ते गया था, वहीं से आ रहा हूं।'

उसके बाद दुखान साहा की ओर देखकर बोला, तुमसे एक बात कहनी थी दुलाल जरा इधर आओ।'

दुलाल साहा उठकर बाहर आया। फुसफुसाकर बोला काम कहां तक बना ?

निताई बसाक ने भी उसी तरह धीमी आवाज में कहा एकदम पक्का काम कर आया हूं।

अब और कोई गड़बड़ न होगी ना ?

गड़बड़ की जड़ ही खतम जो कर आया हूं। थाने से खुद दरोगा ने कहा था कि रोगी अगर अस्पताल से गायब हो जाए तो किसीके बाप की ताकत नहीं कि कुछ कर पाए—पुलिस भी अपनी जिम्मेदारी से छूटेगी। मामला हाईकोर्ट में पहुंचकर भी रह जाएगा। इजलास में नहीं आएगा। उससे पहले ही खारिज हो जाएगा "

लेकिन उसे गायब कैसे किया ?'

'उस सबके लिए तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं है ! चलो अंदर

चना।"

वहकर निताई वसाक अदर आया। दुलाल साहा भी माला फेरते फेरते अपनी कुर्सी पर आ बैठा। एक लम्बी उबासी लेते हुए उसने पुकारा 'हरि-हरि

चितपुर के सदर रास्ते पर दिन हो या रात भीड म कमी नही होती। सारे दिन आवाजा स कान फाड देने वाले सारे उपकरण यहा मौजूद हैं। बस है, ट्रामे हैं रिक्शे ठेलागाडी और हैं असख्य लोग। इसी वजह स कल्याणमयी होटल की दूसरी मजिल मे जो लोग सडक की ओर वाले कमरो मे रहते हैं उनके कमरो का किराया कम है। अदर की ओर वाले कमरो म रोशनी नही ह हवा नही है लेकिन फिर भी किराया ज्यादा है। श्रीमानी ऑपेरा का आफिस इसीके पास है। चडी बाबू ने ही सब कुछ ठीक कर दिया था। मालिक को कुछ भी करना नही पडा। और कुछ करने लायक बूता भी नही था उनमे।

चडी बाबू ने कहा था 'यह आपकी पोती है, यह बात मुझे मालूम ही नही थी भट्टाचार्य बाबू! मालूम होती भी कैसे! लोग तो इसे मेरी लडकी कहकर जानते हैं। अहा बडी भाग्यवती है आपकी पोती!"

मालिक ने कहा 'आपका यह ऋण मैं एक-न-एक दिन अवश्य शोध कर गा—*आपने मेरा जो उपकार किया है, जीवन भर नही भूलूगा।'*

'लेकिन जानते हैं आपकी इस पोती की वजह से कितना कमाया है मैंने? एक तरह स श्रीमानी ऑपेरा' आपकी पोती के बूते पर ही चल रहा ह। इसीलिए तो कह रहा था कि बडी ही भाग्यवती लडकी है। अजी, जिस दिन से मेरे यहा आई है, मेरा भाग्य ही खुल गया। अब आपके यहा जा रही है तो आपका भाग्य भी फिरेगा।"

मालिक न कहा 'यही तो मेरी भाग्यलक्ष्मी है चडी बाबू इसके चले आने के बाद से ही तो मेरी भाग्यलक्ष्मी भी घर से चली गई, जमीन-जायदाद सब कुछ एक के बाद एक चला गया।"

वह सब तो सुना है मैंने।"

आपने सुना ही कितना है? दो दिन मे कितना सुनाया जा सकता

दुलाल साहा ने कहा "मुझे दर्शन होने हैं राज ही।"
सुकान्त उछल पड़ा "मुझे एक बार दर्शन करा दीजिए न साहाजी, न हुआ मैं भी उनका शिष्य हो जाऊं। भाग्य में जो लिखा है सो होगा, नौकरी में उन्नति होगी न ?"
"लेकिन तुम्हें दर्शन होंगे भाई ?"
सुकान्त ने कहा "क्या आपको कैसे रोज दर्शन होते हैं ?"
"मुझे तो ध्यान में दर्शन होते हैं।"
बात पूरी होने से पहले ही खटखट जूतों की आवाज करता निताई बसाक आ पहुंचा। अंदर आते ही बोला, "तो तुम यहां हो दुलाल ?"
निताई बसाक से मिले ही इतने दिन में सुकान्त चक्कर लगा रहा था।
उसने कहा "अरे आप कहां गायब हो गए थे निताई बाबू ? आपको ढूंढ़ते-ढूंढ़ते"
निताई बसाक बोला "आप ही के काम से कलकत्ते गया था वहीं से आ रहा हूं।"
उसके बाद दुलाल साहा की ओर देखकर बोला, "तुमसे एक बात कहनी थी दुलाल, जरा इधर आओ।"
दुलाल साहा उठकर बाहर आया। फुसफुसाकर बोला "काम कहां तक बना ?"
निताई बसाक ने भी उसी तरह धीमी आवाज में कहा "एकदम पक्का काम कर आया हूं।"
"अब और कोई गड़बड़ न होगी ना ?"
"गड़बड़ की जड़ से खत्म जो कर आया हूं। थाने से खुद दरोगा ने कहा था कि रोगी अगर अस्पताल से गायब हो जाए तो किसीके बाप की ताकत नहीं कि कुछ कर पाए—पुलिस भी अपनी जिम्मेदारी से छूटेगी। मामला हाईकोर्ट में पहुंचकर भी रह जाएगा। इजलास में नहीं आएगा। उससे पहले ही खारिज हो जाएगा।"
"लेकिन उसे गायब कैसे किया ?"
"उस सबके लिए तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं है। चलो अंदर

चलो।'

कहकर निताई बसाक अंदर आया। दुलाल साहा भी माला फेरते फेरते अपनी कुर्सी पर जा बैठा। एक लम्बी उबासी लेते हुए उसने पुकारा हरि-हरि

चितपुर के सकर रास्ते पर दिन हो या रात, भीड़ में कमी नहीं होती। सारे दिन आवाजों से कान फाड़ देने वाले सारे उपकरण यहां मौजूद हैं। बस है ट्रामें हैं, रिक्शे ठेलागाडी और हैं असंख्य लोग। इसी वजह से कल्याणमयी होटल की दूसरी मंजिल में जो लोग सड़क की ओर वाले कमरों में रहते हैं उनके कमरा का किराया कम है। अंदर की ओर वाले कमरों में रोशनी नहीं है, हवा नहीं है लेकिन फिर भी किराया ज्यादा है। श्रीमानी ऑपेरा का आफिस इसीके पास है। चड़ी बाबू ने ही सब कुछ ठीक कर दिया था। मालिक को कुछ भी करना नहीं पड़ा। और कुछ करने लायक बूता भी नहीं था उनमें।

चड़ी बाबू ने कहा था, यह आपकी पोती है यह बात मुझे मालूम ही नहीं थी भट्टाचार्य बाबू! मालूम होती भी कैसे! लोग तो इसे मेरी लड़की कहकर जानते हैं। अहा, बड़ी भाग्यवती है आपकी पोती!"

मालिक ने कहा आपका यह ऋण मैं एक-न-एक दिन अवश्य शोध करूंगा—आपने मेरा जो उपकार किया है, जीवन भर नहीं भूलूंगा।

'लेकिन जानते हैं आपकी इस पोती की वजह से कितना कमाया है मैंने? एक तरह से श्रीमानी आपेरा' आपकी पोती के बूते पर ही चल रहा है। इसीलिए तो कह रहा था कि बड़ी ही भाग्यवती लड़की है। अजी जिस दिन से मेरे यहां आई है, मेरा भाग्य ही खुल गया। अब आपके यहां जा रही है तो आपका भाग्य भी फिरेगा।"

मालिक ने कहा 'यही तो मेरी भाग्यलक्ष्मी है चड़ी बाबू इसके चले आने के बाद से ही तो मेरी भाग्यलक्ष्मी भी घर से चली गई जमीन-जायदाद सब कुछ एक के बाद एक चला गया।"

वह सब तो सुना है मैंने।'

"आपने सुना ही कितना है? दो दिन में कितना सुनाया जा सकता

है ? सब भाग्य की ही बात है। उस दिन न जाने क्या मन में आया कि साधु महाराज को जब पत्तो खिलाने चला गया—यह सब उसीका फल है।

चडी बाबू बोले, "जी हाँ, सब मिलता है। जब मिलता है तो अक्षर-अक्षर मिलता है, मैंने खुद कई बार देखा है। खैर, वह सब जाने दीजिए। लड़की को घर ले जाइए। भगवान की कृपा हुई तो हरतन जल्दी ही बिलकुल ठीक हो जाएगी। उसके बाद भगवान से जो मानत की है, उसके मुताबिक पूजा कीजिएगा। बाद में हम लोग भी एक बार जाकर नाटक कर आएँगे।"

"जरूर-जरूर, जरूर आइएगा।"

जरा रुककर फिर बोले, "लेकिन हरतन के चले जाने से तो आपका नुकसान होगा।"

चडी बाबू ने कहा, "वाह, मेरा नुकसान ही क्या सब कुछ है ? अजी मेरा तो धधा है, और किसीका जुगाड कर लूगा। दाना डालने पर चिड़ियों की कमी होती है ? और जब तक इतजाम नही होता, शकू है, दाढी मूछ सफा करके काम चला ही रहा है।"

चडी बाबू ने ही सच में सारा इतजाम कर दिया। सिर्फ होटल का इतजाम ही नही, नकद रुपये भी दिए। मालिक तो साथ में ज्यादा कुछ लाए नही थे। बडी बहूजी का एक जेवर और गाडी भाडा लेकर निकल पडे थे। "यह भी होनी की बात है। मा की कृपा! तुम्हीं सत्य हो मा! तुम्हीं सत्य हो! जो लोग विश्वास नही करते वे तुम्हारे प्रति अन्याय करते हैं। मैंने भी कम अन्याय नही किया। मैंने भी तो विश्वास खो दिया था।"

चडी बाबू बोले, "अच्छा, अखबार में खबर छपवा दूँ ?"

"कौन-सी खबर ?"

"यही आपकी पोती की खबर। ठीक से लिखने पर बहुत-से नास्तिकों के मन में चैतन्य उपजेगा।"

मालिक बोले, "नही-नही चडी बाबू, यह ठीक नही होगा—और उससे आपको क्या फायदा होने वाला है ?"

"मेरा तो फायदा ही फायदा है, मेरी पार्टी की पब्लिसिटी होगी।

पब्लिसिटी ! माने ?"

'माने यही कि बगैर पैसा खर्च किए 'श्रीमाली ऑपेरा' का प्रचार हो जाएगा।'

मालिक ने चंडी बाबू के दोनों हाथ पकड़ लिए।

'नहीं-नहीं, हरतन की उम्र हो गई है। दो दिन बाद स्वस्थ होने पर उसके विवाह की व्यवस्था करनी पड़ेगी। आप दया करके इस सब चक्कर में न पड़ें भीड़-भाड़ होगी, उससे बीमारी बढ़ भी सकती है।"

हां तो फिर वही व्यवस्था हुई। मालिक हरतन को लेकर कल्याण-मयी होटल में चले आए। एक अंधेरे और गंदे से कमरे में खटमलों से भरे एक टूटे तख्त को साफ करके उसी पर हरतन को लिटा दिया। नीचे जमीन पर अपना बिस्तर लगाया। दो दिन की ही तो बात है। फिर किशनगंज से रुपया आते ही रवाना हो जाएंगे। रुपये के लिए निवारण को लिख चुके हैं। दुलाल साहा से भी रुपये ले सकता है। बेहया सूदखोर! रुपये पर चार पांच आना सूद बटोरता है और मुंह से हरि हरि करके भक्ति झाड़ता है। इस बार पेंपुडबेड़ के पास वाली आढ़त उससे लेकर छोड़ेंगे। घर की मरम्मत भी करानी है। सामने वाले खुले चौक में ऐरे गैरे लोग जब-तब घुस आते हैं। चारदीवारी से घेरनी होगी वह जगह। मछुआटोली की जमीन का भी कुछ बंदोबस्त करना पड़ेगा। इतनी जमीन दुलाल साहा के पास रेहन रखी हुई है। अब मुकदमा लड़कर उसका रिहाइशी मकान तक लेकर तब छोड़ेंगे इस ढागी को। उसके बाद पांव पकड़कर जितना भी गिड़गिड़ाए। इस बार किसी तरह की कोई दया माया नहीं दिखलाएंगे। इतने दिन दया-माया दिखलाकर अपना काफी नुकसान कर चुके हैं। बहुत हो चुका, अब और नहीं।

तख्त पर कुछ हरकत सी हुई। हरतन जैसे कुछ कहना चाह रही थी।

मालिक फटाक से उठकर उसके पास जाकर पूछने लगे 'क्या बात है बेटी, तकलीफ हो रही है? ओह मच्छर काट रहे हैं। समझ रहा हूं।'

एक ताड़ का पंखा लेकर हवा करने लगे। फिर बोले, 'घर पहुंचते ही देखना, दो दिन में चंगी हो उठोगी यह बीमारी जाने कहां भाग जाएगी। तुम मजे में घूमोगी, तुम्हारी दादी तुम्हें देखकर कितनी खुश

होगी, दखना—तुम्हार लिए गाय खरीदूगा ताजा दूध पीना। बगीचा ठीक करवा दूगा फूना के पौधे लगवाऊगा वहा मजे से घूमा करना।"

हरतन चुपचाप सब सुनती। और सुन या न सुने, मालिक उस अधेर कमरे म उसके पास बैठकर अपनी बात कहते रहते।

चड़ी बाबू आते। खबर ले जाते। काफी व्यस्त आदमी हैं। आते ही पूछते ' मच्छरदानी मिली ?'

जी हा मिल गई। आपको मेरी वजह से काफी तकलीफ उठानी पड रही है।'

बकू आया था ? डॉक्टर के कह मुताबिक दवा खिलाते जाइए—बकू ही सब करेगा आपको तकलीफ करने की जरूरत नही है।"

हा तो बकू आता भी था नियम से। सुबह दोपहर और शाम के वक्त। लडका ही था। अपने हाथ से दवा खिला जाता। 'रानी रूपकुमारी' का पाट इतने दिन से वही चला रहा था। अजना की बीमारी के बाद से इस पाट का जिम्मा उसीपर है। दाढी मूछ साफ कराकर पाट करता है लेकिन जमा नही पाता।

बकू कहता लडका क्या लडकी का पाट कर सकता है ? आप ही कहिए "

मालिक कहते सो तो है ही तुम कैसे कर सकते हो ? जिसका जो काम है "

बकू कहता, फिर भी किसी तरह चला रहा हू, इसकी बीमारी के बाद से चला ही रहा हू। लेकिन एक नई लडकी लाए बगैर हमारे दल का टिकना मुश्किल है। वैसे एक तरह से दल टूट ही गया है।'

मालिक कहते, 'अरे नही, टूटेगा क्यो ! तुम लोग किशनगज मे हमारे घर आना। वहा हरतन का घर देखना, कितना बडा मकान है। इस हरतन के पुरखे एक दिन गौडेश्वर के राजपुरोहित थे। उनके पास हाथी था। उस हाथी पर चढकर वे रोज राजमहल जाया करते थे। वहा रोज पूजा करते थे। पूजा मे रोज एक सौ आठ कमल के फूल लगते थे। तुम लोग वहा आकर नाटक करना। भरपेट पुलाव कलिया खिलाऊगा।"

मालिक बकू को भी वही सब किस्से सुनाते। सभीको सुनाते।

हरतन को देखने जो भी आता, उसीको अपने पुरखो की कहानी सुनाते। कोई नहीं मिलता तो घुमा-फिराकर बेचारी हरतन को ही सुनाते रहते।

निवारण ढूढ़ते-ढूढते एक दिन वही आ पहुचा—'कल्याणमयी होटल'। मालिक की भेजी चिट्ठी हाथ मे ही थी। उससे ठिकाना मिला लिया। रुपया को बडी सावधानी से टेंट मे बाधकर लाया था। यह कलकत्ता शहर है। यहा ठग और उठाईगीरो की कमी नही है। ट्राम से उतरकर चारो ओर का हाल चाल देखकर आश्चर्य मे पड गया था।

उसके बाद होटल के नीचे से पूछताछ करके सीढिया चढकर ऊपर आया। फिर इस कमरे से उस कमरे मे घूमता सीधे इस कमरे मे आ पहुचा। दरवाजा ठेलते ही मालिक सामने पडे।

अरे निवारण आ गए तुम ? मेरा यहा चिन्ता के मारे बुरा हाल है। दुलाल साहा क्या बोला ? रुपये मिले ?'

निवारण का खयाल उस ओर नहीं था। वह तख्त के पास पहुचकर उसपर लेटी हरतन को टकटकी लगाए देख रहा था। हरतन चादर ओढे चुपचाप लेटी थी। सिर्फ चेहरा खुला था। बडी-बडी दो आखे। सिर पर बाल लहरा रहे थे। हरतन भी टकटकी लगाए निवारण की ओर ही देख रही थी।

मालिक हसते हुए पास जाकर हरतन से बोले, इसको पहचाना बेटी ? तुम्हे गोद मे उठाकर बाहर ले जाकर खिलाया करता था। सरकार बाबू ?"

फिर निवारण की ओर देखकर बोले, क्यो ? पहचान रहे हो ? आखो के ऊपर भौंह देखो ? अब ? अब क्या कहेगा दुलाल साहा ? तब तो किस कदर घमड से चूर हो रहा था। लडके को विलायत भेजा पढने के लिए। मकान बनवाया शुगर मिल बैठा रहा है ! अब क्या कहेगा ? अब मैं भी दिखला दूगा। अब मैं भी देखूगा कि उसके पास रेहन के कितने कागजात हैं ! तुम्हारा क्या खयाल है ? अब तो यकीन हुआ तुम्हे ?"

निवारण बोला ' बिलकुल हरतन है मालिक, और कोई नही है—ठीक, अपनी वही हरतन है।"

सदानन्द इस उपन्यास का एक साधारण पात्र है, लेकिन मेरी कहानी मे उसका भी एक विशेष स्थान है। अब उसी घटना के बारे म कहता हू।

सदानन्द दुलाल साहा का मैनेजर ही नही था, मैनेजर से भी ज्यादा था। एक जमाने म यानी कात के आने से पहले वह कात की जगह काम करता था। शुरू शुरू मे वह सिर्फ खाना खुराकी पर था। उन दिनो सदानन्द उसीमे खुश था। भरपेट खाना ही तब बडी बात थी। उससे ज्यादा कुछ नही चाहता था वह।

लेकिन धीरे धीरे दुलाल साहा की माली हालत अच्छी हुई। उसके देखते देखते दुलाल साहा का नया मकान बना। दिनो-दिन दुलाल साहा की हालत को उसने सुधरते देखा। दुलाल साहा और निताई बसाक के पास कहा स कितना पैसा आया यह सदानन्द न अपनी आखों देखा है। सारा हिसाब वही रखता था। वही दुलाल साहा की रोकड सम्हलवाता था, जबकि खुद उसकी हालत वैसी की-वसी थी। उसम कोई सुधार नही हुआ था।

सदानन्द ने दुलाल साहा को इशारा भी किया था, 'साहाजी इतने मे मेरा गुजारा नही होता।"

गुजारा नही होता माने ? साफ-साफ कहो न क्या कहना चाहते हो ?'

सदानन्द ने कहा था, 'जी माने यही कि खरचा नही चलता।'

'तुम्हारा मतलब तनखाह बढाने से है ?'

"जी, इसके अलावा और क्या माग सकता हू ? सत्रह रुपये मे घर नही चलता आजकल।"

उसकी बात सुनकर दुलाल साहा मुसकराने लगा। फिर बोला सत्रह रुपयो मे घर नही चलता ? तुम्हारी बात सुनकर मुझे हसी आती है सदानन्द। अच्छा कहो खाने के लिए आदमी को कितने रुपये चाहिए ? एक आदमी के खाने मे महीने मे कितने रुपये लगते हैं ?'

'आप ही कहे ?

दुलाल साहा बोला, 'एक पैसा भी नही लगता। मुझसे सुनो, मैं

जब पहली बार किशनगज आया तो मेरे पास एक पैसा भी नही था। समझे ! एक फूटी कौडी नही थी। तब भी क्या मैं बगैर खाए रहा ? मैं क्या भूखो मरा ? तुम्ही कहो, मैं क्या खाए बगैर रहता था ? दो, जवाब दो ?"

शुरू शुरू मे बगैर पैसे की नौकरी की। सिफ खुराकी पर। उसके बाद तीन रुपये, पाच रुपये और बाद मे सत्रह रुपये। इतने पर भी सदानन्द का जी नही भरा। इतने लोभी आदमी को कैश पर रखना ठीक नही है। नजरो के सामने रुपयो का ढेर देखकर लोभ भी बढेगा। दुलाल साहा के पास इतन रुपये हैं और उसके पास कुछ नही ! यह ठीक नही है। निताई बसाक ने भी कहा यह ठीक नही है। दुलाल साहा का भी यही मत था।

दुलाल साहा के दिन फिर गए थे। जूट, धान और सन की आढत। ऊपर से लेन देन का धधा। इतना ही नही, पता नही किस अदृश्य सुरग के रास्ते ढेरो रुपया आता, उसका कोई हिसाब नही था। निताई बसाक जितना दिल्ली या कलकत्ते जाता, उतना ही रुपया ले आता। सात सौ टन जूट सिगापुर जानी है तो अमेरिका से तीन सौ टन का आर्डर है। सीधे अतराष्ट्रीय व्यापार। दुलाल साहा की आढत के सामने नावो की लाइन लग जाती, लारियो की भीड तीन-तीन दिन तक खत्म नही होती।

यह सदानन्द की नजरो के आगे ही होता। यह सब देखता और महीना पूरा होने पर सत्रह रुपये टेंट मे खोसता।

सिफ सदानन्द ही क्यो दुलाल साहा के यहा जो भी काम करता था, कोई भी भौतिक सुख के लिए परेशान नही होता था। उन सभीका एकमात्र आसरा था हरि। दुलाल साहा ने उन्हें समझा दिया था—पैसे मे सुख नही है।

अगर कोई पूछ बैठता कि आखिर सुख किस चीज मे है तो दुलाल साहा का पेटेंट जवाब होता—हरि की शरण मे—यानी हरि का नाम लेने से सिफ पेट ही नही भरेगा, इहलोक, परलोक और उसके बाद भी अगर कोई लोक है तो वहा भी बेडा पार होगा। हरिनाम का गुण ही ऐसा है।

इसी तरह चल रहा था। लेकिन इधर कुछ दिनों से निताई बसाक को सदानन्द का तौर-तरीका ठीक नहीं जच रहा था।

निताई बसाक ने कहा, "इसकी नौकरी खत्म कर दो दुलाल !"

दुलाल साहा ने कहा था, "अरे नहीं नहीं, बेचारा भगवान का जीव है ऐसा करो उसे कहीं और हटा दो।"

उसे हटा भी दिया। दुनिया में कुछ लोग होते ही हैं कि जहा भी रहे कुछ न कुछ गडबड करते ही रहते हैं। घर की बहू होकर आने पर घर म फूट डालती है। घर म नौकर होकर आने पर सदूक तोडते हैं। आफिस मे क्लर्क होकर आएगे तो वहा की श्रृ खला तोडेंगे। सदानन्द उसी श्रेणी का आदमी था। कैश से हटाकर उसे दुलाल साहा की जूट की आढत पर बैठाया गया। जूट की आढत मे काम कोई खास नहीं था। रुपये पैसे की जिम्मेदारी नहीं थी। लारी पर माल लदवाते वक्त सिर्फ गिनना पडता—राम दो, राम तीन—हिसाब रखने भर का काम था।

तो उसी समय की बात है।

विजय के विवाह की बात चल रही थी। दुलाल साहा के पास इस बारे मे लोग आ जा रहे थे। सदानन्द को यह बात मालूम थी।

सदानन्द एक रोज इसी तरह काम कर रहा था। तभी भनक पडी उसके कानों मे। आदमी नाव से ही आया था। गहना से चढकर किसी तरह किशनगज आ पहुचा था। आकर जो सामने पडता, उसीको पकड लेता था।

किससे काम है आपको ?"

' जी मैं दुलाल साहाजी से मिलना चाहता हू।"

आप कहा से आ रहे हैं ? '

उस आदमी ने कहा, ' मैं बडी दूर से आ रहा हू। बडा चातरा का नाम सुना है ?

' यह नाम तो नहीं सुना, लेकिन आप करते क्या है ?'

"जी मैं घटक हू। विवाह-योग्य पात्र और पात्रियो की खबर लेता-देता हू। मैंने सुना है साहाजी के यहा एक विवाह योग्य पुत्र है। वह डाक्टरी पढ रहा है उसीके लिए पात्री का सवाद लाया हू।'

सदानन्द को यह सब मालूम था। उसने कहा, "आइए, यहां बैठिए आराम से।"

सदानन्द ने काफी खातिर के साथ उसे बैठाया। फिर कहा, "मैं दुलाल बाबू की गद्दी का आदमी हूं।"

उस आदमी ने भी अपना परिचय दिया। नाम—दोलगोविन्द प्रामाणिक। पेशा—घटकी, बड़े-बड़े घरों में विवाह कराना ही काम है। अब इस महाराजा की लड़की का संबंध और हो जाए तो निश्चित हुआ जाए।

महाराजा नाम सुनकर सदानन्द को कौतूहल हुआ।

'कौन-से महाराजा ? कहां के महाराजा ?'

दोलगोविन्द ने कहा, 'हमारे बड़ा चातरा' के महाराजा।'

'यह बड़ा चातरा कहां है ?'

'बर्द्धमान जिले के ही एक गांव का नाम बड़ा चातरा है। नाम के ही महाराजा हैं। हम लोग महाराजा कहते हैं। किसी जमाने में इस वंश का कोई महाराजा रहा होगा। महल भी है। लेकिन टूटी फूटी हालत में। अब कोई रौनक नहीं है। लेकिन घराना बड़ा है। आज भी घराने की इज्जत है। घर में एक बूढ़ी बुआ भर हैं। इस लड़की के हाथ पीले कर दें तो छुट्टी पाएं।'

'लेन-देन कैसा करेंगे ?'

दोलगोविन्द प्रामाणिक अपनी पोटली को खिसकाते हुए अब जरा बेतकल्लुफी से बैठा। जरा समय लेकर बोला, 'अजी, जब बड़े घर में लड़की देंगे तो उनकी आबरू के हिसाब से दान-दहेज भी करेंगे ही! और फिर महाराजा की पहले जैसी हालत न हो लेकिन ऐसे गए गुजरे भी नहीं हैं। आज भी संदूक झाड़ें तो हीरे माणिक निकलेंगे।'

सदानन्द ने सब बड़े ध्यान से सुना।

तभी जैसे उसे खयाल आया। उसने पूछा, "खाने पीने का क्या इन्तजाम है घटकजी ?"

'खाने-पीने की फिक्र नहीं है। चने-मुरमुरे जो भी मिला, खाकर पानी पी लूंगा, मुझे आदत है। पहले काम होना चाहिए।'

सदानन्द की छुट्टी होने का समय हो चला था।

उसने कहा, मेरे साथ आइए, आपसे काम है।"

कहकर दोलगोविन्द प्रामाणिक को सदानन्द अपने घर लिवा लाया।

उसने कहा आप किशनगंज के मेहमान ठहरे आपको ऐसे ही कैसे छोड सकता हू ?'

घर लाकर सदानन्द न ही दोलगोविन्द को पट्टी पढाई। लडकी की जिम्मेवारी बडी जिम्मेवारी है, सैकडो तरह की बातो के बाद कही जाकर लडकी के हाथ पीले हो पाते हैं। खैर, यह सब तो आप जानते ही हैं अच्छी तरह से। हा तो यह बताइए लडकी देखने मे कैसी है ?"

वह तो साहाजी खुद जाकर देख सुन लेंगे। घटक की बात पर कही ब्याह-शादी होते हैं ?'

सदानन्द ने कहा था लेकिन आपको कह रखना ठीक होगा, बहुत से सबध आ रहे हैं, कलकत्ते के बडे-बडे घरानो से। लम्बी-चौडी रकमो का लालच दिखला रहे हैं मुझे सब मालूम है।

सो तो आपको मालूम होगा ही ! साहाजी के यहा आप इतने दिनो से काम जो कर रहे हैं।

सिर्फ काम कर रहा हू इसलिए नही मैं चाहू तो साहाजी को फसा सकता हू।"

सो कैसे ?'

अजी, यहा गद्दी पर तो कुछ ही दिनो से काम कर रहा हू। पहले कैश पर था। बैंक मे रुपया जमा करने भी मैं ही जाता था। साहाजी ने टैक्स का कितना रुपया हजम किया है मैं यह भी बतला सकता हू। हरि-सभा के नाम पर कितना रुपया खुद डकार गए हैं, यह भी मुझे मालूम है। मैं चाहू तो साहाजी को पुलिस के हवाले कर सकता हू।"

'ऐसी बात है !'

"लेकिन आप कही ये बातें किसीसे कह न बैठिएगा।'

'अरे नही नही, कैसी बात कर रहे हैं आप ! आपके घर मे खा पीकर आपका ही बुरा सोचूगा ! इतना नमकहराम नही हू।'

नही ऐसी बात नही है आप भले आदमी हैं इसीलिए तो ये बातें

कह गया आपके सामने, नही तो ये बातें क्या किसीसे कहने की है। जानते हैं, मुझे तनख्वाह कितनी मिलती है ?"

दालगोविन्द चुप रहा जरा देर, फिर बोला, कितनी ?"

मालूम है, पाच साल तक सिफ खुराकी पर काम किया है। फिर एक रुपया दो रुपया करके बढते बढते अब जाकर सत्रह रुपये मिलते हैं। मेरे कोई नही है इसीसे किसी तरह सत्रह रुपये मे काम चला रहा हू— नही तो आजकल कही सत्रह रुपयो मे गुजारा होता है ? आप ही कहे ?"

सो तो है ही लेकिन अब आप करना क्या चाहते हैं सो कहिए ?'

हा, तो उसी रोज़ दोनो के बीच पहली बार परामश हुआ। सदानन्द ने बहुत अत्याचार सहे हैं उसने जिन्दगी मे कभी किसीका बुरा नही किया। किसीका बुरा सोचा तक नही। चारऔर भले मानसो की तरह उसने भी सिफ अपनी आर्थिक उन्नति चाही। चाहा था, एक रोज़ उसकी भी हालत सुधरेगी। दुलाल साहा या निताई बसाक की तरह नही ना दूसरे चार आदमियो जैसी ही सही। लेकिन वैसा कुछ नही हुआ। इसी-लिए मुह बन्द किए पडा है। और यहा बैठकर जूट की गाठें गिन रहा है।

दोलगोविन्द घटक आया था विवाह पक्का करने के सिलसिले में लेकिन आकर इस अजीब आदमी से पाला पड गया।

उसने कहा लेकिन मैं क्या कर सकता हू ? मेरे कुछ करने का हो तो कहे।"

सदानन्द ने कहा ' आप सब कुछ कर सकते हैं। आप ही मुझे इस विपदा से उबार सकते हैं।"

"किस तरह ?"

' यही कहने के लिए तो आपको बुलाकर ले आया हू। मेरी हालत तो देख रहे हैं न ?"

दोपहर के वक्त सदानन्द की गद्दी बन्द रहती है। सब लोग उस वक्त खाना खाने जाते हैं। दोपहर बाद तीन बजे गद्दी फिर खुलती है। सदानन्द ने इसी बीच दोलगोविन्द को अपने सामने बिठाकर सब समझा दिया।

' बात सीधी है। मैं दुलाल साहा का सर्वनाश करना चाहता हू। उसने जिस तरह मेरा सर्वनाश किया है, मैं भी उसका सर्वनाश करूगा

दुलाल साहा के केश पर काम कर चुका हू। उसका सारा हाल मुझे मालूम है। कहा कितना रुपया लगा है, तिजोरी मे कितना है और टैक्स का कितना मारा है, सब मुझे मालूम है।'

दोलगोविन्द ने सुझाया पुलिस को खबर कर दीजिए।'

'अभी नही मैं गरीब आदमी हू। ये पुलिस उलिस सब बडे आदमियो के साथ होते हैं। मैं मुश्किल म पड जाऊगा तो कौन देखेगा मुझे ? इसी लिए तो चुप हू इतने दिनो से कुछ भी नही कहता इसीलिए आपको सब कुछ बतलाया।"

'लेकिन आप ही कहे, मैं आपकी क्या मदद कर सकता हू ?"

"आप सब कुछ कर सकते है।'

कहकर सदानन्द ने झुककर जाने क्या कहा उसके कान म कि सुनते ही दोलगोविन्द चौंक उठा।

कहते क्या हैं आप ? मैं इस झझट म नही पडना चाहता, मैं घर गृहस्थी वाला मामूली आदमी हू मैं इस तीन-पाच मे नही पडना चाहता। अजी, खुद मेरे ही घर मे लडकिया बैठी हैं ब्याहने को यह सब करूगा तो मेरा धर्म छोडेगा मुझे ?"

सदानन्द हाथ पकडकर गिडगिडाने लगा मेरा यह उपकार आपको करना ही पडेगा।"

दोलगोविन्द बेचारा किसी तरह जान बचाकर भागना चाहता था। उसे जरा भी मालूम होता तो इतने लोगो के रहते इस आदमी के पास फटकता ? घटकी करते करते उसे तीस साल हो गए लेकिन पहले कभी इस तरह मुसीबत मे नही पडा।

'वैसे मेरे पास अपना कुछ भी नही है लेकिन नही नही करके भी एक बारगी कुछ भी न हो, ऐसी बात नही है। नगद रुपया जरूर नही है लेकिन और जो भी मेरे पास है, मैं आपको दे दूगा। बस, आप मेरा यह उपकार कर दें।"

दोलगोविन्द घटक असल मे धर्मभीरु आदमी ठहरा बुरी तरह आतकित होकर बोला "नही जी, मैं गरीब आदमी हू, मुझे कही लालच हो गया तो फिर अपने को रोक नही पाऊगा।"

कहकर सचमुच ही वह उठ खड़ा हुआ, अपनी पोटली भी उठा ली। सदानन्द का भी गद्दी जाने का समय हो रहा था।

सदानन्द भी पीछे पीछे आया।

चलते-चलते उसने कहा, "दोलगोविन्द बाबू, आप जा रहे हैं, जाइए लेकिन मेरी बात एक बार सोचकर देखते तो अच्छा होता, सारी जिन्दगी में आपको जो नहीं मिला, वही मिल जाता आपको।"

सदानन्द की यह बात दोलगोविन्द को पहेली-सी लगी।

"इसके मानी?"

"मानी यही कि नगद रुपया तो मेरे पास नहीं है। मैं आपको थोड़ा सोना देता। असली गिनी सोना।"

दोलगोविन्द के पांव रुक गए। उस की लड़कियां ब्याहनी हैं। तीन-तीन लड़कियां बैठी हैं घर में। घटकी के काम में मिलता ही कितना है? कुछ कपड़े, बहुत हुआ तो कभी एक शाल मिल जाता और कुछ नगद रुपये, सो भी चालीस पचास से ज्यादा नहीं।

"यह सोना मेरी मां का है, पुराने जमाने का एकदम खालिस सोना। आजकल का टांकेवाला सोना नहीं है। मुझे अब करना क्या है उस सोने का? मेरे बहू भी नहीं है, लड़की भी नहीं है, मां मरने के बाद यों ही पड़ा है, उसे भोगने वाला ही नहीं है कोई।"

दोलगोविन्द ने जैसे बड़े संकोच के साथ पूछा, "सोना कितना होगा?"

"यही कोई पन्द्रह भरी समझ लीजिए। मेरे नाना ने सुनार को सामने बिठाकर बनवाए थे गहने मेरी मां के लिए। मेरे नाना को तब क्या मालूम था कि उनकी लड़की कम उम्र में ही विधवा हो जाएगी और ससुराल से उसके देवर उसे खाली हाथ भगा देंगे। उन बेचारों ने सोचा भी नहीं होगा कि उनका एकलौता नाती यहां दुलाल साहा की आढ़त में झक मारेगा!"

"लेकिन ये गहने हैं कहां?"

"ठीक जगह पर ही हैं। अकेला हूं तो क्या हुआ, ठीक जगह ही रखे हैं। कितनी ही बार हुआ कि जो सामने आए, उसीको दे डालूं सब कुछ। एक

सुनकर नई बहू को इस घर में लाए थे। दूल्हा जिस दिन बहू को लेकर आया सारा गांव साहाजी के घर उमड़ पड़ा था। आहा, कैसी फूल सी बहू है! जो भी हो साहाजी बहू बड़ी अच्छी लाए हैं। जैसा लड़का वैसी ही बहू। बड़ी अच्छी जोड़ी मिली है। सब लोग एक ही बात कर रहे थे। साहाजी ने लड़के के विवाह में एक पैसा भी नहीं लिया इस बात का भी खासा प्रचार हो गया।

दुलाल साहा ने कहा था मेरा लड़का क्या जूट या सन है कि उसे बेचकर पैसा लूगा ?

कोई कोई बोला मालिक ने किन्तु लड़के के विवाह में नकद दो हजार रुपये लिए थे।

दुलाल साहा तुम लोगों को परनिंदा करने की आदत पड़ गई है। मालूम है परनिंदा महापाप है !

लेकिन उस रोज किसीको इतना सब सुनने की फुरसत नहीं थी। कतार की कतार लोग पंगत लगाकर जम गए थे। छत आंगन, कहीं भी रत्ती भर जगह खाली नहीं बची थी। पूड़ियां परोसते परोसते तरकारी खत्म होती तो तरकारी परोसते परोसते पूड़ियां खत्म। उधर मजिस्ट्रेट साहब आ पहुचे थे पुलिस के सुपर साहब आ पहुचे। इन लोगों की खातिरदारी करने का जिम्मा खुद निताई बसाक ने लिया था। घर के आगे ऊपर मचान लगाकर नौबत बज रही थी। बाहर कूड़े में केले के पत्ते और कुल्हड़ सकोरों का ढेर लग गया था। दुलाल साहा के घर एक तरह से वही पहला और आखिरी विवाह था। दुलाल साहा ने किसी बात की कसर नहीं छोड़ी। दोलगोविंद प्रामाणिक भी एक कोने में बैठा भरपेट खा रहा था। असल में आज का उत्सव उसीका तो था।

'खाना खाया ? अच्छी तरह खाया ?'

दोलगोविंद ने कहा जी खूब पेट भर के खाया है।

'देखो भाई मन में कोई कसर मत रखना पेट न भरा हो तो अगली पंगत में फिर बैठ जाओ बाद में फिर सुनने को न मिले कि

दुलाल साहा हर किसीसे यही कह रहा था।

हर कोई दुलाल साहा के पास आकर बड़ी तृप्ति के साथ हाथ जोड़

कर कह रहा था क्या बात है साहाजी ! बडा अच्छा इतजाम किया है।"

अरे वह देखो ?

जी हा एकदम साक्षात लक्ष्मी लाए है घर म।'

धीरे-धीरे रात गहरी होने लगी। जितनी देर हो रही थी दोलगोविंद की छटपटाहट उतनी ही बढ रही थी। जिस-तिस के चेहरे की ओर ताक रहा था। किसीसे कुछ पूछ भी नही पा रहा था बेचारा। रात और भी गहरी हुई। अब तो जसे उसका सीना भी जोर-जोर से धडक रहा था। दोलगोविंद बार-बार अदर-बाहर आ जा रहा था। अधेरे म इधर उधर अभी भी दो चार लोग घूम फिर रहे थे। जानेवाले ज्यादातर जा चुके थे। रात को रुकनेवाले लोग ही बाकी थे। दोलगोविंद हर किसीका चेहरा देखकर जस कुछ ढूढ रहा था।

ऐसे क्या देख रहे हो घटकजी ?"

बगैर कोई जवाब दिए दोलगोविंद दूसरी ओर चला जाता। कभी इस कमरे म तो कभी उस कमरे म। कमरे से बराडे मे फिर आगन मे, घर के बाहर फिर अदर। दोलगोविंद जैसे बावला हो गया था। नौहबत वाला दरबारी कानडा के कामल गधार को मीड मे लपेट रहा था। थोडी ही देर म पूरा घर सो जाएगा।

क्या बात है घटकजी किस ढूढ रहे हो ?"

अब और वक्त नही था। दोलगोविंद के लिए सिर्फ पागल होना बाकी था। रुआसा हो गया था बेचारा।

अचानक सामने सदानद दिखलाई पड गया। दोलगोविंद ने लपक कर उसका हाथ पकड लिया। अब ? अब कहा भागोगे ?

वह आदमी भी बुरी तरह सकपका गया।

'क्याजी ? मेरा सोना क्या हुआ ?'

सोना ! कैसा सोना ?'

वायदा नही किया था ? भूल गए ? पद्रह भरी

देन ? कब कहा था ? आपका क्या

सुनकर नई बहू को इस घर मे लाए थे। दूल्हा जिस दिन बहू को लेकर आया सारा गाव साहाजी के घर उमड पडा था। आहा, कैसी फूल सी बहू है ! जो भी हो साहाजी बहू बडी अच्छी लाए हैं। जैसा लडका वैसी ही बहू। बडी अच्छी जोडी मिली है। सब लोग एक ही बात कर रहे थे। साहाजी ने लडके के विवाह म एक पैसा भी नही लिया इस बात का भी खासा प्रचार हो गया।

दुलाल साहा ने कहा था मेरा लडका क्या जूट या सन है कि उसे बेचकर पैसा लूगा ?

कोई कोई काना मालिक ने किन्तु लडके के विवाह मे नगद दो हजार रुपय लिए थ।

दुलाल साहा तुम लोगो को परनिंदा करने की आदत पड गई है। मालूम है परनिंदा महापाप है !

लेकिन उस रोज किसीको इतना सब सुनने की फुरसत नहीं थी। कतार-की कतार लोग पगत लगाकर जम गए थे। छत आगन, कहीं भी रत्ती भर जगह खाली नही बची थी। पूडिया परोसते परोसते तरकारी खत्म होती तो तरकारी परोसते परोसते पूडिया खत्म। उधर मजिस्ट्रेट साहब आ पहुचे थे पुलिस के सुपर साहब आ पहुचे। इन लोगो की खातिरदारी करने का जिम्मा खुद निताई बसाक ने लिया था। घर के आगे ऊपर मचान लगाकर नौबत बज रही थी। बाहर कूडे म केले के पत्ते और कुल्हड सकोरो का ढेर लग गया था। दुलाल साहा के घर एक तरह से वही पहला और आखिरी विवाह था। दुलाल साहा ने किसी बात की कसर नहीं छोडी। दोलगोविंद प्रामाणिक भी एक कोने म बैठा भरपेट खा रहा था। असल म आज का उत्सव उसीका तो था।

'खाना खाया ? अच्छी तरह खाया ?'

दोलगोविंद ने कहा, "जी खूब पेट भर के खाया है।

देखो भाई मन मे कोई कसर मत रखना पेट न भरा हो तो अगली पगत म फिर बैठ जाओ बाद मे फिर सुनने को न मिले कि '

दुलाल साहा हर किसीसे यही कह रहा था।

हर कोई दुलाल साहा के पास आकर बडी तृप्ति के साथ हाथ जोड

कर कह रहा था 'क्या बात है साहाजी ! बडा अच्छा इतजाम किया है !"

अरे वह देखो ?"

जी हा, एकदम साक्षात् लक्ष्मी लाए है घर मे।"

धीरे-धीरे रात गहरी होने लगी। जितनी देर हो रही थी, दोल-गोविंद की छटपटाहट उतनी ही बढ रही थी। जिस तिस के चेहरे की ओर ताक रहा था। किसीसे कुछ पूछ भी नही पा रहा था बेचारा। रात और भी गहरी हुई। अब तो जैसे उसका सीना भी जोर-जोर से धडक रहा था। दोलगोविंद बार-बार अदर-बाहर आ जा रहा था। अधेरे म इधर उधर अभी भी दो चार लोग घूम-फिर रहे थे। जानेवाले ज्यादातर जा चुके थे। रात को रुकनेवाले लोग ही बाकी थे। दोलगोविंद हर किसीका चेहरा देखकर जैसे कुछ ढूढ रहा था।

'ऐसे क्या देख रहे हो घटकजी ?"

बगैर कोई जवाब दिए दोलगोविंद दूसरी ओर चला जाता। कभी इस कमरे मे तो कभी उस कमरे म। कमरे से बराडे म, फिर आगन मे, घर के बाहर फिर अदर। दोलगोविंद जैसे बावला हो गया था। नौह-बत वाला दरबारी कानडा के कोमल गधार को मीड मे लपेट रहा था। थोडी ही देर मे पूरा घर सो जाएगा।

'क्या बात है घटकजी किसे ढूढ रहे हो ?"

अब और वक्त नही था। दोलगोविंद के लिए सिर्फ पागल होना बाकी था। रुआसा हो गया था बेचारा।

अचानक सामने सदानद दिखलाई पड गया। दोलगोविंद ने लपक-कर उसका हाथ पकड लिया। अब ? अब कहा भागोगे ?'

वह आदमी भी बुरी तरह सकपका गया।

क्योंजी ? मेरा सोना क्या हुआ ?"

"सोना ! कैसा सोना ?"

'सोना देने का वायदा नही किया था ? भूल गए ? पद्रह भरी सोना ?"

"किसने कहा था सोना देने के लिए ? कब कहा था ? आपका क्या

दिमाग खराब हो गया है घटकजी ?"

पूरे घर म हल्ला मच गया। जो जहा पर था, भागा भागा आया। क्या बात है घटकजी ? किसने कहा था सोना देने के लिए ? किसे ?'

देखिए न मुझसे कह रहे हैं कि मैंने पद्रह भरी सोना देने का वायदा किया था। इतना सोना तो अपनी जिंदगी म देखा भी नही है मैंने। सोना ही होता तो इस तरह किसीके यहा नौकरी करता ?

' छोडिए, हाथ छोडिए। '

बडी मुश्किल से घटकजी को अलग किया। दानगोविंद का बुरा हाल था। कधे पर की चादर फश पर लोट रही थी।

और उधर कमरे म फूलो से सजे पलग पर घूघट म चेहरा ढके नववधू बैठी थी। यही नई वहू उस वक्त नववधू के वेश म घूघट के अदर थरथर काप रही थी।

बाहर नौहबतवाले ने तभी मचान के ऊपर से मुलतानी तान का आलाप शुरू किया।

ये बातें आज की नही हैं। आज जबकि मालिक कलकत्ते से हरतन का दूध खोजकर किशनगज वापस ला रहे हैं ऐसे वक्त किसीको ये बातें याद रहना मुश्किल ही है। याद हो भी तो अकेले सदानद को याद रह सकती है। लेकिन सदानद भी तो आज लापता है।

सदानद की जो इतनी देखभाल हो रही थी मरीज बनाकर अस्पताल मे उसकी इतनी खिलाई पिलाई हो रही थी उसके मूल म भी यही घटना थी।

दानगोविंद शादी के बाद उस दिन वाली घटना के बाद से ही न जाने कैसा हो गया था। सदानद ने उससे कहा था कि विवाह होते ही वह अपना वायदा पूरा कर देगा।

लेकिन वैसा नही हुआ।

सात समुद्र और तेरह नदी पार करने के बाद कही जाकर विवाह हुआ। दुलाल साहा धूमधाम के साथ बरात लेकर पहुचा। निताई बसाक भी गया था। बरात जब पहुची तो वहा का इतजाम देखकर सब

भौचक रह गए। इतने लोग गए थे लेकिन खातिरदारी करने वाले ज्यादा नहीं थे।

निताई बसाक ने पूछा, 'और वह घटकजी कहा गए ? दोलगोविंद प्रामाणिक कहा है ?

दोलगोविंद भागता-भागता आया 'मुझे बुलाया था क्या बसाक-जी ?

निताई बसाक ने कहा था और नही तो क्या ? अरे पान-तम्बाकू सब कहा हैं ? बरात की खातिरदारी करने वाले लोग कहा गए ?'

'बडी मुश्किल हो गई बसाकजी, इतजाम सब ठीक ही था, खाली जरा सी गडबड हो गई।' कहकर जैसे किसीको पुकारने चला गया— अरे सुदामा ए सुदामा

दोलगोविंद उस वक्त जो गया सुदामा को पुकारने तो फिर और दिखाई नही दिया। लेकिन इस वजह से विजय का विवाह तो नही रुक सकता था। लडकी की बूढी बुआ बिस्तर मे पडी बुखार म तप रही थी। बूढी बुआ उस बुखार मे ही उठकर बैठने लगी।

निताई बसाक ने कहा 'अरे-अरे आप उठ क्या रही है ? आप लेटिए।''

बुआ बूढी थी तो क्या हुआ रुपया था उसके पास। उस रुपये के बूते पर ही गाव के लोग आ जुटे उन लोगो ने ही सारा काम सम्हाल लिया। थोडी देर जरूर हो गई, लेकिन आदर-सत्कार मे कोई कमी नही हुई। अच्छी तरह पूरी बैंगन भाजी, काशीफल और आलू की तरकारी, मछली, चटनी, दही और मिठाई खाने के बाद सब लोग पान चबाने लगे। रात को सोने के इतजाम म भी कोई कमी नही थी। कहा कहा से बिस्तरे, तकिये और दरियो का इतजाम हो गया। किसीको किसी तरह की कोई तकलीफ नही हुई।

आखिर म दुलाल साहा को तसल्ली हुई। निताई बसाक भी खुश था।

सबसे ज्यादा खुशी हुई वहू देखने के बाद। जसे साक्षात देवी की प्रतिमा हो।

उम्र कम देखकर ही लडकी पसद की थी दुलाल साहा ने। कच्ची उम्र से ही दुलाल साहा के घर का भार कधो पर सम्हाल लेगी। बाप नही है। मा भी कुछ रोज हुए गुजर चुकी है। सिर्फ इस लडकी के हाथ पीले करने के लिए ही बूढी बुआ जैसे जीवित बैठी थी।

दोलगोविंद न कहा था 'बहू के साथ सपत्ति भी आएगी। बुढिया के मरने पर सारी सपत्ति आपके लडके को ही मिलेगी।

विजय भी तब छोटा ही था। नई बहू के साथ उसकी जोडी देखते ही बनती थी।

दूसरे दिन जब जाने के लिए नाव तैयार हो रही थी पता नही कहा से दोलगोविंद आ पहुचा।

निताई बसाक उसे देखते ही आगबबूला हो उठा 'अब तक थे कहा दोलगोविंद ? हम लोगो को इस तरह छोडकर कहा भाग गए थे ?''

दोलगोविंद जैसे आसमान से गिरा। आश्चर्य से उसने कहा, भागूगा क्या बसाकजी ? अपना नेग दस्तूर लिए बगैर ही चला जाऊगा? आप कह क्या रहे हैं ?

तब कल रात भर तुम्हारी सूरत क्यो दिखलाई नही दी ?''

दोलगोविंद बोला तब इतना सब हुआ कैसे ? इतने सारे लोगो के खाने-पीने का इतजाम किसने किया ?

''तुमने किया यह सब ?'

'जी हा, सम्बन्ध करा के भाग खडा होऊ, मैं उनमे का नही हू। बुढिया ठीक आज ही बीमार हो गई। नही तो मुझे किस बात की फिक्र थी ?'

हा तो दोलगोविंद भी वर-वधू के साथ किशनगज आया था। आने के बाद से ही उसकी बेचैनी जम बढ गई थी। जो मिलता, उसीसे पूछता, ''हा भाई यह सदानद कहा गया ? आढत मे बैठता था न, वही ?''

कोई-कोई जवाब मे कहता, जाएगा कहा ? होगा यही कही '

सदानद इस घर का ऐसा कोई नही है कि जिसके न होने पर घर के सारे लोग बगैर खाए-पीए बैठे रहेगे। इसीलिए उसकी खोज खबर

रखने की फिमे पडी थी। हर कोई अपने अपने काम म लगा था। दोलगोविंद को कोई काम नही था। बहू-भात होने ही निताई बसाक उसे जो देना-लेना है चुका देगा। दिन भर इधर से उधर घूमना और तम्बाकू खाना छोड उसके पास करने के लिए कुछ भी नही था। लडकी की ससुराल मे आकर वह और करता भी क्या ?

लेकिन बहू-भात हो जाने के बाद भी उसकी बेचैनी कम नही हो पा रही थी। सदानद को ढूढता इधर से उधर घूम रहा था। बाद मे काफी रात गए जब सब लोग खा पीकर पान चबाते चले गए, बहू और लडका भी अन्दर कमरे म चले गए तब भी दोलगोविंद पागल की तरह भटक रहा था क्यो भाई सदानद को देखा है किसीने ? सदानद कहा है ?"

किसीने जाकर निताई बसाक से कहा, 'घटकजी को पता नही क्या हो गया है बाय-ब्राय बक रहे हैं।'

घर के बाहर कोई नही था। एक ओर जूठे केले के पत्ता का ढेर पडा था। दिन भर की मेहनत के बाद जिसे जहा जगह मिली पड गया था। नौहबतवाला भी मचान पर ही सो गया था। नीचे कुत्ता म जूठे पत्तो के लिए छीना झपटी हो रही थी। उसीके बीच दोलगोविंद मन ही मन बडबडा रहा था "सदानद कहा गया ? सदानद ?"

उस सुनसान अधेरे मे दोलगोविंद के ये शब्द जैसे काफी नुकीले और तेज होकर नम हवा को बीध रहे थे।

'आपन सदानद को देखा है ? सदानद को ?"

निताई बसाक न आकर उसे जोर से डाटा, क्या हुआ दोलगोविंद ? क्या बक रहे हो ?'

"है ?"

"यह क्या बक रहे हो मन-ही-मन ?"

दोलगोविंद की आखें जैसे नशे मे झुकी जा रही थी।

निताई बसाक की ओर उसने जरा देर ताकने के बाद कहा, 'सदा-नद को देखा है ? सदानद को ?"

निताई बसाक को तभी खटका लगा। उसने फिर पूछा "कुछ चढा

ली है क्या तुमने दोलगोविंद ? मुझे नही पहचान रहे ? मैं निताई वसाक हू।"

क्षण भर के लिए जैसे दोलगोविंद को होश आया लेकिन फिर सब भूल गया। निताई वसाक ने फिर पूछा, ' क्या चुराया है ?"

'सदानद को देखा है ? सदानद को ?"

इस अनन्त प्रश्न ने जैसे सदानद को आच्छन्न कर लिया था। विश्व-भर मे जैसे कही कोई नही था। कुछ नही था। सिर्फ था एक सदानद और सदानद। सदानद ही विश्व ब्रह्माण्ड मे जैसे एकमात्र और आदि-सत्य था। दोलगोविंद के लिए और सब मिथ्या और निरर्थक हो गया था। इसके बाद निताई वसाक भी वहा नही रुका।

पागल के साथ फालतू बकबक करने मे कोई फायदा नही है। एक ही दिन म दस आदमी का दिमाग खराब हो गया। अच्छा खासा था। अपने नेग-दस्तूर के लिए अच्छा खासा वाक्यालाप भी किया, लेकिन बहू-भात के बाद स ही न जाने एकदम क्या हो गया है इसे।

निताई वसाक भी अन्दर जाकर अपने सोने का इन्तजाम करने लगा।

अगले रोज सुबह से ही किशनगज के लोगो ने देखा दोलगोविंद सारी रात सोया नही था। आखें लाल हो रही थी। पहले रोज पैरो म जूता था बदन पर कपडा भी था। दिन भर इधर-उधर घूमता रहा। अगले रोज उस घाट के पास देखा गया। वही एक रट लगाए था सदानद कहा है ? सदानद कहा है ?'

बाद म उसका चेहरा और भी सूखने लगा। चेहरे पर दाढी उग आई। कपडे भी फटने लगे थे। दिन रात एक ही रट। सदानद के नाम का जैसे जप कर रहा हो। अब लोग भी उसे देखकर ध्यान नही देते थे। वह भी किसीकी ओर नही देखता था। मन-ही-मन बडबडाता सडक पर घूमता रहता।

सदानद जिस रोज छुट्टियो के बाद अपने काम पर लौटा, उस रोज कई लोगो ने उससे पूछा ' क्या बात है सदानद दोलगोविंद तुम्हे क्यो

ढूढ रहा था ?"

सदानद हैरान था। उसने पूछा, "कौन दोलगोविंद ?"

"दोलगोविंद प्रामाणिक।"

इसपर भी सदानद पहचान नही पाया। उसने कहा 'कौन दोलगोविंद प्रामाणिक ? कहा रहता है ?'

दोलगोविंद प्रामाणिक कहा रहता है किसीको क्या मालूम ? घटक आखिर घटक ही है। घटक का पता ठिकाना कौन बता सकता है ?

"पहचाना नही ?"

सदानद कहता 'अरे पहचानूगा कसे, सात जनम म भी उसका नाम नही सुना कभी !

"तब इतने लोगो क रहते वह तुम्हारे ही नाम की रट क्यो लगाए है ?"

'यह मैं कैसे कह सकता हू ?'

खैर, एक बार चलकर उससे बात करने म क्या हर्ज है ? '

सदानद चिढ गया। बोला 'मुझे कोई काम काज नही है क्या, जो ऐरे गरे से सिर मारता फिरू ? मेरा काम कौन करेगा यहा पर ?"

सिफ दो एक ही नही, और भी बहुत से लोग आए सदानद के पास। उसके छुट्टिया से वापस लौटते ही खबर सुनने पर काफी लोग आए। सभी एक ही बात कह रहे थे। हर किसीके मुह पर वही एक सवाल था। और किसीका नाम नही लेता, सिफ सदानद के नाम की रट लगाए है। दोलगोविंद को देखकर पहचानना मुश्किल है। नगे बदन, नगे पाव। तैल न पडने से सिर के बालो मे जट पड गई है। दाढी मे जूओ ने डेरा बाध लिया है। इधर-उधर कही भी पडा रहता है। कुछ भी खा लेता है। कमर की धोती तक ठीक नही रहती।

सब लोगो के बार-बार पीछे पडने स सदानद आखिर बडी मुश्किल स राजी हुआ।

ठीक है चलो तब देखा जाए। कौन है यह आदमी ? '

फिर बोला, 'तुम लोगो को अच्छी तरह मालूम है कि मेरा ही नाम ले रहा ह ?"

' अरे और क्या ? तुम्हारा नाम छोड़ जैसे यह आदमी कुछ जानता ही नही है एक ही रट लगाए है—सदानद को देखा है ? सदानद कहा है ?"

लेकिन इस दुनिया म क्या मुझको छोड और कोई सदानद नही हो सकता ?' जरा रुककर फिर बोला "खर जो भी हो। चलो, तमाशा देख ही लिया जाए।"

सदानद सामने आकर खडा हुआ।

सडक के किनारे एक बेल का पेड था। उसीके नीचे धूल मिट्टी मे एक फटी दोहर बदन पर डाले दोलगोविंद बाय बाय बक रहा था। इतने लोगो के आन का भी उसपर कोई असर नही था। अपने मे डूबा बड बडाता था सदानद को देखा है सदानद ?'

सदानद अब आग बढ आया।

उसने कहा मैं पूछता हू, तुम किस ढूढ रहे हो ? किस ? मैं ही तो हू सदानद तुम्हारे सामने ही खडा हू।"

दोलगोविंद न सदानद की ओर देखा तक नही। उसे जैसे मालूम भी न था कि कोई उसके सामने भी आकर खडा हुआ है।

सदानद ने हिम्मत करके और भी पास आकर झुककर कहा, "अच्छी तरह स देख लो मुझे मैं ही हू सदानद मुझे किसलिए ढूढ रहे हो ?"

इतनी देर बाद दोलगोविंद ने नजर उठाकर उसकी ओर देखा। फिर बोला सदानद सदानद को देखा है, सदानद को ?'

सदानद ने कहा 'क्या अजीब बात कर रहे हो ! अरे मैं ही तो सदानद हू—मुझे जानते हो तुम ?"

दोलगोविंद अपनी ही रौ मे कहे जा रहा था सदानद को देखा है ? सदानद '

"अजीब पागल से पाला पड गया। यह आ कहा से गया है किशन गज मे ?'

निरजन पास ही खडा था। वह बोला अजी, इसी पागल ने तो साहाजी के लडके का सम्बध कराया है।"

सदानद ने मुह से च्चू-च्चू की आवाज की।

अरे, यह तो एकदम पागल है ! पागल की बात पर साहजी ने लडके का सम्बन्ध कर लिया ? और कोई घटक नही मिला उन्हे ?"

बाद मे सब लोगो की ओर देखकर कहने लगा विवाह देख सुनकर किया है न ? राम-राम आखिर लडके की जिंदगी का सवाल है ! ऐरे-गैरे की बात पर कही विवाह-शादी किए जाते हैं ! समधी कैसे है ?'

समधी कैसे होंगे ? लेन-देन तो अच्छा ही किया है। वैसे साहजी की तो कोई माग ही नही थी। लडकी पसद की है। इसके अलावा लडकी देखते वक्त करीब दस हजार का आर्डर आ गया था। सगुन अच्छा ही हो गया।

फिर विवाह के बाद ही पता नही कहा से आसमान फोडकर पैसा बरसने लगा। भाग्यवान बहू हुए बगैर कही ऐसा हो सकता है ?

सदानद बोला भगवान करें सब अच्छा ही रहे। लेकिन कहते हैं न कि बहुत ज्यादा अच्छे की गरदन म कभी कभी फदा भी पड जाता है।'

लेकिन इन बातो पर किसी ने कान नही दिए। साहजी ने खूब अच्छा खिलाया है। बहू भी अच्छी है और क्या चाहिए ? इसके बाद जो होना है वही होगा। होनी को कौन टाल पाया है ? तुमने अच्छा खासा घरबार देखकर लडके का विवाह किया, बाद म देखा कि लडकी का पूरा कुनबा ही तुम्हारे सिर पर आ सवार हो गया है तब ?

'लडकी के मा-बाप हैं ?

"मा-बाप नही हैं एक बुआ है लेकिन उसकी हालत भी 'आज है तो कल नही' वाली है।

सदानद जैसे अपने आपसे ही कहने लगा ' कौन जाने साहजी ने घर-बार ठीक से देखा है या नही, मुझे तो डर लग रहा है।'

अरे लडके का विवाह किया है तो क्या साहजी ने घरबार नही देखा होगा ?'

क्या मालूम भाई मुझे तो बडा डर लग रहा है। कही कुछ ऊच-नीच न हो।'

कहकर सदानद वहा नही रुका। अपने काम पर चला गया। दालगोविंद बैठा बैठा उसी तरह बडबडा रहा था, सदानद को देखा है

सदानद को ?'

दोलगोविंद जब तक किशनगज मे था, उसकी जबान पर ये ही शब्द रहे। बात जाने कैसे निताई बसाक के कानो मे पहुची। दुनिया मे यहा की बात वहा पहुचानेवाले लोगो का अभाव तो कभी रहता नही है। सदानद की बातो म नमक मिर्च लगाकर उनका रूप ही कुछ और हो गया।

निताई बसाक ने एक रोज सदानद को बुला भेजा।

सदानद के आते ही निताई बसाक ने पूछा, 'मैं कहता हू तुम्हारा क्या नौकरी वौकरी करने का इरादा नही है सदानद ?

सदानद बोला "जी नौकरी नही करूगा तो खाऊगा क्या ?'

लेकिन यह बात शायद हर समय याद नही रहती ?"

जी याद बिना रहे नौकरी कैसे कर रहा हू ?"

निताई बसाक ने सदानद को ऊपर से नीचे तक देखा। फिर कहा, "खूब बेअदबी सीख गए हो आजकल !"

इसम बेअदबी कहा देख ली आपने ?

निताई बसाक ने डपटकर कहा, ' चुप रहो, खाल उधेड़ ली जाएगी, समझे ?'

सदानद कहना तो बहुत कुछ चाहता था लेकिन उसन अपने-आपको सम्हाल लिया।

निताई बसाक कहने लगा, ' नई बहू के नाम क्या-क्या बकते फिर रहे हो। तुम सोचते हो, मेरे कान म कोई बात नही आती ?'

सदानद ने सिर झुकाकर कहा, ' जी मैंने तो कुछ भी नही कहा।'

' कुछ कहा नही तो मेरे कान तक बात पहुची कैम ? नई बहू के नाम पर तुम जो सब कहते फिर रहे हो वह सब अगर दुलाल के कान मे जाए तो तुम्हारी नौकरी कहा रहेगी ? नौकरी रहेगी, बोलो ?'

जवाब म उस रोज सदानद ने कुछ भी नही कहा। निताई बसाक ने ही कहा 'जाओ जाकर दुलाल साहा के पाव छूकर माफी मांगो जाओ ! '

दुलाल साहा के पाव छूकर माथे से लगाते ही दुलाल साहा ने कहा था, "अरे सो ही तो कह मैं, तुम्हारे मन मे पश्चात्ताप हुआ हे, मैं इतन स ही खुश हू। मैं तो सभीसे कहता हू कि खुद मैं अगर अपना बुरा न चाहू तो सदानद की क्या मजाल कि वह मेरा बुरा चाहे।"

इसके वाद सदानद के सिर पर हाथ रखकर कहा ग, 'इतने लोगा क रहते तुम मेरा वुरा क्यो चाहोगे सदानद ? मैंने क्या तुम्हारा कोई नुक्सान किया हे जो तुम मेरा बुरा सोचोगे ?"

और फिर कात की ओर देखकर कहा, ' देख कात, देख, सदानद की आखा की आर ताककर देख दोनो आखें कैसी छलछला उठी हैं, देख '

सदानद की आखें पहले जरा भी नही छलछला रही थी। लेकिन दुलाल साहा की वातो स सचमुच छलछला उठी। धोती के छोर से उसन आखें पोछ ली।

दुलाल साहा यह देखता रहा। फिर बोला ' ऐ वावा, रो ले। थोडी देर रो ले एक वार खुलकर रो लेगा तो उसमे भी तेरा ही मगल है। रोकर भी तरा भला ही होगा। रो, अहा, तुझे रोते देखकर भी अच्छा लग रहा है। तेरे मन की सव ग्लानि धुल गई, अरे तू बच गया।"

इसके वाद सदानद क्या कहने आया था और क्या सब हो गया दुलाल साहा के आगे आकर वह जैसे सब कुछ भूल गया। दुलाल साहा को दो-चार खरी-खोटी सुनाना चाहता था लेकिन वैसा कुछ भी न हो पाया। सदानद यह देखकर हैरान था कि नई बहू आन के वाद दुलाल साहा का कोई नुक्सान नही हुआ, बल्कि दिनो दिन वढोतरी ही हो रही है। कारबार और भी बढने लगा। जूट की लदान वढने लगी। दुलाल-साहा की तिजोरी मे हर ओर स पैसा आता गया। उसके लडके विजय ने डॉक्टरी का इम्तिहान पास कर लिया। दुलाल साहा और निताई बसाक दिना दिन फलते फूलते रहे।

दुलाल साहा न निताई बसाक स चुपचाप कहा, ' सदानद की तनख्वाह बढा दो।"

निताई बसाक ने कहा, क्यो ? इस पाजी की तनख्वाह बढान का कह रहे हो तुम ? '

सदानद को ?"

दीनगोविंद जब तक किशनगज मे था, उनकी जबान पर ये ही शब्द रहे। बात जाने कैसे निताई बसाक के कानो म पहुची। दुनिया में यहा की बात वहा पहुचानेवाले लोगो का अभाव तो कभी रहता नही है। सदानद की बातो मे नमक मिर्च लगाकर उनका रूप ही कुछ और हो गया।

निताई बसाक ने एक रोज सदानद को बुला भेजा।

सदानद के आते ही निताई बसाक ने पूछा, मैं कहता हू तुम्हारा क्या नौकरी-चोकरी करने का इरादा नही है सदानद ?

सदानद बोला 'जी नौकरी नही करू गा तो खाऊगा क्या ?"

' लेकिन यह बात शायद हर समय याद नही रहती ?

जी याद बिना रहे नौकरी कैसे कर रहा हू ?"

निताई बसाक ने सदानद को ऊपर से नीचे तक देखा। फिर कहा, खूब बेअदबी सीख गए हो आजकल !

इसमे बेअदबी कहा देख ली आपने ? '

निताई बसाक ने डपटकर कहा, ' चुप रहो, खाल उधेड ली जाएगी समझे ?'

सदानद कहना तो बहुत कुछ चाहता था लेकिन उसने अपने-आपको सम्हाल लिया।

निताई बसाक कहने लगा ' नई बहू के नाम क्या-क्या बकते फिर रहे हो। तुम सोचते हो मेरे कान म कोई बात नही आती ?'

सदानद ने सिर झुकाकर कहा, ' जी मैंने तो कुछ भी नही कहा।"

' कुछ कहा नही तो मेरे कान तक बात पहुची कैसे ? नई बहू के नाम पर तुम जो सब कहते फिर रहे हो वह सब अगर दुलाल के कान मे जाए तो तुम्हारी नौकरी कहा रहेगी ? नौकरी रहेगी बोलो ?"

जवाब मे उस रोज सदानद ने कुछ भी नही कहा। निताई बसाक ने ही कहा जाओ जाकर दुलाल साहा के पाव छूकर माफी मागो जाओ ! '

दुलाल साहा के पाव छूकर माथे से लगाते ही दुलाल साहा ने कहा था, "अरे सो ही तो कहूं मैं तुम्हारे मन म पश्चात्ताप हुआ है, मैं इतन स ही खुश हू। मैं तो सभीसे कहता हू कि खुद मैं अगर अपना बुरा न चाहू तो सदानद की क्या मजाल कि वह मेरा बुरा चाहे!"

इसके बाद सदानद के सिर पर हाथ रखकर कहा था, "इतन लागा के रहते तुम मेरा बुरा क्यो चाहोगे सदानद? मैंने क्या तुम्हारा कोई नुकसान किया है जो तुम मेरा बुरा सोचोगे?'

और फिर बात की ओर देखकर कहा देख कात देख, सदानद की आखो की ओर ताककर दख दानो आखें कैसी छलछला उठी हैं देख '

सदानद की आखें पहले जरा भी नही छलछला रही थी। लेकिन दुलाल साहा की बाता स सचमुच छलछला उठी। धोती के छोर से उसने आखें पाछ ली।

दुलाल साहा यह देखता रहा। फिर बाला, "ऐ बाबा, रो ले। थोडी देर रो ल, एक बार खुलकर रो लेगा तो उसम भी तेरा ही मगल है। रोकर भी तेरा भला ही होगा। रो, अहा तुझे रोते देखकर भी अच्छा लग रहा है। तेरे मन की सब ग्लानि धुल गई, अरे, तू बच गया!"

इसके बाद सदानद क्या कहने आया था और क्या सब हो गया दुलाल साहा के आगे आकर वह जैसे सब कुछ भूल गया। दुलाल साहा को दो चार खरी-खोटी सुनाना चाहता था लेकिन वैसा कुछ भी न हो पाया। सदानद यह दखकर हैरान था कि नई बहू आने के बाद दुलाल साहा का कोई नुकसान नही हुआ, बल्कि दिना दिन बढातरी ही हो रही है। कारबार और भी बढने लगा। जूट की लदान बढने लगी। दुलाल साहा की तिजोरी म हर ओर स पैसा आता गया। उसके लडके विजय ने डॉक्टरी का इम्तिहान पास कर लिया। दुलाल साहा और निताई बसाक दिना दिन फलते फूलते रहे।

दुलाल साहा ने निताई बसाक स चुपचाप कहा, 'सदानद की तनख्वाह बढा दो।'

निताई बसाक ने कहा, क्यो? इस पाजी की तनख्वाह बढाने को कह रहे हो तुम?"

"अरे वहा भी दो न।"

"तुम क्या डर गए हो उससे ?'

"डर की बात नही है, लेकिन किसीको बेकार परेशान नहीं करना चाहिए। खीझने पर घर की बिल्ली भी जगली हो जाती है।"

हा तो इस तरह सदानद की तनख्वाह सत्रह स बढकर तीस हुई, और फिर तीस से बढकर चालीस।

लेकिन सदानद इतने पर भी खुश नही था। एक तरह स सदानद किसी भी हालत मे खुश होनेवाला आदमी ही नही है। और खुश हो भी तो कैसे ! दुलाल की इस तरह दिना दिन उन्नति देखकर भला कोई खुश रह भी कैसे सकता है ? घर मे बहू आई तो वह भी जसे लक्ष्मी बनकर आई। उसके आने के बाद से तो जैसे सोना ही बरसने लगा। लडका विलायत गया, वहा से भी खबर अच्छी ही आती है।

ऐसा कस हो गया ? ऐसा कुछ होने की तो बात नही थी।

सदानद अब दुलाल साहा का मैनेजर हो गया था। पेंपुलबेड के पास वाली आहर पर मजदूरो के काम की निगरानी का काम उस मिला। रातो रात जमीन को मड से घिरवाना था। लेकिन उसके मन मे जरा भी शाति नही थी। मन मे एक कचोट जैसे उस रह-रहकर सता रही थी। यह दीनगोविंद का बच्चा क्या वाकई उसे गच्चा दे गया ?

दीनगोविंद प्रामाणिक जैसे उसके जीवन म धूमकेतु की तरह उदय हुआ था।

नही तो एक भला चगा आदमी इस तरह अचानक पागल कैस हो गया ?

और वह भी पागल-सा पागल ! बाद म तो उसकी ओर देखा भी नही जाता था। वही एक रट— सदानद है ? सदानद को देखा है ?

बाद मे शायद दुलाल साहा ने काफी खोज-बीन करने के बाद उसके गाव बडे चातरा खबर कराई थी। वहा से दूर के रिश्ते का साला या और कोई आया भी था।

दुलाल साहा ने पूछा इनको जानते हो ? अच्छी तरह से देख लो, पहचान पाते हो या नही ?

उस आदमी ने अच्छी तरह देखा, फिर कहा, ' जी हा, ये मेरे बहनाई ही है—दोलगोविंद प्रामाणिक—घटकी का काम करते थे।"

"इनके वश मे कोई पागल हुआ है ? '

"जी नही।

"तो फिर ये पागल कैसे हो गए ?'

यह कैसे कहा जा सकता है !

खैर, दुलाल साहा ने ही खर्चा दिया। दान दस्तूर का जो कुछ था साले के हाथ मे थमा दिया। ऊपर से खुश होकर भी कुछ दिया। फिर कहा 'तुम्हारे बहनोई ने ही मेरे लडके का सम्बन्ध कराया था नई बहू पूरी तरह हम लोगो के मन माफिक आई है। जो कुछ हो सका तुम्हे दे दिया है, इलाज कराकर देखो अगर कुछ फायदा हो।

अपने साले के साथ दोलगोविंद जो गया तो उसके बाद से उनकी कोई खबर नही मिली। किसीने खबर लेने या रखने की कोई जरूरत भी महसूस नही की।

लेकिन सदानद उसे नही भूला पाया।

बाद मे सदानद के अचानक अस्पताल से गायब होने के बाद तो जैसे यह घटना हमेशा के लिए स्मृति के गर्त मे दब गई। कम से कम निताई बसाक की यही धारणा थी। दुलाल साहा ने भी जैसे चैन की सास ली।

इसके अलावा इन दिनो उधर मालिक की खबर इतने जोर से फैल रही थी कि सदानद के बारे मे कुछ भी सोचने की फुरसत किसीको नही थी। पूरा किशनगज जैसे हरतन को लेकर मशगूल था। बी० डी० ओ० सुकात राय से लेकर हलधर तक सभीकी जबान पर एक ही बात थी, देखा साधु महाराज की बात एकदम ठीक निकली। खोई हुई पोती इतने दिन बाद किशनगज लौट रही है।

उस रोज पूरा गाव किशनगज स्टेशन जा पहुचा था। सुबह दस बजे ट्रेन आनेवाली थी, लेकिन छ बजे से ही प्लेटफार्म पर भीड समा नही पा रही थी। लोग जैसे उमडे पड रहे थे। निवारण सरकार आ रहा है, मालिक आ रहे है और साथ आ रही है हरतन।

छ वजे साढे छ वजे, दस भी वज गए।

ट्रेन शायद लेट थी। आखिर साढे दस वजे ट्रेन आ गई। सब लोग एकसाथ पुकारने लगे—आ गई आ गई! जंगल से निवारण का चेहरा दिखलाई दिया। पूरी भीड उधर ही उमड पडी। ट्रेन रुकने से पहले ही सब चिल्लाने लगे—हटो हटो रास्ता छोडो—देखने दो

स्टेशनमास्टर बाबू जैसे अपना कौतूहल नही दबा पा रहे थे। लाल घडी ऊची किए एक बार मुडकर देखा। ड्राइवर कही ट्रेन छोड न दे। होशियार पहले ही खबर करा दी गई थी अस्पताल से स्ट्रेचर का इन्तजाम भी हो गया था। बीमार पोती को स्ट्रेचर पर ही घर ले जाने की व्यवस्था थी। हल्ला गुल्ला नही होना चाहिए। बीमारी से उसका दिल कमजोर हो गया है। किसी तरह ठीक-ठीक घर पहुचना है। तब सब लोग जी भरकर देखें। अभी रास्ता छोडो रास्ता छोडो, ट्रेन छूटने वाली है। सावधान!

लेकिन कौन किसीकी सुनता है। ट्रेन रुकने के साथ ही-साथ सब टूट पडे—हरतन आई है हरतन आई है! हरतन को देखने के लिए गाव का कोई आदमी बाकी न रहा। सब अपना काम काज छोडकर दौडे चले आए हैं।

किशनगज एक ऐसी जगह है जहा साधारणत कभी कोई रोमाचकारी घटना नही घटती। इच्छामती नदी की तरह यहा की जीवनधारा भी एक ही तरह बहती रहती है। यहा जीवन जितना मथर है मृत्यु भी उतनी ही मृदुमय है। अचानक किसी रोज अगर इच्छामती के जल मे मगर आ पहुचता है तो यहा के लोग उसीकी चर्चा करते बडे मजे मे एक महीना बिता डालते हैं। किसी साल अगर ज्यादा बारिश होकर रास्ते और खेतो मे पानी भर जाता है तो लोगो को पूरी बरसात के लिए खुराक मिल जाती है।

लेकिन रोज रोज तो ऐसी घटनाए नही हुआ करती।

नदी मे मगर पचास साल पहले आया था। उस बार मगर नद हाजरा की बहू को खीच ले गया था। नद हाजरा की बहू नही बची

लेकिन पीतल की कलसी बच गई। नद हाजरा की बहू कमर म कलसी थामे नदी मे नहाने उतरी थी। नहाने क बाद पीतल की कलसी म पानी भरकर कलसी को कमर मे थामे किनारे आ रही थी कि मगर न पीछे स सीधे कलसी पर दात मारे। कलसी के साथ साथ बहू भी गिर गई। मगर बहू को तो लेकर चला गया लेकिन दात के निशान लगी कलसी पडी छोड गया। नद हाजरा के लडका न उस मगर के दातो के निशान पडी कलसी को बडे यत्न क साथ रख छोडा है। बडे गव स लोगो को दिखलाते है —यह देखो मगर न यहा दात मारे थे।

इसके बाद जिस बार प्रचड वर्षा हुई उस घटना को तीन भी साला गुजर गए। पेंदुलवेड के पास वाली आहर म कितने हाथ पानी भरा था, रेल का पुल कितना डूबा था मछुआटोली क मछुआ न किस तरह घर-बार छोड इच्छामती के बाध पर जाकर रात काटी थी—किशनगज के लोग नमक-मिच लगाकर सालो तक इन किस्सो का रस लेते रहे।

लेकिन ऐसा कभी कभार ही होता है।

यही जैसे दुलाल साहा के घर साधु महाराज आए। आकर उन्होंने लोगो के भूत भविष्य के बारे म बतलाया। यह बात भी अब किशनगज के लोगो के लिए बासी हो चुकी थी। इधर काफी दिनो स किशनगज म ऐसा कुछ नही घटा था कि उसकी चर्चा करके लोग अपना जी बहलाते जिसकी चर्चा करके उनका खाना हजम होता।

लेकिन इस बार वैसा ही हुआ। किशनगज के लोगो को काफी दिनो बाद जी बहलाने के लिए एक चटपटी खबर मिली।

लेकिन सिर्फ खबर सुनकर तसल्ली नही होती। खुद देखे बगैर थोडे ही पूरा मजा आता है! और लोग भी कोई एक दो नही। झुड के झुड गिरते-पडते झाकने की कोशिश कर रहे थे। एक बार जरा-सा देखकर जी नही भरता। बाप देखकर जाता है तो लडका आता है। लडके के बाद बहन आती है। इस गाव उस गाव से उनके जान-पहचान वाले और नाते-रिश्तेदार आते हैं। गाठ का पैसा खच कर बैलगाडी स आ पहुचे है। भट्टाचाय भवन के सामने जैसे दशनार्थियो का मेला बैठ गया था।

कीर्तिश्वर भट्टाचाय के घर क सामने साला पहले इस तरह भीड

हुआ करती थी। आज इतने दिन बाद उनके घर के आगे लोग जमा हुए थे।

दूसरी मंजिल के बड़े कमरे में हरतन के रहने का इंतजाम हुआ था। पोती के लिए मालिक ने खुद अपना कमरा छोड़ दिया है। नया बिस्तर। चादर गिलाफ सब नये। पलग के पास दवा और फल वगैरह रखने के लिए टेबल रखवा दी है।

लोग सीढ़ी से ऊपर जाकर कमरे के बाहर ही खड़े खड़े निहारते और कहते— अहा बेचारी

लोगों के मुंह से ज्यादातर यही एक शब्द निकलता। इतने दिनों से जिस हिसाब से बाहर ही रख छोड़ा था उसके पुनर्मिलन पर कोई आनंद उत्सव जमे जब नही रहा था। इतने दिन बाद उसे वापस पाने पर, पा जाने के आनंद से खोजने की वेदना ही जैसे अधिक मुखर हो रही थी। मालिक भी और सभीकी वेदना के साथ अपनी वेदना मिला-जुलाकर पोती को वापस पाने का आनंद दुगना दुगना महसूस कर रहे थे।

कोई-कोई कहता आहा बिटिया को जरा ठीक से देख लूं

निवारण सरकार भी आज किसीको बाधा नही दे रहा था। अहा देखें न ! जी भरकर देख लें ! जी भरकर सब हरतन को आशीर्वाद करें। मालिक के आनंद को सभी थोड़ा थोड़ा करके बांट लें। उसीमें भट्टाचार्य-वंश का मंगल होगा। किशनगंज में फिर से उनका रौब और दबदबा बढ़ेगा। इन पंद्रह सालों में उन्हें काफी लांछित होना पड़ा है। दुलाल साहा और निताई बसाक ने बड़ी बेइज्जती की है उनकी। मालिक को इस बीच बड़े बड़े आघात सहन पड़े हैं। उन्हें दिखा दिखाकर दोनों नई मोटर में घूमते फिरे हैं। वजह बेवजह जब तब गांव भर के नागा को खालिस घी की पूड़ियां खिलाई हैं जिससे कि घी की गंध मालिक की नाक में जाकर लगे और वे चिढ़ें। लड़के के विलायत जाते वक्त कलकत्ता जाकर अखबारवालो को पैसा देकर खबर छपवा ली। इसका कोई प्रतिकार नही था। प्रतिकार करने की क्षमता ही नही थी मालिक में। बेचारे कानों से सब कुछ सुनते रहे और आंखें फाड़े अंदर ही-अंदर सब सहते रहे।

लेकिन अब ? इस बार ?

मालिक ने जिन्दगी में कभी अपने हाथ से पंखे से हवा नहीं की। हमेशा दूसरों के हाथ की हवा खाते रहे। लेकिन आज जैसे उन्हें कोई तकलीफ नहीं हो रहा है। कलकत्ते से लौटने के बाद इतने दिन निकल गए, उन्होंने जरा भी विश्राम नहीं किया है वक्त ही कहां मिला? तब भी चेहरे पर थकान का जैसे कोई निशान तक नहीं है। जिस रोज से कलकत्ते में हरतन मिली है थकान किसे कहते हैं उन्हें नहीं मालूम। आराम किस चिड़िया का नाम है यह भी वे भूल चुके हैं।

निवारण कहता मालिक आप हटें मैं हवा करता हूं बिटिया को। तुम हटो।

कहकर निवारण सरकार को हटा दिया। बोले, तुम हटो यहां से पंखा क्या हर कोई झल सकता है? देखते नहीं अभी भी बुखार है लड़की को।'

हरतन कहती आप क्यों तकलीफ कर रहे हैं दादा।'

पगली! मालिक हंस पड़े अपनी बिटिया को हवा करने में कहीं तकलीफ हो सकती है दादा को? नहीं होती जब तेरे पोती होगी तब पता चलेगा' कहकर जैसे हवा कर रहे थे फिर से वैसे ही हवा करने लगे।

इसके बाद निवारण से बोले तुम यहां बुद्धू की तरह खड़े-खड़े क्या कर रहे हो, तुम जाओ न तुम्हें काम नहीं है? तुमसे इलेक्ट्रिक का इंतजाम करने को कहा था उसका क्या हुआ?"

सिर्फ इलेक्ट्रिक ही नहीं और भी बहुत कुछ करना है। हरतन के आने के बाद तो इस टूटे फूटे मकान में रहा नहीं जा सकता। सारे घर में रंग रोगन करवाना है। जहां-तहां प्लास्टर खिसक गया है। घर भी तो कोई छोटा नहीं है। आज न हुआ घर में लोग-बाग नहीं हैं लेकिन एक दिन लोग-बाग, नौकर चाकर हाथी घोड़ा सभी कुछ था। उन दिनों जैसी अवस्था थी, उसी तरह व्यवस्था भी थी। बड़े बड़े खम्भे दीवानखाना सब कुछ वैसा ही है सिर्फ मरम्मत के अभाव में टूट फूट गया है। ठीक है, फिर सब कुछ होगा। हर दालान में फिर से झाड़ झूलेंगे। लेकिन इस बार तेल-बत्ती वाले झाड़ नहीं, बिजली के झाड़ जगमगाएंगे। बिजली के पंखे लगेंगे।

दुलाल साहा के घर जैसे सब कुछ है, यहा भी वैसा ही होगा। स्विच दवाते ही बत्ती जलेगी स्विच दवाते ही पखा भनभनाने लगेगा।

मालिक ने यह प्लान कलकत्ते मे ही बना लिया था। आते ही निवारण को बिजली मिस्तरी के पास भेजा। किशनगज के रेल बाजार म एक नई बिजली की दुकान खुली थी। निवारण उन्ही लोगो का बुला लाया।

उन लोगो न घर-भर मे घूम-घूमकर माप-जाख की। मालिक ने बतला दिया कि कहा झाड लगना है कहा पखा। सब कुछ अच्छी तरह समझा दिया।

फिर बोले कर पाओगे तुम लोग ? नही तो साफ-साफ अभी कह दो। कलकत्ते स ही मिस्तरी बुलवा लू ?"

"जी कर क्या नही पाएगे मालिक ! खर्चा करन पर हम भी कलकत्ते के मिस्तरियो जसा ही काम कर दें। इसके अलावा यहा साहाजी के घर भी तो हमी लोगो ने काम किया है साहाजी और निताई बसाकजी दोना ही हमारे काम से बडे खुश हैं।'

दुलाल साहा का नाम सुनते ही मालिक चिढ गए।

बोले 'तब तो हो चुका, तुम लोगो के किए यह काम नही होने का।'

' जी, ऐसा क्या कह रहे हैं ? ठीक है पसद न आए तो पैसा न दीजिएगा। बात पक्की रही।"

मालिक बोले, 'नही-नही, पैसे की बात नही है। अरे दुलाल साहा के घर का काम और मेरे घर का काम एक बात हुई ? अभी उसी दिन तक तुम्हारा दुलाल साहा कधे पर गठरी लादे फेरा लगाता फिरता था, हरिसभा करने के लिए मैंने ही उसे जमीन दी जिसपर उसने मकान बनवाया है। उस तरह का काम यहा नही चलेगा। यह खानदानी घर है। यह घर खुद केदार भट्टाचार्य ने बनाया था, जो हाथी पर चढकर पूजा करन के लिए राजमहल जाया करते थे —इस घर के साथ तुम दुलाल साहा के घर की बराबरी कर रहे हो ?"

' जी, बराबरी तो नही की !"

"बराबरी करके कहते हो कि बराबरी नही की ? बडे बेअदब

आदमी लगत हो। रहन वाले कहा के हो ? जात क्या है तुम्हारी ?"

कहकर बेचारे को दसिया बात सुना डाली। खासे भले घर का लडका था। नई दुकान खाली थी। बडा काम मिल रहा है, सोचकर खुश था कि जरा-सी भूल के मारे सब चौपट हो गया।

उसके सामने ही निवारण की ओर घूमकर बोले कहा से ऐसे फालतू आदमी पकड लाए हो तुम ? लोहा पीटने वाला कही सोने का काम कर सकता ह ? कलकत्ते नही जाया गया तुमसे ? कलकत्ते स मेकर मिस्तरी नही ला सकते थे ? मेकर-मिस्तरी के वगैर कही मेरा काम हो सकता है ? यह क्या दुलाल साहा का घर ह कि दो एक चमकीली फिटिंग कर दी और गवार लोग वाह वाह करने लगे ? जानत हो यह खानदानी घर ह ?

इसके बाद किसी भी भले आदमी के लिए खडे रहना मुश्किल था। वहा स फौरन खिसककर बेचार न जो कुछ आबरू बाकी थी उस बचाया।

निवारण सरकार न कहा,' कलकत्ते के मिस्तरी तो बहुत मागेगे ?

"तो क्या हुआ ! मागेंग तो दिया जाएगा ! पस के लिए कभी कीर्तिश्वर भट्टाचाय न मुट्ठी ब द की है ? कितना मागेंगे सुनू जरा ? हजार, दो हजार तीन हजार, पाच हजार या इसस भी ज्यादा ?'

' ठीक-ठीक तो नही कह सकता अभी ?

'मैं कहता हू तुम क्या पैसे के लिए काम खराब करोगे ? मरे यहा यह नही होगा समझे निवारण ! जाओ और कलकत्ते स अच्छे स अच्छा मिस्तरी लेकर आओ।'

जी, बहुत अच्छा—लेकिन पैसा ? '

मालिक ने डपटकर कहा, पैसा क्या ?"

' कलकत्ते जात वक्त दुलाल साहा ने जो रुपये दिए थे उनम थोडे स ही बचे हैं "

मालिक न कहा, "जा हैं, अभी ल जाओ, पसो के लिए काम खराब नही होना चाहिए। मिस्तरी को ले आओ, आकर वह काम समझ ले। मन मुताबिक काम करेगा तो उसे पस भी दिए जाएगे। तुम समझत हो मेरे

पास कुछ भी नही है एक दुलाल माहा के पास ही पैसा है ? कि
चाहिए तुम्ह ?

शायद और कुछ देर मालिक की डाट-डपट सुननी पडती, उससे पहले ही ऊपर स उनका बुलावा आ गया। हरतन दादा रही हैं बहू स सुनते ही मालिक रुक गए।

फिर और नही रुके। आजकल हरतन हरतन करके जैसे प गए हैं। हरता का नाम सुनत ही दिमाग ठीक नही रहता, सो चले गए।

तो यही हुआ। राजमिस्तरी पहल ही लगा था। बीस पच्चीस रुपयो का काम था। दिन-रात काम करता था।

मालिक ने कह दिया था "पन्द्रह दिन के अदर काम पूरा चाहिए समझे ?"

जी पूरा नही तो अन्दर का काम पन्द्रह दिन म हो जाएगा

और बाहर का ?"

बाहर के लिए यही कोई एक महोना पौन समझ लीजिए।'

एक महीना लगाने स तो नहीं चलेगा भाई हरतन बिटिया दिन बाद आई है, उसपर बीमार भी है। उसकी बीमारी अब ठीक का है घर की मरम्मत इस बीच पूरी नही हुई तो बिटिया रहेगी क इस बीमारी के बाद इस धूल धक्कड म वह कैसे रह सकती है भ तुम्ही कहो, रह सकती है ?"

तो वही तय हुआ। देरी करने स मालिक का काम नही चले मालिक का बस हो चल जाए हरतन का काम किसी तरह नही चले हरतन तो करीब करीब ठीक हो ही चली है। दस एक दिन म बिट ठीक हो जाएगी। वैस बुखार अभी है। लेकिन बुखार तो कुछ रहेगा ही। इतने दिन क्या कोई दवा दारू पडी है पेट मे ? चडी क्या फल दूध पिला पाया है ? वह बेचारा इतनी महगी दवाए खिल भी कहा स ? इसके अलावा उसे पडी भी क्या है इतना पैसा खच क की ? वह यात्रा थियेटर का आदमी ठहरा। उसका यह पेशा है। देखे

बेचारी लड़की का बिना खिलाए-पिलाए कहा कहा घुमाया है। कहा जोरहाट, डिब्रूगढ़, कूचबिहार बांकुड़ा, मेदनीपुर तो फिर बर्द्धमान। एक जगह टिककर बैठने को नही मिला। कभी दो दिन आराम करने को नही मिला। समय से कभी खाने तक को नही मिला बिटिया को। रात-रात भर जागकर गाया है और शरीर के बारह बजाए है।

'फिर भी इसे भगवान की दया ही कहनी होगी बिटिया, नही तो पूरे पन्द्रह साल बाद तुम्हे कैसे खोज पाया वह साधु ही कहा से आ गया तुम्हारी जन्म पत्री देखने के लिए? भगवान बड़े दयालु हैं '

बड़ी बहूजी ने उसी रोज पहले पहल देखा था, जिस रोज हरतन किशनगंज आई थी। स्टेशन पर गाड़ी तैयार थी। हजारो की भीड़ थी।

देखो अच्छी तरह से देख लो पहचान पड रही है?"

घर आने के बाद तो मालिक किसीको अन्दर आने ही नही दे रहे थे। बीमार लड़की, ऊपर से इतनी भीड़। गाड़ी से उतारने के बाद गोद मे उठाकर ऊपर दो मंजिले पर लाना पड़ा। हरतन बुरी तरह कमजोर हो गई थी। निवारण सरकार ने एक ओर से पकड़ा था और दूसरी ओर से बकू ने पकड़ा।

कलकत्ते से बकू भी साथ आया था। अच्छा ही हुआ, साथ मे एक जवान लड़का रहने से काफी सुविधा रहती है। देखने सुनने के लिए भी तो आदमी की जरूरत रहती है।

'यह कौन है?"

बड़ी बहूजी उसका चेहरा देखकर पहचान न पाई।

मालिक ने कहा, "इससे संकोच करने की जरूरत नही है [illegible] इन लोगो की नाटक पार्टी मे ही एक्टिंग करता था।"

बकू ने भी मौका देख फटाक से बड़ी बहूजी के पाव [illegible] छुआ लिए।

"जी, हरतन के बीमार होने के बाद से [illegible] का पाट मैं ही करता हू मुझे आप [illegible]।"

लेकिन तभी मालिक बोल उठे '[illegible], [illegible], ये सब बाते बाद मे करना, पहले चलकर पानी का [illegible]। [illegible] की [illegible] है

गई है, अभी सब लोग देखने आएंगे।"

हरतन को बिस्तर पर लिटा दिया गया था। शरीर में दम ही नहीं रहा है। लड़की ने अच्छी दवा जैसी कोई चीज पेट में नहीं पड़ी। चितपुर की एक अंधेरी कोठरी से उठा लाए हैं। बड़ी अधिकारी ने और ता और, कभी एक ढंग की साड़ी तक नहीं दी पहनने के लिए। सिर में लगाने के लिए तेल या बदन के लिए एक साबुन तक नहीं दिया। हरतन के घने बालों में जटा पड़ गई थी। जटाओं के बीच से ही एक मासूम सा गोरा चेहरा और उसमें गहरी काली-काली दो आंखें।

"तुम कहा करती थीं, लड़की के कैसे लम्बे लम्बे बाल हैं, उन बालों का क्या हाल हो गया है, देख लो। जरा-सा तेल भी अगर पड़ा होता कभी तो बात थी।'

"देखो, क्या हाल कर दिया है लड़की का एक-एक हाड़ निकल आया है दिन रात मेहनत का कराकर शरीर के बारह बजा दिए हैं।

बकू पास ही खड़ा था।

उसने कहा, "अजी बड़ी बाबू तो खाना तक नहीं देते थे ठीक से। खाली खेसारी की दाल और भात खाकर दिन काटे हैं हम लोगों ने, कभी कभी आलू-भात मिल जाता था बस "

"खेसारी दाल! खेसारी की दाल खिलाई है मेरी बिटिया को? यह बात पहले क्यों नहीं बतलाई?'

"खेसारी दाल ही होती तो भी कोई बात थी। अरे भात का माड़ मिलाकर दाल बढ़ाई जाती थी। बड़ी बाबू क्या कम कंजूस हैं? इसपर हम लोग अगर कुछ कहने जाएं तो कहते, 'बड़े जमींदार के नाती हो न कि खेसारी की दाल गले नहीं उतरती?"

मालिक का पारा चढ़ गया। फिर बोले 'तो यह बात है! खेसारी की दाल खिला खिलाकर लड़की का यह हाल कर दिया है! अरे, मूंग की दाल ऐसी क्या महंगी है मूंग की दाल नहीं खिला सकता था?"

"मूंग की दाल खिलाएंगे बड़ी बाबू! मूंग की दाल का भाव मालूम है आपको?'

मालिक कहते, "अरे, भाव पहले है या शरीर पहले है ? अब दवा के लिए इतना पैसा बहाना पड रहा है या नही ? अब खाओ खेसारी दाल, कितनी खाओगे ! मैं भी तुम लोगो को खेसारी दाल ही खिलाऊगा, खाओगे ?"

बकू ने कहा, "न बाबा, खेसारी दाल को हाथ नही लगाऊगा इस जिन्दगी मे। बहुत सीख हो गई है।"

मालिक बोले, "मालूम है, छुटपन मे हरतन ने रोज एक सेर दूध पिया है ! घर मे कितनी गाये थी।"

"दूध की बात सुनकर याद आया, करीब उन्नीस-बीस साल पहले जिस बार क्वार के महीने मे बडे जोर का अधड आया था, जोरहाट के जमीदार के घर दूध पिया था, फिर और दूध की शक्ल नही देखी।"

मालिक बोले, "जो चीज शरीर के लिए अच्छी है, तुम लोग वह तो खाओगे नही, कहा कहा से सब खेसारी दाल, तेल के पकौडे वगैरह ऊट-पटाग खाते फिरोगे।"

"जी हा, हम लोगो ने पकौडे बहुत खाए हैं। हरतन को भी आलू चॉप और पकौडे बहुत भाते थे।"

"सो ही तो कहू ! तो यही सब खाकर शरीर का यह हाल किया है ?"

इसके बाद निवारण की ओर देखकर बोले, ' सुनो निवारण, आज से इस घर की चौहद्दी के अदर पकौडे-वकौडे नही घुसेंगे, समझे ? इस घर मे पकौडे देखे तो वह दिन तुम्हारा ही होगा या मेरा ही होगा।"

निवारण ने सिर खुजलाते हुए कहा, जी, मेरा क्या माथा खराब हुआ है जो रोगी को लाकर पकौडे खिलाऊगा ?"

मालिक ने कहा, "अरे मैं अभी की बात थोडे ही कर रहा हू। रोग तो दो चार दिन मे ठीक हो ही जाएगा। लेकिन ठीक होने के बाद हरतन चुपके चुपके तुमसे पकौडे-चॉप मगाकर खाएगी। वह सब नही चलने का, समझे ?'

"जी नही ऐसा कैसे कर सकता हू मैं ?"

' नही, मैं कह देता हू, वह सब नही चलने का। यह मेरा हुकुम है। मैं जो-जो लाने को कहूगा, सिर्फ वही लाओगे तुम।"

"जी, वही लाऊगा।"

"जी वही लाऊंगा—कहने से नही चलेगा, पहले सुनो, क्या क्या लाना है। यही जैसे अगूर, अनार, पिस्ते बादाम सेव, केले अच्छे मोटे मतमान केले "

वकू बोला, "सेव तो बहुत महगे हैं!"

मालिक नाराज हो गए। महगे हैं इसीलिए क्या सोचते हो, हरतन सेब नही खाएगी ? सेव खाए बगैर खून कैसे बनेगा शरीर म ? तुम भी सेव खाओ, समझे? तुम्हारा शरीर भी दुबला-पतला है। तुम भी सेव, अनार और घी दूध-मक्खन खाओगे, समझे ?"

कहते कहते अचानक बडी बहूजी की ओर नजर गई। बडी बहूजी हरतन के पास बिस्तरे पर बैठी उसका सिर सहला रही थी और आखो से आसू ढुलक रहे थे।

"यह क्या ? रो क्यो रही हो बडी बहू ? रो क्या रही हो ? इतने दिन बाद पोती आई है, तुम्हे कहा तो खुश होना चाहिए और तुम रो रही हो ! इस तरह रोने से हरतन का अकल्याण नही होगा ? आसू पोछकर हसो।

बडी बहूजी और न रोक पाइ अपने को। मालिक की बात सुनकर जैसे रुलाई और भी जोर से फूट पडी। साडी के आचल से उन्होने अपना चेहरा ढक लिया। एक रोज उनकी नजरो के आगे पेट का जवान लडका चला गया। लडके की बहू भी जाती रही। उस दुख की घडी मे भी शायद इतने आसू नही निकले थे। आज खुशी के इस मौके पर उनके आसू सूद और असल, सब वसूल किए ले रहे थे।

"ठीक से देख लो, पोती को पहचान पा रही हो या नही ?'

बडी बहूजी चेहरे से आचल हटाकर हरतन के सिर पर फिर से हाथ फिराने लगी। फिर से जी भरकर देखने लगी हरतन को।

"तुम कहा करती थी, हरतन को खूब पढाओगी। अब पढाओ जितना चाहो। मन की जितनी साध है अब मिटा लो। अच्छे कपडे पहनाओ। अच्छा-अच्छा खाना खिलाओ। मन की सारी साध पूरी कर लो। पैसा जो लगेगा, मैं दूगा। पैसे की फिक्र करने की जरूरत नही है। इसके अलावा हरतन जब एक बार आ ही गई है, पैसा भी आप ही आ जाएगा।

वह चमार का बच्चा दुलाल साहा बहुत फूलने लगा था सोचता था कि हमेशा यही हाल रहेगा मेरा। अरे बच्चू तुझे मालूम नही है कि मुर्गी के पेट मे चर्बी होन पर उसका रास्ता मुल्लाजी के दरवाजे होकर ही निकलता है। तुझे भी एक दिन इस मुल्ला के दरवाजे ही आना पडेगा, कहे देता हू।'

तभी अचानक सीढी की ओर नजर जाते ही बोले 'कौन ? अरे वहा कौन लोग हैं ?'

निवारण सरकार ने जवाब दिया, 'जी मछुआटोली के लोग आए हैं हुजूर रतन बिटिया को देखना चाहते हैं।

'ठीक है देखना है देखें लेकिन एक-एक करके आने को कहो। ज्यादा भीड न हो। अच्छा बडी बहूजी अब तुम यहा से हटो। अरे, पूरा गाव तुम्हारी पोती के लौटन पर खुशी मनाने आया है और तुम हो कि बैठी बठी रो रही हो ! अरे अब तो तुम्हारे हसने के दिन आए—तुम्हे तो हसना चाहिए जी भरकर।"

हा, तो ठीक कलकत्ते से ही बिजली का मिस्तरी आया। मरम्मत का काम करीब करीब पूरा हो चुका था। भट्टाचाय भवन अब जसे पहचान मे ही नही आ रहा था। सिफ कुछ लोग जिनकी उम्र अस्सी-नब्बे साल हो आई थी ठीक स पहचान पा रहे थे। मालिक के पिताजी के जमाने मे भट्टाचाय भवन बिलकुल इसी तरह का था।

मालिक ने पूछा तुम लोग मेकर-मिस्तरी हो न ?'

'जी हा, हमारी फम चौतीस साल पुरानी है।'

निवारण सरकार साथ था।

उसने कहा लाटसाहब के यहा यही लोग काम करते हैं।

"बडी अच्छी बात है।' मालिक न कहा यह घर भी एक जमाने मे लाटसाहब के भवन स बडा था। अब सत्रह हजार रुपये खच कर फिर से इसकी मरम्मत करवाई है। मेरी इच्छा है कि लाटसाहब के यहा जैसा बिजली का काम है ठीक वैसा ही काम इस घर मे भी हो।"

'आप जैसा चाहेगे सब हो जाएगा, एक बार सारी जगह दिखला दीजिए, कहा-कहा क्या होना है ?"

सरकार बाबू आपको सब दिखला देंगे। यह निवारण सरकार ही मेरा मैनेजर है। लाटसाहब के यहा जैसे मैनेजर होते हैं, वैसा ही। यही सब समझा देंगे। खर्च वगैरह की बात भी यही ठीक करेंगे।"

जी बहुत अच्छा।"

लेकिन देखो, पैसे के लिए काम खराब नही होना चाहिए। खच जो भी हो काम पसन्द-माफिक होना चाहिए।

काम के लिए आप निश्चित रहे। हमारी फर्म का काम कभी खराब नही होता।

निवारण उन लोगो को अन्दर दिखाने ले जा रहा था, अचानक बाहर गाडी की आवाज हुई। गाडी की आवाज सुनकर ही पता चल जाता है। गाडी किशनगज मे हैं ही कितनो के पास। एक दुलाल साहा की है दूसरी सुव्रत राय के आफिस की जीप गाडी है, इसके अलावा मजिस्ट्रेट साहब की अगर वे कभी इस ओर आए तो।

कौन है? जिस-तिसको अदर मत घुमा लेना। कहना, मैं व्यस्त हू समझे?"

लेकिन नही। दुलाल साहा ही आया है। सो भी अकेले नही, साथ मे निताई बसाक है और है नई बहू।

दुलाल साहा का नाम सुनते ही मालिक जसे सोच म पड गए।

बोले यह हरामी क्या करने आया है यहा?

क्या कहू इन लोगो स?"

मानिक ने सोचकर कहा 'ठीक है अन्दर बुला लो।'

कहकर मालिक आरामकुर्सी पर पाव लम्बे करके बैठ गए। बैठकर पाव पर पाव चढा लिए। फिर प्रतीक्षा करने लगे।

सच म तीन जन ही अदर आए। सबसे पहले दुलाल साहा फिर निताई बसाक और पीछे पीछे नई बहू।

मालिक पाव पर पाव चढाए ही बठे रहे। दुलाल साहा आकर सविनय खडा हो गया। निताई बसाक पीछे था। वह भी दुलाल के पास आकर खडा हो गया। नई बहू ने जल्दी सिर पर पल्लू ठीक कर मालिक के

पाव छुए ।

"मैं आ नही पाई ताऊजी ! सुना है हरतन गाई है, कहा है ?"

मालिक बोले, "ऊपर है, जाकर देख लो ।"

दुलाल साहा सामने पडी एक कुर्सी पर बैठा। निताई बसाक भी तख्त पर बैठ गया।

दुलाल साहा ने बात शुरू की, "हरतन अब कैसी है ?"

"ठीक है ।"

कहकर मालिक चुप हो गए। बिजली-मिस्तरी भी एक ओर खडे थे। उनकी ओर देखकर बोले "देख क्या रहे हो आखें फाडे ? जाओ, मैनेजर बाबू के साथ जाकर काम समझ लो।"

इसके बाद दुलाल साहा की ओर घूमकर बोले "हा तो तुम लोगो के क्या समाचार हैं ?"

दुलाल साहा ने सिर झुकाए सविनय कहा, "आपके लौटने के बाद मे एक बार भी नही आ पाया। हम लोग बडी मुसीबत मे फस गए हैं।"

"मुसीबत मे ! और तुम ? तुम किस मुसीबत म फस गए ?"

"जी मालिक अब आपसे क्या कहू वह सदानद था न, सदानद को तो जानते ही होगे तो वही सदानद अस्पताल से भाग गया है। इतने दिन उसे खिला पिलाकर ठीक किया और आखिर मे मुझे ही फमा गया।"

मालिक ने बहुत दिनो से ठीक कर रखा था कि दुलाल के आने पर उसे क्या क्या सुनाएग। कौन-सी बात किस तरह कहेगे। इतने दिनो तक हुए अपने अपमान के बदले के लिए जैसे भरे बैठे थे। लेकिन दुलाल साहा भी शायद तैयार होकर ही आया था। वह भी जानता था कि उसे क्या क्या सुनना पडेगा, मालिक उससे क्या-क्या कहग।

"हालाकि मालिक देखिए, इस किशनगज मे मुझे आपकी दया स ही सिर छुपाने के लिए ठिकाना मिला है। आपने जमीन दी तभी मुझ जसा नगण्य आदमी आज किसी तरह अपने पैरा पर खडा है, नही तो मुझ जैसे आदमी की बिसात क्या थी।"

मालिक ने दुलाल साहा की ओर जरा गौर से देखा।

तुम क्या मुझसे मजाक करने आए हो दुलाल ?"

दुलाल साहा ने जीभ काटते हुए कहा, 'आपसे मजाक करने की बात सोचते ही मेरी जीभ गिर जाए, मैं जाकर रौरव नरक में पड़ूं। हरि को साक्षी रखकर कह रहा हूं, मालिक कि आज मैं आपसे क्षमा मांगने आया हूं। यह निताई बैठा है मैंने इससे कहा था रुपया-पैसा सब हाथ का मल है। आपके आशीर्वाद से इन हाथों में बहुत कुछ आया-गया, लेकिन सच मानिए उससे मन को शांति नहीं मिली। पत्नी कब की चली गई, एक लड़का है, उसका विवाह कर दिया। रोज सुबह नदी जाकर अपने हाथों झाड़ू से सीढ़ियां धोता हूं, लेकिन किसी भी तरह मन शांत नहीं होता। आप पुण्यवान हैं, पिछले जन्म में आपने अनेक पुण्य किए थे जिसके फलस्वरूप आपको अपनी पोती वापस मिल गई लेकिन मुझे क्या मिला ?'

'कहते क्या हो! तुम्हें कुछ भी नहीं मिला ? तुम क्या थे और क्या हो गए हो ? मुझे ही लो, मैं भी क्या था और क्या रह गया हूं आज ?"

दुलाल साहा ने हठात नीचे झुककर मालिक के पांव छूकर हाथ माथे में लगाया और फिर हाथ की उंगली जिह्वा से चाट ली, इसके बाद फिर इत्मीनान से बैठा।

फिर बोला, "आप ब्राह्मण हैं कलयुग होने पर भी फनियर नाग फनियर नाग ही कहलाता है अब आपसे किस बात की लज्जा मालिक मैंने निश्चय किया है कि संन्यास लेकर संसार-त्याग करूंगा।"

'कहते क्या हो ?'

दुलाल साहा ने कहा, 'जी हां मालिक! मैंने अनेक प्रकार से सोच-विचारकर देख लिया है, संसार में रहकर मन को ठीक प्रकार से भक्ति में नहीं लगाया जा सकता। इसलिए संसार-त्याग करना ही उचित है।'

"तुम्हारा लड़का ? तुम्हारी पुत्रवधू ? ये लोग ? इन लोगों का क्या होगा ?"

'उनकी बात वे जानें मालिक, मैं कौन होता हूं ? मैं तो निमित्त हूं। घर परिवार के लिए बहुत किया है लेकिन घर-परिवार वाले मेरा परलोक तो नहीं देखेंगे। अपने परलोक की बात तो मुझे ही सोचनी है।

और तो कोई सोचेगा नही मेरी ओर से।"

मालिक इतने दिनो से दुलाल साहा को देख रहे है, फिर भी जैसे उलझन मे पड गए। इतनी शान शौक्त, जमीन जायदाद, घर, गाडी, व्यापार-धधा और अब यह शुगर मिल, सब कुछ छोडकर दुलाल साह सयासी हो जाएगा ? मालिक टकटकी बाधे दुलाल साहा की ओर देखते रहे। हमेशा की तरह यह नगे बदन, नगे पाव, हाथ मे माला झोली, माथे पर चदन यह सब क्या सत्य है ? दुलाल साहा के बारे मे उनकी अब तक की धारणा क्या गलत थी ? झूठ थी ? पॅपुलबेड के पास वाली आहर का लेकर इतनी मारपीट वह सब क्या स्वप्न था ? असल मे क्या दुलाल साहा भला आदमी है ?

'आप आशीर्वाद करें मालिक, आपका आशीर्वाद फलेगा, आशीर्वाद करें कि अत मे हरिचरणो के दर्शन पाऊ।'

निताई बसाक अब तक चुप बैठा था।

अब उसने कहा, "आप जरा समझाइए मालिक, आपके कहने से शायद ससार मे इनका मन टिक सकता है। आप समझाइए इन्हे।

दुलाल साहा ने कहा, "नही मालिक, आपसे एक ही बिनती है, फिर से ससारी होने को न कहे। आशीर्वाद करें कि हसते-हसते ससार त्याग सकू। इस आढत, शुगर मिल, किसीमे कोई रुचि नही है अब मुझे।'

मालिक ने कहा, ' लेकिन तुम्हे अचानक यह सूझी क्या ?

'जी, अचानक ता नही हुआ। काफी दिन स गुरुदेव मुझे बुला रहे हैं कि दुलाल ! मेर पास चला आ—यहा आकर तुझे शाति मिलेगी !'

' लेकिन तुम्हे यह शाति आखिर क्यो नही मिल रही है ?"

दुलाल साहा ने कहा "रुपया-पसा छूते ही जैसे मेरे हाथ जलन लगते है मालिक, क्या करू कुछ समझ मे नही आता।"

'तब तो डॉक्टर को दिखलाना चाहिए दुलाल, रुपये पस से विराग तो अच्छी बात नही है ! इस तरह तो तुम्हारी सम्पत्ति कारोबार सब चौपट हो जाएगा।"

दुलाल साहा ने अजीब सी मुसकान के साथ कहा "मालिक, जिस तरह यह ससार मेरे लिए विष हो रहा है, यह सम्पत्ति भी उसी प्रकार

खिप हो रही है।"

मालिक ने निताई बसाक की ओर घूमकर कहा, "तुम लोग डॉक्टर को क्या नहीं दिखलाते निताई ? रुपये विष लगना तो डर की बात है भाई ! बाद में कहीं दुलाल सचमुच संन्यासी होकर चल दिया तो तुम लोग मुश्किल में पड जाओगे।"

निताई बसाक ने कहा जी डॉक्टर को दिखलाया है।

डॉक्टर ने क्या कहा ?"

'कहा कि बीमारी ईमारी कुछ नहीं है वहम है अपने-आप ठीक हो जाएगा।

कौन सा डाक्टर ? कहां का ? '

'जी यहां के रमेश डाक्टर की बात नहीं कर रहा। कलकत्ते के डाक्टर की बात कर रहा हूं दुलाल को वहीं ले गया था। इसीलिए तो इस बीच आपसे मिलने भी नहीं आ पाए। आप पोती को लेकर किशनगंज लौटे यह खबर सुनने के बाद भी आपके दर्शन नहीं कर पाए हम लोग— बडी उलझन में पड गए हैं हम लोग।"

मालिक भी इतने दिनों से यही बात सोच रहे थे। इतने लोग हर-तरह को देखने आ रहे हैं, लेकिन दुलाल साहा तो एक बार भी नहीं आया निताई बसाक भी नहीं आया, और तो और, नई बहू भी नहीं आई, जब कि उनकी गैरहाजिरी में नई बहू रोज एक बार आकर बडी बहूजी की खबर पूछ जाती थी। निवारण से उन्होंने सब कुछ सुना है। इतने दिन किसीसे कहा तो नहीं, लेकिन मन-ही-मन सोचा करते थे। आज इसकी वजह समझ में आई। मालिक मन-ही-मन खुश हो उठे। इसीको कहते हैं भाग्यचक्र। दुलाल साहा का भाग्य अब पडती पर है और उनका उठती पर। दुलाल साहा की जूट की आढत जाएगी। शुगर मिल जाएगी। और इधर उनके घर में फिर से चहल-पहल होगी, रौनक होगी। किशनगंज के लोग आज जिस तरह दुलाल साहा के घर जाते हैं उसी तरह उनके घर आएंगे।

मालिक ने कहा 'तुम्हारा महाजनी का कारोबार ? वह कर रहे हो या बंद कर दिया ?"

दुलाल साहा न कहा, ' पुराना जो है वही चल रहा है, नया कुछ नही कर रहा—मन नही चाहता।"

"खाना-पीना ? मास-मछली खाते हो ?'

"वह सब तो दीक्षा लेते वक्त ही छोड दिया था। फिर और नही छुआ।"

' तब तो काफी मुश्किल हो जाएगी। क्या करोगे, कुछ सोचा है ?"

निताई बसाक ने कहा, ' इसीलिए तो दुलाल को साथ लेकर आपके पास आया हू मालिक, अब आप ही कुछ सलाह दें इस बार मे।"

मालिक बोले, ' इस बारे मे मैं क्या सलाह दे सकता हू ? इस सबके बारे मे मैं कुछ समझता भी नही हू ! इसके अलावा मेरे पास वक्त भी कहा है ? देखो न, हरतन आई है पूरे घर की मरम्मत करानी पडी है, हजारो रुपये खच हो गए हैं। कलकत्ते से बिजली-मिस्तरियो को बुलवाया है पता नही अब ये लोग कितना मागेंगे ?"

निताई बसाक ने कहा, "रुपयो की जरूरत हो तो कहिए न, दुलाल के रुपये किस काम आएगे ?"

दुलाल साहा ने भी कहा, ' रुपया तो मेरे लिए मिट्टी के माफिक हो गया है। और चार लोग लूटकर खाए, उससे तो अच्छा है कि आप ही के काम आए।"

मालिक ने एक बार दुलाल साहा और फिर निताई बसाक की ओर देखा। फिर बोले, "रुपये तो ले लू लेकिन बाद मे चुकाने भी तो मुझे ही पडेंगे, तब कहा से चुकाऊगा ?"

दुलाल साहा के लिए यह सुन पाना भी मुश्किल था। फौरन दोनो कानो पर हाथ रखते हुए कहा, ' मालिक, यह बात सुनना भी पाप है। मैंने पहले ही बहुतेरे पाप किए हैं, अब और पाप न कराए मुझस। पॅपुल-बेड के पास वाली आहर, जिसे लेकर इतना झझट हुआ है, आप वापस ले लें। मेरे जो रुपये गए सो गए, इनके अलावा जो नई शुगर मिल बैठाई है, वह भी आपके नाम लिख देता हू। आप बस एक बार हाथ बढाकर स्वीकार भर कर लें "

दुलाल साहा पागल की तरह अनगल क्या-क्या सब बके जा रहा

था, जैसे सचमुच ही उसे वैराग्य हो गया हो! सच में ही उसे अब तक किए पापों का प्रायश्चित्त हो रहा हो, यह भी क्या सभव है! इस दुनिया मे यह भी घटित हो सकता है?

दुलाल साहा की बातें सुनकर मालिक गदगद हो उठे। जय मा चडिके! जय बाबा विश्वनाथ! तुम्हारे चरणो मे बहुत बार अपना दुखडा रोया है। चुपचाप कितना रोया हू। मन के दुख को कोई कभी बाहर से नही समझ पाया। किसीने कान नही दिया। आज तुमने ही मेरी सुन ली।

मालिक के दोनो पाव थर थर काप रहे थे। दोनो हाथो से पावो को दाबने की कोशिश कर रहे थे वह। उस रोज हावडा जूट मिल मे पहुचकर भी ठीक ऐसा ही हुआ था, जिस रोज पहली बार हरतन का पता चला था। आज इतने रोज बाद जब वे सोच रहे थे कि हरतन की चिकित्सा किस प्रकार होगी, किस प्रकार यह घर फिर से प्रासाद होगा, ठीक तभी भाग्य की यह कैसी लीला है! वही दुलाल आज उन्हें रुपये देने को तैयार है! पेंपुलबेड के पास वाली आहर वापस करने को तैयार है! यह सब कौन करा रहा है? यह किसकी लीला है? इस लीला को देखने के लिए ही क्या वे अभी तक जीवित हैं? तब क्या उनका लडका सिद्धेश्वर भी वापस आएगा? केदारेश्वर भट्टाचार्य का वश धन-दौलत और मान मर्यादा से दोबारा दमक उठेगा? फिर पीलखाने मे हाथी घूमेगा? घुडसाल मे घोडे हिनहिनाएगे? घर के सामने वाले मैदान मे फिर से दुर्गापूजा होगी? मैदान मे शामियाना बधेगा, नाटक होगा किशनगज के लोग मुह बनाकर नाटक देखने आएगे? और वे चिल्लाकर कहगे—ए, चुप—और साथ ही साथ उनके गले की आवाज सुनते ही सारा गोलमाल बद हो जाएगा और खामोशी छा जाएगी? लोग उन्हे देखते ही पहले जैसा सडक ऊपर ही साष्टाग प्रणाम करते थे, फिर से उसी तरह करेंगे? और वे बडी उदारता से पूछेंगे क्या रे जगा, कैसा है?'

जगा कहेगा, 'बस मालिक, दया है।'

'तेरे जमाई का क्या हाल है? बडे जमाई का?'

जो मलेरिया हुआ है ठीक ही नहीं हो रहा तिल्ली बढ़ गई है। तिल्ली बढ़ गई है तो डाक्टर को दिखला।'

मालिक डाक्टर की दवा न तो बहुत पैसे लगेंगे।

तो क्या हुआ तेरे पास पैसे नहीं ?

निवारण सरकार पास ही होगा। मालिक निवारण से कहेंगे निवारण जरा तो कल ही पचास रुपए दे देना।'

सिर्फ जरा ही क्या निवारण के सारे लोग सुबह से ही आकर उनके दरवाजे पर धरना देंगे जैसे पहले दिया करते थे। मालिक की नींद टूटेगी और कब मालिक नीचे उतरकर उन लोगों को दर्शन देंगे यही सोच-सोचकर वे लोग व्यग्र होते रहेंगे। उसके बाद तब से लेकर शाम होने तक घर लोगों-बागों से भरा रहेगा। सदर से एस०डी०ओ० आएगा मालिक से मिलने। मालिक उससे नहीं मिल पाएंगे। मालिक के पास उससे मिलने के लिए वक्त ही नहीं होगा। एस०डी०ओ० हो या मिनिस्टर हो मालिक क्या कम हैं किसीसे ? दुलाल साहा ने जिस तरह मिनिस्टर को बुलाकर घर के सामने मीटिंग की जरूरत होने पर ये भी करेंगे। मिनिस्टर के साथ फोटो खिंचवाएंगे। यह फोटो फिर कलकत्ते के अखबारों में छपेगा। वैसे आजकल रायसाहब और रायबहादुर की पदवी तो खत्म हो गई है उसकी जगह अब पद्मश्री और भारत रत्न की उपाधि मिलती है। जी चाहा तो उसीमें से कुछ ले लेंगे। किशनगंज में कोई नया आदमी आएगा तो इस भट्टाचार्य भवन के सामने आकर पूछेगा यह किसका मकान है भाई ?'

पासवाला आदमी जवाब देगा, 'कीर्तिश्वर भट्टाचार्यजी का।'

कीर्तिश्वर भट्टाचार्य कौन ?'

'अरे आपने कीर्तिश्वर भट्टाचार्यजी का नाम नहीं सुना ? इन्हीं के पुरखे गौडेश्वर के राजपुरोहित थे। रोज हाथी की पीठ पर चढ़कर राजमहल जाते थे कुलदेवता की पूजा करने। हर रोज पूरे एक सौ आठ कमल के फूलों से पूजन होता था। भारत सरकार ने इन्हींको तो इस बार भारत रत्न की उपाधि से विभूषित किया है।'

और हरतन ?

हरतन दौडते हुए आकर कहेगी, 'दादा '

मालिक कहेंगे, 'बिटिया क्या कहती है ?'

'मेरे लिए एक गाडी खरीद दो दादा, मैं गाडी चलाऊगी।'

अब हाथी वाला जमाना नही रहा। अब गाडी का जमाना है। एक गाडी भी होनी चाहिए। हरतन के लिए बडी सी गाडी खरीदनी ही पडेगी। किशनगज की सडक अब पक्की हो गई है। बस चलती हैं। स्टेशन मूडागाछा तक बस चल गई हैं। हरतन के पास गाडी म मालिक बैठे हैं। दूर पेंपुलवेड के पासवाली आहर पर शुगर मिल की चिमनी दिखलाई दे रही है। उसमे से धुआ निकल रहा है। एक बार वहा जाकर उतरेंगे। सब लोग जिस तरह दुलाल साहा को सलाम करते हैं उन्हे भी करेंगे।

क्या खबर है दरवान सब ठीक तो है ?'

दरवान कहेगा, 'जी हजूर, सब ठीक है।

मनजर सामने खडा होगा उससे पूछेंगे काम काज ठीक तो हो रहा है मैनजर ?'

जी, सब बिलकुल ठीक चल रहा।'

इसी तरह दो-एक बातें। मिल तो एक बार रोज ही जाना पडेगा। बगैर खुद नजर रखे काम ठीक नही होता। व खुद जाएगे और साथ म हरतन जाएगी। इसक बाद सीधे दनदनाते मछुआटोली चल जाएगे। किसी किसी रोज एकदम मूडोगाछा तक। मूडोगाछा के बाद श्रीनाथपुर। श्रीनाथपुर के बाद फतेहाबाद। फिर नदी है। इच्छामती वहा पर दक्षिण की ओर घूम गई है। वहा खडे होकर देखने पर चारो ओर कास से भरा मैदान नजर आएगा। जमीन पर कास स भरा मैदान और सिर पर आसमान। आसमान के बाद

"मालिक !"

अचानक ध्यान टूटा। इधर-उधर देखा, कोई भी नही था। दुलाल साहा और निताई पता नही कब चल गए। सामने सिर्फ निवारण खडा था और साथ मे बिजली मिस्तरी।

मालिक ने पूछा, "दुलाल साहा कब गया ?"

'जी, वे लाग तो कब के चले गए। नई बहू आई थी हरतन

बिटिया को देखने, वह भी चली गई।

"लेकिन बगैर कुछ कहे सुने चले गए ?

जी आपसे कहकर ही तो गए हैं। जाते वक्त आपके पाँव भी छुए।'

अच्छा ! मुझे मालूम तक न हुआ ?"

कहकर मन-ही-मन सोचने लगे। तब क्या दुलाल साहा ने जो कुछ कहा वह स्वप्न था ?

'जी, मिस्तरी कह रहे हैं कि वे लोग एस्टीमेट भेज देंगे काम देख लिया है। हम लोगों के 'हाँ' करने पर काम शुरू करेंगे। इन लोगों का खयाल है कि मोटे तौर पर करीब दस हजार खर्चा आएगा।'

मालिक ने कहा ठीक है दस हजार खर्च हो या बीस हजार। काम अच्छा होना चाहिए। रुपया के लिए काम खराब नहीं होना चाहिए।'

मिस्तरी और भी न जाने क्या क्या कहते रहे। वह सब मालिक को अच्छा नहीं लग रहा था। प्रणाम करके उन लोगों के जाते ही मालिक ने निवारण से कहा निवारण, सुनो।'

निवारण पास आया।

मालिक ने कहा, 'निवारण दुलाल साहा जो कह रहा था तुमने सुना कुछ ?"

सुना, हम लोगों से भी कहा है '

'तुमसे भी कहा है ? क्या कहा है ? '

"जी, कहा है कि वे संन्यासी होकर चले जा रहे हैं। पंपुलबेड़ के पासवाली आहर भी हम लोगों को वापस कर देंगे। और भी बहुत कुछ कह रहे थे।'

"तुम्हें यकीन होता है उसकी बातों पर ?

'जी, आप ही की दया पर तो पाये हैं। लगता है इनके धर्मभय जागा है। नई बहू तो एक गहना देकर हरतन बिटिया को देख गई।"

"गहना ! किस चीज का गहना ? सोने का ?"

"जी हाँ, सोने का। एक जोड़ी सोने का कंगन। मैंने हाथ में लेकर देखा है, वजन में आठ तोले की होगी। काफी वजनी है।

कभी कभी हरतन ही कहती है, "बकू दा "

बकू फौरन चेहरा झुकाकर कहता, 'कुछ कह रही थीं ?'

हरतन कहती 'हम लोग कहा थे और कहा आ पहुचे ?"

बकू कहता, 'मैं तो हमेशा से ही कहता आया हू तुम राजरानी होओगी।"

हरतन के चेहरे पर फीकी मुसकान सिमट आती, 'लेकिन मुझे तो मालूम ही न था कि मैं सचमुच राजकुमारी हू।'

'अच्छा ही तो हुआ।

बकू और भी जोर-जोर से पखा झलने लगता। कहता अच्छा ही है। तुम्हारा अच्छा हो मुझे तो इसीमे सुख है।

'मैं जब ठीक हो जाऊगी तो तुम क्या करोगे ?"

बकू कहता, 'चला जाऊगा बडी बाबू के दल म। मूछें साफ कराकर फिर से 'रानी रूपकुमारी' बनकर महफिल म उतर पडूगा—फिर गाऊगा

कहा जाऊ कहां जाऊ, मैं अबला नारी
कौन यहा अपना,
कहा पाऊ शरण हे अन्तर्यामी "

गाकर बकू हसता है हरतन भी हसने लगती है।

बकू बोला, 'लोग अगर आवाजें कसने लगे तो बडी बाबू की गाली खानी पडेगी। पहले गाली खाने पर तुम्हे देखते ही सब हजम हो जाता था। अब तुम तो रहोगी नहीं, फकीरे के पास जाकर चिलम म दम लगाना पडेगा।'

हरतन कहती, 'तुम यह चिलम फूकना छोड दोगे समझे ? तम्बाकू से सुना है, हृदय-रोग हो जाता है।

बकू बोला जो होता है हो। मेरा हृदय रोग होने म किसीका क्या बिगडता है ? बडी बाबू न होगा नया लडका ढूढ लेंगे। और किसी का तो नुकसान होना नहीं है।"

हरतन कहती लेकिन हृदय रोग क्या अच्छी बात है ! तुम्हीको तो तकलीफ होगी। पडे-पडे फिर तुम्ही भोगोगे।"

भगा, जरा देखू तो।'

कहकर मालिक उठे। फिर पूछा, "बकू कहा है ?"

हरतन के पास ही है।"

मालिक ने चलते चलते कहा 'हरतन की दवा आई ?'

जी दवा तो कल ही ले आया।'

'दवा खिलाई ?"

जी दवा तो बकू ही खिलाता है मेरे हाथ से तो बिटिया खाना ही नही चाहती। बडी बहूजी के हाथ से भी नहीं खाती, सिर्फ बकू के हाथ से ही खाती है।'

और फल ? अगूर अनार सेव—सब लाए हो तो ? वह सब कौन खिलाता है ?

सब बकू ही खिलाता है और किसीकी बात बिटिया नहीं सुनती, बकू ही दिन रात पास बना रहता है। वही सब करता है।'

बात ठीक भी है। किशनगज आने के बाद से ही बकू ने हरतन की सेवा का भार जो लिया है तो वह अभी भी बरकरार है। नाटक-कपनी का लडका नौकरी चाकरी छोड यहा आकर टिका तो वापस जा ही न पाया।

मालिक ने कहा भी तुम्हारी नौकरी तो नही चली जाएगी भाई ?"

बकू ने कहा था हरतन के ठीक होते ही चला जाऊगा। दो चार रोज की ही तो बात है। जरा चलन-फिरने लगे।"

मालिक ने कहा, 'भगवान से यही कामना करो तुम्हे भी छुट्टी मिले और हरतन भी छुटकारा पाए।'

तो बकू तब से यही रह गया। सुबह उठते ही जाकर हरतन के पास बैठता है तो फिर उसे छुट्टी नहीं मिलती। हरतन का मुह धुलाना, दात साफ कराना उसे दवा देना फलो के छिलके उतारकर खिला देना और कुछ नही तो ताड का पखा लिए बैठे बैठे झलते रहना।

चेहरा झुकाकर कभी कभी पूछता है, 'अब कैसा लग रहा है ?'

हरतन जागती होने पर उत्तर देती है नही तो —

कभी कभी हरतन ही कहती है, "वकू दा   "

वकू फौरन चेहरा झुकाकर कहता, "कुछ कह रही थी ?"

हरतन कहती 'हम लोग कहा थे और कहा आ पहुचे ?"

बकू कहता मैं तो हमेशा से ही कहता आया हू, तुम राजरानी होओगी।'

हरतन के चेहरे पर फीकी मुसकान सिमट आती, ' लेकिन मुझे तो मालूम ही न था कि मैं सचमुच राजकुमारी हू।"

अच्छा ही तो हुआ।'

बक और भी जोर जोर से पखा झलने लगता। कहता अच्छा ही है। तुम्हारा अच्छा हो मुझे तो इमीमे सुख है।"

मैं जब ठीक हो जाऊगी तो तुम क्या करोगे ?"

वकू कहता 'चला जाऊगा चडी बाबू के दल म। मूछें साफ कराकर फिर से 'रानी रूपकुमारी' बनकर महफिल मे उतर पडूगा—फिर गाऊगा

कहा जाऊ कहा जाऊ, मैं अबला नारी
कौन यहा अपना,
कहा पाऊ शरण हे अन्तर्यामी "

गाकर बकू हसता है, हरतन भी हसने लगती है।

बकू बोला लोग अगर आवाजें कसने लगे तो चडी बाबू की गाली खानी पडेगी। पहले गाली खाने पर तुम्हे देखने ही सब हजम हो जाता था। अब तुम तो रहोगी नही, फकीरे के पास जाकर चिलम म दम लगाना पडेगा।'

हरतन कहती, 'तुम यह चिलम फूकना छोड दोगे, समझे ? तम्बाकू स सुना है हृदय-रोग हो जाता है।"

वकू बोला जो होना है हो। मेरा हृदय रोग होने स किसीका क्या बिगडता है ? चडी बाबू न होगा नया लडका ढूढ लेंगे। और किसी का तो नुकसान होना नही है।"

हरतन कहती ' लेकिन हृदय रोग क्या अच्छी बात है ! तुम्हीको तो तकलीफ होगी। पडे पडे फिर तुम्ही भोगोगे।

बकू कहता, "इन फालतू की बातों को लेकर तुम्हें दिमाग खराब करने की जरूरत नहीं है, थोड़ी देर सो लो तुम।"

जरा रुककर हरतन फिर बोली, "अच्छा बकू दा, मैं राजकुमारी हो गई इसी तरह अगर तुम भी हठात् राजकुमार हो जाओ तो कैसा रहे ?"

बकू हसता "हा तब तो वाकई बड़ा मजा रहे! लेकिन मेरी सूरत तो बदर जैसी है राजकुमार होकर भी बात जमेगी नही।'

हरतन कहती "मेरी सूरत पर नजर है न। लेकिन देख लेना, मेरी बीमारी ठीक नही होगी—नही होगी '

बकू ने हाथ से उसका मुह बद करते हुए कहा "देखता हू, तुम्हारी जबान पर कुछ भी नही अटकता ?"

हरतन चिढ जाती, कहती, ' फिर हाथ लगाया मुझे ?"

'हजार बार लगाऊगा, तुम बार-बार ऊटपटाग बकोगी ? '

लेकिन मुझे छूत की बीमारी है, मुझे बार-बार इस तरह छूना क्या ठीक है ? मेरी देख-रेख न हुआ, तुम कर रहे हो, लेकिन अगर तुम्हे कुछ हो गया, तब कौन देखेगा ? तुम्हारा है ही कौन ? तुम्हें कुछ हुआ तो चड़ी बाबू तुम्हे सीधे कूडे मे फेंक देंगे, समझे '

बकू चिढकर कहता, "मेरे लिए तुम्हे फिजूल परेशान होने की जरूरत नही है राजकुमारीजी अभी फिलहाल अपनी चिंता करो।'

सुनकर हरतन के चेहरे पर फिर वही फीकी मुसकान सिमट आती।

कहती, मेरी देखभाल करनेवालो की कहा कमी है ? देखते नहीं, सुबह से शाम तक कितने लोग आते हैं मुझे देखने, किस तरह आशीर्वाद करते हैं! कितने स्नेह के साथ बातें करते हैं! पहले कभी मुझसे की है किसीने इस तरह स्नेहभरी बातें ?"

बकू कहता, "की नही है ?"

"किसने की हैं कहो न ?'

'क्यो, मैंने नही की ? मैंने "

अचानक पैरों की आहट सुनकर दोनो चौक उठे। नई बहू को लिए बड़ी बहूजी उसी कमरे मे आ रही थी। बकू ने देखा, हरतन ने देखा, बड़ी बहूजी के साथ एक बहू कमरे मे आई। कीमती कपड़े, सान व भारी

गहने पहने नई वहू कमरे मे वकू को देखकर जरा सकुचा गई। माथे को पल्लू से ढकते हुए उससे पूछा, "ये कौन हैं ताईजी ?"

बडी वहूजी ने कहा, "हरतन अभी तक इन्ही लोगो के साथ तो थी। बीमारी की वजह से यहा है। हरतन के ठीक होते ही चला जाएगा।"

वकू जरा हटकर खडा हो गया था। नई वहू हरतन के पास आई। इसके बाद कागज म बधा एक पैकेट हरतन के हाथ मे देकर बोली "यह तुम्हारे लिए है वाबा ने तुम्हारे लिए भिजवाया है।"

हरतन टकटकी बाधे कुछ देर देखती रही नई बहू की ओर।

असल में दुलाल साहा की बातो पर यकीन करना मालिक को अच्छा ही लग रहा था। जिस प्रकार मृत्यु से वडा कोई सत्य नही है, ठीक उसी प्रकार जीवन भी मिथ्या नही है, यह भी एक वडा भारी सत्य है। और इस सत्य की सम्पूर्ण अनुभूति हासिल करने के लिए अर्थ का प्रयोजन भी अनिवार्य है। जीवन अनित्य और क्षणभगुर है, यह वात मालिक की तरह ही दुलाल साहा को भी मालूम थी, जिस प्रकार दुनिया के और भी हजारो लोगो को मालूम है। लेकिन अर्थाभाव मे वह अनित्य वस्तु ही घोरतम अनित्य हो उठती है इस वात को मालिक से अधिक मर्मान्तक भाव से शायद और किसीने नही भोगा है। इसीलिए दुलाल साहा के इस हठात् परिवर्तन से वे जैसे विचलित हो उठे।

महीने के अदर ही भट्टाचार्य भवन का नव कलेवर हो गया। दीवारो पर फिर से रगाई हुई। हर कमरे मे बिजली के झाड और पखा की फिटिंग हुई। लोग बाग हैरत भरी नजर से देखते और कहते, वाह !"

अदर आकर मालिक के पैरो की धूल लेते। मालिक भी किसीको आते देखकर पाव आगे बढाकर आशीर्वाद करने के लिए हाथ उठा देते।

लोग पूछते ' बिटिया अब कैसी है मालिक ?"

मालिक कहते "करीब-करीब ठीक हो ही गई है, कुछ ही रोज मे चलने फिरने लगेगी।"

सुवह से ही आनेवालो का ताता लग जाता। लोग आते, मालिक को

प्रणाम करते और फिर उनके सामने बैठकर चुपचाप उनकी बातें सुनते, जैसे अब तक दुलाल साहा की बातें सुनते थे।

मालिक कहते, "धर्म नाम की चीज अभी है समझे कालीपद, इस कलियुग में भी धर्म है भगवान है, पाप है पुण्य है—सब कुछ है। हम लोग देख नहीं पाते, यही मुश्किल है।'

जरा रुककर फिर कहते 'मनुष्य अंधा है, मनुष्य मायामोह में जकड़ा हुआ बैठा है इसीलिए कुछ भी नहीं देख पाता। नहीं तो तुम लोग खुद ही देख रहे हो।

लोग कहते, जी हां सो तो हैं ही।'

मालिक कहते आंख और कान खुले रखो, और भी बहुत देख पाओगे।'

क्या देख पाएंगे मालिक ?

देखोगे किस तरह पुण्य की जय और पाप की पराजय होती है। जीवन में मैंने कोई पाप नहीं किया। किसीका नुकसान नहीं पहुंचाया। स्वप्न में भी किसीका बुरा नहीं सोचा। तुम लोग तो जानते ही हो। दूसरों का हमेशा भला ही चाहा है मैंने—ठीक कह रहा हूं न ?

जी हां आपने हमेशा दूसरों का भला चाहा है।

मेरा तो आज भी वही हाल है। हर किसीका भला हो, यही इच्छा है मेरी। इसीलिए तो आज इतने दिन बाद भी मेरी पाती आ गई है। नये सिरे से घर की मरम्मत हुई है। बिजली का यह झाड़ देख रहे हो ? ऐसा ही झाड़ कलकत्ते में लाटसाहब के यहां भी है। कलकत्ते के मिस्तरी ने ही पूरा काम किया है।"

'जी खर्चा कितना आया ? '

मालिक मंद मंद मुसकराते कहते, 'तुम लोग ही अंदाजा लगाकर कहो ?'

गांव के सीधे सादे लोग थे बेचारे। जिंदगी में कभी यह सब देखा नहीं था। चारों ओर अच्छी तरह देखकर बोले जी पांच छ सौ तो लग ही गए होंगे।'

मालिक को उन लोगों के भोलेपन पर हंसी आ गई। उन्होंने कहा,

"इस निवारण से पूछो।"

निवारण पास ही खड़ा था।

कितना खर्च पड़ा होगा सरकार बाबू ?'

'पचपन हजार रुपये।

मालिक कहते तिसपर भी अभी कुछ नहीं हुआ। हरतन के लिए नई मोटर खरीदनी है। उसमें भी चौदह हजार लग जाएंगे। इसके अलावा पेंपुलबेड के पास वाली वह आहर भी खरीद रहा हूं।

'वहां तो माहाजी ने चीनी मिल बैठाई है।

'चीनी मिल भी खरीद लेने की सोच रहा हूं।"

सुनकर सब ताज्जुब में पड़ जाते। मुंह से कोई कुछ नहीं बोलता। थोड़ी देर बाद सिर्फ कहते 'सब भगवान की दया है मालिक सब भगवान की दया है।

मालिक और भी जोश में आ जाते। कहते वही तो कह रहा था इतने दिन से—अरे धर्म भी है, भगवान भी है। कलियुग बोलकर सब कुछ मिथ्या थोड़े ही हो गया। कलियुग में भी भगवान है इसका प्रमाण खुद मैंने पाया है।

बात और आगे न बढ़ पाई। बकू कलकत्ता गया था डाक्टर लाने, उसके आते ही महफिल पूरी हो गई। सामान्यतः कलकत्ते का कोई डॉक्टर किशनगंज जैसे देहात में नहीं आना चाहता। नामी-नामी सभी डॉक्टरों ने नर्सिंग होम और अस्पताल बना रखे हैं। आकर मरीज देखते हैं और जरूरत होने पर उन्हें अस्पताल भेज देते हैं। निवारण खुद दो बार जाकर खाली हाथ वापस लौट चुका है।

बकू ने कहा था मालिक मैं जाऊंगा जैसे भी हो डाक्टर को लेकर आऊंगा।'

ठीक है बकू ही चला जाए। हर डाक्टर यही कहता है कि हरतन को कलकत्ते के अस्पताल में भर्ती कराया जाए। इस बीमारी का इलाज घर में नहीं होता। खास कर ऐसे देहात में। दवा कलकत्ते से आ जाएगी, लेकिन इंजेक्शन देने के लिए तो कोई चाहिए था। वह इंतजाम भी हुआ। हरिसाधन सामंत ने डॉक्टरी पास करके हाल ही में किशनगंज बाजार

म दुकान खाली है। वहीं आकर कलकत्ते के डॉक्टर की हिदायत के मुताबिक इंजेक्शन दे जाता था।

मालिक पूछते ' तुम्हें क्या लग रहा है हरिसाधन ?"

हरिसाधन कहता जी आप फिक्र न करें बिलकुल ठीक हो जाएगी आपकी बिटिया।

मालिक नम हो जाते, कहते अरे अच्छी तो हो जाएगी, वह क्या नहीं जानता हूं मैं ? तुम क्या बताओगे इस बारे म, मैंने कभी कोई पाप नहीं किया। किसीका बुरा नहीं चाहा बिटिया अच्छी होगी क्यों नहीं ?

मगर ज्यादा मुश्किल म पड़ा था बकू। दोपहर के वक्त चढ़ी धूप म एक बार डॉक्टर के पास दौड़ता। फिर आकर हरतन के पास बैठता। उसे पंखे से हवा करता। सिर के ऊपर वैसे बिजली का पंखा सनसना रहा होता। लेकिन पंखा वगैरह झले जैसे बकू को चैन नहीं पड़ता था। उसे नहान खाने का भी खयाल न रहता।

अरे, तुम खाना नहीं खाओगे ?'

बड़ी बहूजी बेचारी की अच्छी मुसीबत थी। मालिक सारे दिन हुक्म करते फिरते और सरकार बाबू उस हुक्म की तामील करने में दौड़-भाग करते। और बकू को तो हरतन छोड़ और कुछ सूझता ही नहीं था।

लेकिन इन सबके खाने पीने का इंतजाम तो बड़ी बहूजी को ही देखना पड़ता था। पूरी गृहस्थी का बोझ उन्हींपर था। हरतन के लिए हरे नारियल का पानी दूध-फल और पथ्य बड़ी बहूजी के छोड़ और कौन देखता।

बकू को भी बुलाकर खिलाना पड़ता है वैसे बकू को सकोच वकोच नहीं था। कहता थोड़ा भात और दीजिए अम्मा दाल बड़ी अच्छी बनी है।"

बड़ी बहूजी चाव से कहती ' थोड़ी दाल भी ले लो तब।

ठीक है लाइए। कभी से इस तरह खाना नहीं खाया अम्मा। श्रीमानी ऑनरा में तो एक एक रोज पेट ही नहीं भरता था। हरतन भी बेचारी ज्यादातर भूखी ही रहती।

' दाल भात भी पेटभर नही मिलता था तुम लागो को ?"

"जी, अब क्या-क्या कहूं आपसे, चडी बाबू बस जबान भर के ही ठीक हैं बात सुनकर लगेगा साक्षात युधिष्ठिर, लेकिन असल मे बिलकुल शकुनि है, शकुनि। शकुनि का नाम सुना है न ? पूरे कुरुवश को खत्म करके रख दिया।"

खाते खाते बकू तरह-तरह की बातें करता।

कहता, "इस अजना स कितनी बार कहा कि चलो इम चडी बाबू का दर छोडकर हम लोग और कही चले जाए। जहा भरपेट खाना भी न मिले, वहा पडे रहने के माने होते हैं कोइ आप ही कह ? लेकिन यह सुनती ही न थी। अरे मुट्ठी भर चने मुरमुरे के भी लाले थे चडी बाबू के यहा।"

"है ? सो कैसे ?"

"जी सभी तो भूखे बैठे थे। उन लोगा को दिए बगैर कैसे खा सकते हैं भला ? कितने रोज स अजना बेचारी आलू भात खाने को कह रही थी। लेकिन चडी बाबू से वह भी न हुआ।"

क्यो ? आलू-भात देने मे क्या लगता ह ?"

बकू कहता आप कुछ भी नही जानती ! अरे चडी बाबू आलू-भात जो खाने को देंगे तो आलू क्या मुफ्त मिलता है ? चडी बाबू कहते—आलू-भात खाने की कोई जरूरत नही, आलू का भाव मालूम ह तुम लागो को ?"

'कहते क्या हो ! आलू की भी कोई कीमत है ! मरे आलू के लिए इतनी आफत ? '

अब आप ही समझ लीजिए ! हम लोगो को क्या कम भोगना पडा ह अम्मा ! खैर जो हुआ सा हुआ अब अजना सुखी है मेरी ता इसीम खुशी है। जाकर सब कहूगा, सुनाऊगा चडी बाबू को।'

बडी बहूजी ने कहा, "न भैया अभी कही नही जाओगे तुम। पहले हरतन जरा ठीक हो ले तब तक तुम्हे नही छोडने वाली मैं।'

बकू बोला ' अरे, आप क्या सोचती हैं, हरतन के ठीक होने के पहले मैं ही यहा से टलने वाला नही हू—कहे रखता हू।"

लेकिन इतनी बडी घटना घटन जा रही है फिर भी सब जन निर्विकार हैं। कोई जरा भी परेशान नही हैं। खबर सुकात राय तक भी पहुची थी।

उसन पूछा, "साहाजी, एक बात सुनी है, आप घरबार छाडकर काशी जा रहे हैं ? सच मे ?"

दुलाल साहा ने कहा 'जा रहा हू कहन भर से ता जाना नही होता ह भाई, मन पीछे खीचता है। कहता है, यह तरा घर है तेरा लडका है लडके की बहू है, सभी तो तेरा है "

सुकात राय ने कहा, "सो ता है ही "

"असल मे भाई कोई किसीका नही है, तुम्हारे पापा का बोझा कोई नही उठाएगा "

शायद कुछ देर और बात चलती। लेकिन बाधा पड गई। निवारण सरकार चुपचाप आकर खडा हो गया।

"क्या बात है निवारण ? हरतन अब कैसी है ?

'जी उसी तरह है साहाजी ! '

"कलकत्ते से डाक्टर आनेवाला था आया ?'

"आया था।'

"क्या बोला ? '

'कहत तो सभी हैं कि ठीक हो जाएगी। आगे भगवान की मर्जी।' कहकर भगवान के नाम पर माथा झुका लिया।

दुलाल साहा माला जपते-जपत बोला एक भगवान का ही ता भरासा है। और सब माया है, माया। सुकात बाबू का भी यही समझा रहा था '

बात पूरी होने से पहले निवारण बोल उठा, 'साहाजी जरा जल्दी थी यहा से सीधे कलकत्ते जाना है, दवा खरीदन के लिए। महगी महगी दवाए है यहा नही मिलेंगी।"

दुलाल साहा न कात की ओर देखकर कहा अर कात दो भाई दो, निवारण जल्दी मे है बेचारे को दवा खरीदन कलकत्ता जाना है।'

कात तयार ही था। कात हमेशा तैयार ही रहता है। निवारण

के यहा आने के माने ही हैं रुपये उधार लेने आना। दो-तीन रोज मे एक बार आता है और जरूरत के मुताबिक रुपया ले जाता है। साहाजी का क्या हुक्म है। वे तो चले ही जा रहे हैं इस दुनियादारी और माया मोह मे ऊपर इस रुपये पर अब उनको कोई आकर्षण नही है। इतजाम पूरा होते ही व इस घर गृहस्थी से विदा लेंगे।

बात एक-एक करके नोट गिन रहा था। नोटो को गिनकर निवारण के हाथ में देते ही निवारण ने भी एक कागज म स्टाम्प पर दस्तखत कर दिए मालिक को जो लिखना था पहले ही लिख दिया गया था। यही दस्तावेज था। बात ने उस कागज को बडी सावधानी के साथ कैश-बॉक्स म रख लिया।

लिए ?'

निवारण ने रुपये टेंट मे बाधते हुए कहा, "जी ले लिए साहाजी।"

कितने लिए ?

दस हजार।"

दस हजार मे पूरा पडेगा तो ?"

जी हा, अभी फिलहाल चल जाएगा।"

पूरा न पडे तो और पाच हजार ले लो। इस रुपये का मुझे करना भी क्या है ? मैं तो यह सब छोड ही रहा हू।"

उसकी और जरूरत नही पडी। सत्तर हजार पहले ही लिए जा चुके हैं यह दस हजार और कुल मिलाकर अस्सी हजार हो गए।

दुलाल साहा ने कहा "किसी प्रकार का सकोच न करना निवारण। मानिक से जाकर कहना कि हरतन के इलाज और घर की मरम्मत के जितने भी रुपये लगें, दूगा। सकोच की जरूरत नही है समझे ?"

निवारण सरकार जा ही रहा था। दरवाजे तक भी नही पहुचा कि अचानक निताई बसाक आ पहुचा।

निताई बसाक को देखते ही सुरपति राय उठ खडा हुआ।

क्यो बसाक बाबू कहा थे इतने रोज मे ?'

लेकिन जवाब देने से पहले ही और भी दो जने अन्दर आए। किशनगज थाने का दरोगा और साथ म एक सिपाही।

निताई बसाक ने ही आगे बढ़कर दुलाल साहा से कहा अरे दुलाल, देखो, दरोगा साहब आए हैं, सदानंद की लाश मिली है।'

"सदानंद की लाश?"

सुकांत को ही जैसे ज्यादा अचम्भा हो रहा था। लेकिन दुलाल साहा के चेहरे पर जसे शिकन तक नहीं थी।

उसने कहा, "आइए दरोगा साहब पहले इत्मीनान से बैठिए, फिर सब कुछ सुनता हू।"

दरोगा साहब एक कुर्सी पर बैठ गए। पुलिस की खाकी वर्दी, हाथ म छोटा सा बेंत, साथ के सिपाही के हाथ म भी एक मोटा सा डडा था। वह खडा ही रहा।

'उसे क्या हुआ था दरोगाजी? किसने मारा उसे? अहा "

दरोगा साहब दुलाल साहा के ताबेदार है, कितने ही मौको पर दावत खा गए हैं। वजह बेवजह कुछ-न कुछ नगदी भी हमेशा पाते रहे है। इसके अलावा खुद पुलिस मन्त्री भी एक रोज दुलाल साहा के घर मेहमान हो चुके हैं।

"कोई आज थोडे ही मरा है साहाजी, लाश देखकर लगा कि कोई सात-आठ रोज पहले मारकर डाला गया है। इस बीच गीदड और कुत्तो ने नही खाया, यही आश्चर्य की बात है।"

दुलाल साहा ने मुह के अन्दर जबान से च्च-च्च की आवाज की।

"अहा, यह क्या हो गया? किसने ऐसी दुश्मनी की मेरे साथ?

"वह तो इन्वेस्टिगेशन करने पर पता चलेगा। अभी फिलहाल मैं आपसे दो एक सवाल करना चाहूगा।'

"तो पूछो न। जैसे भी हो, कसूरवार को जेल पहुचाना ही होगा। यह भी कोई बात हुई। दिन-दहाडे मेरे आदमी को अस्पताल से गायब करके खून कर दिया, इस बारे मे जरा भी ढील हुज्जत नही होनी चाहिए। उसे फासी पर लटकाना ही होगा।

निताई बसाक बोला, "लेकिन खून ही हुआ है, इस बात का सबूत मिला है आपको?"

दरोगा साहब बोले, 'खून हो सकता है या खुदकुशी भी हो सकती

हूं। इन्वेस्टिगेशन करने पर सब पता चल जाएगा। लाश हुसैनपुर के जगर म मिली है।"

दुलाल साहा ने कहा नहीं भाई, मेरा खयाल है, यह खून ही है। खून छोड़कर और कुछ हो हो नहीं सकता। कितने आराम स अस्पताल मे रखा था! वहा से भागकर आत्महत्या क्यो करने लगा? किस दुःख मे? नहीं भाई यह खून ही है। और खूनी को तुम्हें पकड़ना ही होगा। और पकड़कर फासी पर लटकाना ही होगा

मदानद ऐसा कुछ कर बैठेगा, दुलाल साहा या निताई बसाक किसी ने साचा भी न था। सदानद के लापता होने की घटना ने जैसे सब कुछ गड़बड़ा दिया था।

पुलिस के लोग मदानद की लाश को घेरे खड़े थे। निताई बसाक और दुलाल साहा भी थे।

सदानद की ओर देखकर दुलाल साहा न जीभ से 'च्च च्च' की आवाज की। याने—अहा बेचारा!

इसी आदमी को देखने वह रोज बेनागा अस्पताल गया है। सदानद जब तक अस्पताल मे रहा, दुलाल साहा खुद उसके लिए खाना लेकर गया है।

दुलाल साहा ने कहा, 'अहा, यह हाल किसने किया है इस बेचारे का?'

बात किसीको उद्देश्य करके नहीं कही गई थी इसलिए किसीने काई जवाब भी नहीं दिया।

दुलाल साहा फिर कहने लगा, 'इसका फैसला आपको करना ही पड़ेगा दरोगा साहब, अपराधी को दंड मिलना ही चाहिए, नहीं तो लोग सरकार को बदनाम करेंगे, कहेंगे कि अंग्रेजों के जाते ही देश म अराजकता फैल गई है।"

निताई बसाक न भी यही एक बात कही। पुलिस को जो करना है सो तो पुलिस करेगी ही। इन दोनो को तो सिर्फ शिनाख्त करने के लिए बुलाया गया था। इतने दिनो तक इन लागो के यहा नौकरी की, इन्ही

की दया पर रहा हूँ इनकी शिनाख्त पर आसानी रहेगी, रिपोर्ट भी आसानी से तैयार हो जाएगी।

साहाजी आपको किसपर शक है ?

दुलाल साहा बोला 'यह तो आपने बड़ी मुश्किल में फंसा दिया दरोगा साहब, मैं तो हर किसी पर एतबार कर लेता हूँ मैं किसपर शक कर सकता हूँ ?'

इसे तनख्वाह तो मिलती थी हर महीने ?'

मैं किसीकी तनख्वाह बाकी नहीं रखता, कभी किसीको नौकरी से निकालता भी नहीं मेरा स्वभाव ही ऐसा नहीं है।"

किसीसे दुश्मनी थी आपको मालूम है कुछ इस बारे में ?"

'यह मैं कैसे कह सकता हूँ मैं किसीके मन के भीतर का हाल कैसे जान सकता हूँ ?"

"किसीसे रुपया-पैसा कुछ उधार लिया था ?"

कैसे कहा जा सकता है ! लेकिन वह उधार क्यों लेने लगा ? किसलिए ? सदानन्द को क्या मैं कम पैसा देता था जो वह किसीके आगे हाथ फैलाता ? अकेला पेट इतना पैसा कौन खाएगा ?"

'अपने रुपये वह किसके पास रखता था ?"

सो तो वही जाने ! मुझे इस सबमें कोई रुचि नहीं है, वक्त भी नहीं है। इसलिए तो मालिक से कहा था मैंने कि अब तो इस माया से छुटकारा मिले तो मुक्ति पाऊं और अच्छा नहीं लगता यह सब।"

निताई बसाक से भी यही एक सवाल पूछा गया। उत्तर भी वही एक ही मिला। वह भी किसीके सात पांच में नहीं है वह दुलाल साहा का मैनेजर है। दुलाल साहा का काम देखता है। बस, इससे ज्यादा कुछ नहीं मालूम उसे।

आखिर में दरोगा साहब बोले "आप अन्यथा न लीजिएगा साहाजी सरकारी नौकरी में बहुत से ऐसे वैसे काम करने पड़ते हैं नहीं तो आपको यह तकलीफ नहीं उठानी पड़ती।'

दुलाल साहा बोला "अजी इसमें तकलीफ की क्या बात है, यह तो आपका फर्ज है। आसामी को ढूंढकर निकालना ही है नहीं तो किशनगंज

"लेकिन पैसा भी खिलाओ और काम भी न बने, यह तो ठीक नही है। पाच लाख की मशीन लाने म अगर एक लाख घूस के ही निकल गए, तो नफा क्या रहेगा ?"

निताई बसाक बोला, "लेकिन नुकसान ही कहा है ? नुकसान कोई घर से तो जा नही रहा। दिल्ली म इस बार यही काम तो किया है। वे लोग चीनी के दाम बढाने को राजी हो गए है। तुम्हारे एक लाख एक दिन म वसूल हो जाएगे। घबडाते क्यो हो ?"

सुनकर दुलाल साहा को थोडी तसल्ली हुई। इधर कुछ दिना से दुलाल साहा परेशान था। निताई बसाक काफी जोखिम का काम कर बैठा है। पहले सौ पाच सौ रुपये का कारबार था। बाद मे बढकर हजार हुए, और फिर हजार से लाख। अब लिमिटेड कपनी है। कुछ ही सालो म कारबार काफी फैल गया है। महाजन लोग किशनगज आकर दुलाल साहा का कारबार देख दाता तले उगली दबा लते है। लोगो को जितना ताज्जुब होता है, दुलाल साहा की कपनी उतनी ही लाल होती है। कुछ ही साला की बात है इसी बीच शुगर मिल बनने से उस किशनगज की शक्ल ही बदल गई है। मेंपुलबेड की और जान पर जगह पहचान म ही नही आती है। झाड झखाड से भरी जमीन म नया शहर बस गया है। नई-नई सडके, लाल बजरी बिछी हुई एक पाक भी हो गया है। नाम हुआ है दुलाल पाक। मिल मे काम करन वाला के लिए क्वाटर बने है। निताई बसाक ने चेहरा ही बदल दिया। देशी विदेशी साहब और गुजराती मारवाडी सेठ आते हैं और कुछ रोज ठहरकर चले जात हैं। उनके ठहरने के लिए गेस्ट हाउस हैं। पूर साहबी कायदे का गेस्ट हाउस।

इतना सब कुछ हुआ है लेकिन उसमे दुलाल साहा म कोई फक नही आया है। वह आज भी रोज मुह अधेरे हाथ मे झाड़ू लिए घाट की सीढिया धोता है। और दिन निकलते-न निकलते गाडी मे बैठकर घर वापस आता है।

जो लाग देखते हैं यानी हठात एक आध राज ही देखते है कहते है साहाजी मनुष्य नही हैं, साक्षात् शिव है शिव।"

दुलाल साहा कहता, "धत यह सब मन मे भी नही लाना चाहिए,

बकू कहता, "मैं भी आपकी तरह बीच-बीच में खाना नहीं खाता था, गुस्से में खाना छोड़कर उठ जाता था।"

ज़रा रुककर फिर कहता, "गुस्सा तो करता था अधिकारीजी पर बाद में अपने ही पेट में चूहे कूदते थे।"

इसी तरह उसकी बातों का अंत नहीं था।

कभी कहता, "अधिकारीजी को जानती तो हैं मां ?"

बड़ी बहूजी कहती, "नहीं।"

"बड़ा ही बदमाश आदमी है ! मां, जानती हैं ? बड़ा ही बदमाश है ..."

"वाकई ?"

"हां मां, बड़ा बदमाश, खाने तक को नहीं देता था, हरतन को ही क्या कम परेशान किया है उसने ?"

"क्या ? तुम लोगों को परेशान क्या करता था ? ऐसा क्या किया था तुम लोगों ने ?"

बकू बोला, "कुछ भी तो नहीं मां, और करने को था भी क्या ! एक तरह से हरतन की वजह से ही तो दल चलता था। कहीं हरतन मेरे दिमाग चढ़ न जाए इसीलिए बेवक्त डांटा करता था।"

बड़ी बहूजी चुपचाप सुना करतीं और घर का काम सम्हालतीं। रात के वक्त मालिक की छाती पर सरसों के तेल की मालिश करनी होती थी। दिनोंदिन घर में खानेवालों की संख्या बढ़ रही थी। मालिक की हालत सुधरने के साथ पलने वालों की भी बढ़ोतरी हो रही थी।

निवारण सरकार के पास जाकर बकू कहता, "लाइए, सरकार बाबू रुपये निकालिए।"

रुपये का नाम सुनते ही निवारण का दिल धक् से कर उठता। फिर रुपये ! मालिक तो हुक्म करके ही रह जाते हैं ! लेकिन हिसाब तो निवारण को रखना पड़ता है। एक मात्र निवारण को ही मालूम था कि दुलाल साहा से कितने रुपये लिए जा चुके हैं। निवारण ने जितने रुपये मांगे, दुलाल साहा ने उतने ही दिए हैं। हर बार रुपये लेकर निवारण ने मालिक की ओर से कागज पर दस्तखत किए हैं।

लेकिन उससे पहले ही पुलिसवाले पागल को पकडे दुलाल साहा के पास ले आए।

दुलाल साहा ने निवारण से पूछा, 'क्या बात है निवारण, तुम ?"

लेकिन निवारण कुछ कहे, उससे पहले ही नई बहू पुलिसवाला की ओर बढ आई।

उसने कहा, यही है वह आदमी ? लेकिन यह तो वह नही है। शादी के वक्त इस आदमी को तो नही देखा मैंने।"

'जी, मिसेस साहा, इसीका नाम दोलगोविंद है। इसी आदमी ने आपकी शादी तय कराई थी, आप पहचानने की कोशिश कीजिए।"

पागल जैसे वाकई मे पागल नही था। नई बहू की ओर कुछ देर आखें फाडे ताकता रहा।

उसकी ओर देखकर नई बहू हठात् बोल उठी, 'बोलो, मेरी शादी तुम्हींने तय कराई थी ?"

दोलगोविंद अचानक फूट-फूटकर रोने लगा।

निवारण सरकार ने सोचा भी नही था कि उसे यह सब देखना पडेगा। जरूर कोई पारिवारिक दुघटना हो गई है। ऐसे मौके पर उसका आना ठीक नही हुआ। जल्दी से खिसकने के लिए पाव बढा रहा था। दरवाजे तक ही पहुचा होगा कि नई बहू ने पुकारा, 'सरकार बाबू, जाइएगा नही, आपके सामने ही सारी बात हो जाए, आइए।"

किशनगज के ग्रामीण जीवन म एक दिन इस तरह की आधी आएगी, किसीने कल्पना ही नही की थी इस बात की। आधिया पहले भी आई हैं लेकिन धीमे-धीमे, इतनी तेज नही। दुलाल साहा और निताई बसाक रातो-रात बडे आदमी नही बने। मालिक भी एक ही रात म नही उठ गए थे। उतार चढाव के स्वाभाविक नियम के अनुसार ही सब हुआ था। कूट कालचक्र या प्रकृति के स्वाभाविक नियम से ही सब कुछ हुआ था। लोगो की दृष्टि मे वह सह्य हो गया था। सभीने इस निष्ठुर सत्य को मन प्राण ` किया था।

म बार और बात थी। इस बार की आधी न जैसे सब कुछ

दुलाल साहा के पास जाकर रुपये मागना निवारण को अच्छा नही लगता था।

लेकिन दुलाल साहा का जैसे कोई परवाह ही नही थी। वह कहता, "अरे तुम क्या पागल हुए हो निवारण? तुमने क्या मुझे ऐसा वैसा आदमी समझ रखा है?"

निवारण ने कहा, "नही-नही, वह बात नही है फिर भी हाथ फैलाते सकोच सा होता ही है साहाजी!"

'देखो निवारण," कहकर दुलाल साहा गभीर हो उठता। फिर कहता 'तुम लोग मालिक को जानते हो ठीक है, लेकिन मुझसे इस बारे म कुछ भी न कहो। मैं भी आदमी पहचानता हू।'

लेकिन इतना कर्ज हो गया यह कोई दो चार रुपयो की तो बात है नही "

'तो होने दो न, हरि की कृपा से मेरे पास रुपयो की कमी नही है। फिर रुपया को क्या धोकर पिऊगा मैं? मुझे भी तो यह सारा रुपया-पैसा और सपत्ति यही छोडकर जाना है, तब कौन खाएगा इन रुपयो को?"

'अब तो आपका लडका लौट आया है वह शायद '

'लडका? अपना रुपया मैं खच करूगा, उसके लिए मेरे लडके को आपत्ति होगी? तुम क्या कह रह हो निवारण? तब मेरे लडके को तुम पहचान नही पाए निवारण!"

ये सब पुरानी बातें हैं। इस तरह की बातें बहुत बार हो चुकी हैं दुलाल साहा के साथ। निवारण ने इन बातो को सोचना छोड दिया है। लेकिन उस दिन दुलाल साहा के घर पहुचने पर सदर दरवाजे पर ही पुलिस देखकर वह हैरान रह गया। सिर्फ पुलिस ही नही बीच मे एक और आदमी भी था। आदमी पागल-सा लग रहा था। पागलो की तरह कुछ बडबडा रहा था।

अपने घर के आगे दुलाल साहा खडा था, उसका लडका विजय और नई बहू भी पास ही खडे थे। नई बहू का यह चेहरा निवारण ने कभी न पहले कभी नही देखा था।

निवारण को देखकर दुलाल साहा उसीकी ओर बढा।

लेकिन उससे पहले ही पुलिसवाले पागल को पकडे दुलाल साहा के पास ले आए।

दुलाल साहा ने निवारण से पूछा, ' क्या बात है निवारण, तुम ?"

लेकिन निवारण कुछ कहे, उससे पहले ही नई बहू पुलिसवालो की ओर बढ आई।

उसने कहा ' यही है वह आदमी ? लेकिन यह तो वह नही है। शादी के वक्त इस आदमी को तो नही देखा मैंने।"

"जी, मिसेस साहा इसीका नाम दोलगोविंद है। इसी आदमी ने आपकी शादी तय कराई थी, आप पहचानने की कोशिश कीजिए।'

पागल जैस वाकई मे पागल नही था। नई बहू की ओर कुछ देर आखें फाडे ताकता रहा।

उसकी ओर देखकर नई बहू हठात् बोल उठी, ' बोलो, मेरी शादी तुम्हीने तय कराई थी ?"

दोलगोविंद अचानक फूट-फूटकर रोने लगा।

निवारण सरकार ने सोचा भी नही था कि उसे यह सब देखना पडेगा। जरूर कोई पारिवारिक दुघटना हो गई है। ऐसे मौके पर उसका आना ठीक नही हुआ। जल्दी से खिसकने के लिए पाव बढा रहा था। दरवाजे तक ही पहुचा होगा कि नई बहू ने पुकारा, 'सरकार बाबू जाइएगा नही, आपके सामने ही सारी बात हो जाए, आइए।"

किशनगज के ग्रामीण जीवन मे एक दिन इस तरह की आधी आएगी किसीने कल्पना ही नही की थी इस बात की। आधिया पहले भी आई हैं लेकिन धीमे धीमे इतनी तेज नही। दुलाल साहा और निताई बसाक रातों-रात बडे आदमी नही बने। मालिक भी एक ही रात मे नही उठ गए थे। उतार-चढाव के स्वाभाविक नियम के अनुसार ही सब हुआ था। कूट कालचक्र या प्रकृति के स्वाभाविक नियम से ही सब कुछ हुआ था। लोगो की दृष्टि मे वह सह्य हो गया था। सभीने इस निष्ठुर सत्य को मन प्राण से स्वीकार किया था।

लेकिन इस बार और बात थी। इस बार की आधी न जैसे सब कुछ

तहस-नहस कर दिया था।

बकू हमेशा का मुक्त आदमी था। नाटक के गीत गाता रहा है। चडी अधिकारी के साथ गाव-गाव और एक-दूसरे जिले घूमा है। रात भर जागकर गाया है, और दिन भर सोया है। इस सबके बीच कब अचानक मन की किस सद से एक अटूट बधन की जकड मे फस गया, इस बात का खुद उसको पता नही चल पाया।

जिस रोज अचानक पता चला कि अजना ऐरी गैरी न होकर किशनगज के जमीदार भट्टाचायजी की खोई हुई पोती है, उस रोज उसके जितना आनद शायद मालिक को भी नही हुआ। बकू को लगा कि अब उसका अपना जो भी हो, कम से कम अजना को तो दल के साथ जगह जगह की धूल फाकते हुए मुह पर खडिया पोत कर यात्रा नही करनी पडेगी।

बकू कहता, 'हम लोगो का जो भी हो, अजना के लिए तो अच्छा ही हुआ।"

और सभी कहते, लेकिन अजना के चले जाने पर क्या दल टिकेगा? हम लोगो की नौकरी क्या फिर रहगी?"

बकू कहता, 'यही तो तुम लोगो का स्वभाव है, साले दूसरे का भला देख ही नही सकते।'

अजना के खिलाफ किसीके कुछ कहते ही बकू के मुह से गाली निकलने लगती। लोग वजह भी जानते थे।

कहते भी "तुझे क्यो नही बुरा लगेगा, दिल जो फटा है, बुरा तो लगेगा ही?"

बकू तमक उठता, कहता, "खबरदार, कहे देता हू, जबान सम्हाल कर बात कर।"

कितनी ही बार किसी एक गाव म सब जब सो रहे होते, किसी एक रोज मजाक मजाक मे मार-पीट तक की नौबत आ जाती। पिछली रात जागने के बाद हो सकता है, चडी बाबू दिन चढ़े तक खर्राटे भर रहे होते कि अचानक मार-पीट की आवाज सुन सीधे जाकर, जिस सामने पाते, उसीकी गदन पकडकर खीचते बाहर ले आते। कहते, 'कहा

कहा के सारे लुच्चे बदमाश मेरे पास मरने आ जुटे हैं—चुप, एकदम चुप ।''

इसके बाद बकू की ओर देखकर कहते ' इतनी शेखी किस बात की ? बहुत शेखी हो गई है ? जिस रोज भगा दूगा, उस रोज पता चलेगा।''

चडी बाबू को मालूम था कि बकू को भगाने पर भी बकू नही जाएगा। तनखाह न मिलने पर भी वहाँ जाने की हिम्मत बकू मे नही थी। बकू 'श्रीमानी आपेरा' के पास जैसे बधक था। बाद मे जब अजना मालिक के साथ आई तो बकू भी साथ आया था। जीवन मे कुछ भी नही इसके लिए रोनेवाला और जो भी हो, बकू नही था, उसे कोई दु ख नही था। अजना की बीमारी ठीक होते ही वह वापस चला जाएगा यही तय था। लेकिन एक रोज सब कुछ जसे उलट पुलट हो गया।

सरकार बाबू के घर आते ही बकू आ पहुचा 'सरकार बाबू रुपये लाइए।''

निवारण सरकार हठात् गूगा हो गया था, जैसे बात करने की ताक्त नही रही थी उसमे।

' क्या हुआ, रुपये लाइए, देर क्या कर रहे हैं ? दवा लानी है।''

निवारण हमेशा दुलाल साहा के घर जाता और रुपये लेकर लौटता। और फिर इस रुपये स दवा आती, इलाज होता। सिफ दवा ही नही मालिक के घर का सारा खच उधार आए इसी पस से होता। कौन स एक कागज पर क्या कुछ लिखकर दे आता यह जानने की किसीको भी जरूरत नही होती, कोई पूछता भी नही था। इसी तरह इतने रोज से चल रहा था। मालिक की बीमारी से पहले भी और बाद मे भी। पहले भी कभी मालिक ने नही पूछा कि यह रुपया तुम कौन सी जमीन रेहन रखकर लाए हो। और अब तो वह सवाल ही पैदा नही होता। रुपया तो आना ही है उनका खयाल है कि इस रुपये के वह हकदार हैं। हरतन के इस घर मे आने के बाद से सम्पत्ति काफी बढ रही है। अतीत के पुराने गौरव का पुनरुद्धार हुआ । सब कुछ हरतन की वजह से हुआ था। हरतन जैसे खुद लक्ष्मी थी। अब लक्ष्मी भी अचला होकर उनके घर वास करन

आई है! नही तो इतने दिनो बाद वह मिलती ही क्यो?

लेकिन बकू इतना सब नही जानता था। वह अपना काम करता रहेगा। कलकत्ते जाता, बडे से बडा डॉक्टर लाता, दवा दारू खरीदकर ले आता है। रुपये का सारा इतजाम निवारण करता।

लेकिन आज निवारण को चुप देख बकू भी चिढ गया। उसने कहा, "अरे, मेरी बात सुन नहीं पा रहे क्या आप? आठ बियालिस की गाडी छूट गई तो कब जाऊगा और कब लौटूगा?"

इतनी देर बाद जैसे निवारण की बोलने की क्षमता लौटी। उसन कहा, "पैसे नही हैं।"

'नही हैं माने? नही हैं के माने क्या? दवा नही आएगी?"

निवारण बोला 'मैं कुछ नही जानता।"

'जानते कैसे नही हैं जरूर जानते हैं! हरतन बिना दवा खाए रहेगी, कहना चाहते हैं?'

निवारण जैसे डर गया। उसने कहा, तुम चुप रहो चिल्लाओ मत, रुपये का इन्तजाम नही हो पाया। दोपहर तक जरा सबर करो, मैं कोशिश कर रहा हू।'

बकू ने कहा, "लेकिन मैं कल स कह रहा हू कि हरतन की दवा खत्म हो गई है?'

बोलने से क्या होता है? मालिक की दवा भी खत्म हो गई है वह भी तो आनी है।' इसके बाद बूढा निवारण क्या करे, ठीक न कर पाकर सिर के बाल खीचने लगा।

'ठीक है तो मैं मा से कहे देता हू कि रुपये नही हैं इसलिए दवा नही आएगी। इलाज भी नही होगा हरतन मर जाए यही चाहते हैं न आप?"

निवारण की आखें छलछला उठी। वहा और नही रुक पाया। पास-वाले दरवाजे स बराण्डे मे चला गया।

बकू मन ही-मन निवारण को उद्देश्य कर बडबडाने लगा, "ठीक है मुझे क्या है! भाड मे जाए सब! दवा के बिना आप लोगों का ही इलाज नही होगा, आपको ही पछताना पडेगा। मैं क्यो फालतू म फिक्र करूं

मरू ?"

कहकर बकू सीधा आगन की ओर निकलकर चौखटी पर आ बैठा। बकू को ऐसे मौको पर ही बडा खराब लगता था। जिन्दगी भर इधर-उधर भटकनेवाला बकू इतने दिन बाद एक ठिकाना पाकर जैसे निश्चिन्तता के आराम मे पड गया था। लेकिन जिसके भाग्य मे आराम लिखा ही नही, उसे आराम कैसे मिल सकता है ? हरतन की हालत जरा सुधरी थी कि ठीक तभी यह झमेला। ठीक तभी मालिक को भी बीमार पडना था और कोई मौका नही था बूढे को। ठीक है मुझे क्या है ! मैं भी बिना खाए-पिए यही बैठा रहूगा। हरतन को दवा नही मिलेगी तो मैं भी खाना नही खाऊगा। कोई कितना भी कहे। जरूरत भी क्या है ! कितने दिन कितनी रातें बगैर खाए काटी हैं फिर एक बार और सही। हजार कहने पर भी नही खाऊगा। दवा लाने को कहने पर भी नही लाऊगा।

अचानक बडी बहूजी की नजर पड गई। बडी बहूजी हमेशा से कम बोलती हैं। उनकी सारी जिन्दगी मालिक के सीने मे तेल मालिश करते कट गई। अब तो उन्होने खटिया पकड ली है। रसोई भी देखनी पडती है। साथ ही मालिक की सेवा-सुश्रुषा भी। बकू को वहा बैठे देखकर उन्हे बडी हैरानी हुई।

उन्होने कहा 'अरे बकू तुम यहा कैसे बैठे हो ?'

बकू ने कोई जवाब नही दिया।

बडी बहूजी को और भी हैरानी हुई। बकू ऐसा तो नही करता। पुकारते ही जवाब देता है। फिर पूछा हरतन अकेली है क्या ?

बकू भभक उठा अकेली क्यो नही रहेगी ' मैं कौन होता हू ? मैं क्यो देखू उसे ? मेरी बात की जब कोई कीमत ही नही है तो हरतन मरे या जहन्नुम मे जाए, मुझे क्या मतलब ? '

"तुम्हे क्या हुआ है ? गुस्सा क्यो हो रहे हो ? हरतन ने कुछ कहा है क्या ?"

"हरतन क्यो कहने लगी ? वह ऐसी लडकी नही है। उस बेचारी को क्यो बदनाम करती हैं बेकार मे ?"

' तब यहां इस तरह क्यों बैठे हो मुंह फुलाए ? क्या हुआ है तुम्हें ?"

बकू बोला, "मेरी खुशी, बैठा हूं।"

बड़ी बहूजी ने पूछा, "भूख लगी है क्या ? चलो खाना परोस दूं।"

बकू ने कहा, "खाने के लिए इतनी हाय हाय नहीं है मुझे। खाने के लिए फटिक की लार टपका करती है, मेरी नहीं।"

"फटिक ? फटिक कौन है तेरा ?"

"फटिक कौन है, यह जानकर आपको क्या करना है ? इतने से आपको मतलब ? आप लोग खाइए जाकर मैं अब घर का जल तक स्पर्श नहीं करूंगा ?"

बड़ी बहूजी डर गईं बोली, बात क्या है ? ऐसा कौन सा कसूर हो गया हम लोगों से ?"

'जी नहीं कसूर आप लोग क्या करने लगे, कसूर तो मेरा ही है। सारा कसूर मेरा है मैं अनपढ़ हूं मूर्ख हूं यात्रा करता घूमता हूं। सब मेरा ही कसूर है।"

' यह सब क्या कह रहे हो ? '

बकू बुरी तरह भभक उठा, मैंने बार-बार कह दिया कि मैं यहां बैठा रहूंगा मुझे न खाना न पीना इसके बावजूद आप क्या बार-बार परेशान कर रही हैं ? आप क्या चाहती हैं कि मैं आपके घर से चला जाऊं ?'

"ऐसा क्यों कहने लगी मैं ? कभी ऐसा कहा है मैंने ?"

"मुंह से नहीं कहा लेकिन मन ही मन तो कहा है ?"

"यह सब क्या कह रहे हो तुम ? यह सब तो मैंने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा।'

बकू बोला, "आप नहीं सोचती लेकिन वह तो सोचता है !"

' किसकी बात कर रहे हो ? मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आ रहा ?"

बकू बोला "सो कैसे समझेंगी, वह आपका अपना आदमी जो है उसे आप कैसे पहचान सकती हैं मैं तो गैर हूं, गैर हूं इसीलिए तो मेरा यह हाल है ! मैं तो इस घर का कोई नहीं हूं बैठा बैठा आपका खाना

खराब कर रहा हूं।"

बड़ी बहूजी ने सोचा, ये सारी बातें मान-अभिमान की हैं। उन्होंने कहा, "किसकी बात कर रहे हो मेरी समझ में नहीं आ रहा। खैर, जो भी हो लगता है तुम्हें भूख लगी है, भूख लगने पर गुस्सा तो आता ही है।"

बकू उठ खड़ा हुआ। और नहीं बैठ पाया। बोला खबरदार मां, कहे देता हूं मुझे बेकार में गुस्सा न दिलाओ। मैं खुद ही काफी परेशान हूं अब दया करके आप लोग और परेशान न करें। एक बार फिर कहे देता हूं मुझे भूख-वूख नहीं लगी है।'

"तब तुम्हें क्या हुआ है ?

बकू बोला आपको सुनना है ?'

'हां कहो न। सुनना है, इसीलिए तो पूछ रही हूं।

"तब जो मैं कहूंगा वही करोगी ?

बड़ी बहूजी मुश्किल में पड़ गई। बोली पहले कहो तो सही, क्या करना है ?"

'नहीं पहले आप कहिए कि जो कहूंगा, वही करेंगी ?"

"अच्छा बाबा जो तुम कहोगे वही होगा।'

बकू ने पास के बरामदे की ओर इशारा करते हुए कहा, "तो पहले उसे भगाइए यहां से।'

किसे भगाऊं ? किसकी बात कर रहे हो ?'

"क्यों ? नासमझ क्यों बन रही हैं ? उसकी बात कर रहा हूं, वही जो बैठा आपका घर तबाह कर रहा है।

"ओह ! तो तुम निवारण सरकार की बात कर रहे हो ?'

"नहीं तो और किसकी बात करूंगा ? वह आपके घर का शत्रु विभीषण है। आप लोग जानते नहीं है यह बूढ़ा आप लोगों का सरकार आप ही लोगों का सर्वनाश कर रहा है।'

बड़ी बहूजी ने कहा, "छि बेटा, ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए। यह निवारण था जो हम लोग अभी तक बचे हैं नहीं तो कब के "

बकू ने कहा, 'उसी भरोसे बैठी रहिए, बाद में जब मेरी बात फलेगी

तब पता चलेगा।'

'लेकिन तुम्हें निवारण के ऊपर इतना गुस्सा क्यों है? उसने ऐसा क्या कर दिया?"

'क्या नहीं किया, यह पूछिए उसके पास जाकर। आज तीन रोज हो गए बार-बार कह रहा हूं रुपये लाइए, हरतन के लिए दवा लानी है, दवा कब की खत्म हो चुकी है। आठ बियालीस की गाड़ी से कलकत्ते जाता डॉक्टर को भी लिवाकर लाता, दवा भी ले आता। लेकिन रुपये देने का नाम ही नहीं लेता है! सोचता होगा, पैसे लेकर मैं चपत हो जाऊंगा। रुपये लेकर क्या मैं भाग जाऊंगा? अपने लिए क्या एक रुपया भी लिया है मैंने? फटा कुर्ता पहने घूमता हूं। लेकिन कहा है कि मुझे एक नया कुर्ता चाहिए? कभी सुनी है ऐसी बात मेरे मुंह से? मुझे किस चीज की जरूरत है मां! जिन्दगी में मैंने कभी अपने लिए कुछ सोचा है, जो आज सोचूंगा? हरतन के पास भी इसी डर से नहीं जा पा रहा। हरतन कहीं ठीक न हो जाए इसीलिए रुपये नहीं दे रहा, मालूम है आपको? आज अगर मेरे पॉकेट में रुपये होते तो मैं परवाह करता उसके रुपये की? खुद ही जाकर डॉक्टर लाता, दवा भी ले आता।"

बड़ी बहूजी ने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया।

बकू फिर कहने लगा इतने दिन बाद हरतन के चेहरे पर जरा चमक आई है। और ठीक तभी यह बदमाशी? सोचता है, मैं कुछ समझता नहीं हूं? मैं बुद्धू हूं? पढ़ा लिखा नहीं हूं इसीलिए क्या एकदम मूर्ख हूं मैं?"

बड़ी बहूजी अभी भी चुप थी। उनकी आंखें भर आई थीं।

हठात एक आवाज सुनकर बड़ी बहूजी चौंक उठीं। निवारण की आवाज थी।

रानी मां!" इतना ही। जैसे इससे ज्यादा कुछ कहने की हिम्मत उसमें नहीं थी।

बकू ने देख लिया। निवारण को देखते ही वह बड़ी बहूजी से कहने लगा 'लीजिए निवारणजी आ गए। आप ही पूछिए अब इनसे कि मैं ठीक कह रहा हूं या नहीं। यह तय हो ले कि कौन सच्चा है और कौन

झूठा है। सामने-सामने बात हो जाए "

वकू की बात पर किसीने ध्यान नही दिया। ध्यान देने की जरूरत भी महसूस नही की। निवारण सरकार ने सिर झुकाए सिफ इतना ही कहा 'सब खत्म हो गया।"

बडी बहूजी जैसे पत्थर हो गई थी। न हिली, न डुली। अनायास आतनाद कर उठें सो भी नही। जिस तरह धीर स्थिर खडी थी, वैसे ही धीर-स्थिर खडी रही। लग रहा था, सिर के ऊपर वाली छत भी अगर आ गिरे तो भी वे इसी तरह धीर स्थिर खडी रह सकती हैं। दुनिया की कोई भी ताकत जैसे उन्हे झुका नही सकती थी।

सिफ वकू बुद्धू की मानिन्द दोनो की ओर देखता एक मायने खोजने की कोशिश कर रहा था। लेकिन कोई भी मायने न खोज पाकर निवारण की ओर देखकर उसने पूछा 'सब खत्म माने ? क्या खत्म हो गया ? खाली खत्म कहने से काम नही चलेगा, खत्म होने के मायने समझाने होगे मुझे।'

लेकिन तब वकू को यह बात समझाता कौन ? दोनो की समझ जैसे समझ के दायरे से बाहर चली गई थी।

जरा भी रोना-धोना नही, जरा-सा भी आतनाद नही ! यह कैसी मौत ! किशनगज के भट्टाचाय-वश मे आसुओं की जैसे पराजय हो गई थी। मालिक जीवन मे कभी नही रोए। उनकी मौत पर कोई नही रो सकता। तुम लोग भी मत रोओ। मेरे घर की लक्ष्मी घर वापस आ गई है। ऐश्वय भी फिरेगा। किशनगज के लोग एक दिन फिर देखेंगे, यह भट्टाचाय भवन दुलाल साहा के घर से धन-जन और ऐश्वय म समद्धि के शिखर पर पहुचेगा। मैं न हुआ, चला ही गया, लेकिन हरतन तो है, लक्ष्मी तो है। दुलाल अपनी सारी सपत्ति त्याग कर काशीवास करेगा। इतने दिन बाद उसे सुमति हुई है यह भी एक अच्छा लक्षण है। दुनिया मे कोई हमेशा के लिए नही आया। एक रोज हर किसीको जाना है। आज मैं जा रहा हू। कल दुलाल साहा और निताई बसाक भी जाएगे। एक रोज पहले या बाद म। लेकिन देखना जय सत्य की ही होती है। मैं

जिंदगी-भर धर्म के पथ पर ही चला हूं। ईश्वर मेरी पराजय कैसे सह सकते हैं ? जो पाप है वह दबा नहीं रहता। पारे की तरह वह फूटकर बाहर आएगा ही। दुलाल साहा कितना भी पाखंडी हो, सजा उसे भोगनी ही पड़ेगी।

निवारण को लगा, जैसे मालिक फिर बात कर रहे हैं।

'हां मृत्यु, मृत्यु से ही जीवन का अंत नहीं होता निवारण ! तुम तो हो ही अभी तुम देखोगे, मेरी बात झूठ नहीं होगी, नहीं होगी, नहीं होगी।'

सुबह से निवारण की जान को कई झंझट रहे हैं। पिछली कई रातों से वह सो नहीं पाया। दिन-रात चौबीसों घंटे मालिक के पास बैठा भगवान से विनती करता रहा। मालिक के ऐश्वर्य के दिनों में जब निवारण आया था, उसकी उम्र बहुत कम थी। काफी आशा थी। आशा से ज्यादा उत्साह था उसमें। एक एक कर जब सब कुछ देखते देखते चला गया, तब भी एक भरोसा था—हरतन। उसी हरतन के लिए मानो मालिक अब तक जिंदा थे। लेकिन निवारण कैसे कहता कि उनकी सारी आशा सारी कल्पना निर्मूल हो गई है ! सब झूठ है फरेब है !

मालिक की उस मृतदेह के पास खड़े होकर निवारण जैसे कहने की कोशिश कर रहा था, 'रुपये नहीं मिल पाए मालिक !'

'क्यों ? मिले क्यों नहीं ?'

निवारण बोला, दुलाल साहा ने नहीं दिए।'

'नहीं दिए माने ? हमेशा देता रहा है और आज ही नहीं दिए ?'

निवारण ने कहा, दुलाल के पास अब कुछ भी नहीं है।'

मालिक जैसे चीख उठे 'क्या फालतू बकबक कर रहे हो ? तुम्हारा क्या दिमाग खराब हो गया है निवारण ? तुम क्या पगला गए हो ?'

नहीं मालिक आज आप सुन नहीं पा रहे, फिर भी मैं कहता हूं, दुलाल के पास कुछ भी नहीं है अब।'

'इसके माने ?'

उसकी अपनी पुत्रवधू जिस दुलाल साहा खुद पसंद करके लाया, वह नई बहू ही मिलावटी है। मछुए की लड़की है वह।'

'कहत क्या हो ?'

'जी हां, मैं ठीक ही कह रहा हूं मालिक ! मैं आज ही सुबह हरतन और आपके इलाज के लिए रुपये लेने दुलाल साहा के पास गया था। जाकर देखता हूं, सर्वनाश हो गया है। पुलिस आई हुई थी, दरोगा आया था, नई बहू भी थी। सबके सामने सारी बात जाहिर हो गई। मैं वापस आ रहा था, लेकिन नई बहू ने मुझे जबदस्ती रोक लिया—मैं भी सब कुछ सुन आया।'

'क्या सुन आए ?'

'सुना कि वही घटक, जिसने दुलाल साहा के लड़के का विवाह तय कराया था, उसीने सब कुछ कह दिया। वह भी पागल हो गया है मालिक ! पन्द्रह भरी सोने के लालच में उसने दुलाल साहा का यह सर्वनाश किया, यह भी बोला। इस सबके मूल में था सदानंद। दुलाल साहा की पटसन की गद्दी का वही कर्मचारी जिसकी वजह से पेंपुलबेड़ की आहर वाला हंगामा हुआ था।

कहते कहते निवारण की आंखें भर आईं। बड़ी बहूजी मालिक के बिस्तरे के पास निस्पंद पड़ी थी। निवारण ने एक बार उसी ओर देखा। इतनी भयानक आंधी आज इस घर को झकझोर गई लेकिन किशनगंज की चिड़िया तक को इसकी भनक न पड़ी। किसीको पता तक नहीं चला। किशनगंज का कितना बड़ा सर्वनाश हो गया था आज ! अब दुलाल जो जी में आए कर सकता है, कोई उसका प्रतिवाद नहीं करेगा।

मालिक जैसे हठात् बोल उठे 'चुप क्यों हो गए ? कहो, फिर क्या हुआ ?'

'फिर क्या हुआ मुझे नहीं मालूम मालिक, लेकिन इतना समझ में आया कि सदानंद ऐसे ही नहीं मरा। ऐसे ही मरने वाला आदमी नहीं था वह। उसका खून हुआ था। पुलिस के पास सबूत हैं।'

'क्यों ? किसने किया उसका खून ? खून किसलिए किया ? उसका खून करके किसीको क्या फायदा ?'

निवारण ने कहा, उसको नहीं मारने पर सारा भंडाफोड़ जो हो जाता मालिक ! वह सब जानता था। दुलाल साहा के पास कहां से कितना रुपया आया और आ रहा है, सब उसकी उंगलियों पर था। दुलाल का खाता वही तो रखता था। दुलाल साहा ने सरकार के कितने रुपये

मार हैं यह सब जानता था।'

'तो अब क्या होगा ?'

निवारण ने कहा, 'यह तो पुलिस जानता है मालिक ! सदानंद का खून करने के लिए किसीको सजा होगी या नहीं, यह पुलिस ही ठीक करेगी। लेकिन नई बहू ने अपना विचार खुद करने का फैसला किया है।'

'इसके माने ?'

निवारण ने कहा, 'नई बहू ने मेरे सामने ही कहा, अगर यह बात साबित होती है कि मैं मछुए की लड़की हूं, और दोलगोविन्द की ठगी का शिकार हुई हूं तो श्वसुर, पति, घर, सब कुछ छोड़कर चली जाऊंगी।'

'कहां जाएगी ?'

निवारण बोला, 'इससे ज्यादा मैं नहीं सुन पाया मालिक ! मैं सुनना चाहता भी नहीं था। नई बहू का चेहरा और दुलाल साहा के लड़के का चेहरा देख मुझे बहुत घबराहट लग रहा था। यही लग रहा था कि क्यों वहां गया। रुपये लेने अगर वहां नहीं जाता तो मुझे यह सब सुनना नहीं पड़ता। वैसे मैंने बार-बार वहां से चले आने की कोशिश की और हर बार नई बहू ने रोका। एक ही बात कह रही थी वह—'मैं चाहती हूं कि सभी लोगों को पता चले।' लोगों से सब कुछ जाहिर करके नई बहू जैसे हल्का होना चाहती थी।'

'लेकिन आखिरकार क्या हुआ ?'

'आखिर सबने नई बहू के मायके जाने का निश्चय किया। इतना सुनने के बाद ही मैं चला आया। वहां पहुंचकर अगर मालूम हुआ कि नई बहू गैर-जाति की लड़की है तो क्या होगा, यह मैं नहीं कह सकता।'

मालिक की प्राणहीन निस्पंद देह अभी बिस्तरे पर उसी तरह पड़ी थी। बड़ी बहूजी भी उसके पास निश्चल बुत बनी बैठी थी। बाहर गाड़ी की आवाज हुई। शायद किशनगंज के डॉक्टर बाबू आए हैं। बक्रू डॉक्टर बाबू को लाने गया था। गाड़ी घर के आगे ही रुकी थी। गाड़ी का दरवाजा खुलने के बाद बंद होने की आवाज हुई। डॉक्टर बाबू आज आखिरी बार आकर सर्टिफिकेट देकर चले जाएंगे। ऊपरवाले कमरे में हरतन लेटी है। उसे खबर नहीं दी गई है। उसे मालूम भी नहीं है कि

मालिक की जीवन शिखा बुझ चुकी है। उसे बतलाने से नुकसान हो सकता है। जब पता चलेगा तब चलेगा। उससे पहले उसे बतलाना उसकी सेहत के लिए खराब होगा।

निवारण डॉक्टर बाबू को अन्दर लिवाने के लिए बाहर आते ही हैरान रह गया। डॉक्टर नहीं बी० डी० ओ० सुकांत राय आया था।

'आपको कैसे पता चला सुकांत बाबू ?'

"किस बात के बारे में ?'

सुकांत राय की बात सुनकर उसे और भी अजीब लगा। उसने पूछा "आपने कुछ सुना नहीं ?

"क्या सुनता ?'

तब तक किशनगंज के डाक्टर बाबू की गाड़ी भी आ पहुंची। डाक्टर बाबू उतरे पीछे पीछे बंकू था।

सुकांत कुछ भी नहीं समझ पाया। निवारण की ओर देखकर उसने पूछा "बीमार कौन है ? मालिक की पोती ?"

सुकांत राय असल में निताई बसाक को खोजता हुआ आया था। निताई बसाक उससे काफी रुपये ले चुका है। अब तक कितने रुपये वह दे चुका है, उसका कोई हिसाब नहीं है। निताई बसाक राजा बना देने की क्षमता रखता है, इस बात का निताई बसाक ही बार बार प्रचार किया करता है।

सुकांत जब भी पूछता 'क्या हुआ दादा ? राइटर्स बिल्डिंग जाना हुआ फिर ?

निताई वैसे व्यस्त आदमी था। लेकिन भद्रता के मामले में पक्का था। वह कहता 'कैसी बात करते हैं मिस्टर राय ? राइटर्स बिल्डिंग नहीं जाऊंगा तो खाऊंगा क्या ? हम लोगों की गुजर कैसे होगी ?'

"नहीं ऐसी बात नहीं। आप लोगों का तो परमिटों का झमेला रहता है आपको तो जाना ही पड़ेगा। मैं उसकी बात नहीं कर रहा मेरा मतलब है मेरे बारे में कुछ पता चला ?'

'यह क्या बात करने लगे आप ? आप सोचते हैं, मुझे आपके बारे

मे चिन्ता नही है ? कालीपद बाबू से कह आया हू। मैंने कहा—सुकांत बाबू मेरे आदमी हैं उनके लिए कुछ करना ही पड़ेगा आपको, नही तो हम लोग जिन्दा कैसे रहेंगे ?"

"आपने कहा यह सब ?"

"कहूंगा नही ? कालीपद बाबू आज मिनिस्टर हो गए हैं तो क्या भगवान हो गए हैं ? बरसो ताश खेले हैं हम लोग, मुरमुरे और पकौड़े खाए हैं वह सब क्या भूल सकता है कोई ?"

"आप लोग क्या एकसाथ उठते-बैठते थे ?"

निताई ज़ोर ज़ोर से हसने लगता। कहता, "अरे क्या अकेले काली बाबू ? एक विधान बाबू को छोड़कर जितने भी मिनिस्टर हैं, सभी के साथ एक ज़माने में उठना-बैठना रहा है। अजी मैं एक नम्बर का बैठकबाज था, जितनी उन्नति हुई है सब इस बैठकबाजी की बदौलत ही हुई है। लेकिन हां, आदमी देखकर मेल-जोल रखता हू। 'फोरसाइट' भी थी। मुझे मालूम था, जिसके साथ मेल-जोल है, एक रोज़ वह बड़ा आदमी होगा ही।"

सुकांत कहता, "वाकई, मानना पड़ेगा कि आपमे दूरदृष्टि है।"

निताई बसाक कहता "लेकिन जानते हैं मुश्किल कहा है ? आज कल इन मिनिस्टरो के सेक्रेटरी लोग बड़े धूर्त होते हैं। बात ही नही सुनना चाहते। वैसे दोष उनका भी नही है। घूस देने वालो ने राइटर्स बिल्डिंग मे चक्कर काट-काटकर इन लोगो को ऐसा लोभ सिखला दिया है कि बगैर जेब गर्म किए, कोई कलम ही नही पकड़ना चाहता।"

सुकांत कहता है, "अगर कहें तो रुपये दे दूंगा। कितने देने पड़ेंगे ? एक हज़ार ?"

निताई बसाक कहता "खबरदार, रुपये का नाम भी न लीजिएगा। काम हुए बगैर इन लोगो के हाथ में पैसा नही रखना चाहिए। सब के-सब एक नम्बरी हैं। माल हज़म करके वही जा छुपेंगे कि फिर शक्ल ही दिखलाई नही पड़ेगी।"

सुकांत पूछता, "तो अब क्या करने को कहते हैं ?"

शुरू शुरू में निताई बसाक कहता "जो करना होगा मैं कर लूगा

आप फिक्र न करें मिस्टर राय।"

लेकिन आहिस्ते-आहिस्ते परिचय जैसे जैसे पुराना होता गया घनिष्ठता जैसे-जैसे बढती गई निताई बसाक उतना ही बदलने लगा। कहने लगा, "दो सौ रुपये दीजिए तो काम बन आया है आपका।"

सुकात की हैसियत ऐसी कुछ नही कि दो सौ रुपये कहते ही दो सौ निकाल दे। लेकिन नौकरी में तरक्की के लिए आदमी को सब कुछ करना पडता है। इन मामलो मे बीवी के गहने रेहन रखने की नौबत आने पर भी कोई पीछे नही हटता। सुकात की जो भी जमा पूजी थी, नौकरी की तरक्की के लिए उसने वह सब निताई बसाक के हाथ मे रख दी। बाद मे जब लगा कि उसके पास अब और कुछ नही है तभी से उसके पास निताई बसाक का आना भी कम हो गया। अब सुकात राय ही निताई बसाक को ढढता फिरता था। गाडी लेकर बार-बार दुलाल साहा के घर आकर सुनता—निताई बाबू कलकत्ते गए है, या दिल्ली नही तो बम्बई गए है।

बाद मे तो उससे मिल पाना ही दूभर हो गया। अब सुकात को भी शक होने लगा तब क्या यह आदमी उसे ठग रहा है ?

इसीलिए उस रोज आकर जब सुना कि निताई बसाक नही है, तभी पता नही क्यो उसे खयाल आया कि चलकर एक बार मालिक को ही देख लिया जाए। दुलाल साहा भी नही है निताई बसाक भी नही है। सब-के-सब समधियाने गए हैं।

लेकिन यहा आकर जो सुना, उससे वह हतवाक् रह गया।

निवारण की हालत उस समय पागल जैसी हो रही थी।

सुकात ने पूछा था "क्या बीमारी हुई थी ?"

तब तक शायद किसी तरह यह खबर किशनगज मे फल गई थी। एक-के-बाद एक लोग आने लगे। किसीके भी मुह पर चू तक नही थी। वही सब हुआ आखिर मे। किशनगज का भट्टाचार्य भवन दुबारा सिर ऊचा किए खडा हुआ। हरतन भी वापस आई। पोती के लौटने के साथ-ही-साथ मानिक फिर से वश का खोया गौरव वापस ले आए। कुछ दिन और

मे चिन्ता नही है ? कालीपद बाबू से कह आया हू। मैंने कहा—सुकात बाबू मेरे आदमी हैं उनके लिए कुछ करना ही पडेगा आपको, नही तो हम लोग जिन्दा कैसे रहगे ?"

'आपने कहा यह सब ?"

कहूगा नही ? कालीपद बाबू आज मिनिस्टर हो गए हैं तो क्या भगवान हो गए है ? बरसो ताश खेले हैं हम लोग मुरमुरे और पकौडे खाए हैं, वह सब क्या भूल सकता है कोई ?"

आप लोग क्या एक साथ उठते बैठते थे ?"

निताई जोर जोर से हसने लगता। कहता 'अरे क्या अकेले काली बाबू ? एक विधान बाबू को छोडकर जितने भी मिनिस्टर हैं, सभी के साथ एक जमाने म उठना बैठना रहा है। अजी मैं एक नम्बर का बैठकबाज था, जितनी उन्नति हुई है सब इस बैठकबाजी की बदौलत ही हुई है। लेकिन हा, आदमी देखकर मेल-जोल रखता हू। फोरसाइट' भी थी। मुझे मालूम था, जिसके साथ मेल जोल है, एक रोज वह बडा आदमी होगा ही "

सुकात कहता, वाकई, मानना पडेगा कि आपमे दूरदृष्टि है।'

निताई बसाक कहता 'लेकिन जानते हैं, मुश्किल कहा है ? आज-कल इन मिनिस्टरो के सेक्रेटरी लोग बडे धूर्त होते हैं। बात ही नही सुनना चाहते। वैसे दोष उनका भी नही है। घूस देने वालो ने राइटस बिल्डिंग मे चक्कर काट-काटकर इन लोगो को ऐसा लोभ सिखला दिया है कि बगैर जेब गर्म किए, कोई कलम ही नही पकडना चाहता।'

सुकात कहता है अगर कहें तो रुपये दे दूगा। कितने देने पडेंगे ? एक हजार ?"

निताई बसाक कहता खबरदार, रुपये का नाम भी न लीजिएगा। काम हुए बगर इन लोगो के हाथ मे पैसा नही रखना चाहिए। सब के-सब एक नम्बरी हैं। माल हजम करके कहो जा छुपेंगे कि फिर शक्ल ही दिखलाई नही पडेगी।'

सुकात पूछता, तो अब क्या करने को कहते हैं ?"

शुरू-शुरू मे निताई बसाक कहता 'जो करना होगा, मैं कर लूगा,

आप फिक्र न करें मिस्टर राय।"

लेकिन आहिस्ते-आहिस्ते परिचय जस-जैसे पुराना होता गया, घनिष्ठता जैसे-जैसे बढती गई निताई बसाक उतना ही वदलने लगा। कहने लगा, "दो सौ रुपये दीजिए तो, काम बन आया है आपका।"

सुकात की हैसियत ऐसी कुछ नही कि दो सौ रुपये कहते ही दा मो निकाल दे। लेकिन नौकरी में तरक्की के लिए आदमी को सब कुछ करना पडता है। इन मामलो मे बीवी के गहने रेहन रखने की नौबत आने पर भी कोई पीछे नही हटता। सुकात की जो भी जमा पूजी थी, नौकरी की तरक्की के लिए उसने वह सब निताई बसाक के हाथ मे रख दी। बाद म जब लगा कि उसके पास अब और कुछ नही है तभी से उसके पास निताई बसाक का आना भी कम हो गया। अब सुकात राय ही निताई बसाक को ढढता फिरता था। गाडी लेकर बार-बार दुलाल साहा के घर आकर सुनता—निताई बाबू कलकत्ते गए हैं या दिल्ली नही तो बम्बई गए हैं।

बाद म तो उसस मिल पाना ही दूभर हो गया। अब सुकात को भी शक होने लगा, तब क्या यह आदमी उसे ठग रहा है ?

इसीलिए उस रोज आकर जब सुना कि निताई बसाक नही है, तभी पता नही क्यो, उसे खयाल आया कि चलकर एक बार मालिक को ही देख लिया जाए। दुलाल साहा भी नही है, निताई बसाक भी नही है। सब के-सब समधियान गए हैं।

लेकिन यहा आकर जो सुना, उससे वह हतवाक रह गया।

निवारण की हालत उस समय पागल जैसी हो रही थी।

सुकात ने पूछा था "क्या बीमारी हुई थी ?"

तब तक शायद किसी तरह यह खबर किशनगज मे फैल गई थी। एक क बाद एक लोग आने लगे। किसीके भी मुह पर चू तक नही थी। वही सब हुआ आखिर म। किशनगज का भट्टाचार्य-भवन दुबारा सिर ऊचा किए खडा हुआ। हरतन भी वापस आई। पोती के लौटने के साथ ही साथ मालिक फिर से वश का खोया गौरव वापस ले आए। कुछ दिन और

जिन्दा रहते तो शायद पंपुलवेड के पास वाली आहर की शुगर मिल भी ले लेते। मालिक खुद भी यह बात बार-बार कहते थे। सभीने आशा की थी कि यह बात सच होगी। एक दिन दुलाल साहा के गुरु आकर भविष्यवाणी कर गए थे, उसका सब कुछ तो मिल गया, तो बाकी का क्या नही मिला? बाकी क्यो न देख पाए मालिक?

अन्दर अचानक बडी बहूजी फूट-फूटकर रो पडी। आम तौर पर बडी बहूजी के गले की आवाज कभी किसीने नही सुनी। लेकिन आज के दिन भी क्या रोए बगैर रह पाना मुमकिन था?

निवारण ने फौरन अन्दर जाकर कहा, "रानी मा, चुप रहिए हरतन सुन लेगी।"

हरतन का नाम सुनते ही बडी बहूजी ने अपने-आपको सम्हाल लिया, फिर और नही रो पाई। एक निवारण का छोड हरतन के बारे मे जैसे सभी भूल गए थे। एक दिन जिसके लिए इलाज इतनी देखभाल, और इतना खर्च हो रहा था, उसका किसीको खयाल ही नही था। वह इस मौत के बारे म नही जानती। उस यह खबर देना ठीक नही है, यह बात निवारण के दिमाग मे ही कौंधा। सच ही तो, यह खबर सुनकर उसकी बीमारी और बढ सकती है। यह जिम्मा बकू न ले रखा था। अब तक सब देखन के बाद बकू जैसे गूगा हो गया था, लेकिन ध्यान हर ओर था। वह सीढी रोककर खडा हो गया जिसस कोई ऊपर जाकर हरतन तक खबर न पहुचा दे। साथ ही हरतन भी किसी तरह खबर पाकर नीचे न उतर आए।

इतन पर भी बकू का शक था।

बकू दबे पाव ऊपर पहुचा। बाहर बराण्डे स झाककर देखा, हरतन सो रही है। सिर के ऊपर पखा सनसना रहा था। सामने टेबल पर अगूर, सब, अनार, सब तैयार रखे थे।

अचानक आख खुलते ही हरतन ने बकू को देख लिया।

"चोरी चोरी क्या देख रहे हो?"

बकू सकपका गया। आहिस्त-आहिस्ते अन्दर आया। बोला, "नही, देख रहा था, तुम क्या कर रही हो? दवा खाने का वक्त हो गया है न?"

हरतन ने मुह बनाकर कहा, "दवा नही खानी है मुझे।"

"क्यो ? मालूम है, कितनी मुश्किल से कलकत्ते से दवा लाता हू ?"

"सो मालूम है। लेकिन इतनी तकलीफ उठाकर तुम सोचते हो, तुम्हारा कुछ फायदा होगा ?"

"सोचती हो, अपने फायदे के लिए यह सब कर रहा हू ? तुम किसी तरह ठीक हो जाओ इसीलिए यह सब हो रहा है।"

"लेकिन मेरे ठीक होने से तुम्हे क्या फायदा होना है ? मेरे ठीक होते ही तो तुम्हे यह घर छोडना पडेगा। तब कोई तुम्हे इस तरह बिठलाकर फोकट मे खाना नही खिलाएगा।"

बकू ने जरा हसने की कोशिश की। नीचे जो कुछ हो रहा है हरतन को कही उसकी भनक न पड जाए। उसने कहा, "लगता है मुझे फोकट का खाना मिलता देखकर तुम्हे काफी जलन हो रही है।"

हरतन ने कहा "यह बात नही है, मैं कह रही थी, मेरे ठीक होते ही तुम्हे फिर बडी बाबू के यहा मशक्कत करनी पडेगी खाना जुटाने के लिए।"

तभी जसे कुछ सुनकर हरतन के कान खडे हो गए। फिर बोली "नीचे हल्ला क्यो हो रहा है ? लगता है, काफी लोग आए है।"

इसके बाद कहने लगी "बहुत दिनो से दादा को नही देखा है दादा आजकल मेरे पास आते क्यो नही है ? मैं ठीक हो गई हू, क्या इसलिए ?"

बकू बोला, "नही नही ऐसी बात नही है। काम काज बढ गया है। और भी एक जमीन खरीद रहे हैं तुम्हारे लिए। एक और मकान बनवाएगे न ! रोज ही मालिक तुम्हारे बारे म पूछते है अभी थोडी देर पहले ही पूछा था कि हरतन कैसी है।"

"तुमने क्या कहा ?"

"मैं और क्या कहता ? कह दिया कि बहुत अच्छी है। सचमुच ही तुम काफी ठीक हो गई हो अब। अच्छा है, तुम जल्दी जल्दी अच्छी हो जाओ तो मुझे छुट्टी मिले।"

हरतन ने मुसकराकर कहा, "तब तो मुझे कुछ रोज और इसी तरह

पड़े रहना चाहिए, क्यों ?

"किसलिए ?"

'ऐसा करने से तुम जो चाहते हो वही होगा।'

मैं क्या चाहता हू तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?"

इतने दिन एकसाथ काम किया है हम लोगो ने तुम क्या चाहते हो, मुझे मालूम नही होगा ?"

'साफ साफ कहो न कि मैं क्या चाहता हू ?"

जाओ, तुमसे तो बात करना ही मुश्किल है। अरे, यह क्या नल दमयन्ती का ड्रामा है कि पाट देखा और फटाफट बोलना शुरू कर दिया ?"

बकू ने कहा, 'लेकिन दादा ने कहा है कि एक रात तुम्हारा पाट देखेंगे। तुम्हारे अच्छे हो जाने के बाद यही घर के सामने 'रानी रूप कुमारी' का तुम्हारा पाट देखेंगे।"

हरतन ने कहा, "अब तो सारे पाट ही भूल गई, अब कुछ भी याद नही है।"

बकू ने कहा "लेकिन मैं नही भूला हू। तुम्हारा पाट भी सुना सकता हू। मुझे सब याद है।"

हरतन अचानक बोल उठी अच्छा, मेरे ठीक होने पर तुम क्या करोगे बकूदा ? फिर से जाकर चड़ी बाबू के ऑपेरा मे काम करोगे ?"

बकू ने कहा, 'यह सब अभी नही सोचा है।"

लेकिन अभी से सोचे बगैर काम कैसे चलेगा ? हमेशा मेरे पास बैठे रहने से तो नही चलेगा।"

बकू ने कहा 'सो तो नही ही चलेगा। तुम्हारी शादी होगी, घर-बार होगा तुम बहू बनकर अपना घर सम्हालोगी। कभी-कभी हो सकता है, तुम्हे देख आया करूगा। तुम घूघट से सिर ढके मेरे सामने आकर खड़ी होओगी, फिर अन्दर चली जाओगी।"

हरतन बोली वाह ! तुमने तो एकदम मेरे भविष्य का नक्शा ही बनाकर रख दिया। देखती हू, दूरदष्टि है तुम्हारे मे।"

बकू ने कहा, 'सच कहता हू अजना, इससे ज्यादा कुछ चाहने का अधिकार ही कहा है हम लोगो को ?"

हरतन बोली "अब यहां खड़े होकर यह नाटक करना बंद भी करो।"

बकू बोला, "रूपकुमारी का मेरा पाट देखकर कितने लोगों ने मजाक बनाया, लेकिन मैंने उसका कोई बुरा नहीं माना। लेकिन अब तुम भी अगर इस तरह मेरा मखौल उडाओगी तो मुझे अच्छा नहीं लगेगा।"

हरतन बोली, "तो मैंने ऐसी कौन-सी खराब बात कह दी। तुम्हीं क्यों सुना रहे थे मुझे वे सब फालतू बातें?"

"कौन-सी बातें?"

"वही सब कि मेरी शादी होगी। घूघट डालकर तुम्हारे सामने आऊगी क्या क्या सब कहे जा रहे थे?

तो इसम झूठ क्या कहा मैंने? तुम कभी शादी नहीं करोगी क्या? घर नहीं बसाओगी कभी? तो यह इतना बडा मकान यह इतनी सपत्ति ऐश्वय, यह सब कौन खाएगा? कौन सम्हालेगा इस सबको?"

हरतन ने कहा "ओह तो यह कहो कि मैं पैसवाली हो गई हू, यह तुमसे देखा नहीं जा रहा?

बकू ने कहा देखा जा रहा है इसीलिए तो तुम्हारे मुह पर यह सब कहने की हिम्मत आई मुझमे। इतने दिन बाद ठीक हो रही हो, इससे मेरे जितनी खुशी किसको को हुई है जरा?"

हरतन ने कहा, "लेकिन बकूदा सच कहती हू लगता है इतना आराम मिले बगैर शायद कभी पता ही नहीं चलता कि तकलीफ सहना किसे कहत हैं। इसीम तो तुम्हारे बारे म सोचकर डर लगता है। यहा से लौटकर तुम्हे बडी बाबू क्या नौकरी देंगे तुम्हे? अगर दी भी तो क्या तुम वह नौकरी कर पाओगे अब?"

बकू बोला, "मेरी चिंता छोडो, मैं भी कोई आदमी हू?

हठात् फिर नीचे से गोलमाल की आवाज आई।

हरतन ने पूछा यह कैसी आवाज हा रही है? नीचे इतना हल्ला क्यों हो रहा है? ये लोग कौन हैं?"

बकू बोला, कुछ भी तो नहीं अजना। कहा, मुझे कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा। दादा, लगता है, सरकार बाबू को डाट रहे हैं।'

नीचे गोलमाल बढ रहा था। हरतन बिस्तरे से उठने लगी।

बक् ने कहा, "तुम क्यो उठ रही हो ? मैं जाकर देख आता हू कि क्या बात है।"

लेकिन नीचे गोलमाल और भी बढ गया था। किसीके रोने की दबी आवाज, कुछ लोगो की बातचीत की आवाज, जैसे बहुत से लोग आ पहुचे थे और क्या सब कह रहे थे। इतना बडा घर, स्पष्ट कुछ भी सुनाई नही पड रहा था।

"लगता है तुम मुझसे छुपा रहे हो कुछ! बोलो क्या बात है ? क्या हुआ है नीचे ?'

बक् ने कहा, नही-नही, कुछ भी नही हुआ। तुम चुपचाप लेटी रहो। मैं जाता हू देखकर आता हू क्या बात है।"

लेकिन हरतन ने उसकी बातें नही सुनी। वह बिस्तरा छोड उठ खडी हुई। बोली 'बकूदा, तुम बेकार छिपा रहे हो, मैं समझ गई हू।" कहकर दरवाजे की ओर बढी।

बक् ने हरतन का हाथ पकड लिया और कहा, 'तुम नीचे न जाओ अजना, मेरी बात सुनो, तुम्हारी सेहत इस लायक नही है तुम अभी भी बीमार हो।'

हरतन बकू का हाथ झटककर सीढी की ओर बढ गई।

बकू चिल्लाकर उसे पकडने भागा, "अजना, सुनो डॉक्टर ने तुम्हारे लिए हिलना-डुलना मना किया है, मेरी बात सुनो।"

लेकिन तब तक नीचे से और भी जोर की आवाजें आने लगी। हरतन धम धम करती सीढी से उतरने लगी।

बकू पीछे पीछे आ रहा था, 'अजना सुनो।'

लेकिन नीचे पहुचकर हैरान रह गई। नीचे बहुत से लोग जमा थे। दीवानखाना, बराण्डा, आगन सब भर गए थे।

बकू भी उतने लोगो को देखकर हैरान था। बडी बहूजी जमीन पर बेसुध पडी थी। मालिक भी बिस्तरे पर निश्चित लेटे थे। एक काली मक्खी उनके होठो पर बैठी अपने पर हिला रही थी। और निवारण सरकार पत्थर का बुत बना खडा था। उसमे जैसे हिलने-भर की ताकत

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

हसन के दोनों ओर से पायल [illegible] ऐसी सुनाई दे रही थी हर किसीको। लगा कि मालिक इन पायल को सुन अभी उठ बैठेंगे। लेकिन मालिक उसी तरह निश्चल निथर पड़े रहे। नई बहू ने हठात् आगे बढ़कर हसन का हाथ पकड़ लिया।

आज इतने दिन बाद विजनगर की बातें याद कर सिर्फ बहू ही नहीं, मजना भी जैसे अन्यमनस्क हो उठती है। कभी वह श्रीमानी ऑपेरा की रूपकुमारी थी।

रानी रूपकुमारी। रानी ही तो। नाटक दल की नकली राजकुमारी सीधे विजनगर की सचमुच की रानी। बहू जब अपने नाटक दल के साथ जोरहाट, गोहाटी, शिवसागर और डिब्रूगढ़ की ओर जाता है तो स्टेशन के प्लेटफार्म पर लोगों की भीड़ जमा हो जाती है। पहले जैसे 'श्रीमानी ऑपेरा' के समय में होती थी। ठीक वैसे ही। लोग कहते, 'अरे श्रीमानी ऑपेरा आ रहा है, चलो चलो।'

बहू ने अपने नाम पर ही नया दल बनाया है, बहू बिहारी नाम। दाम में पहले श्री लगाकर नाम हुआ, 'श्रीदाम ऑपेरा'। [illegible] महीने पहले बुक कराए बिना 'श्रीदाम ऑपेरा' की तारीख नहीं मिलती। आज काफी नाम हो गया है 'श्रीदाम ऑपेरा' का।

हालांकि उस रोज यानी मालिक की गुजरने के रोज भी बहू इस बात की कल्पना तक न कर पाया था। खुश, हम, इसमें आराम और।

चार लोग जो किशनगंज का शुरू से आखीर तक देखते आए हैं, जिन्होंने दुलाल साहा को भी देखा है मालिक को भी देखा है, अपने पावतले की पृथ्वी किस तरह शुरू हुई, यह बात अरूर नहीं मालूम हमें, लेकिन किशनगंज को देखकर उसकी कल्पना कर सकते हैं। यह पृथ्वी ही जैसे एक बड़ा किशनगंज है। हर राज रास्ते में हम दुलाल साहो को देखते हैं मालिकों को भी देखते हैं। यहां पर कोई जीतता है तो कोई हारता है। कोई मिट्टी रौंदते चलते है तो कोई मिट्टी कपाते चलते हैं। दोनों दलों में का कोई भी हमेशा के लिए नहीं आया। लेकिन तो भी ये लोग जब तक रहते हैं इनमें एक की उन्नति होने पर दूसरे का सीना फटता है। एक के घर पूड़िया तले जाने पर दूसरे को तकलीफ होती है। एक पर विपद-आपद पड़ती है तो दूसरा चैन की सांस लेता है। अनन्तकाल से यही चला आ रहा है।

आज भी अगर कोई किशनगंज आए तो मालिक के घर के सामने जाकर चौंक उठेगा। दुलाल साहा के घर से मालिक के घर जाने के लिए पहले धूल और कीचड़ रौंदते और चक्कर काटकर जाना पड़ता था। लेकिन अब वह बात नहीं है। अब वह अचल एकाकार हो गया है। यहां से वहां तक लम्बी चारदीवारी खिंच गई है। सारी जमीन हरिसभा के नाम पर देवोत्सर्ग हो गई है। दुलाल साहा भी नहीं है। मालिक भी नहीं हैं। बड़ी बहूजी भी नहीं हैं, निवारण सरकार भी नहीं है। लेकिन फिर भी किशनगंज है। और है *किशनगंज की हरिसभा*।

अभी उस रोज तक सिर्फ निताई बसाक था। जिन्दगी भर पेंपुलबेड वाली आहर से लेकर जिस आदमी ने सुकांत राय के प्रमोशन तक को लेकर इतना हंगामा किया, उसका कोई निशान तक बाकी नहीं रहा। कोई नहीं जान सका कि किस तरह किशनगंज की 'दी इंडिया शुगर मिल्स लिमिटेड' की स्थापना हुई किस तरह पटसन के इम्पोर्ट एक्सपोर्ट का लाइसेंस हासिल हुआ तथा किशनगंज की उन्नति के पीछे किसकी हाथ सफाई थी। आखिरी दिनों में छड़ी लिए शाम के वक्त टहलने निकलता था, या कभी गाड़ी में बैठकर पूरे इलाके का चक्कर लगा लेता। ड्राइवर गाड़ी ले जाकर इच्छामती के पक्के घाट के पास खड़ी कर देता।

दुलाल साहा जब तक जिंदा रहा, उसने रोज अपने हाथ मे झाड़ू लेकर इस घाट को धोया है। जवानी के वे दिन याद आते तब दुलाल साहा और वट् माझी, मल्लाह और व्यापारियो से हरिसभा के लिए फी आदमी एक आना चदा उगाया करते थे। सिर्फ याद ही करता था उस सबके बारे मे, कहनेवाला या सुनेनवाला कोइ बाकी नही रहा था किशनगज मे। पाकिस्तान से आए नये-नये लोग किशनगज मे बस गए हैं। जिन्हे गज की ओर जगह नही मिली, वे लोग मछुआटोली की ओर जाकर बस गए हैं। किशनगज पूरी तरह भर गया है। नये आए रिफ्यूजियो ने कपड़े और बतनो की दुकानें खोल ली हैं। गज, बाजार और सडक पर ये लोग जैसे छा गए है। इनकी वजह से सडक पर मोटर चलाना तक दूभर हो गया है। साइकल लिए जैसे सिर पर ही गिर पडते है।

बाद मे हठात् एक दिन निताई बसाक भी मर गया।

अखबारो म जब निताई बसाक के मरने की खबर छपी तो खबर के साथ उसकी फोटो भी छपी थी। फोटो के नीचे शोक सवाद मे निताई बसाक के अनेक गुणो का बखान था। लिखा था 'आप किशनगज के प्रात स्मरणीय व्यक्ति थे। इन्होके परिश्रम एव उद्योग से किशनगज मे विभिन्न सेवा प्रतिष्ठानो की स्थापना हुई थी। वे एक ही साथ कमठ व्यवसायी और सन्यासी थे। विभिन्न जनहितकारी सस्थाओ से युक्त रहकर आप निरासक्त भाव से आजीवन कमरत रहे। उनकी मत्यु से राममोहन रवीद्रनाथ, विद्यासागर और विवेकानद के देश ने एक और कमवीर खो दिया है। हम उनकी पारलौकिक आत्मा के लिए शाति की कामना करते हैं एवम् उनके अनगिनत शोकसतप्त गुणग्राही श्रद्धालुओ के लिए हार्दिक सहानुभूति की कामना करते है।'

इस जमाने के नये लोग अखबार पढकर 'अहा' कर उठे। सचमुच देश से एक महापुरुष उठ गया। इसीलिए जिस रोज किशनगज मे निताई बसाक के लिए शोकसभा हुई तो सिर्फ एक आदमी था जो हैरान था और वह था सुकात। यह वसे हो सकता है ? यह भी सभव है ? कितने लोगो को देने का नाम कर यह आदमी सुकात से कितने रुपय ऐंठ चुका

है लेकिन सब पैसा भी रान्टन विश्हम में किसीके पास नहीं पहुंचा। कुमार का प्रमोशन भी नहीं हुआ, तरक्की भी नहीं हुई। अभी भी वह किशनगंज के मल्हुआटोली में बी०डी०ओ० हो है और कुछ भी नहीं हो पाया।

सिर्फ है ही नहीं मालिक और कुमार साहब के झगड़े की शुरुआत से लेकर अन्तिम परिणति तक उसका दखल है।

यह परिणति जितनी अप्रत्याशित थी, उतनी ही आश्चर्यजनक! इसी तरह मानव जीवन की परिणति होता है। बन्नू बिहारी जिस दिन हरमन को लेकर मालिक का घर छोड़कर गया उस रोज कुमार भी वहां मौजूद था। वही क्यों सभी लोग थे। सभी लोग वहां मौजूद थे।

किशनगंज में उस रोज सनसनी मच गई। मल्हुआटोली, उत्तरटोली, दक्षिण टोली और गंज के लोग आकर मालिक के घर जमा हुए थे।

जो सुनता यही कहता—क्या हुआ? कहां चल दिए?

इसने उसके मुंह से सुना, उसने उसके मुंह से। किसीने अपनी आंखों नहीं देखा था। सब सुनी-सुनाई बात थी। सुनी बात का यकीन नहीं, इसीलिए सभी अपनी आंखों देखने दौड़ रहे थे। इतने ताज्जुब की बात को देखे बगैर रहा जा सकता है भला?

सच कहते हो?'

'अजी सच नहीं तो क्या ऐसे ही कामकाज छोड़कर फिजूल भाग रहा हूं?'

किसीने देखा नहीं लेकिन घटना सभीने सुनी है। सुना कि इतने दिन बाद मालिक की असली पोती का पता चला है।

'तब इतने दिन से घर में जो थी वह कौन है?'

'वह कौन है, वहां पहुंचने पर ही पता चल जाएगा। हमने क्या देखा है? हम तो सुनी सुनाई बात कह रहे हैं।"

उस रोज किशनगंज में हर कोई उस सुनी सुनाई बात को परखने मालिक के घर पहुंचे थे। लेकिन आकर जो देखा उसके बाद दांतों तले उंगली दबाने के अलावा कोई रास्ता नहीं बचा उनके पास। हर जबान पर एक ही बात थी। आश्चर्य! ऐसी परिणति हो सकती है इंसान की

जिन्दगी म ! सभी जाते ह मानिक भी गए लेकिन जाने म पहले यह सब देख लेते तो उनका ऐसा नुकसान हो पाता? उनका तो कुछ पता भी नही चल पाया। व ता अपन भाग्यदेवता के नाम एक हल्का सा अभियोग भी नही कर पाए। कह नही पाए कि प्रभु, मैंन जो भी चाहा, तुमने सभी दिया लकिन इस मर्मान्तक रूप मे दिए बगैर क्या काम नही चलता था? वैसा करन म क्या आपकी महासृष्टि के काय मे कोई बडी हानि हो जाती ?

नई बहू अभी भी अपन को पूरी तरह सम्हाल नही पाई थी।

दुलाल साहा भी जसे इन पीढियो म सिमटकर छोटा हो गया था। दोलगोविंद घटक को लिए जब पुलिसवाले वापस आए तब पूरे किशनगज की तस्वीर ही जैसे बदल गई।

पुलिस के दरोगा ने दोलगोविंद से पूछा था, "लेकिन तुमने यह सबनाश क्यो किया ?"

पागल म भी जसे पाप बोध अभी बाकी था। उसन कहा, "मेरी मति मारी गई थी हुजूर ! मैं उस वक्त पद्रह भरी सोने का लोभ नही छोड पाया।"

"लेकिन तुमने एक बार भी नही सोचा कि तुम दुलाल बाबू जैसे धार्मिक आदमी का सबनाश करने जा रहे हो ?"

'सोचा क्यो नही हुजूर ?"

तब फिर ऐसा काम क्या किया ?"

"मैंने कहा न हुजूर पद्रह भरी सोन के लोभ मे। वह सोना भी नही मिला। मेरा भी सबनाश हो गया।

इसके बाद गाव के कुछ लोग आकर खडे हुए। नई बहू की एक बुआ थी वह भी नही थी अब। उनके मरन के बाद वह सपत्ति भी नई बहू की हो गई।

निताई बसाक और दुलाल साहा ने उस सपत्ति को बेचकर रुपया भी ले लिया। इसलिए गाव के किसी आदमी न सोचा भी न था कि इतने दिन बाद वही पोती फिर आएगी उस गाव मे।

"लेकिन तुम्हें यह कैसे पता चला कि मछुए की लड़की है ?"

"जी शादी से पहले इनकी बुआ से ही सुना था। इसीलिए तो शादी नही हो रही थी कहीं।'

नई बहू अचानक बोल उठी, "झूठ बात, ऐसा कुछ होता तो मुझे भी पता चलता। तुम झूठ बोल रहे हो।"

नहीं बिटिया पहले भी कितनी बार झूठ बोल चुका हू। आज उस पाप का फल भी भोग रहा हू। मेरी अपनी लड़की भी शायद इसी पाप से मर गई। जिसके भले के लिए मैंने सदानंद की बात में आकर झूठ बोला था वही अब नही है। अब और किसके लिए झूठ बोलू ? कौन है मेरा ?

'तो फिर क्यों कह रहे हो कि मैं मछुआ की लड़की हू, मेरी बुआ, मेरी अपनी बुआ नही थी ?

'नही मा, नही '

सबूत है तुम्हारे पास ?'

दोलगोविंद ने कहा, "वह सबूत देने ही तो आया हू यहा।"

ठीक है तो सबूत दो।"

दोलगोविंद ने कहा 'अच्छा, आप लोग जरा रुकिए," कहकर कहीं चला गया और थोडी ही देर में एक बूढ़े आदमी को लेकर वापस आया। उस आदमी की उम्र करीब नब्बे साल की होगी। उस आदमी ने आकर सब लोगों को प्रणाम किया। उम्र के बोझ से कमर झुक गई थी। आखो से दिखाई भी ठीक से नही देता था।

' आप लोग इसीसे पूछ लीजिए जो कुछ पूछना है।'

दरोगा साहब ने पूछा, "क्या नाम है तुम्हारा ?'

' हुजूर, कालीचरण माइती।'

"कहा रहते हो ?'

"हुजूर, और कहा रहूगा, उसी गाव मे रहता हू।

"दोलगोविंद घटक को जानते हो ?"

"खूब अच्छी तरह से।

इन महिला को पहचानते हो ?'

मैं टकटकी लगाए उस औरत की गोद की लडकी को देख रहा था। गुसाई मा भी देख रही थी। गुसाई मा न मेरी ओर देखा। पराण को हम लोग जानते थ हुजूर ! गुसाई मा तो मछली खाती नही थी, लेकिन वह मछली पकडकर घर-घर बेचता था। उस सब जानते थे। मैंने सोचा, इतने घरो के रहते यह गुसाइ मा के घर ही क्यो आई है ?

गुसाई मा ने ही पूछा, 'गोद की लडकी कौन है री ?'

पराण की वहू बोली रास्ते मे पडी मिली गुसाई मा !

'पडी मिली ?

गुसाई मा शायद सपन की बात साच रही थी।

पराण मछुए की बहू की गोद वाली लडकी गुसाई मा की गाद म आन के लिए हाथ फैला रही थी। छटपट कर रही थी। गुसाई मा को लगा सपने म भी लक्ष्मी ठीक इसी तरह उनका ओर देख रही थी।

गुसाई मा लडकी को गोद मे लेकर चूमने लगी।

फिर बोली इस लडकी का मरे पास छोड दे बडी प्यारी लडकी है री '

पराण की वहू बोली, 'तो मुझे भी रहने दो मा, मेरा घर वार सब चला गया। तुम्हारे पास ही पडी रहूगी।

'लेकिन यह लडकी ह किसकी ? खोज-खबर नही की कुछ ?'

'नही गुसाई मा किसीने खाज नही की। सुबह सुबह बैगन लेने खेत गई—वही मिली थी यह लडकी। लेकिन किसीस कहना नही गुसाई मा ! बाद म भी किसीने इतने दिन खोज-खबर नही ली। तब स मेरे पास ही बनी है। मैंने इस बारे मे किसीसे कुछ भी नही कहा है गुसाई मा '

'तेरे मुहल्ले मे मालूम है सबका ?'

'मैंने कह रखा है कि यह मेरे बहन की लडकी है। बहन मेरे पास छोड गई है इस।'

तो गुसाई मा न उस रोज ही पराण मछुए की वहू से लडकी का ले लिया। उसी रोज स मा लक्ष्मी गुसाई मा के पास रह गई। इसके बाद जब तक पराण मछुआ और उसकी बहू जिंदा रहे, गुसाई मा चावल,

दाल और कपडे देती रही। जैसे-जैसे दिन बीत रहे थे, गुसाई मा की भी बढोतरी होने लगी। और भी जमीन हुई पैसा भी आया, घर और भी बडा हुआ—मैं रानी बिटिया को रखता था, गुसाई मा भी दिन भर मा लक्ष्मी का लेकर व्यस्त रहती थी।

बाद मे जब मा लक्ष्मी बडी हुई तो यह दोलगोविंद घटक एक दिन आया। उसने कहा, 'एक अच्छा लडका है, अगर विवाह करना हो तो ' मैंने कहा, 'लेकिन मा लक्ष्मी गुसाई मा की अपनी नातनी नहीं हैं।'

दोलगोविंद ने पूछा, 'तब किसकी हैं ?'

मैंने सब कुछ साफ साफ कह दिया। दोलगोविंद बोला, 'इसके माने मछुए की लडकी है ?

गुसाई मा मेरी बात सुनकर बहुत नाराज हुईं। कहने लगी, 'तुझे हर बात मे टाग अडाने की क्या जरूरत है ? तू क्यो बोलने गया कि मेरी नातनी नही है ? मैंने तो इसका गोत्र भी बदल दिया है। पुरोहित बुलाकर गोद भी ले लिया है, अब तो यह मेरी ही जाति की है।'

इसपर भी मेरा मन नही मान रहा था। तब गुसाई मा ने नाराज होकर चटर्जी लोगो के साथ मुझे काशी भेज दिया। मैं भी काशी चला गया। चटर्जी परिवार एक महीने काशी रहकर वापस चला आया और मैं वही रह गया। गुसाई मा हर महीने रुपये भेजती।

बाद म मा लक्ष्मी के विवाह पर काशी से आया। गुसाई मां मुझसे बोली, कालीचरण अब किसीसे कह नही देना कि यह मेरी नातनी नही है। इसके विवाह म आने की तेरी इच्छा थी इसीलिए तुझे बुलवाया है ब्याह हो जाने पर तुझे वापस काशी जाना है।'

ठीक है चला जाऊगा', इसके अलावा मुझे इस सब पचडे मे पडने की जरूरत भी क्या थी। मा लक्ष्मी के ब्याह म जी भरकर माल उडाए और जी भरकर आशीर्वाद दिया।"

इतनी देर तक सब लोग मास रोके कालीचरण माइती की कहानी सुन रहे थे। दोलगोविंद घटक, दरोगा, पुलिस वाले, दुलाल साहा, निताई बसाक और नई बहू—सभी।

कालीचरण माइती बोलते-बोलत रुक गया। नब्बे साल का बूढा आदमी। आखो से ठीक से देख भी नही पाता, बात भी नही कर पाता ठीक से। दात सार गिर चुके हैं। चमडी यूल गई है।

दरोगा साहब ने पूछा, 'फिर ? इसके बाद क्या हुआ ?''

कालीचरण माइती कहन लगा, ''पराण मछुए की बहू ने शुरू म कुछ भी नही कहा, हम लोगो न भी कुछ नही पूछा। पूछने की जरूरत भी क्या थी, आप ही कहिए ? पराण की वह गुसाई मा के पास रहती और घर का काम-काज करती। वाकई उस बार मछुआटोली म बडे जोर का आधी पानी बरसा था। नदी को भी न जाने क्या हुआ कि तभी से इस ओर की बाड ताडकर मामारकपुर की ओर के खेतो को अपनी चपेट म ले लिया। मछुआटोली ही खत्म हो गया गाव से। '

नई बहू ने अचानक कहा, लेकिन मैं मछुए की लडकी हू इस बात का कोई सबूत तो तुम नही दे पाए ?''

कालीचरण न कहा, जी, वही कहने जा रहा हू रानी बिटिया ! तुम्हारे आने के बाद से गुसाई मा की हालत अच्छी होन लगी थी। इसी-लिए गुसाई मा भी मा लक्ष्मी की तरह तुम्हारी सेवा करती। गुसाई मा कहती, कालीचरण यह मेरी मा लक्ष्मी है, इससे कुछ न कहना तू।' उन दिनो तुम शैतान भी तो कम नही थी रानी बिटिया। मुझे कितना नोचा-खसोटा है तुमन फिर भी मा लक्ष्मी मानकर हमेशा छाती से लगाए रखना। वैस भी गुसाई मा की वजह स कुछ भी कहना मुश्किल था। '

दरोगा साहब बोले, अच्छा, इन बातो को छोडो, असली बात कहो—तुम्ह कैसे मालूम हुआ कि य मछुए की लडकी हैं ?''

'कहता हू हुजूर, बूढा आदमी हू इसीलिए बात ठीक से नही कर पाता। माफी चाहता हू। हा तो पराण की बहू बीमार हा गई एक दिन। गाव मे बीमार कितने ही हुआ करते है, लेकिन पराण की बहू फिर ठीक नही हुई।'

' ठीक नही हुई ?''

" जी हा फिर ठीक नही हुई। मर ही गई बेचारी ! अहा, उन दिनो की बातें जस आज भी नजरो के आगे घूम रही हैं। मरने से एक

दिन पहले पराण की बहू ने मुझे बुलाया। उसने कहा, 'कालीचरण, मैं तो जा रही हू। लेकिन जाने से पहले दो बात कहना चाहती हू तुमसे, बगैर कहे जी नही मान रहा।

मैंने आगे झुककर पूछा, 'क्या कहना चाहती हो पराण की बहू ?'

उसने कहा, कालीचरण एक बार गुसाई मा को बुला दो।'

मैंने पूछा, 'क्यो ? गुसाई मा को किसलिए बुला रही हो ? अभी तो वो सो रही हैं।'

पराण की बहू ने कहा, 'गुसाई मा से कहे बगैर मैं जा नही पा रही कालीचरण ! मेरे पाप का बोझ हलका नही होगा।'

क्या करता उतनी रात गए गुसाई मा को बुलाकर लाया। सारे दिन के काम काज के बाद गुसाई मा बेसुध सोई थी।

मेरे पुकारने पर उठकर बोली, 'क्या हु आ ? इतनी रात म क्यो पुकार रहा है ?'

मैंने कहा 'पराण की बहू की हालत खराब है, तुम्हे बुला रही है, एक बार।

गुसाई मा पराण की बहू के पास गई। और उसके मुह के पास मुह ले जाते ही पराण की बहू ने गुसाई मा से कुछ कहा। गुसाई मा न मेरी ओर देखकर कहा 'कालीचरण जा तो, जाकर हराधन वैद्य को एक बार बुला ला, कहना, गुसाई मा न बुलाया है साथ म मकरध्वज लाने को कहना।'

'गुसाई मा की बात सुनकर मैं दौडा दौडा हराधन वैद्य को लाने गया। जी हा, लेकिन वैद्यजी जब तक आए सब कुछ खत्म हो गया था। पराण की बहू इस दुनिया को छोडकर जा चुकी थी। उसके बाद और क्या ! सब खत्म हो चुका था।

मैं तो तब भी यही समझता था हुजूर कि पराण की बहू ने जो कहा था, वही सत्य है।

एक दिन मैंने गुसाई मा से पूछा था, 'पराण की बहू न तुमसे क्या कहा गुसाई मा ? मरने से पहले क्या कहने को बुलाया था उसने ?'

काफी देर तक पीछे पड़ने के बाद गुसाईं मा ने कहा था, 'पराण की बहू ने कहा था कि मा लक्ष्मी उसे रास्ते मे पड़ी मिली लड़की नहीं है। यह उसकी जात के किशनगज के बसत मछुए के लड़के सत्य मछुए की लड़की है। मछुए की लड़की बोलकर कहीं हम घर में रखने को राजी न हो इसीलिए उसने कह दिया था कि वह उस रास्ते मे पड़ी मिली।

मैंने गुसाईं मा से पूछा भी था कि सत्य मछुआ अपनी लड़की को पराण की बहू के पास क्यों छोड़ गया ?'

गुसाईं मा ने कहा था, सत्य मछुए की बहू इस लड़की के पैदा होते ही मर गई थी। उसे देखने वाला कोई नहीं था। उधर सत्य मछुए को हावड़ा की किसी जूट मिल मे नौकरी भी मिल गई थी। बिन मा की लड़की को कहा रखता ? इसीलिए उसे पराण की बहू के पास छोड़ गया।'

हुजूर, सब विधि का विधान है। मैं गुसाईं मा का नौकर ठहरा, उन्होंने जो कुछ कहा मैंने मान लिया।

बाद म यह दोलगोविंद घटक एक दिन विवाह का सबध लाए। चुपचाप ब्याह भी हो गया। किसीको कुछ भी पता नहीं चल पाया। मैं तो पहले ही काशी चला गया था। विवाह पर दो दिन के लिए आकर फिर वापस वहीं चला गया। उसके बाद आज आप लोग आए है। जी खोलकर इतने दिन बाद रानी बिटिया को देख लिया।

कहकर कालीचरण रुका।

दरोगा बाबू को जो लिखना था, उन्होंने लिख दिया।

दुलाल साहा, निताई बसाक, नई बहू और दोलगोविंद सब के-सब किशनगज की ओर लौट पड़े। लौटते वक्त दोलगोविंद घटक फूट-फूटकर रोने लगा। बोला "यह सवनाश मैंने ही किया है साहाजी, भगवान ने इसके लिए मुझ सजा भी दे दी अब आप लोग भी मुझे सजा दें हुजूर ! जो भी सजा देंगे, मैं सिर झुकाकर स्वीकार कर लूगा।'

कहकर दोलगोविंद ने वहीं रास्ते मे ही सिर झुका दिया।

आज भी किशनगंज मे जाने पर देखा जा सकता है, 'दि इंडिया शुगर मिल लिमिटेड' के ऑफिस के सामने तीन बडे-बडे स्टेच्यू खड़े हैं। तीनो ही पत्थर के हैं। असली सफेद संगमरमर के। बीच मे मालिक की मूर्ति है—कीर्तिश्वर भट्टाचार्य। दोनो ओर दो जने और। एक ओर दुलाल साहा और दूसरी ओर निताई बसाक।

तीनो मूर्तियां ही नई बहू ने बनवाई हैं। तीनो के नीचे उनका नाम, धाम और परिचय लिखा है, काले अक्षरो मे।

किशनगंज की पहली वाली शक्ल अब नही रह गई है। नई पक्की सडकें और इलैक्ट्रिक लाइट वगैरह सब कुछ ने मिलकर जगह को जैसे बदल ही दिया है।

बडे चातरा से उस रोज लौटने के बाद दुलाल साहा के घर कुछ दिन तक सन्नाटा छाया रहा। दुलाल साहा, निताई बसाक और नई बहू सभी जैसे बदल से गए थे। ऐसा भी हो सकता है कोई सोच भी न पाया था।

नई बहू उसी रोज घर से चली जाना चाहती थी। बोली, 'मैं अब इस घर का जल भी स्पर्श नही करूंगी बाबा! आप मुझे मुक्ति दें।'

निताई बसाक ने कहा था 'यह कैसे हो सकता है? तुम जाओगी कहां नई बहू?'

नई बहू ने कहा, 'जहां भी जाऊं, इस घर मे रहने का अधिकार अब मुझे नही है।'

विजय काफी देर से चुप खडा था। अब उसने कहा, 'तुम यह घर छोडकर जाओगी तो मुझे भी तुम्हारे साथ जाना पडेगा।'

'तुम क्यो जाओगे? जाना होगा तो मैं अकेली ही जाऊंगी। तुम्हे मेरे साथ जाने की जरूरत नही है।'

दुलाल साहा ने कुछ भी नही कहा। हरिनाम की माला झोली लिए और भी तेजी से फेरने लगा।

उसने कहा था, 'दुनिया सब माया है एक हरिनाम ही सत्य है—पापियो के तारने के लिए एक हरिनाम का ही भरोसा है।

लेकिन हरि ही जो एकमात्र भरोसा है इसका प्रमाण भी आखिर मिल ही गया। दो दिन बाद ही पुलिस और दरोगा फिर आ पहुंचे किशन-

गज म दुलालसाहा के घर।

आते ही दरोगा साहब बोले, "सारी समस्याओ का समाधान हो गया साहाजी!"

दुलाल साहा माला जपते जपते ही बोना कैसे ?"

दरागा साहब ने कहा, 'यह किसे लाया हू देखिए।"

'यह कौन है ? '

यह सत्य मछुआ हावडे की जूट मिल मे काम करता है यह सब जानता है।'

'क्या जानता है ?"

दरागा साहब बोले लेकिन उसस पहले सबको यहा बुलाइए यह सब बतलाएगा—अपने निताई बाबू को बुलाइए नई बहू रानी को बुलाइए अपने लडके विजय बाबू को भी बुलवाइए।'

दुलाल साहा ने कात से कहा, 'कात बुला तो सबको जरा।'

कात अदर चला गया।

'श्रीदाम ऑपिरा' जहा भी जाता वही रानी रूपकुमारी' देखने के लिए लोगा की भीड टूट पडती। चडी बाबू के श्रीमानी आपेरा' का अब कोई नाम भी नही लेता। वह दल भी टूट गया है अब—चडी बाबू भी मर चुके है। अब श्रीदाम ऑपिरा का बाजार गम है। रानी रूपकुमारी' अराकान के राजा की लडकी। अराकान के राजा, राज्य खोकर वन-जगलो मे भटक रहे है। राजा मे विद्रोह हो गया हैं। साथ मे रानी रूप कुमारी' और कन्या बहिबाला है। कुमारी कन्या। रास्ता भूलकर तीनो तीन दिशा मे चले गए है। बडी रोचक घटना है। अजना की वजह से किस्सा और भी जम गया है। एकबार सुनना शुरू करने पर ठेक आखिर तक सुनना पडता है। दशक विभोर हो जाते हैं। अजना का पाट देखने के लिए लोग एक दूसरे पर गिर पडते हैं।

चडी बाबू के पास पहुचकर उस रोज बकू ने काफी झमेला खडा कर दिया था।

सब लोग चीख पुकार सुन, 'श्रीमानी ऑपेरा' के चितपुर के आफिस

मे घुम आ रहे थे।

बकू का माथा अभी भी गम था। गम होने के सिवाय चारा भी नहीं था कुछ।

लेकिन तुमने उसे मारा क्यो ?"

'मारू गा नही ? झूठ क्या बोला तुम्हारा अधिकारी ? '

झूठ ? झूठ कब बोले ?"

उसने क्या कहा था कि अजना ही असल म हुस्तन है ? अजना तो हुस्तन नही है।'

क्या कहते हो तुम ?"

बडी बाबू शायद जरा सम्हल गए थे। बकू के घूस की चोट से आख-नाक फूल गए थे।

उन्होने कहा ' मैं क्या ऐसे ही झूठ बोला था। देखा, भला आदमी पोती पोती करके पागल होकर यहा वहा उसको ढूढता भटक रहा है। उधर अपनी अजना को भी राजरोग हो गया था। दल का नुकसान तो हुआ ही। उसकी चिकित्सा भी नही हो पा रही थी ठीक से। इतनी कीमती दवाए पथ्य कौन खिलाए, जिसके पास इतना पसा है? मैंने सोचा, मालिक का ऐसा खास कुछ नुकसान भी नही होगा। लडकी मिलने का लाभ होगा सो अलग। अजना का भी फायदा था। जरा सा झूठ बोलकर अगर लडकी के इलाज का इतजाम हो तो इसम मैंने ऐसा क्या अन्याय कर डाला, सुनू तो जरा ?"

' लेकिन इसीलिए एक ब्राह्मण को इस तरह सताएगे ? इतने रुपये का कर्जदार बना देंगे उस ? बेचारे मालिक को क्या चैन मिल पाया ? कर्ज ले लेकर अजना को ठीक कर दिया, इससे अजना का उपकार हुआ यह ठीक ह, लेकिन वे इतना कर्जा विधवा महिला के माथे पर रखकर मर गए उसका भुगतान कौन करेगा ?"

लेकिन इन सब तर्कों को कौन सुनता और कौन समझता, किसीके पास इतना वक्त नही था। बडी बाबू को भी यह सब अच्छा नहीं लग रहा था।

लेकिन किशनगज पहुचते ही एक घटना और हो गई।

मालिक के घर के आगे उस समय खासी भीड़ जमा हो गई थी। दुलाल साहा आया है, निताई बसाक आया है, सुकान्त राय आया है, विजय और नई बहू भी आए हैं। और आए हैं पुलिस के दरोगा साहब। साथ में एक जना और

"यह आदमी कौन है?"

'अरे इसका नाम तो सत्य मछुआ है।'

दरोगा साहब ने कहा 'इसीका नाम है सत्य मछुआ। इससे आपको सब पता चल जाएगा, आपकी पोती हरतन इसीको मिली थी।'

सामने बड़ी बहूजी थीं। उनके आंसू अभी सूखे भी न थे। हमेशा की कम बोलनेवाली हैं लेकिन आज तो जैसे हमेशा के लिए गूंगी हो गई थीं।

"बोलो सत्य बड़ी बहूजी को सब कुछ बतला दो।"

उस दिन सत्य ने जो कुछ कहा, वह इतना अमानवीय था कि नाटक जैसा लग रहा था। फिर भी पूरा सत्य था। सत्य ने सब कुछ कह दिया। जो सुन रहे थे, उन्होंने दांतों तले उंगली दबा ली। इस जमाने में ऐसा कुछ भी हो सकता है?

सत्य मछुए ने कहा 'पूरा दोष मेरा ही है रानी मां, इस सबके लिए मैं ही जिम्मेवार हूं—उस दिन श्मशान में मैं ही अकेला था, और सब के सब आंधी पानी की वजह से घर चले गए थे। कुछ दिन पहले मेरी बहू की एक लड़की मर गई थी। उस लड़की के मरने के बाद से मेरी बहू की हालत पागलों जैसी हो गई थी। मैं भी हरतन को श्मशान में उसी हालत में छोड़कर एक बार घर चला गया था। बहू को देखकर फिर श्मशान आया। तब तक आंधी और पानी बंद हो गया था। पास जाकर देखा, हैरानी की बात थी। देखा हरतन जैसे हिल रही थी। मैं चौंक उठा। फिर से जिन्दा हो गई क्या? उसके सीने पर हाथ रखकर देखा, धुक धुक हो रही थी। जल्दी जल्दी में एक बात मेरे दिमाग में आई। लड़की को गोद में उठाकर घर पहुंचा। आंच जलाकर सेंक किया—लड़की अगर बच जाए! देखा बहू भी खूब सेवा कर रही थी।

मेरी बहू ने पूछा, यह कौन है?'

मैंने कहा, 'मालिक की पोती है।'

इसके बाद दो-तीन रोज इसी तरह कट गए, लडकी भी चगी हो गई। वहू की हालत मे भी काफी सुधार हो गया था। लडकी को जैसे गोद स उतारना ही नही चाहतीथी। "

"फिर ?"

सब सास रोके सत्य की बात सुन रहे थ।

पूछने लगे, 'उसके बाद फिर क्या हुआ ?

' उसके बाद, जी, सब कहता हू। आप लोगो को पूरी बात सुनाऊगा। मैंने पता किया, अपने पाडे मे किसीको यह बात मालूम हुई या नही। किसीको मालूम नही हुआ था। पता चलन पर तो मालिक अपनी पोती को ले जाएग मेरी वहू फिर पागल हो जाएगी इसीलिए इस बारे मे किसी-से कुछ नही कहा। मालिक की पोती को गोद म ले रातोरात किशनगज छोडकर मोहनपुर चला गया। सभीसे कह दिया, यह मेरी अपनी लडकी है। लेकिन विधि के विधान के आग किसका बस चलता है। रानी मां, एक दिन मेरी वह वहू भी मर गई। जिसके लिए परायी पोती को अपनी बतला रहा था वह वहू ही आखिर न रही! अब हरतन का क्या करता? मेरी एक बहन बर्द्धमान जिले के बडे चातरा म थी। हरतन को वही छोड आया। कह आया था कि इसके बारे म किसीको न बतलाए, नही तो गजब हो जाएगा। और उसके बाद हावडा की जूट मिल मे नौकरी मिल गई। वहा फिर से ब्याह भी किया। एक लडका भी हुआ। उस लडके का नाम निकुज है। मेरी भी उम्र हो चली है रानी मा, अपन पापा की कहानी आपको सुना दी। जब दरोगा साहब ने आकर सारी बातें पूछी तो फिर मैं कुछ भी छुपा नही पाया। अब मुझे जो भी सजा दें, मजूर है।"

सजा कौन देता है और कौन लेता ही है। इस जगत् मे दडनायक को अगर कोई कभी देख पाता तो शायद एक रोज उससे मुकाबला करता। लेकिन सबसे मजे की बात यह है कि उस दडनायक को कभी देखा नही जा सकता। देखा नही जा सकता, इसीलिए कभी मुकाबला भी नही होगा। मुकाबला होने पर हो सकता है, इस कहानी का अत कुछ और

होता। अजना ही, हो सकता है, असली हस्तन होती, मालिक भी, हो सकता है फिर से ऐश्वयशाली होकर किशनगज मे कर्ता धर्ता होते, और दुलाल साहा पुलिस की हथकडी पहन जेलखाने मे सडता।

लेकिन अत वैसा नही हुआ। आप और हम जिस तरह हर चीज का अत देखकर खुश होते हैं, इस कहानी का अत मैं उस तरह नही कर पा रहा। मालिक नही है दुलाल साहा नही है। निताई वसाक भी नही है, निवारण सरकार भी नही है। है सिर्फ बी० डी० ओ० सुकात राय। इसके अलावा दुलाल साहा का लडका विजय साहा और नई बहू। नई बहू ही अब मालिक के इतने बडे घर की मालकिन है। इस वश की लडकी एक दिन खो जाने के बाद फिर किस तरह घटनाचक्र से वापस आ गई और सब कुछ उलट-पुलटकर पूरी कहानी का मोड भी बदल डाला।

जाने वाले दिन नई बहू ने अजना से पूछा था, 'तुम जा क्यो रही हो ? मैंने तो तुमसे चले जाने को नही कहा ? तुम यही रहो न !"

अजना न कहा, "मैं नाटक दल की लडकी हू हम लोगो को क्या घर के अदर अच्छा लगता है ?"

नई बहू बोली, "नाटक दल की होने पर भी आखिर हो तो औरत ! और औरत होकर घर-बार अच्छा न लगे, यह भी कभी सभव है ?"

अजना ने कहा, "घर म इतन दिन रहकर देख लिया कि घर-बार क्या चीज है। इस सबके बाद अब तुम मुझसे घर गृहस्थी के झझट मे पडने को मत कहो।'

'क्यो ? घर ने ऐसा कौन सा दोष किया है ?"

अजना ने कहा, "हम लोगो ने नाटक-दल का परिवार देखा है इस लिए कहती हू कि इससे हजार गुना अच्छा है।'

"तुम मुझपर गुस्सा होकर यह बात कहती हो ?"

अजना ने कहा था, 'अरे नही, गुस्सा नही किया। सच कहती हू, हमारा वह परिवार कही ज्यादा अच्छा है। वहा हम खडिया घोलकर उसे दूध मानकर पीते हैं, यह सच है, लेकिन उसे पीने के बाद इतनी कैफियत नही देनी पडती।"

नई बहू ने ताना पकड लिया। उसने कहा, लेकिन उसके लिए मैं

तो प्रायश्चित्त करने को राजी हू। तुम इसतरह तान क्यो द रही हो ? मैंने तो पहले ही कह दिया कि तुम यहीं रहो।"

अजना हसकर नई बहू से लिपट गई। फिर बोली, 'तुम मेरी बात का बुरा क्यो मानती हो ? मैंने ऐसा थोडे ही कहा है।"

नई बहू ने कहा था, 'ठीक है, लेकिन तुम गुस्से नहीं हो, इसका प्रमाण देती जाओ।'

प्रमाण कैसे दू ?'

'एक दिन यहा नाटक के गीत गाकर वचन दो एक दिन समय होने पर इसी चौक मे तुम अपना गीत सुनाओगी।"

'यह बात ठीक है।"

'लेकिन वायदा करो कभी स्वप्न म भी नही सोचोगी कि मैंने तुम्हे भगा दिया ?"

अजना बोली, "ओ मा ऐसा क्या सोचने लगी ? मैं तो खुद ही जा रही हू। तब क्या इतनी देर से मैं तुमसे झूठ बोल रही थी ? सच कहती हू, यकीन मानो, यह जो दादा मर गए हमारे नाटक की दुनिया मे ऐसा नही होता। वहा यात्रा होते समय राजा रानी मरते हैं लेकिन अन्दर मेकअप रूम म जाकर वे जिन्दा हो जाते ह। तुम लोगो की दुनिया के नियम-कानून अलग ही हैं। यह सब मुझे अच्छा नही लग रहा भाई मैं चलती हू।'

फिर जाते-जाते रुककर बोली 'हमारी उस दुनिया मे राम रावण का युद्ध होने पर राम की ही विजय होती ह, रावण की नही। लेकिन तुम्हारे यहा तो सब कुछ उलटा ह।"

कहकर गाडी म जा बैठी। पीछे पीछे बकू भी जाकर बैठ गया।

इसके बाद गाव के सब लोगो के देखते देखते उन लोगो की गाडी किशनगज की सडक से होकर सामने की ओर अदृश्य हो गई। किसीने पुकारकर उन्हे रोका भी नही। जगत की रीति देखकर वे लोग जैसे हतवाक निस्तब्ध और निर्मम हो गए।

हा, तो आज का किशनगज वह किशनगज नही रह गया है, वह तो

पहले ही कह चुका हू। अब दुलाल साहा के घर से लेकर मालिक के घर तक चारदीवारी खिंच गई है। सब मिलाकर एक विशाल इमारत हो गई है।

'श्रीदाम आपरा' आकर यहा एक रोज नाटक भी कर चुका है। बकू आया था, अजना भी आई थी। मालिक के मकान के सामने वाले प्रागण मे अजना ने 'रानी रूपकुमारी' का पाट किया था। महफिल म उसने सुर मे गाया था

कहा जाऊ, कहा जाऊ, मैं अबला नारी।
कौन यहा अपना
कहा पाऊ शरण, हे अन्तर्यामी

उसका यह अभिनय देखकर लोग आसू नही रोक पाते। और उसके बाद ही उसके साथियो ने आकर एक नाच दिखलाकर महफिल को जीत लिया था।

पवन की पालकी चढकर स्वग जाऊ

बाद मे लोग ठहाका मारकर हसने लगे।

लेकिन आश्चय, एक दिन किशनगज का नाम पलटकर दुलालगज हो गया। कलकत्ते के किसी एक मिनिस्टर ने आकर नाम परिवतन के उस उत्सव को सपन्न किया। वह खबर और उस उत्सव के फोटो बडे आडम्बर के साथ अखबारो म भी छपे। उसके पीछे किसके कितने हजार खच हुए यह बात गोपनीय ही रही। दुलाल साहा कितने बडे आदमी थे, इस बात के प्रचार मे कोई कमी नही रखी गई। सबको नये सिरे से पता चला—दुलाल साहा गरीबो के कितने बडे हितैषी, लाचारो के सहायक और सवत्यागी सन्यासी थे। स्टेशन का नाम दुलाल साहा के साथ जोड-कर इस महापुरुष को चिरस्मरणीय बनाए रखने की व्यवस्था की गई—'जय! जय महापुरुष दुलाल साहा की जय'

और जीवन जिस प्रकार सुख-दुख की परवाह करके नही चलता इतिहास भी उसी तरह भले-बुरे का विचार कर अपनी गति का निर्धारण नही करता। यह निमम निर्विकार है। दुलालगज के लोग जब सुबह-सुबह शुगर मिल म काम करने जाते हैं जब दुलाल साहा के घर के सामने स होकर

ड्यूटी करने जाते हैं, तब उन्हें पता भी नहीं चलता कि दुलानगंज के इस बाहरी वैभव के पीछे और भी बहुत लोगों का सुख दुःख जड़ित है। हमेशा इसी तरह जड़ित रहेगा भी। सिर्फ इतिहास के पृष्ठ बदलने की तरह उसके ऊपर एक के बाद एक आलेप से एक दिन निश्चिह्न हो जाएगा। उस दिन जो लोग फिर से आएंगे उनके भी सुख-दुःख को लेकर एक और उपन्यास लिखा जाएगा। इस आवागमन को लेकर ही हो सकता है, महाकाल अपने विचित्र खयालों की परितृप्ति करता है। लेकिन क्या करता है यह किसीको नहीं मालूम। हम आप कोई भी नहीं जानते। जानने की कोशिश करने पर भी जान पाना संभव नहीं होगा। सिर्फ, जो साक्षी रहेंगे वे उसकी नींव पर काव्य, उपन्यास लिखकर कागज पर समय को अंकित कर जाएंगे। दुनिया इसीका नाम है।

□□

मुद्रक आई० बी० सी० प्रेस शाहदरा दिल्ली ११००३२

सरस्वती विहार
श्रेष्ठ साहित्य को अत्यन्त
नयनाभिराम रूप-सज्जा
में प्रस्तुत करने वाला
एकमात्र संस्थान है।

सुरुचिसम्पन्न साहित्य प्रेमी
यदि ऐसे साहित्य की
नियमित जानकारी प्राप्त
करना चाहते हैं तो कृपया
हमें लिखें



सरस्वती विहार
२१, दयानन्द मार्ग, दरियागंज
नई दिल्ली-११०००२